



सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्णू भगवान दी जै  
 सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्णू भगवान दी जै  
 सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्णू भगवान दी जै  
 सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्णू भगवान दी जै  
 सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्णू भगवान दी जै



✳ हरि शब्द सम्मत २०२० बिक्रमी दे संग्रान्द वाले दिवस दे ✳  
 (निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

✳ पहली चेत्र २०२० बिक्रमी रघबीर सिँघ दे ससकार  
 असथान उते जेठूवाल ✳

पहली चेत पुरख समरथ, बीस बीसा दए वडयाईआ। हरि भगत सुहेले साचे रक्ख, समरथ आपणा हत्थ टिकाईआ। अगला मार्ग देवे दस्स, जीवण जुगत जणाईआ। जीवदिआं प्रभ कीते वस, मरयां आपणे चरन रखाईआ। लहणा देणा चुकाए सीं साढे तिन्न हत्थ, हत्थ आपणी झोली पाईआ। चारे किल्लीआं चारे कुण्टां देणीआं रक्ख, सिँघ मनजीता ध्यान लगाईआ। धन्न भाग बीस दस प्रभ खेल कीआ हस्स, मेरी सेवा साची लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद जणाईआ।

वीह सौ दस बिक्रमी गाथ, बाला नहुआ आप जणाइंदा। दस साल तककदा रिहा साथ, साथी नजर कोई ना आइंदा। गुर गोबिन्द बंनू के गिआ नात, बिधाता आपणे नाल जुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साचा राह एका वार, गोबिन्द गुर वडयाईआ।

पुरख अकाल वेखणहार, अभुल भुल्ल कदे ना जाईआ। बावन करे सच पुकार, ऊँची कूक सुणाईआ। मेरा मेल विछडया यार, तेरे हत्थ वडयाईआ। त्रेता लेखा धुर दरबार, राम राम सरनाईआ। बालमीक करे विचार, भेव अभेद जणाईआ। कुष सुत सुत दुलार, जानकी रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद जणाईआ।

जानकी सुत रमय्या लाल, रहमत हरि कमाइंदा। जुग चौकडी खेल महान, बेपरवाह आप खलाइंदा। बालमीक मंगया दान, झोली इक्को अगगे डाहिंदा। बाली बुध बाल अजाण, भेव कोई ना पाइंदा। किरपा कर भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप जणाइंदा।

बालमीक करे अरदास, दोए जोड़ जोड़ निमस्कारया। धरनी सोहे विच्च प्रभास, प्रभ तेरे चरन दवारया। मेरी पूरी कर आस, सोहे बंक अपारया। तेरी वेखां सच्ची रास,

महल्ल अट्टल मनारया। तेरे बाले मेरे पास, मेरा तेरे चरन सीस झुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दोए जोड वास्ता पा लिया।

रघपत कहे राम रघ, एका एक जाईआ। साचा मार्ग जाए बंनू, जुग चौकडी वेख वखाईआ। बालमीक सुण लै कन्न, नाम निधान पढाईआ। करे खेल श्री भगवन, कलिजुग अन्तम फेरा पाईआ। साचे सुत चढ चन्न, चन्न चन्न रुशनाईआ। गण गंधरब देवत सुर कहण धन्न धन्न, धन्न मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद जणाईआ।

भेव अभेद दस्से भगवान, आपणी दया कमाइंदा। कलिजुग अन्तम खेल महान, निरगुण दाता आप कराइंदा। सतिजुग दा सति विधान, सति पुरख निरञ्जण आप समझाईंदा। बाली बाले कर परवान, धुर फरमाणा आप समझाईंदा। छोटा बच्चा देवे दान, दूआ सिफरा एका सिफरा इक्क इक्क नाल मिलाईंदा। दूजा खेल करे महान, जगत जगदीश चन्द चढाईंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

साची करनी खेल अपार, सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ। साढे तिन्न हत्थ कूडी काया करे ना कोई प्यार, प्रभ चरन सच्ची सरनाईआ। अन्तम नाता छडुणा पए संसार, थिर कोई रहण ना पाईआ। मर मर जम्मे जीव गवार, लक्ख चुरासी गेड रखाईआ। सी भगवान हो मेहरबान, मेहर नजर इक्क टिकाईआ। भगत सुहेले कर परवान, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। कलिजुग अन्तम जिमीं असमान वखाए इक्क निशान, निशाना इक्को इक्क झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

देवे वडिआई पारब्रह्म, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। उन्नी कत्तक कर कर्म, भगत दुआर नीह रखाईंदा। साढे तिन्न हत्थ अग्गे बेडा बंनू, अट्टल महल्ल इक्क रुशनाईंदा। धुर संदेसा धुरदरगाही घल्ल, हुक्मी हुक्म आप वरताईंदा। जोत शब्द निरगुण धार बैठा रल, नजर किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआर बिन भगतां सोभा कदे ना पाइंदा।

भगत दुआर अग्गे साढे तिन्न हत्थ, प्रभ वक्खरी वंड वंडाईआ। सति सतिवादी नीह दिती रक्ख, रक्खक बणया सच्चा शहनशाहीआ। हौली हौली हो प्रतक्ख, पहला दूजा पन्ध मुकाईआ। तीजे नैण हो प्रतक्ख, साख्यात दए समझाईआ। छोटा बाला कहे प्रभू मेरा नाम रक्ख, शब्द शब्दी लेख लिखाईआ। जुडया रहे सच्चा नात, ना कोई तोडे तोड तुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेस जणाईआ।

सच संदेस देवे मेहरबान, मेहर नजर उठाईआ। त्रेते जुग दा बाल अजाण, रघ

आपणी रग अखवाईआ। बीर बीर बीर बलवान, बल इक्को इक्क जणाईआ। पिता पूत ना कोई पहचान, भेव अभेद ना कोई जणाईआ। दोए जोड़ मंगया दान, हरि मिले सच सरनाईआ। श्री भगवान देवणहार, दीन दयाल दया कमाईआ। तेरा विचोला बणे नौजवान, लालो लालन लए उठाईआ। सिँघ किशन इक्क दलाल, ढाई गज दुपट्टा भेट चढ़ाईआ। मध्घर महीना मनजीता होया खुशहाल, कद वेला मिलां भाई भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

ढाई गज कर परवान, आपणे तन छुहाया। अगला लेखा दो जहान, पिछला आपणी झोली पाया। देवणहारा दानी दान, दाता इक्को इक्क अखवाया। साढे तिन्न हत्थ दा सच निशान, चौथी मंजल वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाया। साची करनी करे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ।

भगत सुहेला माई बाप, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। शब्द जणाया सोहँ जाप, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। मेल मिलावा कमलापात, आत्म परमात्म विच्च समाईआ। सो पुरख निरञ्जण देवणहारा दात, भेव अभेद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहणा दए वखाईआ।

पूरब लहणा सिँघ ठाकर, त्रै त्रै धार मिलाइंदा। निर्मल कर्म कर उजागर, उजरत हरि ना कोई लगाइंदा। भगतां देवणहारा आदर, आदरश इक्को इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा आपणा आप खुलाइंदा।

साचा परदा देवे खोलू, श्री भगवान वड्डी वडयाईआ। सिँघ मनजीता कहे बोल, दोए जोड़ सरनाईआ। जगदीशा तोलणहारा तोल, अतोल अतुल तेरी सरनाईआ। सच दुआरा लोकमात खोलू, भेव अभेद जणाईआ। सतिजुग रहे ना कोई रोल, भृष्ट रूप ना कोई वटाईआ। हरि संगत कर के आप अडोल, सिख्या इक्को इक्क दृढ़ाईआ। भगत कोई ना रहे अनभोल, परदा सभ दा दए खुलाईआ। जिस तेरे चरन धूढ़ अमृत छकी साची पौहल, सो जन्म मरन विच्च ना आईआ। लेखा चुक्के धरनी धौल, धवल दए सालाहीआ। साडे नाल कर कौल, बेपरवाह भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिखिआ इक्क दृढ़ाईआ।

श्री भगवान दस्सणहारा, भेव अभेद खुलायंदा। वीह सौ नौं बिक्रमी बण लिखारा, पिछला लहणा आप जणाइंदा। वीह सौ उन्नी दए आधारा, सीस नाम परदा पाइंदा। पहली चेत्र भगत विहारा, श्री भगवान आप कराइंदा। धुरदरगाही धुर दा लाड़ा, इक्को इक्क वखाइंदा। लाल रंग प्रभ चाढ़े गाढ़ा, उतर कदे ना जाइंदा। ठाकर सिँघ सेवादारा, तिन्न तिन्न आपणी वंड वंडाइंदा। चौथी मंजल लै के जाए आप निरँकारा, आप आपणी गोद बहाइंदा। चार बुरज करन निमस्कारा, चारों कुण्ट नैण उठाइंदा। सत्त रंग निशाना

चढ़े अपर अपारा, सिर भगतां आप झुलाइंदा। सति पुरख दी साची कारा, हरि करता आप कमाइंदा। हरि संगत देवे इक्क आधारा, सांतक सति सति वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल परदा शब्द कनात, बिन लक्ष्मी वेखे ना कोई मार ज्ञात, दूजा नजर कोई ना आइंदा।

लछमी कहे तेरी वड्डिआई, भगवन भेव कोई ना आइंदा। किस बिध करें मात कुडमाई, घर घर आपणी दया कमाइंदा। मेरे नैण रहे शर्माई, मेरी कुख बाल सोभा कोई ना पाइंदा। तूं भगतां पकड़ें जा जा बाहीं, मेरा मोह नजर कोई ना आइंदा। मैं रोवां विच्च जुदाई, नेत्र नैण नीर वहाइंदा। श्री भगवान रिहा समझाई, भेव अभेद खुलाइंदा। तेरे प्यार दी इक्क कुडमाई, लोकमात वखाइंदा। तेरा लैहन्गा दए वधाई, तेरे गीत अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

लाल भूषन लछमी धार, निरगुण आप जणाईआ। भगतां कर सच प्यार, परदा इक्क वखाईआ। वेखो दरोपद आई रोवे जारो जार, बेपरवाह बेअन्त तेरी शहनशाहीआ। सतिजुग करें की की कार, करते करनी मात कमाईआ। जिस पंज वार तेरे नाउँ लाई जैकार, तिस सचखण्ड लैके जावें चाई चाईआ। दरोपत कहे मैं अजे ना होई पार, मेरा लेखा मुक्क ना सक्कया राईआ। कृष्ण कह के गया विच्च संसार, त्रिलोकी विच्च मेरी शरनाईआ। अगगे मेल पुरख अकाल, जिउँ भावे लए मिलाईआ। कलिजुग बैठी रही बेहाल, मेरी सार किसे ना पाईआ। मैं वेख के आई रंग लाल, लाल रंग कवण रिहा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा जणाईआ।

दरोपती आई पैडा चीर, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस ने मेरा लहण ना दिता चीर, सो साहिब फेरा पाईआ। जिस पिच्छे अगगे दो जहानां कट्ट जंजीर, आपणी गंठ पवाईआ। सिँघ बिशन चारों कुण्ट मारे लकीर, प्रीतम सिँघ निउँ निउँ चले वाहो दाहीआ। इन्द्र सिँघ कहे प्रभ तेरे नाल निभे अखीर, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। गुरमुख कहे हरि संगत हस्त कीट, ऊँच नीच तेरी इक्क सरनाईआ। पाल सिँघ कहे मैं गावां गीत, प्रभ इक्को ढोला चाई चाईआ। जिस नूं लभदे मन्दर मसीत, कोटन कोट बैठे ध्यान लगाईआ। सो कलिजुग अन्त जन भगतां करे सच प्रीत, प्रीती इक्को इक्क जणाईआ। सतिजुग चलाए साची रीत, हरि संगत दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

आ दरोपत वेख अक्ख, सो पुरख निरञ्जन आप जणाईआ। साहिब सतिगुर हो प्रतक्ख, आपणी धार जणाईआ। भगत भगवान रिहा रक्ख, मेहर नजर उठाईआ। साचा मार्ग साहिब दस्स, इक्को इक्क दृढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लाल रंग दा रंग लाल गुरमुख विच्च पेखे साहिब दयाल, दयाल आपणी दया कमाईआ।

दया कमा साहिब सुलतान, जग बाले वेख वखाइंदा। प्रेम प्रीती इक्को दान, दर झोली इक्क भराइंदा। सचखण्ड दा साचा काहन, चौथे घर वडिआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव जणाइंदा।

रघबीर सिँघ प्रभ पए सरना, पहली चेत खुशी मनाईआ। धन्न भाग तूं मिल्या इक्क मलाह, बेडा आपणे कंध उठाईआ। तेरे भगतां विच्च मेरा रह जाए नां, मेरा नां तेरी वडयाईआ। नाता तुटा पिता मां, भैण भाई नजर कोई ना आईआ। तेरा लगगा सोहणा सच्चा थां, जिस घर निर्मल जोत करे रुशनाईआ। भाईआं नाल भाई मिल्या आ, पिछला पन्ध मुकाईआ। इक्को मंगाँ सच दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर पहली चेत हरि संगत दे बख्श पिछले गुनाह, मेरी आसा पूर कराईआ। जिस तरां मैनुं दिती आपणी ठंडी छाँ, गुरमुखवां होणा सहाईआ। गुरसिख कोई ना करयो ना, अग्गे औणा चाई चाईआ। वेखयो कोई ना मारे धाह, हरख सोग ना कोई जणाईआ। श्री भगवान लोकमात विच्चों लए उठा, अग्गों गोबिन्द उंगली लाईआ। सचखण्ड दुआरे दए वसा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्के हो के वेखण आ, कवण आया चाई चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाईआ।

रघबीर सिँघ करे अरदास, बाला इक्क ध्यान लगाईआ। हरि संगत तेरी शाख, तुध बिन नजर किसे ना आईआ। सभ दी पत्त लैणी राख, मेहर नजर उठाईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। जिस ने तेरी गाई गाथ, सो जन्म मरन विच्च ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

साचे सुत सुण दुलारे, श्री भगवान आप जणाइंदा। बुढे नँढे सारे तारे, बच्चा कोई रहण ना पाइंदा। पार कराए विआहे कुआरे, दूई द्वैत ना कोई जणाइंदा। गुरमुख रल मिल बोलण पंज जैकारे, एह आखरी वार समझाइंदा। सचखण्ड किसे ना मिले विच्च संसारे, कोटन कोट जीव ध्यान लगाइंदा। साध सन्त करन हाहाकारे, हउमे रोग ना कोई मिटाइंदा। जन भगतां प्रभ जू वाजां मारे, सोए लोकमात उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर आप उठाइंदा।

पहली चेत लिखावांगा। बाले पूरी आस करावांगा। हरि संगत सारी सचखण्ड बहावांगा। गुर गोबिन्द नाल मिलावांगा। गुर चले इक्को घर वखावांगा। पिछला लेखा मात चुकावांगा। भरम भुलेखा बाहर कढावांगा। सतिजुग साचा राह वखावांगा। मावां कोलों पुतरां गलीं हार पवावांगा। महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान जैकार लगावांगा। साढे तिन्न हत्थ मूल मुकावांगा। किलीआं गड्डण दी रीत हटावांगा। कफन लाल रंग दा पावांगा। लभ्भण विच्च होर किसे नूँ वाल ना वखावांगा। जन भगतां कुफल खुलावांगा। मुफ्त

आपणा नाम वरतावांगा । हरि संगत हरख सोग चुकावांगा । नाम जोग इक्क जणावांगा । गोबिन्द दी गोबिन्द रीती फिर वखावांगा । बच्चे नीहां हेठ रखावांगा । गुरमुख छत दे उप्पर चढावांगा । उजल मुख करावांगा । राह इक्को सारे पावांगा । साचे सिक्खो बण सेवक सेव कमावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त झोली पावांगा ।

साची वस्त झोली पाऊंगा । सतिजुग साचा राह चलाऊंगा । आवण जावण पन्ध मुकाऊंगा । मढ़ी गोर इक्को घर वखाऊंगा । झूठी माटी नाता तोड़ तुड़ाऊंगा । आत्म परमात्म विच्च मिलाऊंगा । हड्डीआं बालण कर जलाऊंगा । साची वस्त विच्चों उठाऊंगा । आपणे नाल लै के जाऊंगा । दो जहानां पार कराऊंगा । सचखण्ड दुआर बहाऊंगा । वेख वेख खुशी मनाऊंगा । इक्को ढोला साचा गाऊंगा । मैं तेरा तूं मेरा दूजा संग ना कोई वखाऊंगा । एसे कर के पहलों ढाया आपणा ढेरा, पंज तत्त शेर सिंघ नजर किसे ना आऊंगा । लक्ख चुरासी कर के भुलावां हेरा फेरा, आपणा भेव ना किसे जणाऊंगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली चेत्र दा सच विहार, हरि संगत बिन करनी पार कराऊंगा ।

छोटे बाले रक्खणा याद, सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ । तेरी सुणी आप फरयाद, सचखण्ड निवासी फेरा पाईआ । अग्गे संगत दे के जावे दाद, आपणी वस्त झोली पाईआ । सारयां लक्ख चुरासी विच्चों लए काढ, जिनां लेखा दिता लिखाईआ । नधड़क हो के मारो आवाज, प्रभ औणा चाई चाईआ । जिस खोल्लया सच्चा राज, भेव अभेद रिहा जणाईआ । पारब्रह्म दा इक्को समाज, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ । हिंदू सिख ईसाई मुसलम सच दुआरे वेखण काज, हरि करता खेल कराईआ । अठ दस रैण भिन्नडी गुर अवतार पीर पैगबर सारे औण भाज, घर साचे खुशी मनाईआ । नेत्र खोल के वेखण कौण मिस्तरी राज, जिनां सच दुआर दिता बणाईआ । कवण हरि संगत जिस मिली दात, प्रभ देवणहार वडयाईआ । कौण सत्तर बहत्तर चुहत्तर चार चार मिली जमात, पंज पंज वज्जी वधाईआ । रघबीर सिंघ कहे प्रभ वेख सभ दे साथ, मैं नुं निक्यों वड्डा दिता बणाईआ । मेरा पता बेटा दसरथ राम, राम पुत कुशू अखवाईआ । कुशू दा प्रभ बणया सच्चा साक, अन्तम आपणा मेल मिलाईआ । मैं उच्च महल्ले चढ के वेख्या मार ज्ञात, गुरसिख राह विच्च बैठा ध्यान लगाईआ । प्रभू मेहरबान इस दा मेरे नाल दे दे साथ, दर तेरे आवे चाई चाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिख सिख नाल मिलाईआ ।

सिख कहे मेरा सिख नाता, दूजा सज्जण नजर कोई ना आइंदा । तूं मात तूं पिता तूं देवणहारा दाता, दानी इक्को इक्क अखवाइंदा । कलिजुग वेख अन्धेरी राता, आपणा साचा चन्द चढाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाइंदा ।

तेरे दर रक्खी आस, आस आस विच्च जणाईआ । मेरी बुज्जी सर्व प्यास, तृष्णा

होर रही ना राईआ । उप्पर बैठा आकाशां आकाश, पृथ्वी रंग ना कोई वटाईआ । मेरा सच्चा बणा दे साथ, सगला संग निभाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वंड इक्को इक्क जणाईआ ।

तेरी वंड ढाई मुठ, हरि मुठी आप जणाइंदा । अद्धी गुरमुख लए लुट्ट, श्री भगवान दया कमाइंदा । दर आ के सिँघ करनैल कोलों लए पुच्छ, तेरा लेखा लेखे विच्च पाइंदा । जिस दुआरे बहाए आपणे पुत तिस मंजल आप चढ़ाइंदा । गुरसिखो श्री भगवान कदे ना जाए रूस, जुग जुग रुसड़े आप मनाइंदा । जिस दा इक्क वार प्रेम प्रीती नाल सीस गिआ झुक, तिस जम नेड कदे ना आइंदा । लाल भूशन वेखे उठ, नेत्र नैण खुलाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णुं भगवान देवणहारा साचा दान, ढाई मुठी कर परवान, महल्ल अट्टल उच्च मकान सच महल्ल इक्क सुहाइंदा ।

सच महल्ले लै के आए, हरि संगत दए वडयाईआ । थोड़ी थोड़ी राख पंजां प्यारयां हत्थ फड़ाए, साढे तिन्न हत्थ सिँघासण आप जणाईआ । नालो नाल रिहा समझाए, भुल्ल कोई ना जाईआ । दिल्ली तखत दिता लिखाए, भगत दुआरे पूर कराईआ । बिशन सिँघ तेरी अरदास लेखे लाए, बेनन्ती आपणी झोली पाईआ । मंजल मंजल लए चढ़ाए, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ । अगला लेखा फिर लिखाए, बेपरवाह बेपरवाहीआ । रघबीर सिँघ रघु रघवंस जणाए, रघुपत आपणा जोड जुड़ाईआ । मात पिता साक सैण नेत्र नैण ना कोई वहाए, रोंदयां ठौर कोई ना आईआ । जिस दे सीस छत्तर चौर प्रभ आप झुलाए, तिस जगत भावे ना कोई वडयाईआ । हुक्मे अंदर दर आप बुलाए, भज्जा आया वाहो दाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जिस दा लेखा तेरां फग्गण दिता लिखाईआ ।

वीह सौ इक्क पहली जेठ, सो पुरख निरञ्जण दया कमाईआ । शब्द सपुत्री साची वेख, मेहर नजर उठाईआ । आत्मा सिँघ रिहा वेख, बसन्त कौर ध्यान लगाईआ । कोई ना जाणे प्रभ का भेत, भेव आपणे हत्थ रखाईआ । छोटी बच्ची करे हेत, छिन्दर कौर माण वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ ।

वीह सौ दो दस्सया हाल, भेव अभेद जणाया । पूरब जन्म रहे नाल, सगला संग निभाया । पिउ धी घाले घाल, घाली घाल वेख वखाया । साहिब सतिगुर अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क जणाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा रिहा जणाया ।

पिछला लेखा आत्म रस, अट्टे पहर रंग रंगाईआ । सिँघासण सेवा नस्स नस्स, कवार

कन्या आप कमाईआ । श्री भगवान देवे वत्थ, वस्त झोली पाईआ । निरवैर खोलू आपणी अक्ख, अक्ख प्रतक्ख जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी साची रिहा कराईआ । तिन्न चार पंज पंचम रंग, रंग रंगीला आप जणाइंदा । आत्म परमात्म वसे संग, सगला संग वखाइंदा । निर्मल धार निर्मल चन्द, निरगुण आप रुशनाइंदा । निरगुण नूर निरगुण ठंड, निरगुण अग्ग बुझाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पिछला लेखा आप वखाइंदा ।

पिछला लेखा लिखया लेख, लिख्त लिख्त वडयाईआ । पूरब जन्मां रिहा वेख, भुल्ल कदे ना जाईआ । जिस नाल करे अन्तर हेत, बाहर पहुंच रिहा रखाईआ । किरपानिधान खोलू भेत, आपणा प्रकाश कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त इक्को इक्क झोली पाईआ ।

इक्को वस्त देवणहार, दाता दानी दया कमाइंदा । हरि संगत विच्च दस्सया उच्ची कूक पुकार, परदा उहला ना कोई रखाइंदा । सविंदर रणजीत कौर दोहां दा इक्क विहार, पारब्रह्म पुत्री रूप वटाइंदा । अन्तम लहणा वेखे विच्च संसार, देणा आपणे हत्थ रखाइंदा । जिनां पिच्छे बेडा हरि संगत करे पार, भार आपणे कंध उठाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णू भगवान, आपणी करनी बिन कारन ना किसे समझाइंदा ।

\* पहली चेत २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच्च  
भंगदे दे वेले \*

भगत दुआरे ढोल मरदंगा, दो जहान रिहा जगाईआ । करे खेल सूरा सरबन्गा, भेव कोई ना आईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर उठ उठ भज्जे नंगा, सिर उढण नजर कोई ना आईआ । दरोही खुदा दी छडुया पिछला संग, साथ कोई रहण ना पाईआ । नौं खण्ड सत्त दीप नेत्र नैण अन्धा, नजर किसे ना आईआ । हरि संगत मिल के गाया छन्दा, ढोला इक्को इक्क जणाईआ । पहली चेत चढया चन्ना, चन्द इक्को इक्क रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ढोल मरदंग इक्क वजाईआ ।

वज्जया ढोल दो जहान, सोया कोई रहण ना पाईआ । बीर बेताले नैण खोलूण वेखण मार ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ । कवण दुआरे खेल करे श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ । जन भगतां देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ । अट्ट दस भिन्नडी रैण करे परवान, परवाना इक्को इक्क जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मरदंग इक्को इक्क सुणाईआ ।

मरदंगा वजा सच्चा नाद, श्री भगवान आप वजाईआ । नेत्र खोलू वेखण ब्रह्म ब्रह्माद, विष्ण ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ । कवण अन्त सुणे फरयाद, जन भगतां होए सहाईआ ।



लख्व चुरासी विच्चों काढ, आपणे चरन लगाईआ । सतिजुग साची देवे दाद, कलिजुग कूडा पन्ध मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ ।

खेल बेपरवाह भगतन नाच, नटूआ आपणा खेल कराइंदा । जिस दे हिरदे गिआ राच, रोम रोम तिस महकाइंदा । लेखा जाण पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कार कमाइंदा । शब्द अगम्मी दे आवाज, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा । हरि संगत तेरे वसे साथ, विछड कदे ना जाइंदा । पिछला छडु दिउ पूजा पाठ, वेद पुरान शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान अगगे कम्म कोई ना आइंदा । साहिब सतिगुर पूरा उतारे पार घाट, मंझधार ना कोई रुढाइंदा । पहली चेत्र पारब्रह्म बणया सज्जण साक, सगला संग रखाइंदा । मारो छालां खुले ताक, गुरमुख सुरती उठा भंगढा इक्को पाइंदा । सचखण्ड जाण दी दस्सी जाच, हरख सोग ना कोई रखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक आप वरताइंदा ।

शब्द मरदंग कहे मेरी सुण पुकार, प्रभ तेरे हत्थ वडयाईआ । नौं सौ चुरानवे चौकडी युग बीते विच्च संसार, मेरी सार किसे ना पाईआ । रसना जिह्वा जीव जंत साध सन्त जप जप गए हार, अन्त कोई कहण ना आईआ । कलिजुग लै कलकी अवतार, निहकलंक फेरा पाईआ । तेरे चरन मेरी निमस्कार, दोए जोड सरनाईआ । तेरे हुन्दयां तेरा भगत ना होए खवार, अगगे देवे ना कोई सजाईआ । साचा करदे आप विहार, बण विवहारी बेपरवाहीआ । पहली चेत्र दरस महान, बीस बीसा राह तकाईआ । चौथी मंजल कर परवान, नाम परवाना हत्थ फडाईआ । उप्पर सत्त रंग झुल्ले निशान, निशाना इक्को नजरी आईआ । शब्द ढोल कहे मोहे दे दान, गोबिन्द तेरा नैण तकाईआ । इक्कीयां कर दर परवान, बेपरवाह तेरी सरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दिन दिहाढे तेरे अगगे झोली डाहीआ ।

दिन दिहाढे मंगी मंग, उहला नजर कोई ना आया । कर किरपा प्रभ रंगी रंग, रंग रंगीला इक्को आया । निरगुण सरगुण देणा संग, सगला संग निभाया । एथे ओथे दो जहान चुक्के पन्ध, अद्धविचकार ना कोई अटकाया । जो तेरा ढोला गौंदे छन्द, जगत जीव जंत दिसे अंदर अनन्द, बेमुख नजर किसे ना आया । श्री भगवान पहली चेत्र चाढे चन्द, अद्धी रात रुत्त सुहाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां भगतन लेखा दए वखाया ।

शब्द ढोल तूं रह त्यार, श्री भगवान आप जणाईआ । चार जुग दे तक्कण राह मंगण दरस दीदार, नेत्र नैण उठाईआ । अठ्ठ दस इक्के करां विछडे यार, यार इक्को इक्क जणाईआ । दर औण तेई अवतार, भगत अठारां सीस झुकाईआ । गुर दस वेखण नैण उघाड, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ । जिस नूं गोबिन्द कह के गिआ पुरख अकाल, सो साहिब फेरा पाईआ । जन भगतां उत्ते होए दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ । सच

धर्म दा इक्क दुआर, एकंकारा आप वखाईआ। जन भगतां चले नाल नाल, औंदा जांदा नजर किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ।

धुर फ़रमाणा हरि करतार, इक्को इक्क जणाइंदा। इक्की सिक्खां पीले बंने सिर दस्तार, मेहरवान वेख वखाइंदा। कमरकसा इक्कीआं दा करे एका वार, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। अंदर देवे नाम उछाल, सरोवर इक्को इक्क वखाइंदा। सच दुआरे वज्जे ताल, तलवाडा आपणा नाम जणाइंदा। गुरमुख वेखे सच्चे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा।

अद्धी रात भिन्नड़ी रैण, हरि सतिगुर आप जणाईआ। इक्की सिख त्यार रहण, जो भंगदा रहे पाईआ। गुर अवतार पीर पैगबर धन्न धन्न धन्न सारे कहण, गोबिन्द वेखे चाई चाईआ। जिनां श्री भगवान आया लैण, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। अग्गे रहे ना कोई लैहण देण, देणा नजर कोई ना आईआ। निरगुण बणे साक सज्जण सैण, सगला संग निभाईआ। हरि संगत नाता जोड देवे भाई भैण, कूडी अक्ख ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अद्धी रात चाढे रंग, खेले खेल बण मलंग, ईसा मूसा मुहम्मद चार यारी नाच नचाईआ।

मलंग बणे परवरदिगार, बेपरवाह खेल खलाइंदा। गुरमुखां दे आधार, गुरसिखां पार कराइंदा। ताल वज्जे विच्च संसार, ढोल ढमक्का इक्को शब्द जणाइंदा। जिनां अन्तर मिल्या प्यार, तिनां मंतर नाम पढाइंदा। लालो तेरा लहणा अन्तम वार, हरि संगत विच्च रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साची सेवा लाइंदा।

साची सेवा करन पीर, धूढी खाक खाक रमाईआ। चारों कुण्ट वरते कहर, अन्ध अन्धेरा इक्को छाईआ। गुरमुखां मिल्या गम्भीर गहर, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। देवे नाम तर्ज इक्को लहर, नूर जहूर इक्क रुशनाईआ। सचखण्ड वखावे आपणा शहर, शहनशाह इक्को फेरा पाईआ। दूजा वडे ना कोई ऐर गैर, लक्ख चुरासी देवे धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

प्रभ साचा ढोला गाएगा। अद्धी रात खेल वखाएगा। गुरसिखां आपणा रंग चढाएगा। अठाहठ दिन दा पिछला लेखा अठसठ गुरमुखां पैरां हेठ दबाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार कुण्ट धूढी खाक उडाएगा।

धूढी खाक उडावेगा। प्रभ आपणा खेल करावेगा। गुरमुखां नाच नचावेगा। नारद

मुन शरमावेगा। भाग सिँघ वड्डिआवेगा। कन्त सुहाग राग अलावेगा। सोई सुरती जाग खुलावेगा। मज्जन माघ इक्क करावेगा। दुरमत दाग धुआवेगा। हँस काग बणावेगा। सच दरस आप वखावेगा। जन्म जन्म दी हिरस मिटावेगा। साचे पौडे आप चढावेगा। ब्रह्मण गौडे पन्ध मुकावेगा। भगत दुआरे नाच वखावेगा। कलिजुग कौडे जीव भन्न तुडावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा शब्द साचा ढोला, जन भगतां आपे गावेगा। पहली चेत जब बारां वज्जणगे। ब्रह्मण्ड खण्ड उठ उठ भज्जणगे। गुर अवतार इक्क दूजे नूं सद्दणगे। पीर पैगम्बर नेत्र खोल खोल लभणगे। चार जुग आपणा लेखा बाहर कढुणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे नच्चणगे।

जब अद्धी रात आएगी। त्रैगुण माया कुरलाएगी। नेत्र नैणां नीर वहाएगी। चारों कुण्ट राह तकाएगी। दोए जोड वास्ता पाएगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि संगत खुशी मनाएगी।

जब अद्धी रात होए वेला, वेला वक्त दए जणाईआ। गोबिन्द वेख गुरू गुर चेला, चेला गुर लए मिलाईआ। प्रभ मिले सज्जण सुहेला, धुरदरगाही फेरा पाईआ। वखाए धाम इक्क नवेला, निरगुण निरँकार निरवैर वड्डी वडयाईआ। साचा खेल प्रभ खेला, जगत नेत्र नजर ना आईआ। गुरमुखां राए धर्म दी कट्टे जेला, चित्रगुप्त लेख रहण ना पाईआ। भगतां करे आपणा मेला, खोल जाग आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नजर आप उठाईआ।

जिस वेले होए अद्धी रात, रुतडी रुत आप सुहाइंदा। जन भगतां देवे अनमोलक दात, अनमुली आप वरताइंदा। काया मन्दर अंदर वेखे मार ज्ञात, बन्द कवाडी कुण्डा लाहन्दा। नौं सौ चुरानवें चौकडी जुग दा पिछला साथ, श्री भगवान आप जणाइंदा। अग्गे दरसे इक्को गाथ, सोहँ ढोला मंतर दृढांइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त आप सुहाइंदा।

जब अद्धी रात आवेगी। भिन्नडी रात खुशी मनावेगी। सेज सुहज्जणी इक्क वखावेगी। जोत निरज्जणी राह तकावेगी। दर्द दुःख भय भज्जणी भउ चुकावेगी। चरन धूढ मज्जनी दुरमत मैल धुआवेगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल इक्क वखावेगी।

साची खेल कराएगा। प्रभ आपणा भेव चुकाएगा। राष्ट्रपति संदेस पुचाएगा। पिच्छे दा पिछला लेखा झोली पाएगा। प्रधानमन्त्री विचोला विच्च रखाएगा। पंडत पांधा जंतरी फोल ना कोई समझाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा हुक्म वरताएगा।

अद्धी रात आवे नेड़े, आपणा राह तकाईआ। कवण प्रभ वसाए खेड़े, घर मन्दर सोभा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग विछड़े केहड़े केहड़े, जिनां आपणे रंग रंगाईआ। पूरब जन्म चुकाए झेड़े, अगगे झंजट रहण ना पाईआ। शब्द अगम्मी लिआए आपणे घेरे, शब्द डोरी इक्क वरवाईआ। चौथी मंजल चढ़ के चार कुण्ट जन भगतां नाल लै लए फेरे, इक्को वार करे कुडमाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी युग कर के बैठा रिहा वड़े जेरे, आपणा रूप ना किसे समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर घल्ले बथेरे, धुर संदेस झोली पाईआ। सारे कह के गए असीं तेरे चेरे, सतिगुर इक्को नजरी आईआ। अन्त इक्के होए भगतां डेरे, पहली चेत मिले वडयाईआ। किरपा करे प्रभू आपणी छेड़ कोई ना छेड़े, छेड़े बचया कोई रहण ना पाईआ। चार जुग दे भौंदे अन्तम आ गए विच्च गेड़े, बाहर सके ना कोई कहुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब इक्को इक्क अखवाईआ।

अद्धी रात तक्के राह, नेत्र नैण उठाया। साहिब सतिगुर मिले मलाह, निहकलंका नाउँ धराया। भगतां देवे इक्क सलाह, दूजा मंतर ना कोई पढ़ाया। शिवदुआला महु मन्दर मस्जिद गुरूदुआर काया अंदर दए वखा, इट्ट गारा ना कोई लगाया। जिस दुआरुँ शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लए बणा, सो गृह गुरमुखवां दए दरसाया। जिथे वसे बेपरवाह, दूजा नजर कोई ना आया। ओथे इक्को ढोला इक्को राग रहे गा, छत्ती राग भेव ना राया। सो मंतर अन्तर साहिब दयाल दए वसा, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैनड़ी रंग चढ़ाया।

भिन्नड़ी रैण मुख चुक्के नकाब, परदा कोई रहण ना पाईआ। परवरदिगार करे आदाब, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। दर दुआर करे सलाम, अलैकम कोई ना दए वडयाईआ। प्रगट वेखे इक्क अमाम, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जिस दा ईसा मूसा मुहम्मद बणया गुलाम, बण बरदा सेव कमाईआ। सो साहिब प्रगट होया विच्च जहान, निरगुण जोती जामा पाईआ। भगत दुआरा साढे तिन्न हत्थ मनार, छत्ती जुग दा खेल महान, नानक वेखण आवे चाई चाईआ। गोबिन्द रत्त नीहां हेठ दब्बी आण, मेहरवान हो सहाईआ। पहली चेत्र खेल करे श्री भगवान, भगवन आपणा राह चलाईआ। आपणा देवे बलीदान, गुरमुख बली ना कोई चढ़ाईआ। अगगे हरिसंगत मिले सचखण्ड मकान, दूजा मन्दर ना कोई वरवाईआ। दूर दुराडा ऊँचो ऊँच नेरन नेरा हो के वेखे मार ध्यान, ध्यान ध्यान विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ।

भिन्नड़ी रैण हत्थ पा कलीरे, पल्लू लाल सीस टिकाईआ। श्री भगवान मेरे बस्तर वेख चीरे, मेहर नजर उठाईआ। चार जुग दे विछड़े वीरे, गुरमुख सज्जण दे मिलाईआ। गोबिन्द कह के गिआ एका रंग रंगावां नाई छींबे झीरे, ऊँच नीच कोई रहण ना पाईआ। पहली चेत्र सभ दी बदल दए तकदीरे, तकसीर कोई रहण ना पाईआ। दर आयां दी

कट दे भीड़े, तेरा मुल्ल ना लागे राईआ। मैं थक्क गई बह के रंगले पीहड़े, मेरा घुंड ना कोई चुकाईआ। तूं आइउँ बेनजीरे, नजर मेहर इक्क उठाईआ। मैं वेंहदी रही ऊनी साल तेरा खेल धीरे धीरे, ध्यान तेरे चरन लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जगत हीऊड़े अन्त रहण ना पाईआ।

अन्त पूरी करां आस, सो पुरख निरञ्जण आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी बुझावां प्यास, हरि पुरख निरञ्जण दया कमाइंदा। जन भगतां होवां दासी दास, एकंकारा आप समझाइंदा। आदि निरञ्जण कहे करां प्रकाश, जोत निरञ्जण डगमगाइंदा। श्री भगवान कहे मेरा कारज आए रास, भगत दुआरा इक्क वडिआइंदा। अबिनाशी करता कहे मैं वसां पास, विछड कदे ना जाइंदा। पारब्रह्म कहे मैं लेखे लावां पवण सवास, साह साह आपणी झोली पाइंदा। सतिजुग दी साची शाख, हरिजन साचे आप प्रगटाइंदा। लख चुरासी विच्चों राख, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जुग चौकड़ी कथा कहाणी दस्सदा रिहा बात, अन्तम नर हरि पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आसा तृष्णा अन्तम मेट मिटाइंदा।

हे प्रभू सच भगवान, की तेरी वडयाईआ। तेरा खेल वेख सर्व शरमाण, शरअ करे लड़ाईआ। जिस दा धरदे रहे ध्यान, निरगुण निरवैर इष्ट मनाईआ। जिस ने भेज्जया बणा के काहन, मुकन्द मनोहर लखमी नारायण खेल कराईआ। जिस आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दिता दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जिस दा बोध अगाध ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुरान, लेखा धुर ना कोई समझाईआ। जिस दा सचखण्ड सच्चा मकान, परवरदिगार नूर इल्लाहीआ। सो कलिजुग अन्तम प्रगट हो विच्च जहान, निहकर्मि आपणा कर्म कमाईआ। भगत दुआरा कर परवान, सच निशान इक्क झुलाईआ। साढे तिन्न हत्थ देवे दान, आप आपणी वस्त झोली पाईआ। गुरमुख गुरसिख नच्चण कुदण गाण, गा गा शुकर मनाईआ। बाकी लख चुरासी लाहे मुकाण, धर्म दुआरा नजर किसे ना आईआ। जिस जन गाया सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, तिस मिले माण वडयाईआ। अबिनाशी करता निरगुण हो के आया सेव कमाण, सेवा इक्को इक्क रखाईआ। सति धर्म दा सति बणाए विधान, आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नारायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, शेर दलेर भबक इक्को शब्द लगाईआ।

शब्द कहे मेरी इक्को भबक, भगवान तेरी वडयाईआ। फड उठावां चौदां तबक, चौदां लोक दिआं हिलाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव गाए इक्को सबक, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्क पढ़ाईआ। तेरे नाम दा पतरा देवां परत, जिस दे उते अक्खर नजर कोई ना आईआ। जिस विच्च कोटन कोट गुर अवतार पीर पैगम्बर कीते गरक, डूंधी धार सार किसे ना आईआ। मार ज्वाल जुग चौकड़ी तैनुं कदे ना आया हरख, सोग चिन्ता ना कोई रखाईआ। तेरी किसे ना कीती परख, तेरा परदा सक्कया ना कोई लाहीआ। कलिजुग अन्तम कर

किरपा दिता दरस, गोबिन्द मंग मंगईआ । पहली चेत्र प्रेम प्रीती कर जा लिखत पढ़त, जिस दा लेखा सके ना कोई मिटाईआ । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दा अग्गे देणा रहे ना धड़त, जगत आड़ती नजर कोई ना आईआ । तूं मेरा मैं तेरा भगत, भगत तेरा राह तकाईआ । आदि अन्त लग्गी शर्त, शरअ कोई रहण ना पाईआ । हुण रहण नहीं देणा फ़रक, कबीर कूक कूक सुणाईआ । भगतो अज्ज पहली वार मंगो हो नधड़क, पारब्रह्म रिहा जणाईआ । आपणी सिधी कर लउ सड़क, ब्रह्मा विष्णु शिव बैठे सीस झुकाईआ । नच्च कुद् के मारो बड़क, सिँघ शेर मिल्या सच्चा माहीआ । अग्गों जा के आया परत, पिछल्लयां अग्गे लए लाईआ । लक्ख चुरासी होवे गरक, अन्त सके ना कोई बचाईआ । ओधर तक्कण अठाई नरक, राए धर्म आपणा बल वखाईआ । अक्खरां नाल अक्खरां दी लग्गी रहणी ना जड़त, निशअक्खर इक्को इक्क वडयाईआ । जिस दर गुर अवतार पीर पैगम्बर जगत विकारे वल्लों रक्खदे गए वरत, आसा तृष्णा माया ममता मोह चुकाईआ । सो साहिब सतिगुर शब्द अगम्मी रिहा कड़क, ढोला इक्को इक्क सुणाईआ । पहलों गोबिन्द कोलों रह गई रड़क, हुण बेड़ा पार कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ ।

गुरसिख कहण असां कसे लंगोटे, मिल के आए वाहो दाहीआ । हत्थ विच्च फड़े छुरीआं सोटे, किरपानां रहे वखाईआ । जट्ट माझे दे बड़े मोटे, किशन सिँघ रूप जणाईआ । जे गोबिन्द वेले रह गए थोथे, हुण बाकी कोई रहण ना पाईआ । श्री भगवान आप आ के वेखे आपणे पोते, पोतरे आपणी गोद सुहाईआ । अग्गे पैण ना देवे मोच्छे, हत्थ खण्डा ना कोई उठाईआ । पिछले सभ दे कहु देवे रोसे, रुस्सया कोई रहण ना पाईआ । जो लुक्कया किसे गोशे, फड़ बाहों लए उठाईआ । अग्गे मार्ग लाए सौखे, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ । पहली चेत्र जिनां नूं हत्थ आ गए मौके, फेर पीर पैगम्बर नजर किसे ना आईआ । हालीओ तुहाड़े पूरे हो गए जोते, जोतरा अग्गे ना कोई वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां रिहा वडयाईआ ।

भगत कहण असीं बणे बलवान, बल आपणा आप धराया । पहलों इक्क इक्क नूं मिलदा रिहा भगवान, हुण इकवुयां हो के झुरमट पाया । जिन्नां चिर ना देवे दात, बाहर निकल किते ना जाया । सारे करो इक्क जबान, कीता कौल ना कोई भुलाया । पिछला सभ ने छड्डया ईमान, इक्को निरँकार नजरी आया । गुरदर मन्दर मस्जिद शिवदुआला मव्व चले दुकान, साहिब सतिगुर हट्ट ना कोई वखाया । जिनां सच्चा पातशाह पारब्रह्म सुआमी मिल्या आपण, आप आपणा रंग रंगाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि संगत रिहा दूढ़ाया ।

हरि संगत कहे असीं उठांगे । साचा नाम प्रभ तों लुट्टांगे । अगला हाल सारा पुच्छांगे । दिलबर हो के, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अग्गे फेर कदे ना लुकांगे । हरि संगत कहे मंग दे असाडी, क्यों जुग जुग लारा लाईआ । धक्के मारन आंढी गुआंढी, तेरी सार कोई ना पाईआ । गुरसिख आत्म तेरे प्रेम बांदी, प्रीतम

तेरा नाम धिआईआ । इक्को ढोला सच्चा गाँदी, गा गा शुकुर मनाईआ । जगत कोलों ना कदे शरमांदी, जिस मिल्या प्रीतम माहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच रिहा जणाईआ ।

ढोल वाल्या वजा ढोल, हरि ढोला आप सुणाइंदा । साहिब जिनां दे वस्सया कोल, सो गुरमुख मुख ना कदे शरमाइंदा । उच्ची सारे कहो बोल, श्री भगवान फेरा पाइंदा । गोबिन्द नाल कीता कौल, अन्तम तोड़ निभाइंदा । पहली चेत्र सभ दे अंदर जाए मौल, मौला आपणा रूप वटाइंदा । हरि संगत ना जाए डोल, लक्ख चुरासी आप डुलाइंदा । वेखयो कोई ना रिहो अनभोल, सुत्यां आप उठाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आत्म परदा देवे खोल, अंदर वड़ वड़ दरस दखाइंदा ।

आत्म दरस दिखावेगा । प्रभ आपणी दया कमावेगा । पहली चेत्र रुत सुहावेगा । अबिनाशी अचुत फेरा पावेगा । जन भगतां राग अलावेगा । ढोला इक्को इक्क गावेगा । हरि संगत नाच नचावेगा । गुरमुख वड्डिआवेगा । मनमुख नैण शरमावेगा । अद्धी रात रंग चढ़ावेगा । आत्म सेजा पलंग आसण लावेगा । नाम मरदंग वजावेगा । इक्कीयां सिर दस्तार सजावेगा । कमरकसा इक्क वखावेगा । जो हरी अनन्द छड्ड के नस्सा, सो मुड़ के घर घर आवेगा । गलों कट्ट के जम दा रसा, आपणे नाल मिलावेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी धर धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, जन भगतां इक्को नाम वखावेगा ।

\* पहली चेत २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेटूवाल  
चौथी मंजल उत्ते \*

सच तरखत प्रभ साचा चढ़या, निरगुण निरवैर वड्डि वडयाईआ । आपणी करनी आपे करया, करता पुरख सच्चा शहनशाहीआ । ना जन्मे ना कदे मरया, जन्म मरन विच्च ना आईआ । निर्भय हो कदे ना डरया, भउ आपणा सर्ब जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ ।

सच महल्ले चरन रक्ख, सो पुरख निरञ्जण दया कमाइंदा । हरि पुरख निरञ्जण हो प्रतक्ख, एकंकारा भेव चुकाइंदा । आदि निरञ्जण कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा । अबिनाशी करता बण के दास, साची सेव कमाइंदा । श्री भगवान खेल तमाश, दो जहानां वेख वखाइंदा । पारब्रह्म प्रभ लहणा जाणे पृथ्वी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाइंदा । सच दुआरे कर निवास, सच सिँघासण सोभा पाइंदा । जुग चौकड़ी पूरी करनहारा आस, आसा इक्को इक्क वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा ।

साचा खेल चेत महीना, एकंकार इक्क वडयाईआ । उनी साल बणया रिहा नबीना,

निरगुण अक्ख ना कोई खुलाईआ । हुक्मे अंदर लोक तीना, त्रैगुण माया हुक्म मनाईआ । हुक्मे अंदर रंग चाढ़े भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ । हुक्मे अंदर करया ठांडा सीना, अगनी तत्त ना लागे राईआ । हुक्मे अंदर मरना जीणा, जीवण जुगत दए जणाईआ । हुक्मे अंदर होए अधीना, बण सेवक सेव कमाईआ । हुक्मे अंदर बण परबीना, पारब्रह्म प्रभ आपणा बल रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर सभ कुछ छीना, देवणहार आप वडयाईआ ।

हुक्मे अंदर लवे छीन, शहनशाह आपणा हुक्म जणाइंदा । हुक्मे अंदर करे तलकीन, तालब तुलबा आप पढ़ाईंदा । हुक्मे अंदर करे मस्कीन, निर्भय भौ इक्क वखाइंदा । हुक्मे अंदर खेल करे जल मीन, निरगुण सरगुण वंड वंडाईंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक्क रुशनाईंदा ।

हुक्मे अंदर सच दुआर, सच सच वडयाईआ । हुक्मे अंदर सच घर बार, सचखण्ड सुहाईआ । हुक्मे अंदर जोत उजिआर, नूरो नूर डगमगाईआ । हुक्मे अंदर परवरदिगार, बेपरवाह आपणी कार कमाईआ । हुक्मे अंदर खोलू कवाड़, बन्द ताकी कुंडा लाहीआ । हुक्मे अंदर थिर घर पावे सार, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ । हुक्मे अंदर शब्दी धार, शब्द रूप समाईआ । हुक्मे अंदर राज जोग सिकदार, शहनशाह आपणा हुक्म चलाईआ । हुक्मे अंदर भिक्खक बणे भिखार, खाली झोली रिहा वखाईआ । हुक्मे अंदर दाता दानी देवणहार, वड वड्डा वड वडयाईआ । हुक्मे अंदर खोलू कवाड़, मन्दर अंदर इक्क सुहाईआ । हुक्मे अंदर नार कन्त भतार, हुक्मे अंदर सेज सुहाईआ । हुक्मे अंदर अंदर बाहर, गुप्त जाहर वंड वंडाईआ । हुक्मे अंदर सुत दुलार, शब्दी बेटा इक्को जाईआ । हुक्मे अंदर कर विहार, बिवहारी दए समझाईआ । हुक्मे अंदर हिलाए तार सतार, आपणा हुक्म मनाईआ । हुक्मे अंदर करे कार, करता आपणी कल धराईआ । हुक्मे अंदर कर पसार, विष्णू देवणहार वडयाईआ । हुक्मे अंदर अमृत धार, अमर अमर जणाईआ । हुक्मे अंदर ब्रह्मा खोलू किवाड़, कँवल कँवल दरसाईआ । हुक्मे अंदर सुन अगम्मी खेल नयार, धूआंधार वखाईआ । हुक्मे अंदर दीआ बाती कर उजिआर, कमलापाती सोभा पाईआ । हुक्मे अंदर अन्तर शंकर कर उजिआर, मेहर नजर नजर उठाईआ । हुक्मे अंदर बण विचोला सिरजणहार, साचा ढोला दए सुणाईआ । हुक्मे अंदर तोला बणे आप निरँकार, साचा कंडा हत्थ उठाईआ । हुक्मे अंदर रक्खे उहला अगम्म अपार, भेव कोई ना पाईआ । हुक्मे अंदर विष्ण ब्रह्मा शिव बणाए भिखार, तिन्ने मंगण झोली डाहीआ । हुक्मे अंदर इच्या अपार, पारब्रह्म प्रगटाईआ । हुक्मे अंदर सतो गुण विचार, आप आपणा रंग वखाईआ । हुक्मे अंदर तमो बण वणजार, तिन्नां गंड दिवाईआ । हुक्मे अंदर खेल करे करतार, आप आपणा परदा लाहीआ । हुक्मे अंदर पंज तत्त कर पसार, अप तेज वाए पृथ्वी आकाश गंड पवाईआ । हुक्मे अंदर रक्त बूंद पावे सार, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ । हुक्मे अंदर नव नौं खोलू कवाड़, दर दर भेव चुकाईआ । हुक्मे अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तिष्णा लए प्रगटाईआ । हुक्मे अंदर माया ममता शिंगार, मोह मुहब्बत इक्क समझाईआ । हुक्मे अंदर नार कन्त



भतार, हुक्मे अंदर सेज वडयाईआ। हुक्मे अंदर खेले खेल अपर अपार, अपरंपर वेस वटाईआ। हुक्मे अंदर नाम निधाना बोल जैकार, जै जैकार करे शनवाईआ। हुक्मे अंदर निशअक्खर कर त्यार, रूप रेख ना कोई वरवाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म वरतार, हुक्म हुक्म किहा ना जाईआ। हुक्मे अंदर हो उजिआर, हुक्मे अंदर करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर चार स्वाणी बण वणजार, वणज इक्को इक्क दरसाईआ। हुक्मे अंदर शब्द नाद धुनकार, एका राग अलाईआ। हुक्मे अंदर निर्मल जोत उजिआर, नूर नूर रुशनाईआ। हुक्मे अंदर धूआंधार, सुंन अगम्म ररवाईआ। हुक्मे अंदर कँवल कँवली भरे अपार, अमृत बूंद समाईआ। हुक्मे अंदर सहँस दल वेखणहार, हुक्मे अंदर परदा लाहीआ। हुक्मे अंदर ईडा पिंगल करे खबरदार, साचा हुक्म आप जणाईआ। हुक्मे अंदर टेडी बंक वेखणहार, डूंधी भवरी फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर दसवें देवणहारा माण, दह दिशा वेख वरवाईआ। हुक्मे अंदर लेखा जाणे बोध अगाध बोध ज्ञान, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। हुक्मे अंदर विष्ण देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। हुक्मे अंदर ब्रह्म करे परवान, पारब्रह्म सरनाईआ। हुक्म अंदर कर कल्याण, संसा रोग मिटाईआ। हुक्मे अंदर त्रैगुण माया कर प्रधान, प्रधानगी इक्को इक्क वरवाईआ। हुक्मे अंदर पंज तत्त निशान, निशाना आपणे हत्थ ररवाईआ। हुक्मे अंदर शब्द महान, शब्दी शब्द आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को हुक्म आप ररवाईआ।

हुक्मे अंदर होए आप, आपणा हुक्म आप चलाईदा। हुक्मे अंदर माई बाप, पिता पूत गोद उठाईदा। हुक्मे अंदर साचा जाप, तूं मेरा मैं तेरा साक अरखवाईदा। हुक्मे अंदर पत लए राख, सिर आपणा हत्थ टिकाईदा। हुक्मे अंदर जोडे नात, नाता बिधाता मेल मिलाईदा। हुक्मे अंदर सुणाए गाथ, अगम्म अथाह वृढाईदा। हुक्मे अंदर दरसाए आपणी जात, अजाति रूप ना कोई वटाईदा। हुक्मे अंदर बैठा रहे इकांत, सच सिँघासण सोभा पाईदा। हुक्मे अंदर खेल करे बहु भांत, बिध आपणी ना किसे जणाईदा। हुक्मे अंदर देवणहारा दात, किरन किरन सूरज चन्द चमकाईदा। हुक्मे अंदर वेखणहारा साख्यात, साहिब आपणा रूप धराईदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप जणाईदा।

हुक्मे अंदर खोले ताक, आप आपणी दया कमाईआ। हुक्मे अंदर होए पाक, पुनीत इक्को इक्क अरखवाईआ। हुक्मे अंदर बणे साक, सज्जण साहिब सच्चा माहीआ। हुक्मे अंदर चढ़े राक, असव घोडा इक्क दौड़ाईआ। हुक्मे अंदर चारे स्वाणी लए भाख, अंडज जेरज उत्भुज सेतज माण दिवाईआ। हुक्मे अंदर वेखे खेल तमाश, खालक खलक रूप वटाईआ। हुक्मे अंदर इच्छआ करे आस, आसा आपणे विच्च धराईआ। हुक्मे अंदर शाहो शाबाश, शहनशाह आपणी सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को हुक्म दए वडयाईआ।

हुक्मे अंदर शब्दी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईदा। हुक्मे अंदर विष्ण ब्रह्मा शिव

अवतार, त्रैगुण आपणा मेल मिलाइंदा। हुक्मे अंदर पंज तत्त अखाड, निरगुण सरगुण नाच नचाइंदा। हुक्मे अंदर सूरज चन्द पसार, मण्डल मंडप आप सुहाइंदा। हुक्मे अंदर चारे खाणी कर त्यार, बोध अगाधी नाम दृढांइंदा। हुक्मे अंदर चारे वेद करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। हुक्मे अंदर ब्रह्म दए आधार, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म सुणाइंदा। हुक्मे अंदर आत्म परमात्म करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। हुक्मे अंदर ईश जीव वणजार, साचा हट्ट खुलाइंदा। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण करे प्यार, प्रेम प्रीती इक्क दृढांइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर खेल कराइंदा।

हुक्मे अंदर चार खाणी, चार चार वंडाईआ। हुक्मे अंदर चार बाणी, चार चार समझाईआ। हुक्मे अंदर चार जुग कहाणी, कहि कहि गए दृढाईआ। हुक्मे अंदर चार वेद पराणी, आत्म परमात्म भेव खुलाईआ। हुक्मे अंदर चार कुण्ट निशानी, नूर नुराना जोत रुशनाईआ। हुक्मे अंदर अकथ्य कहाणी, गहर गम्भीर सुणाईआ। हुक्मे अंदर अमृत बाणी, अंमिउँ रस आप वरताईआ। हुक्मे अंदर नूर नुरानी, जोती जोत करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर साची बाणी, आपणा नाउँ सिपत सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को हुक्म जणाईआ।

हुक्मे अंदर पंज तत्त, तत्तव वेख वखाइंदा। हुक्मे अंदर ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या इक्क पढाइंदा। हुक्मे अंदर बन्ने नत, नाता बिधाता जोड जुडाइंदा। हुक्मे अंदर करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कल जणाइंदा। हुक्मे अंदर देवे वथ्य, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। हुक्मे अंदर वसे घट घट, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। हुक्मे अंदर खेल बाजीगर नट, सवांगी आपणा सवांग रचाइंदा। हुक्मे अंदर बणे कमलापत, कँवल नैण डगमगाइंदा। हुक्मे अंदर रक्खे धीरज जत, सति सन्तोख आप दृढांइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप मनाइंदा।

हुक्मे अंदर तरखत ताज, तरखत निवासी लए बणाईआ। हुक्मे अंदर जोग राज, रय्यत दए समझाईआ। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण काज, करनी करता आप कराईआ। हुक्मे अंदर देवे दाज, वस्त अमोलक झोली पाईआ। हुक्मे अंदर मार आवाज, पारब्रह्म ब्रह्म लए उठाईआ। हुक्मे अंदर रक्खे लाज, सिर आपणा हथ्य टिकाईआ। हुक्मे अंदर बणे गुरू महाराज, शाह पातशाह आप अखवाईआ। हुक्मे अंदर चलाए जहाज, सेवक इक्को इक्क दृढाईआ। हुक्मे अंदर करे नाच, जुग जुग वेस वटाईआ। हुक्मे अंदर खेल तमाश, खालक वेखे बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर पूरी आस, आसा पूरन आप हो जाईआ। हुक्मे अंदर करे अगम्मी बात, निशअक्खर अक्खर पढाईआ। हुक्मे अंदर देवे साथ, सगला संग निभाईआ। हुक्मे अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

हुक्मे अंदर बणे ब्रह्म, पारब्रह्म वंड वंडाइंदा। हुक्मे अंदर बणे कर्म, निहकर्मि रूप

धराइंदा । हुक्मे अंदर वेखे वरन, वरन बरन जणाइंदा । हुक्मे अंदर भेव बरन, बरनी बरन समझाइंदा । हुक्मे अंदर नेत्र हरन फरन, काया मन्दर इक्क टिकाइंदा । हुक्मे अंदर सतिगुर चरन, सो पुरख निरञ्जण आप समझाइंदा । हुक्मे अंदर साचे पौडे चढ़न, पौडा इक्को इक्क वडिआइंदा । हुक्मे अंदर नाम निधाना पढ़न, विष्ण ब्रह्मा शिव ढोला गाइंदा । हुक्मे अंदर करनी करन, करता आपणी कार कमाइंदा । हुक्मे अंदर धरनी धवल, धरनी वेख वखाइंदा । हुक्मे अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक्क जणाइंदा ।

हुक्मे अंदर पारब्रह्म अपार, आपणी खेल कराईआ । हुक्मे अंदर ब्रह्मा सुत दुलार, सन्त कुमार वडयाईआ । हुक्मे अंदर बराह करया खबरदार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त हुक्म वरताईआ । हुक्मे अंदर यगै पुरुष खोलू कवाड़, नेत्र नैण जणाईआ । हुक्मे अंदर हाव गरीव पार उतार, उतर पूरब दिशा दए समझाईआ । हुक्मे अंदर नर नरायण खेल करे करतार, जोती जोत जोत रुशनाईआ । हुक्मे अंदर कपल मुन दए आधार, हुक्मे अंदर दत्ता त्रै कर पसार, भेव अभेद खुलाईआ । हुक्मे अंदर रिखव देव चरन भिखार, भिखवया इक्को इक्क वरताईआ । हुक्मे अंदर पिरथू धार, धरनी धवल मथन लाईआ । हुक्मे अंदर मतस होया खबरदार, जल जल रूप समाईआ । हुक्मे अंदर कछप चुक्के भार, मंधरा पिट्ट उठाईआ । हुक्मे अंदर धनन्तर मंगे दान, आपणी झोली डाहीआ । हुक्मे अंदर मोहणी होया बलवान, रूप अनूप धराईआ । हुक्मे अंदर हँसा गावे गाण, ब्रह्मा सुत माण मिटाईआ । हुक्मे अंदर हरनाकश कर कल्याण, नर सिँघ आपणी कल धराईआ । हुक्मे अंदर बावन हो प्रधान, बल राजे पार कराईआ । हुक्मे अंदर गज सार पावे आण, तन्दूआ तन्द कटाईआ । हुक्मे अंदर धूरू देवे ज्ञान, नर नरायण सेव कमाईआ । हुक्मे अंदर परस राम करे कल्याण, मेहर नजर उठाईआ । हुक्मे अंदर दसरथ बेता राम, रघवंस इक्क वडयाईआ । हुक्मे अंदर वेद व्यासा हो प्रधान, कवारी कन्या मिले वडयाईआ । हुक्मे अंदर काहना कृष्णा नौजवान, नाम बंसरी गिआ वजाईआ । हुक्मे अंदर मूसा दए ध्यान, मुसलसल इक्को धार वखाईआ । हुक्मे अंदर ईसा कर प्रधान, पिता पूत राह जणाईआ । हुक्मे अंदर मुहम्मद वेख निधान, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ । हुक्मे अंदर सच निशान, धुरदरगाही आप वखाईआ । हुक्मे अंदर आप अमाम, आपणा भेव जणाईआ । हुक्मे अंदर नौजवान, साची खेल कराईआ । हुक्मे अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ ।

हुक्मे अंदर नानक रंग, निरगुण पंज तत्त चढ़ाया । हुक्मे अंदर अञ्जण मरदंग, साचा ढोला इक्को गाया । हुक्मे अंदर अमरदास तरंग, अमर अमर बरसाया । हुक्मे अंदर राम दास मिल्या अनन्द, अनन्द इक्को इक्क वरताया । हुक्मे अंदर अरजण चढ़या चन्द, लोकमात रुशनाया । हुक्मे अंदर खेल हरिगोबिन्द, पुरख अकाल दए वखाया । हुक्मे अंदर हरिराए मंगे मंग, खाली झोली लए भराया । हुक्मे अंदर हरिकृष्ण बाल अवस्था जगत जहान कीता रंड, आप आपणा बिरध धराया । हुक्मे अंदर तेग बहादर गाया छन्द, सोहला इक्को इक्क दढ़ाया । हुक्मे अंदर गोबिन्द मिल्या सूरा सर्बंग, पुरख अकाल परदा लाहिआ । हुक्मे अंदर

वंडी वंड, साचा हुक्म आप वरताया। हुक्मे अंदर साचा छन्द, चार वेद ढोला गाया। हुक्मे अंदर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क रखाया।

हुक्मे अंदर वेद पुरान, पुरानी जीव जंत समझाईआ। हुक्मे अंदर शास्त्र सिमरत करे ध्यान, ध्यानी ध्यान ध्यान लगाईआ। हुक्मे अंदर गीता ज्ञान, अठू दस दए वडयाईआ। हुक्मे अंदर अञ्जील कुरान, हुक्मे अंदर बाईबल सिफ्त सालाहीआ। हुक्मे अंदर नानक शब्द गुण निधान, धुर संदेसा दए सुणाईआ। हुक्मे अंदर गोबिन्द मेला विच्च जहान, पुरख अकाला आप जणाईआ। हुक्मे अंदर देवणहारा धुर फरमाण, जुग जुग शनवाईआ। हुक्मे अंदर लेखा लिख लिख गए ब्यान, बिआना दरगाह साची गए टिकाईआ। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी होए कल्याण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रहण ना पाईआ। हुक्मे अंदर भगत करे परवान, नाम परवाना हत्थ फडाईआ। हुक्मे अंदर धरू प्रहिलाद करी कल्याण, अमरीक आपणी गोद बहाईआ। हुक्मे अंदर बल बावन दिता दान, दानी इक्को नजरी आईआ। हुक्मे अंदर जनक करी कल्याण, भेव अभेद खुलवाईआ। हुक्मे अंदर हरी चन्द दिता ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। हुक्मे अंदर बिदर दिता निशान, हुक्मे अंदर सुदामा आपणी गोद बहाईआ। हुक्मे अंदर जैदेव करे कल्याण, हुक्मे अंदर नामदेव वडयाईआ। हुक्मे अंदर धन्ना इक्क निशान, हुक्मे अंदर बेणी संग निभाईआ। हुक्मे अंदर तरलोचण करे ध्यान, हुक्मे अंदर सैण सेवा लाईआ। हुक्मे अंदर गनका करी पार, हुक्मे अंदर बधक दए वडयाईआ। हुक्मे अंदर रविदास चुमिआरा सेवा करे अपार, पाणां गंढे चाई चाईआ। हुक्मे अंदर गंगा धार जल धार, जल जल रूप समाईआ। हुक्मे अंदर कबीर जुलाहा सद् सच्चे दरबार, सच दुआरा दए वखाईआ। इक्को नजर आए करतार, दूजा रूप ना कोई जणाईआ। हुक्मे अंदर सच शिंगार, शहनशाह आपणा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म विच्च रक्खे वडयाईआ।

हुक्मे अंदर आदि अन्त, हुक्म हुक्मी खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर श्री भगवन्त, आपणा हुक्म आप जणाइंदा। हुक्मे अंदर नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। हुक्मे अंदर साचा मंत, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। हुक्मे अंदर विष्ण ब्रह्मा शिव खेल अगणत, हुक्मे अंदर करोड़ ततीसा धार वखाइंदा। हुक्मे अंदर गुर अवतार भगत, भगवान आपणा हुक्म मनाइंदा। हुक्मे अंदर पीर पैगम्बर बणाए बणत, हुक्मे अंदर आपणी खेल कराइंदा। हुक्मे अंदर साचे सन्त, साहिब सतिगुर आप उठाइंदा। हुक्मे अंदर गुरमुख लक्ख चुरासी विच्चों जीव जंत, जीव जंत आपणी कुल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर हुक्म वरताइंदा।

हुक्मे अंदर हुक्म डूँघा, नजर किसे ना आईआ। हुक्मे अंदर नानक बणया सूँघा, सचखण्ड दुआरे फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर प्रेम रस दा बणया चूँघा, रस इक्को इक्क झोली पाईआ। हुक्मे अंदर मारया हूँगा, हनोरा इक्को इक्क सुणाईआ। हुक्मे अंदर काया माटी वज्जे तुणका, तन्द सतार नाइ बहत्तर नाद जणाईआ। हुक्मे अंदर अमृत झिरना झिरे बूंदी

बूँदा, कँवल कँवल उलटाईआ। हुक्मे अंदर बणे गूंगा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। हुक्मे अंदर होवे ऊंधा, नैण सके ना कोई खुल्लाईआ। हुक्मे अंदर बणे ढूंडा, ढूंड वेखे सर्व लोकाईआ। हुक्मे अंदर वेखे चोटी चूंडा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म दए जणाईआ।

हुक्मे अंदर लिखे लेख, लेखा आपणा आप जणाईदा। हुक्मे अंदर धरे भेख, वेस अनेक वटाईदा। हुक्मे अंदर वसे देस, सचखण्ड साचे सोभा पाईदा। हुक्मे अंदर दए संदेस, गुर अवतार पीर पैगंबर पढाईदा। हुक्मे अंदर लख चुरासी वेखे खेत, गृह मन्दर खोज खुजाईदा। हुक्मे अंदर कर उतपत, सन्त भगत आपणी कार कमाईदा। हुक्मे अंदर खोले भेत, परदा आपणा ना कोई रखाईदा। हुक्मे अंदर करे वेंत, आप आपणी वंड वंडाईदा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाईदा।

हुक्मे अंदर बणे विचोला, शब्दी रूप धराईआ। हुक्मे अंदर बणे गोला, निरगुण सेव कमाईआ। हुक्मे अंदर गाए ढोला, सोहँ राग अलाईआ। हुक्मे अंदर बणे तोला, नाम कंडा हत्थ उठाईआ। हुक्मे अंदर बदले चोला, गुप्त रूप वटाईआ। हुक्मे अंदर रक्खे परदा उहला, नजर किसे ना आईआ। हुक्मे अंदर बणे मौला, मौला रूप आप हो जाईआ। हुक्मे अंदर करे कौला, गुर अवतार पीर पैगंबर बंधन पाईआ। हुक्मे अंदर पाए रौला, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान दए दृढाईआ। हुक्मे अंदर चुक्के डोला, लख चुरासी आपणे कंध उठाईआ। हुक्मे अंदर खेले होला, आपणा होला ना किसे समझाईआ। हुक्मे अंदर बणया रहे भोला, भाउ आपणे विच्च छुपाईआ। हुक्मे अंदर वेखे धरनी धरत धौला, हुक्मे अंदर जिमी असमान फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर बैठा रहे अडोला, डुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ।

हुक्मे अंदर धुर संदेसा, आदि पुरख सुणाईदा। हुक्मे अंदर ब्रह्मा विष्णु महेशा, इक्को राह चलाईदा। हुक्मे अंदर त्रै पंज दए आदेसा, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईदा। हुक्मे अंदर गुर अवतार जाणे भेखा, भेखी आपणी कार कमाईदा। हुक्मे अंदर लिखणहारा लेखा, कलम दवात ना कोई रखाईदा। हुक्मे अंदर बणे बणता, नित नित वेस वटाईदा। हुक्मे अंदर खेले खेडा, खिलाडी इक्को नजरी आईदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आप भुआईदा।

हुक्मे अंदर खेल अपारा, अपरंपर आप कराईआ। हुक्मे अंदर सो पुरख निरञ्जण बण वणजारा, साचा हट्ट चलाईआ। हुक्मे अंदर हरि पुरख निरञ्जण तोलणहारा, नाम कंडा हत्थ उठाईआ। हुक्मे अंदर एककार साची धार बोलणहारा, अनबोलत राग अलाईआ। हुक्मे अंदर आदि निरञ्जण कर उजिआरा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर अबिनाशी करता ला अखाडा, निरगुण आपणा वेस वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर श्री भगवान दए हुलारा,

सच हुलारा इक्क वरवाईआ । हुक्मे अंदर पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, पसर पसारी वेख वरवाईआ । हुक्मे अंदर ब्रह्म धारा, लक्ख चुरासी जीव वडयाईआ । हुक्मे अंदर पुरख नारा, नार पुरख गंठ पुआईआ । हुक्मे अंदर खेल नयारा, निरगुण निरवैर आप जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक्क वरताईआ ।

हुक्मे अंदर सचखण्ड, सचखण्ड निवासी आप बणाया । हुक्मे अंदर पाई वंड, थिर घर आपणा राह जणाया । हुक्मे अंदर गाया छन्द, शब्द मेरा भेव चुकाया । हुक्मे अंदर दिता अनन्द, अनन्द अनन्द विच्च जणाया । हुक्मे अंदर मुकाया पन्ध, बण पान्धी फेरा पाया । हुक्मे अंदर नार दुहागण होए रंड, हुक्मे अंदर कन्त सुहाग हंडाया । हुक्मे अंदर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को हुक्म दए वडिआया ।

हुक्मे अंदर आदि जुगादि, जुग जुग खेल कराईआ । हुक्मे अंदर हो विस्माद, विस्मादी रूप समाईआ । हुक्मे अंदर वजाए नाद, अनादी धुन शनवाईआ । हुक्मे अंदर लडाए लाड, निरगुण आपणी गोद बहाईआ । हुक्मे अंदर मेटे वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर जगत चौकडी जुग भुआईआ ।

हुक्मे अंदर अक्खर रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा । हुक्मे अंदर सेज पलंघ, आत्म परमात्म आप सुहाइंदा । हुक्मे अंदर नाद मरदंग, गुर अवतारां आप जणाइंदा । हुक्मे अंदर निझर झिरना अमृत देवे अनन्द, अनन्द आपणे विच्च प्रगटाइंदा । हुक्मे अंदर दूई द्वैती ढावे कंध, भाण्डा भरम भौ भन्नाइंदा । हुक्मे अंदर कूडी क्रिया करे खण्ड खण्ड, खड्ग खण्डा नाम चमकाइंदा । हुक्मे अंदर होवे बख्शंद, बखशिश इक्को इक्क वरवाईंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप समझाइंदा ।

हुक्मे अंदर धुर दरबारा, आदि पुरख लगाया । हुक्मे अंदर हो उजिआरा, सच सिंघासण सोभा पाया । हुक्मे अंदर शाहो भूप सिकदारा, शहनशाह आपणा नाउँ प्रगटाया । हुक्मे अंदर सीस जगदीस ताज सोहे अपारा, नजर किसे ना आया । हुक्मे अंदर पंचम बन्ने धारा, पंचम मुख मुख वडिआया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराया ।

हुक्मे अंदर लक्ख चुरासी नाता, खाणी चार चार वडयाईआ । हुक्मे अंदर पुरख बिधाता, बिध आपणे हत्थ रखाईआ । हुक्मे अंदर हो प्रकाशा, घर घर जोत जगाईआ । हुक्मे अंदर पवण सवासा, सास सास समाईआ । हुक्मे अंदर पावे रासा, गोपी काहन नचाईआ । हुक्मे अंदर होए उत्तम जाता, हुक्मे अंदर नीच नीच वडयाईआ । हुक्मे अंदर बणे कमलापाता, हुक्मे अंदर नारी रूप वरवाईआ । हुक्मे अंदर गाए आपणा साका, साहिब सतिगुर महिमा अकथ जणाईआ । हुक्मे अंदर पुच्छे वाता, जुग जुग फेरा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ ।

हुक्मे अंदर आदि जणाया, भुल्ल रहे ना राईआ। हुक्मे अंदर शब्द सति पढ़ाया, इक्को गुण वडयाईआ। हुक्मे अंदर विष्ण ब्रह्मा शिव मार्ग लाया, चरन कँवल सरनाईआ। हुक्मे अंदर त्रै पंज जोड़ जुड़ाया, पंच पचीस वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर निरगुण सरगुण वंड वंडाया, रकत बूंद करी कुड़माईआ। हुक्मे अंदर महल्ल अट्टल रुशनाया, काया सोभा पाईआ। हुक्मे अंदर पारब्रह्म ब्रह्म विच्च समाया, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। हुक्मे अंदर शब्द अनाद नाद धुन गाया, आत्मक राग सुणाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैगम्बर नाउँ धराया, वेखणहारा थाउँ थाईआ। हुक्मे अंदर सच संदेसा सदा सदा सद घलाया, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा जणाईआ।

हुक्म सुण शब्द दुलार, शब्द ध्यान लगाईआ। तूं वड्डा दाता बेऐब परवरदिगार, बेपरवाह तेरी शहनशाहीआ। कर किरपा मोहे दे आधार, इक्क तेरी मंग मंगाईआ। निरगुण रूप कर त्यार, महांबली तेरी शरनाईआ। पुरख अबिनाशी दे प्यार, सच सच समझाईआ। महांकाल कर खबरदार, तेरी सेव लगाईआ। महांकाल कहे प्रभ तूं दयाल, तेरे हत्थ वडयाईआ। शब्द तेरा बणया लाल, मैं शब्दी सेव कमाईआ। मेरा इक्को मन्न सवाल, दोए जोड़ पिआ सरनाईआ। जिंनां चिर मेरे नाल ना देवें काल दयाल, तेरी करे ना कोई वडयाईआ। जो उपजिआ सो होए बेहाल, अन्त कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वडयाईआ।

महांकाल तेरी पूरी आसा, हुक्मे आप कराइंदा। हुक्मे अंदर हुक्म भरवासा, हुक्मी धीर धराइंदा। महांकाल काल देवे साथा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धार धार विच्चों उपजाइंदा।

काल कहे प्रभ मेरी अरज्जोई, नेत्र नैणां नीर वहाया। मैनु मिले ना किते ढोई, थान थनंतर नजर कोई ना आया। तुध बिन सहारा देवे ना कोई, तेरे अग्गे वास्ता पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाया।

महांकाल काल करे सफ़ारश, बोल बोल जणाईआ। प्रभ तेरा लेखा जिंनां चिर ना आवे विच्च इबारत, हरफ़ हरफ़ ना कोई दृढ़ाईआ। तूं करनहारा घाड़त, अनुभव भेव ना कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ।

हुक्मे अंदर काल महांकाल, महिमा आपणे हत्थ रखाइंदा। हुक्मे अंदर हो दयाल, भिक्क भिच्छया झोली पाइंदा। हुक्मे अंदर खेल निराल, सो साहिब सतिगुर आप कमाइंदा। हुक्मे अंदर चित्रगुप्त करे बहाल, साचा लेखा हत्थ फड़ाइंदा। हुक्मे अंदर राए धर्म लए उठाल, धुर संदेसा राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुलाइंदा।

काल महाकाल राए धर्म चित्रगुप्त, चार रहे जणाईआ। तेरा खेल ना सके भुगत, भगवन तेरे हथ वडयाईआ। जिन्नां चिर दस्से ना आपणी जुगत, पंजवां हिस्सा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जो सभ दा मार्ग अखवाईआ। पुरख अबिनाशी दीना नाथ, दीन दयाल अखवाइंदा। चौहां देवां इक्को साथ, लाडी मौत समझाईंदा। लक्ख चुरासी करे खाज, खाता अन्त ना कोई भराईंदा। देवणहारा निरगुण दात, निरवैर आप समझाईंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुलाईंदा।

हुक्मे अंदर मौत लाडी, काल महाकाल करे कुडमाईआ। चित्रगुप्त खेल अपारी, हरि लेखा दए समझाईआ। वेख वखाए घडन भन्नणहारी, समरथ पुरख वड्डी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुलाईआ।

पंचम उठ करन सलाह, चरन ध्यान लगाया। हुक्मे अंदर मिल्या राह, हुक्मी हुक्म वड वडिआया। जुग चौकडी सेवा देवे ला, सिर आपणा हथ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फरमाणा हुक्म मनाया।

हुक्मे अंदर जुग चौकडी चार, कोटन काल काल बिताईआ। हुक्मे अंदर लेखा लिख लिख गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर मात जणाईआ। हुक्मे अंदर दीन मज्जब जात पात कर कर खबरदार, शब्द संदेसा गए अलाईआ। हुक्मे अंदर खडग खण्डा कटार, तीर कमान चिले गए चढ़ाईआ। हुक्मे अंदर जंगल जूहां विच्च हो खवार, हुक्मे अंदर बाले नीहां हेठ दबाईआ। हुक्मे अंदर वहे गंगा जल जल धार, हुक्मे अंदर अगनी थम्म तपाईआ। हुक्मे अंदर लेखा दस्स के गए अगम्म अपार, बेअन्त वड्डी वडयाईआ। हुक्मे अंदर वेद व्यासा मंगे भिखार, प्रभ अगगे झोली डाहीआ। हुक्मे अंदर पूत सपूता ब्रह्मण गौडा आए विच्च संसार, उच्चे टिल्ले परबत आसण लाईआ। हुक्मे अंदर मूसा डिगा मूह दे भार, नुरी नूर ना झल्लया जाईआ। हुक्मे अंदर ईसा मंगे पनाह परवरदिगार, पिता इक्को नजरी आईआ। हुक्मे अंदर मुहम्मद करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हुक्मे अंदर खेल करे परवरदिगार, सांझा यार वड्डी वडयाईआ। हुक्मे अंदर अमाम मैहन्दी लए अवतार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। हुक्मे अंदर नानक शब्दी धार, अगम्म अथाह पढ़ाईआ। हुक्मे अंदर एकंकार करतार, दूजा अंक ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हुक्मे इक्क शनवाईआ।

हुक्मे अंदर नानक निरगुण गाया, गहर गम्भीर वडिआइंदा। हुक्मे अंदर ध्यान लगाया, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नजर कोई ना आइंदा। हुक्मे अंदर राग अलाया, नाम मंतर सति अलाइंदा। हुक्मे अंदर मंग मंगाया, आपणी झोली अगगे डाहिंदा। कवण वेला प्रभ होए सहाया, निरगुण आपणा फेरा पाइंदा। जुग चौकडी पन्ध मुकाया, आप आपणा हुक्म मनाइंदा। हुक्मे अंदर गोबिन्द लेख लिखाया, लिखया लेख ना कोई मिटाइंदा। हुक्मे अंदर यारडा



सत्थर इक्क हंढाया, सूलां सेज आप बहाइन्दा । हुक्मे अंदर तिखी मुखी धार जणाया, हुक्मे अंदर साची सिक्खी आप अखवाइंदा । हुक्मे अंदर धुर दी चिठ्ठी लए पढाया, अनडिठ्ठी अक्खर ना कोई वडिआइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा ।

हुक्मे अंदर जुग चार, चौकड़ बंधन पाया । हुक्मे अंदर वेद चार, सिफ्ती सिफ्त सालाहिआ । हुक्मे अंदर चार कुण्ट उजिआर, उतर पूरब पच्छिम दक्खण सोभा पाया । हुक्मे अंदर चार दीवार, चारों कुण्ट घेर वखाया । हुक्मे अंदर चार वरन खबरदार, शतरी ब्रह्मण शूद्र वैश वखाया । हुक्मे अंदर चारे बाणी बोल जैकार, जैकारा परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग अलाया । हुक्मे अंदर चार यार, यारी यार नाल निभाया । हुक्मे अंदर पंच प्यार, हरि पंच दए बणाया । हुक्मे अंदर सुत दुलार, नीहां हेठ दबाया । हुक्मे अंदर कर पुकार, पुरख अकाल मनाया । हुक्मे अंदर सच बोल संसार, शब्दी इक्क जणाया । हुक्मे अंदर कल कल्की लै अवतार, निहकलंक नाउँ धराया । नानक कहे उतरे आपणी वार, जोती जोत रुशनाया । गोबिन्द कहे पुरख अकाल, ना कोई पिता ना कोई माया । नानक कहे साहिब दयाल, सतिगुर आपणा रंग रंगाया । गोबिन्द कहे वेखे लाल, लालन आपणे विच्च मिलाया । नानक कहे करे निहाल, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाया । गोबिन्द कहे मेरा हल्ल करे सवाल, लुकिआ कोई रहण ना पाया । नानक कहे साचा मन्दर दए वखाल, जिस घर बैठा आसण लाया । गोबिन्द कहे जल्वा जलाल, नूर इक्को इक्क रुशनाया । नानक कहे जिथ्थे कबीर जोलाहा करे जुमाल, नित नेत्र दर्शन पाया । गोबिन्द कहे ओथे मेरी आपे करे भाल, फड़ बाहों गले लगाया । नानक कहे सचखण्ड सच्ची धरमसाल, छ पर छन्न ना कोई सुहाया । गोबिन्द कहे इक्को इक्क करे प्रितपाल, मेहरवान आसण लाया । अन्तम देवे मैनुं दान, मेरी झोली मात भराया । मै बणया बाल अजाण, आपणा आप ना कोई रखाया । पिता मात कीते कुरबान, काया वंड ना कोई वंडाया । खड़ग खण्डा सच मिआन, नाम गातरे इक्क लगाया । नाता जुडिआ वाली दो जहान, दोए दोए आपणा राह वखाया । हुक्मे अंदर होए प्रधान, परम पुरख वेस वटाया । नौं सौ चुरानवें चौकड़ी सानूँ घल्लदा रिहा विच्च जहान, सच संदेसा आप सुणाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क वडिआया ।

हुक्मे अंदर गोबिन्द रंग, रंग रंगीला आप जणाईआ । हुक्मे अंदर डोर पतंग, गुडीया आप उडाईआ । हुक्मे अंदर सूरा सरबंग, शहनशाह अखवाईआ । हुक्मे अंदर नाम मरदंग, दो जहान शनवाईआ । हुक्मे अंदर लोआं पुरीआं लंघ, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ । हुक्मे अंदर आदि जुगादि जुग जुग सुणावे छन्द, साचा ढोला राग अलाईआ । हुक्मे अंदर सदा सदा सद बेड़ा बन्नु, आपणे कंध उठाईआ । हुक्मे अंदर कर प्रकाश सूरज चन्द, रव सस करे रुशनाईआ । हुक्मे अंदर बण जननी जन, सुत दुलारे गोद बहाईआ । हुक्मे अंदर घड़े लए भन्न, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाईआ । हुक्मे अंदर देवे डंन, बच्चा कोई रहण ना पाईआ । हुक्मे अंदर खेल कराए श्री भगवन, भगवन आपणी कल धराईआ । जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हुक्म मनाईआ ।

हुक्मे अंदर खेल निरँकार, निरगुण नानक गिआ जणाईआ । निहकलंक महांबली आवे अवतार, बल आपणा आप प्रगटाईआ । नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा करजा दए उतार, आप आपणी सेव कमाईआ । छत्ती जुग दी पावे सार, जो मेरी नजरी आईआ । सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात वखाईआ । दीन मजहब जो वंडदा रिहा संसार, गुर अवतार हुक्म मनाईआ । सभ दा लेखा दए निवार, अन्त कोई रहण ना पाईआ । सच सच लाए दरबार, दरवाजा इक्को इक्क खुलाईआ । जिस नूं कहन्दे गए बेअन्त बेअन्त बेअन्त सच्ची सरकार, सो शहनशाह आपणा फेरा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर खेल कराईआ ।

हुक्मे अंदर आए मात, गुर अवतार पीर पैगम्बर गए जणाईआ । हुक्मे अंदर वेखे खेल तमाश, खालक खलक रूप वटाईआ । हुक्मे अंदर सभ दी पूरी करे आस, निरासा कोई रहण ना पाईआ । हुक्मे अंदर कलिजुग त्रेता द्वापर सतिजुग दासी दास, निउँ निउँ सीस झुकाईआ । हुक्मे अंदर भगत भगवान रहे झाक, नैण नैण उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सच सच जणाईआ ।

एका हुक्म जणाया आप, आपणी दया कमाईआ । आदि जुगादी सच्चा बाप, पिता पुरख फेरा पाईआ । जिस दा करदे रहे जाप, सो करे खेल बेपरवाहीआ । चरन कँवल बंधाए नात, नाता इक्को इक्क जणाईआ । चार जुग दा वेखे खात, गुर अवतार पीर पैगम्बर जो बैठे वंड वंडाईआ । कलिजुग अन्तम खाली सभ दे करे हाथ, लहणा आपणे हथ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा इक्को नाम घलाईआ । सदा गिआ घर घर, श्री भगवान आप घलाया । दो जहान गए सड, धीरज धीर ना कोई रखाया । जिस ने घाड़न लिया घड़, सो साहिब रिहा बुलाया । निरगुण जामा आया धर, रूप रंग रेख ना कोई वखाया । भगत सुहेले साचे फड़, आपणा बंधन पाया । धुर दा ढोला आया पढ़, साचा सोहला राग अलाया । निरगुण हो के अंदर गिआ वड़, नजर किसे ना आया । जुग जन्म दे विछड़े फड़, आपणा मेल मिलाया । गोबिन्द बाले नीहां हेठ धर, महल्ल अट्टल इक्क रुशनाईआ । करया खेल अछल अछल, भेव किसे ना पाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर सभ समझाया ।

हुक्मे अंदर गए जाण, जाणी जाण रिहा जणाईआ । शब्दी सुत वड बलवान, बणया पान्धी राहीआ । विष्ण ब्रह्मा शिव कर ध्यान, भज्जे आए वाहो दाहीआ । गुर अवतार सर्ब पछताण, हरि का भेव कोई ना पाईआ । पीर पैगम्बर होए हैरान, नेत्र नैण ना सके कोई उठाईआ । कागज कलम शाही सर्ब शरमाण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ । शास्त्र सिमरत वेद परान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान जिस दा करदे रहे वखिआन, विआखिआ लोकमात समझाईआ । जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर लौंदे रहे ध्यान, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ ।

जिस नूं कहन्दे रहे श्री भगवान, निरगुण दाता सच्चा शहनशाहीआ। कलिजुग अन्तम बणया प्रधान, शाह पातशाह आप अखवाईआ। दर सद्द के लए ब्यान, आपणा लेखा दिउ वखाईआ। बगले लै के औणी अञ्जील कुरान, गीता हथ्य विच्च रिहा फड़ाईआ। अठारां पुरान लै निशान, चार वेद उँगली लाईआ। शब्द गुर इक्क बलवान, संदेसा इक्को इक्क जणाईआ। सच दुआरा खुल्लिआ आण, सचखण्ड मिले वडयाईआ। सति धर्म दा झुल्ले निशान, निरवैर पुरख आप झुलाईआ। उनी कत्तक दिवस महान, भगत दुआरे माण वडयाईआ। थल्ले सुते बाल नौजवान, सिँघ मनजीत जगदीश खुशी मनाईआ। गोबिन्द रत्त कछ्ठी महान, मस्तक टिक्का लाईआ। पाल सिँघ दा इक्क रुपय्या कर परवान, चौथी कुण्ट दिता दबाईआ। चौथी मंजल साहिब सुलतान, आपणा रंग रंगाईआ। जोधा सूरबीर हो बलवान, परदा दए उठाईआ। चढ़या महल्ल अट्टल मकान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। भगत झुलाए इक्क निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

हुक्मे अंदर मिल्या सद्दा, श्री भगवान आप जणाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर छड्डो हद्दां, दीन मज्जब रहण ना पाया। दर दुआरे औणा भज्जा, वार थित इक्क लिखाया। पहली चेत श्री भगवान सच सिँघासण बहि के सजा, सीस जगदीश ताज टिकाया। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग जिस ने परदा कुज्जा, अन्तम मुखड़ा दए वखाया। ना बाला ना कोई नहुा, बिरध जवान नजर ना आया। भज्जा फिरे बिन खाली हत्थां, पैरीं पन्ध ना कोई मुकाया। निरगुण जोत पुरख समरथ्था, भेव अभेदा रिहा खुल्लाय्या। पिछला लेखा गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रट्टा, कलिजुग अन्तम दए मुकाया। अग्गे लिख के देवे पट्टा, सच वसीअत इक्क जणाया। श्री भगवान दा इक्को पता, सति संदेसा दए सुणाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक्क मनाया। हुक्म सुणिआ धुर फरमाणा, विष्ण ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। हुक्म सुणिआ श्री भगवाना, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। हुक्म सुणिआ नौजवाना, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हुक्म सुणिआ शाह सुलताना, शहनशाह इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

सुण संदेसा आए चल, आपणा पन्ध मुकाया। अग्गे दस्स आपणी गल्ल, की राग अलाया। साडे नाल ना कर वल छल, गुर अवतार वास्ता पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाया।

गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो आ रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। भगत दुआरे चढ़या इक्को चन्द, दो जहान करे रुशनाईआ। पिछली औध सभ दी गई लंघ, अग्गे राह ना कोई वखाईआ। सभ दे बिआन करे कलम बन्द, लेखा आपणे विच्च छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पुच्छे थाउँ थाईआ।

सच सिँघासण बैठा आ, जिस दा ध्यान रहे लगाईआ। पुरख अबिनाशी फेरा पा, निहकलंक नूर धराईआ। गोबिन्द चेला नाल मिला, देवे माण वडयाईआ। चौथे घर बैठा आ, आप आपणा वेस वटाईआ। साचे भगत नाल मिला, इक्को अंक जणाईआ। लाल दुपट्टा रंग चढा, दरगाह साची नूर रुशनाईआ। लछमी खुली मींठी रही वरवा, पट्टी सीस ना कोई गुंदाईआ। विष्णू तेरा होया शैदा, भगवन विछोडा झल्लया ना जाईआ। निरगुण आदि जुगादि इक्क अदा, भरम भुलेखा सभ नूं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणा नूर धराईआ।

सच सिँघासण सोभावन्त, श्री भगवान सुहाया। सच दुआर बणाए बणत, भगत भगवान वडिआया। मेल मिलौणा नार कन्त, हरि सतिगुर रूप समझाया। गीत सुहागी साचा छन्द, इक्को ढोला गाया। आत्म परमात्म मणीआं मंत, मंतर नाम दृढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दुआरे आसण लाया।

आसण तेरा वेख अकाल, वज्जी सच वधाईआ। सचखण्ड बणी धरमसाल, जिस घर करे जोत रुशनाईआ। भगत वेखे तेरे लाल, इक्को रंग नजरी आईआ। निरगुण हो के बणया दलाल, बण सेवक सेव कमाईआ। मुरीदां पुच्छयां हाल, मुशर्द फेरा पाईआ। निरगुण तेरी अवल्लड़ी चाल, कोई समझ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे बैठे आईआ।

विष्णू कहे मेरा ना कोई ब्यान, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। ब्रह्मा कहे मेरा ना कोई ज्ञान, ब्रह्म मत ना कोई जणाइंदा। शंकर कहे मेरा ना कोई निशान, त्रसूल हत्थ सुटाइंदा। त्रैगुण कहे मेरा कोई ना माण, अभिमान नजर कोई ना आइंदा। पंज तत्त कहे मेरा ना कोई विधान, सगला संग ना कोई रखाइंदा। तेई अवतार कहण साडा ना कोई फरमाण, फरमाण तेरा नजरी आइंदा। पीर पैगम्बर कहण साडा ना कोई निशान, निशाना इक्को इक्क सुहाइंदा। नानक गोबिन्द कहण साडा ना कोई माण, इक्क तेरी ओट रखाइंदा। पुरख अकाल कहे मैं सभ दा जाणी जाण, आदि जुगादि जुग जुग भुल्ल कदे ना जाइंदा। आओ, बच्चे तुसीं मेरे नादान, सभ दा लेखा आप जणाइंदा। सभ नूं करना पए परवान, धुर फरमाणा आप अलाइंदा। इक्को मज्जहब इक्क ईमान, इष्ट इक्को इक्क वरवाइंदा। इक्को साहिब सतिगुर काहन, इक्को गोपी नाच नचाइंदा। इक्को रमय्या होए राम, इक्को बंस इक्को वंस धराइंदा। इक्को नूर पैगम्बर सच अमाम, पीर पैगम्बर सेवा लाइंदा। एका कलमा नबी रसूल जणाए कलाम, कायनात इक्क समाइंदा। इक्को सचखण्ड वसे मकान, इक्को लख चुरासी डेरा लाइंदा। इक्को नानक गोबिन्द देवे फरमाण, धुर संदेसा मात अलाइंदा। इक्को प्रगट होए वाली दो जहान, दोए दोए धारा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां आख सुणाइंदा।

गुर अवतार आओ नेडे, हरि सतिगुर आप बुलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद पिच्छे ला

के बैठे डेरे, चोरी चोरी नैण उठाईआ। अगगों दिसे सिँघ शेरे, हरि शब्दी रूप जणाईआ। चारों कुण्ट आ गए घेरे, बाहर निकल कोई ना जाईआ। सारे कहण चार जुग बथेरे, प्रभ कहे मेरी पलक जिंनां चिर ना लग्गे राईआ। पिछले सारे छड्डु दिउ झेडे, घर साचे मता पकाईआ। उच्चे मन्दर चढ़ के प्रभ ने सभ दे ढौणे डेरे, बणया कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर खेल वरताईआ। तेई अवतार कहण साडा तुटा नाता, पिछला संग रिहा ना राईआ। तेरा हुक्म साहिब समराथा, सदा सदा सद झोली पाईआ। तूं होएं सहाई नाथ अनाथां, दुक्वीयां दर्द दर्द वंडाईआ। गरीब निमाणयां पूरा करें घाटा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। ऊँचां नीचां देवें अमृत बाटा, रस इक्को इक्क वखाईआ। असीं रल के बहीए इक्क जमाता, पट्टी अवर ना कोई पढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप कराईआ।

ईसा मूसा कहण तूं मददगार, तेरी उट तकाईआ। परवरदिगार सांझा यार, लाशरीक तेरी शहनशाहीआ। हक हकीकत वेख विचार, बेनजीर फेरा पाईआ। तेरी ताअरीफ़ कर कर गए हार, तुआरफ़ तेरा ना कोई कराईआ। होए ज़ईफ़ ना पावे कोई सार, फड बाहों ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हत्थ वडयाईआ।

परवरदिगार कहे सुणो बरखरदार, सच संदेसा इक्क अलाईआ। दरगाह साची खेल अपार, धुरदरगाही आप कराईआ। मुहम्मद तेरा हौला करे भार, अहमद देवे तेरी सरनाईआ। कीता कौल पहली वार, धरत धवल वेख वखाईआ। मौला रूप हो निरँकार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। चौदां तबक खोलू कवाड़, मन्दर इक्क वडयाईआ। सदी चौधवीं पावे सार, चौदस चौदस चन्द रुशनाईआ। करे खेल आप गमखार, गमगीन रूप ना कोई वखाईआ। क्यों नेत्र होए शरमसार, अक्ख अक्ख ना कोई मिलाईआ। मुहम्मद दोए जोड कर निमस्कार, ढह पिआ शरनाईआ। अल्ला राणी वेख हाल, खुलूडे केस दए दुहाईआ। मेरा कोई ना लम्भा साथ, साथी नज़र कोई ना आईआ। पार पत्तण ना मिल्या घाट, अद्धवाटे डेरा लाईआ। मेरा सुबर गिआ पाट, मेरा सल्लू ना कोई सुहाईआ। मेरी नक्क नत्थ ना कोई बलाक, कंगण नज़र कोई ना आईआ। बेपरवाह परवरदिगार इक्क वार लैणा झाक, तेरी झाकी मोहे भाईआ। तेरी धूढी मंगौं खाक, मस्तक टिक्का लाईआ। मेरा चौदां लोकां चौदां तबकां तुटे साक, नाता कोई रहण ना पाईआ। मैनुं नज़री आए इक्को पाक, पाकीज़गी आपणी दए वखाईआ। सच प्याला देवे आबे हयात, आबरू मेरी लए बचाईआ। चरन घोडे देवे रकाब, असव शाहसवारा फेरा पाईआ। पहली चेत्र सच महल्ले चढ़ के मुख तों लाह देवे नकाब, परदा कोई रहण ना पाईआ। ऊँची कूक सुणाए बांग, हिजर विच्च आपणा राग अलाईआ। अमाम मैहन्दी धरया सांग, सवांगी आपणा रूप वटाईआ। लैहन्दी दिशा चढ़े कांग, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चारों कुण्ट पै जाए धांग, प्रभ प्रगट होया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संदेसा इक्को हुक्म मनाईआ।

पीर पैगम्बर खाली हत्थ, दुआरे कूकण देण दुहाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रक्ख, प्रभ तेरे हत्थ वडयाईआ। रसना जिह्वा आए मात दस्स, तेरा कलमा मात पढाईआ। दीन मजब जात पात आए फस, शरअ शरीअत बंधन पाईआ। अन्तम फ़तवा लाया ना कोई सके नव्व, राह नज़र कोई ना आईआ। चरन कँवल सरनाई गए ढट्ट, आपणा माण गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुल्लुआईआ। नानक गोबिन्द कहे तेरी ओट, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ कहु दे खोट, सृष्टी तेरी तेरी झोली पाईआ। तेरा नूर निर्मल जोत, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे हत्थ तेरी शहनशाहीआ।

नानक कहे तेरा सच्चा भाणा, हुक्म इक्को नज़री आइंदा। शाह पातशाह बेऐब राणा, रय्यत आपणी वेख वखाइंदा। बेऐब तेरा गाणा, नाद अनादी आप वजाइंदा। तेरा मन्दर इक्क सुहाना, महल्ल अट्टल रुशनाइंदा। तेरे दर भगत परवाना, भगवन तेरा भेव कोई ना पाइंदा। मैं दस्स के गिआ निशाना, कलिजुग अन्तम निहकलंक फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव जणाइंदा।

गोबिन्द कहे मैं ना मन्नां, प्रभ सच सच जणाया। जिनां चिर ना चाढ़ें साचा चन्नां, सतिजुग राह वखाया। गुरमुख घर घर ना बणाएं धन्ना, तेरी करां ना कोई वडिआया। नामे वांग औनां चिर ना मन्नां, भगत दुआरे भोग लगाया। काया कटोरी साचा छन्ना, हरिजन साचे रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच वृढाया।

श्री भगवान कहे गोबिन्द सुत्त, दुलारे तेरी वडयाईआ। अन्त सुहावां रुत्त, रुत्तड़ी रुत्त महकाईआ। कलिजुग क्रिया कहुं कुट्ट, गुरमुखां घर रहण ना पाईआ। रातीं सुत्यां सभ नू लवां पुच्छ, परदा उहला आप उठाईआ। अंदर वड जां नीवां हो के झुक, माण ताण ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

गोबिन्द कहे जे करें मनज़ूर, मेरी दोए जोड दर बन्दना। जन भगतां आसा मनसा पूर, आवण जावण छुट्टे फंदना। एका बख्श जोती नूर, गाउँणा चुक्के बत्ती दन्दना। नज़र आ जाहर ज़हूर, काया अन्धेरी डूँधी खड्डणा। भाण्डे खाली कर भरपूर, तेरा साहिब कुछ नहीं घटना। जुग चौकड़ी बैठा रिहों दूर, कलिजुग आ के जन भगतां मल वटना। आपणा राग सुणा तुरया तूर, रस इक्को इक्क चट्टणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वेखणहारा आपणी घटना।

गोबिन्द साची दया कमावांगा। पहलों इक्को हुक्म मनावांगा। विष्ण ब्रह्मा शिव माण गवावांगा। करोड तेतीसा अन्त करावांगा। अवतार पैगम्बर दर बहावांगा। गुर गुर लेखा

झोली पावांगा। भगत आपणे रंग रंगावांगा। साचा वक्त आप सुहावांगा। नाम शक्त इक्क प्रगटावांगा। सृष्ट सबाई जगत फड़ फड़ राहे पावांगा। दीन मज़हब जो पई अटक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूई द्वैती पन्ध मुकावषांगा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण असीं मन्नांगे, प्रभ तेरा दर्शन नैण। अग्गे फेर कदी ना हल्लांगे, सदा तेरा भाणा सहण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर इक्को इक्क मंगणगे।

वर इक्को मंग मंगावांगे। पिछली रीती सर्ब तजावांगे। आपणी बीती तैनुं सुणावांगे। तेरी वेख खेल अनडीठी, खुशी हो जावांगे। मन्दर मसीती फेरा फेर मूल ना पावांगे। गुर दर मन्दर नेत्र नैण ना कोई खुलावांगे। तेरे चरनां बहि के तेरा ढोला गावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पिछला पन्ध मुकावांगे।

पिछला पन्ध मुककया अज्ज, बाकी कोई रहण ना पाईआ। सच दुआरे बैठे सज, जिस घर वज्जे इक्क वधाईआ। पुरख अकाल परदा लैणा कज्ज, देणी सरन सरनाईआ। मक्का काअबा कोई ना रैह जाए हज्ज, हुजरा तेरा इक्को इक्क नजरी आईआ। पिछली रीती पार होई हद्द, हद्द वंड ना कोई वंडाईआ। तूं हुक्मे अंदर लए सद, साडी चली ना कोई चतुराईआ। असीं बाले नट्टे तेरी यद, तेरी सार कोई ना आईआ। दरोही खुदा दी पिच्छे ना जाई छड्ड, खुदा तेरी इक्क सरनाईआ। गोबिन्द नालों करीं ना अड्ड, गोबिन्द वेखे चाई चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ।

गोबिन्द कहे तूं साहिब सूरा, तेरे हत्थ वडयाईआ। मेरा कौल करदे पूरा, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जे बचन कीता अधूरा, तेरी चले ना कोई शहनशाहीआ। मैं सूरबीर जवान कोई नहीं पहनया चूड़ा, कच्ची वंग ना कोई छुहाईआ। तेरा रंग चढ़ाया गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। सर्ब कला तूं भरपूरा, तेरे पुत्र विच्च तेरी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

आस तेरी रक्ख के आए, पीर पैगम्बर गुर अवतार। भगत दुआरे पहुंचे थाएं, थान थनंतर अगम्म अपार। साहिब बैठा आसण लाए, निरगुण नूर जोत उजिआर। सच सिंघासण सोभा पाए, शाहो भूप सिकदार। धुर फरमाणा हुक्म मनाए, ना कोई मेटे मेटणहार। कूड़ी क्रिया पन्ध चुकाए, कलिजुग करे खवार। सतिजुग साचा राह वखाए, भगतां करे आधार। निक्के बाले अग्गे लाए, वड्डयां दए वखाल। लक्ख चुरासी फंद कटाए, राए धर्म ना पाए जाल। लाडी मौत नेड ना आए, चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल। साचे मन्दर लए बहाए, सचखण्ड सच्ची धरमसाल। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगल गाए, विष्ण ब्रह्मा शिव वजाए ताल। नारद मुन नाच नचाए, चारों कुण्ट पए धमाल। पुरख अबिनाशी खेल वखाए,

खालक खलक कर परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणे रंग रंगाए।

गुर अवतार पीर पैगम्बर हो हो इक्टे, इक्को मता पकाईआ। पहली चेत्र प्रभ दे सुणदे रहे पते, लोकमात दए वडयाईआ। साची रुत्ती आए नट्टे, आपणा पन्ध मुकाईआ। सिर ते बद्धे आपणे गट्टे, पुस्तक पोथीआं नाल मिलाईआ। वेखणहारा तत्त अट्टे, अट्ट दस खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी इक्क वधाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण प्रभू तेरे बच्चे, बचपन तेरी गोद सुहाईआ। तेरे हुक्मे अंदर ढोले गाए सच्चे, तेरी करी पढाईआ। कलिजुग अन्तम पता लग्गा असीं फिर वी रह गए कच्चे, तेरा अन्त कोई ना आईआ। तूं थाउँ थाईं फड रक्खे, भेव अभेद सके ना कोई खुलाईआ। दीन मजहूबां विच्च फसे, लोकमात लडाईआ। तेरे करदे आए रट्टे, रट्टा सक्कया ना कोई मुकाईआ। आपणे तन रुलाए विच्च घट्टे, खाकी खाक मिलाईआ। अन्तम मसाण गोर चढ के गए फट्टे, कुडयां कंध उटाईआ। साडी साची वस्त तेरे रंग रत्ते, रती रंग इक्क रंगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरे देंदे रहे पते, सच निशान जणाईआ। कलिजुग अन्तम तूं सारे कीते इक्टे, इक्को हुक्म मनाईआ। तेरी सिल अलूणी कोई ना चट्टे, अग्गे सीस ना कोई उटाईआ। जीवां वास्तो असीं बणे रहे हट्टे कट्टे, भय भौ मात वखाईआ। तेरे अग्गे माण अभिमान कोई ना रक्खे, होए निमाणे सीस झुकाईआ। असीं लक्खों होए कक्खे, कीमत कोई ना पाईआ। तेरी दुनियां तेरे नाल वसे, घर घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शाह पातशाह सच्चे शहनशाहीआ।

गुर अवतारो पीर पैगम्बरो लिखो आपणे हत्थ, पिछला लेख चुकाया। तुसीं गौंदे रहे जस, ढोला राग अलाया। इक्क दूजे नूं मिलो हस्स हस्स, दुःख दर्द रहे ना राया। मुहम्मद दूरों आया नट्टु, गोबिन्द चरन ध्यान लगाया। गोबिन्द कहे कर बस, तेरा नैण क्योँ शरमाया। मैं खुशी खुशी बाले नीहां हेठां दिते रक्ख, फतवा किसे उत्ते नहीं लाया। ना तेरा ना मेरा एथे कोई चले ना वस, हुक्मे अंदर सर्व भुआया। तेरी सदी चौधवीं दी दस्स मुकी गत्थ, भेव अभेद खुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फरमाणा हुक्म जणाया।

मुहम्मद कहे सुण गोबिन्द मीत, तेरे नाल मेरी वडयाईआ। तूं पंच चलाई रीत, मैं चार करी कुडमाईआ। मैं दस्सया विच्च मसीत, तूं गुरूदवार समझाईआ। जे कोई पुच्छे सच फेर की दस्सीए साहिब अनडीठ, नजर किसे ना आईआ। जिंनां चिर ना दस्से आपणी आप प्रीत, किसे दुआरिउँ फड सके ना कोई राईआ। मेरी सदी चौधवीं रही बीत, सोलां मग्घर वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा वखाईआ।



मेरा लेखा सोलां साल बाकी, मुहम्मद रिहा जणाईआ। श्री भगवान चढ़ के आया राकी, शाहसवारा फेरा पाईआ। जे वेखां मार झाती, मेरा नैण शरमाईआ। चारों कुण्ट बन्दा खाकी, साचा नाम गिआ भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

बेपरवाह दा खेल अब्बला, जुग जुग आप कराइंदा। निरगुण हो के वसे इकल्ला, सरगुण आपणी जोत जगाइंदा। धाम सुहाए उच्च अट्टला, महल्ल अट्टल रुशनाइंदा। हुक्मे अंदर संदेश घल्ला, नर नरेश उठाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार इक्क दूजे दा फड़ो पल्ला, हुक्मी हुक्म सुणाइंदा। इक्को वाहिगुरू इक्को अल्ला, इक्को राम रहीम दरसाइंदा। सभ नाल करदा रिहा अछल अछल्ला, वल छल वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुलाईंदा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण असीं गावांगे। हरि जू तेरा नाम धिआवांगे। पिछला कलमा सर्ब भुलावांगे। आलम उलमा आप जणावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सेव कमावांगे।

दर तेरे सेव कमौणगे। सोहँ ढोला गौणगे। पिछला लेखा सर्ब मुकौणगे। पहली चेत्र गंढ बंधौणगे। भगत भगवान इक्को रंग वखौणगे। महल्ल अट्टल सर्ब रुशनौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे चरन ध्यान लगौणगे।

तेरे चरन ध्यान लगावांगे। नित तेरा नाम धिआवांगे। आपणी कीती तेरी झोली पावांगे। तेरा कीता आपणे सिर रखावांगे। मन्दर मसीतां फेर कदे ना जावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच महल्ले बहि के शुकर मनावांगे।

सच महल्ले सभ ने बहणा, श्री भगवान आप जणाईआ। पहली चेत्र मुके लहणा, बाकी अवर ना कोई जणाईआ। अन्तम देण देणा, शाह पातशाह दए जणाईआ। चारों कुण्ट कोई ना रहणा साक सैणा, सज्जण रूप ना कोई वरवाईआ। उच्चा टिल्ला परबत ढैहणा, ढाह ढाह खाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बरां इक्को नाम दृढ़ाईआ।

इक्को नाम साचा ढोला, सो पुरख निरञ्जण आप जणाइंदा। शाह पातशाह बण विचोला, भगत भगवान आप उठाइंदा। साढे तिन्न हत्थ दा लै के डोला, चौथे घर रंग रंगाइंदा। सति धर्म दा खेले होला, दूजा भेव ना कोई जणाइंदा। निरगुण सोहे सरगुण

बदलिआ चोला, चोला चोली नाल बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पिछला खाता आपणे विच्च छुपाइंदा।

पिछला खाता मुक्कणा मात, अन्त रहण ना पाईआ। अगगे सतिजुग चले गाथ, जीव जंत पढाईआ। भगत भगवन्त बणया साथ, दूजा संग ना कोई रखाईआ। महल्ल अट्टल चढ के देवे दात, दाता दानी होए सहाईआ। सारे बण गए इक्क जमात, अलफ ये ना कोई वंड वंडाईआ। ऊडा ओअंकार कर प्रकाश, एका इक्को इक्क जणाईआ। ऐडा अक्ख खोलू वेख खेल तमाश, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ईडी इष्ट कहे मैं होई दास, बण सेवक सेव कमाईआ। सस्सा कहे मेरा कम्म खास, चौथा अक्खर चौथी मंजल चार कुण्ट आपणा घेरा पाईआ। हाहा कहे मैं हँ ब्रह्म कदे ना होया विनास, लक्ख चुरासी वड वड सेव कमाईआ। अन्त गोबिन्द दिता साथ, आपणी गंढ पुआई घर साचे वज्जी वधाईआ। गुरसिख कोई ना रहे निरास, आसा सभ दी पूर कराईआ। कट्टणहारा बन्द खलास, बन्दीखाना दए तुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां दे के साचा वर, पूरब लहणा झोली पाईआ।

भगतो तुहाढा दिली दरबारा, धुर दरबारी वेख वखाइंदा। महल्ल अट्टल उच्च मनारा, रोशन इक्को इक्क कराइंदा। प्रगट होए गुप्त जाहरा, जाहरी कल वखाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार अलाइंदा। जन्म मरन दा गेड निवारा, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख अगगे रहे ना कवारा, श्री भगवान आप परनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे घर सोभा पाइंदा।

चौथे घर लंघ मेहरबान, मेहर नजर उठाईआ। भगतां दे के आपणा दान, वस्त अगम्म झोली पाईआ। दूर दुराडे कर परवान, नेरन नेरे वेख वखाईआ। सतिजुग दा साचा सच विधान, पंचम दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पहली चेत नेतन नेत, नित नित आपणा राह जणाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्णू भगवान, आदि जुगादी नौजवान, जुग चौकड़ी वेख वखाण, भेव अभेदा आप खुलाईआ।

भेव अभेदा खोलूण आया, सो पुरख निरञ्जण वड वडयाईआ। वीह सौ वीह रुतडी रुत सुहाया, महक महक महक रुशनाईआ। अबिनाशी अचुत खेल रचाया, वेखे थाउँ थाईआ। भगत भगवान गोदी चुक्क बाहर कढाया, लक्ख चुरासी रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त अन्तम धार, लेखा जाण गुरू अवतार, अगगे समझाए जगत संसार, शाह सुलतानां दए आधार, शब्द संदेस नर नरेश इक्को इक्क जणाईआ।

\* राष्ट्रपति डाक्टर राधा कृष्ण नूं शब्द भेजया  
(मनार दे उप्पर चौथी मंजल ते चढ़ के) \*

शाह पातशाह सीस रक्ख के ताज, शाह सुलतानां रिहा जगाईआ। दो जहानां इक्क आवाज, हरि शब्द नाद शनवाईआ। राष्ट्रपति खोल जाग, नेत्र नैण खुलाईआ। राजिंदर प्रशाद दा तुटा साक, नाता तेरे नाल जुड़ाईआ। तूं ना भुल्लणा भविख्त वाक, भुल्लयां राह नजर कोई ना आईआ। प्रभ वेखणहारा खेल तमाश, खालक खलक लए उठाईआ। जो दिसे सो होवे विनास, बच्चा कोई रहण ना पाईआ। जे बचण दी रक्खो आस, पंचम जेठ घर लउ बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा रिहा सुणाईआ।

राष्ट्रपति कर ध्यान, श्री भगवान आप जणाईदा। पिछला बणया रिहा अणजाण, भेव कोई ना पाईदा। वीह सौ वीह बिक्रमी बणया आप प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईदा। नौं खण्ड पृथ्वी दीप सत्त वेखे मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईदा। इक्क सौ इक्क दे ज्ञान, जगत वंड वंड समझाईदा। पंदरां कत्तक सर्ब पछताण, राए धर्म नजरी आईदा। करे खेल गुण निधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा आप पुचाईदा।

धुर संदेसा निहकलंक, शाह सुलताना रिहा जणाईआ। धुरदरगाही वज्जे डंक, शब्द शब्द शनवाईआ। जिस बणाई तुहाड़ी बणत, सो आया बेपरवाहीआ। जिस ने वेखणा सभ दा अन्त, लक्ख चुरासी खेह उडाईआ। जिस तोड़ना गढ़ हउमे हंगत, माण अभिमान गवाईआ। जिस ने इक्क बणौणी साची संगत, चार वरन जड़ उखड़ाईआ। जिस ने राजे राणे करने नंगत, घर घर अलख जगाईआ। जिस ने शाह सुलतान करने मंगत, भिखवया मंगण वाहो दाहीआ। जिस दा भेव ना जाणे कोई पंडत, पत्री वाच ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा रिहा सुणाईआ।

शब्द संदेसा देवे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईदा। पहली वीह सौ अठारां बिक्रमी खिच के दे के गिआ विच्चों मिआन, तलवार तिरवी धार रखाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी विच्च भुल्ल ना जाणा बण नादान, जगत विद्या कम्म किसे ना आईआ। फ़लासफ़र बण के ना सके पछाण, अन्तर आत्मा ध्यान ना कोई लगाईआ। प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, दो जहानां रिहा जणाईआ। सभ दा लेखा लिखणा विच्च जहान, बचया कोई रहण ना पाईआ। सम्मत वीह सौ इकी नवां बणाए आप विधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा इक्क सुणाईआ।

राष्ट्रपति ना जाणा भुल्ल, अभुल्ल आप जणाईदा। विद्या विच्च ना जाणा रुल, भेव अभेद खुलाईदा। अन्तम कोई ना पैणा मुल, कौडी कौडी हट्ट विकाईदा। सच दुआरा इक्को जाणा खुल्ल, श्री भगवान आप खुलाईदा। भगत बगीचा जाणा फुल्ल, फुलवाड़ी

रुतडी आप महकाइंदा । शाह सुलतानां बूटा जाणा हँल्ल, फल मात ना कोई लगाइंदा ।  
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहुडा इक्क सुणाइंदा ।

सच सुनेहुडा दे दे इक्क सौ इक्क देश, देश दसन्तर आप जणाईआ । प्रगट होया  
नर नरेश, निहकलंक रूप वटाईआ । सभ नूं दस्स दे मेला मिल्या नाल दसमेस, गोबि-  
द इक्को नजरी आईआ । अमाम अमामां खेले खेल, परवरदिगार हक गोसाईआ । ईसा  
मूसा खोले भेत, पैगम्बर आया सच्चा माहीआ । जिस रुत सुहाई पहली चेत, चेतन्न सभ  
नूं रिहा कराईआ । पंचम जेठ घर सद के पुच्छो अगला भेत, नहीं ते खेह देवे उडाईआ ।  
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण  
नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, इक्क सौ इक्क देशां विच्च वाडे शैतान, धुर संदेसा  
हुक्म सुणाईआ ।

जगत शैतान चढ़या चाअ, अद्धी रात घुम्मर पाईआ । श्री भगवान हुक्म दिता सुणा,  
मैं जावां चाई चाईआ । इक्क सौ इक्क राज्यां देवां उठा, जो प्रधान बण के बैठे सेव कमाईआ ।  
अंदरे अंदर अग्ग दिआं लगा, ना सके कोई बुझाईआ । भिन्नडी रैण कहे मेरा नैण रिहा  
शरमा, ओहले ओहले जावीं वाहो दाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा  
कर, तेरी सेवा इक्क लगाईआ ।

शैतान कहे मोहे चढ़या रंग, प्रभ साचे रंग रंगाया । इक्क सौ इक्क इक्क इक्क  
नाल करावां जंग, अन्तम जीरो रूप वखाया । समुंद सागर जावां लंघ, उच्चा टिल्ला  
पहाडी सके ना कोई अटकाया । दहि दिशा देवां दंड, चार कुण्ट कुण्ट हिलाया । जोती  
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क जणाया ।

साचा हुक्म सुणया एक, इक्को ओट तकाईआ । पारब्रह्म प्रभ तेरी टेक, दूजी अवर  
ना कोई सरनाईआ । घर घर जा के लवां वेख, आपणा फेरा पाईआ । बचया रहे ना  
कोई मुलां शेख, शेखी सभ दी दिआं मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी  
किरपा कर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ ।

मैं छेती छेती जावांगा । हरि जू तेरी सेव कमावांगा । अंदर वड के सभ उठावांगा ।  
क्रोध हँकार दी अगनी लावांगा । कूड कुडिआर दा बल धरावांगा । मूरख मूड गवार बणावांगा ।  
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा हुक्म सति  
कमावांगा ।

तेरा हुक्म सच कमाऊंगा । बण सेवक सेव कमाऊंगा । घर घर अलख जगाऊंगा ।  
शाह सुलतान उठाऊंगा । इक्क दूजे नाल भडाऊंगा । विच्च मैदान लिआऊंगा । तेरे घर  
दा सच्चा शैतान फेर अखवाऊंगा । जिमी असमान धूआंधार कराऊंगा । तेरे गुरमुखवां वेख

नैण शरमाऊंगा। फड धूढी टिक्का मस्तक लाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मिल्या साचा वर, दुजा डर ना कोई रखाऊंगा।

श्री भगवान कहे तेरा माण, हरि निरगुण आप रखाइंदा। तूं प्रगट हो विच्च जहान, तेरा वेला अन्तम आइंदा। महीने अठु तेरा मुकाम, फेर रूप ना कोई वखाइंदा। भगतां मिले अग्गे भगवान, भगवन इक्को नजरी आइंदा। सोहँ ढोला सारे गाण, तूं मेरा मैं तेरा दूजा रूप ना कोई धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा साचा सगन मनाइंदा।

तेरे सगनां विच्च वज्जे ढोल, डग्गा आपणा ताल वखाईआ। सुत्ता रहे ना कोई अनभोल, आलस निंदरा सर्व मिटाईआ। इक्की सिख रहण अडोल, आपणा बल धराईआ। बाकी नाल करन चोल, प्रेम प्रीत वधाईआ। आपणा सद ढोला गाइण बोल, ऊँची कूक सुणाईआ। नच्चण कुदण टप्पण खेलण होल, प्रभ हौला भार दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत दुआर वजाए ढोल, मरदंग इक्को इक्क जणाईआ।

जिस वेले ढोल वज्जेगा। शैतान उठ के एथों भज्जेगा। इक्क सौ इक्क जगत दुआरे जा के सजेगा। शाह सुल्तानां अंदरों कढेगा। चोटी सभ दी फड के वढेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा आपणे हत्थ रक्खेगा।

बीस बीसा कहे मैं गिआ आ, आपणा पन्ध मुकाईआ। भगतां भगवान दिता मिला, भगत भगवान नाल रलाईआ। इक्क नव देंदा रिहा सलाह, धुर संदेश जणाईआ। उठो वेखो साचा राह, रहबर आया इक्को माहीआ। जिस दा रूप नूरी खुदा, जल्वा जहूर विच्च वखाईआ। मुरीद मुशर्द लए जगा, नेत्र पलक अक्ख बदलाईआ। सारे रल के फड लउ बांह, आपणा हत्थ वधाईआ। जुग जुग देवणहारा ठंडी छाँ, बण बरदा सेव कमाईआ। मेरी रुत्त सुहाए आ, मेहरवान फेरा पाईआ। जिस इस दा लिआ नां, तिस आपणे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा रिहा समझाईआ।

बीस बीसा कहे शाबाश, हरि भगत तेरी वडयाईआ। तुहाढे पिच्छे मेरी पूरी होई आस, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। गोबिन्द दी सच्ची शाख, गुरमुख नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

बीस बीसा कहे मैं बडा मलँग, आपणा नाच नचाईआ। भगत दुआरा वेखां लंघ, जिस घर वज्जे वधाईआ। श्री भगवान सच महल्ले आपे लंघ, महल्ल अट्टल करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथी मंजल इक्क पलंघ सुहाईआ।

चौथी मंजल चौथा पद, गुरमुख पहली वंड वंडाईंदा । जोग अभिआस करना सभ ने देणा छड्डु, सोहँ ढोला इक्क पढाईंदा । पार कराए आप हद्द, गुरमुखां पन्ध आप मुकाईंदा । ऊँच नीच राओ रंक राज राजान शाह सुलतान सुहाए आपणी यद, बंस इक्को इक्क सुहाईंदा । अग्गे किसे नूं पिच्छे ना जाए छड्डु, जिस जोडिआ तिस पार कराईंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा वडिआईंदा ।

बीस बीसा कहे मेरा वड्डा भाग, वडभागी हरि पाया । बिन तेल बाती जगिआ चिराग, सच महल्ले आप जगाया । मेरा दुरमत मैल धोता दाग, अम्मी सीर पिआया । मेरी दुखी दी सुणी गई फ़रयाद, दीनां नाथ दर्द वंडण आया । पार लंघाए आपणे घाट, अद्धविचकार ना कोई रखाया । सेज सुहञ्जणी वखाए खाट, खटीआ इक्को इक्क दरसाया । मेल मिलाया कमलापात, घर सज्जण वेखण आया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसे दए वधाया ।

बीस बीसा कहे मेरी सच निशानी, श्री भगवान झोली पाईआ । जन भगतां देवे धुर दी बाणी, वस्त अमोलक आप वरताईआ । लेखा चुकाए चार खाणी, चारों कुण्ट फेरा पाईआ । शब्दी शब्द मिलावां साचे हाणी, सुरती मूरत अकाल मनाईआ । सरोवर आत्म निझर पाणी, ठंडा रस वखाईआ । अग्गे सुणाए अकथ्य कहाणी, पिछली करे ना कोई पढाईआ । कर किरपा दिता पद निरबाणी, चौथे घर वसाईआ । लक्ख चुरासी विच्च ना रहे कोई प्राणी, जिस प्राणपत लिआ धिआईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसा रंग रंगाईआ ।

बीस बीसा कहे मेरा वस्सया खेड़ा, हरि खिडकी आप खुलाईआ । उत्ते चढ़ के लाया डेरा, पान्धी पन्ध मुकाईआ । मेहरवान करी आपणी मेहरा, मेहर नजर उठाईआ । भगतां करे अन्त नबेड़ा, लुकिआ कोई रहण ना पाईआ । जन्म जन्म दा चुक्के गेड़ा, गेड़ा गेड़े विच्च बदलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, पहली चेत्र जिस नूं दिता नाम दान, अन्त जन्म मरन विच्च ना आईआ ।

जन्म मरन प्रभ कट्टण आया, कट्टणहार गोपाला । साचा मार्ग दस्सण आया, निरगुण निरवैर इक्क सुखाला । भगत भगवन्त रक्खण आया, गल पा प्रेम दी माला । बण स्वांगी नटूआ नच्चण आया, लेखा जाण शाह कंगाला । साढे तिन्न करोड़ अंदर रचण आया, निरगुण जोत नूर नुराना । बिरहों विछोड़े अंदर मच्चण आया, बण वैरागी होए बेहाला । दर दर घर घर गुरमुखां पिच्छे नस्सण आया, करया खेल निराला । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा होए उजाला ।

बीस बीसा उपजिआ नूर, नूर नूर रुशनाईआ । सन्तन देवणहार सरूप, सति सति

समझाईआ। तोड़नहार जगत गरूर, गुरबत दए गवाईआ। देवणहारा सच शऊर, सुहबत इक्को इक्क दृढ़ाईआ। सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब थाईआ। कलिजुग अन्तम हो मजबूर, भगतां मजबूरी दए कटाईआ। काया चोली चाढ़े रंग गूढ़, लालन ललारी सेव कमाईआ। पहली चेत्र हाज़र होया जो बणया रिहा मफ़रूर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगंबरं पिछला करे मुआफ़ कसूर, अगगे मार्ग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहली चेत्र सिफ़्त सालाहीआ।

पहली चेत्र भिन्नडी रैण आई घर, घुंगट मुख उठाईआ। श्री भगवान दे वर, नेत्र नैण खुल्लाईआ। कलिजुग अन्तम आवे डर, भय सके ना कोई मुकाईआ। विभचार होए नारी नर, सति धर्म ना कोई रखाईआ। मैं सारी रैण वेखां खड, नव खण्ड पृथमी ध्यान लगाईआ। वेसवा घर गुरदर मन्दर मस्जिद गए बण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसे दए सरनाईआ।

बीस बीसा कहे मेरा आया मौका, इक्क तेरा ध्यान लगाइंदा। वेखीं हुण ना देवीं धोखा, तेरा धोखा मोहे ना भाइंदा। तेरा लेखा लोक परलोका, दो जहानां खेल खलाइंदा। मैं सुणिआ तेरा सलोका, सोहँ ढोला गाइंदा। जन भगतां रहण ना देवीं रोसा, जुग रुसिआं आप मनाइंदा। ढाई हथ तेरा होसा, नज़र किसे ना आइंदा। ढाई गज़ दा बन्नु भोथा, दुपट्टा इक्को रंग रंगाइंदा। तिन्न गुणां कर ना होवे छोटा, छोटिउँ वड्डे आप बणाइंदा। लाल रंग इक्को बहुता, जिस चढ़या उतर ना जाइंदा। पहली चेत्र जन भगतां मिल्या साचा मौका, मुफ़्त आपणा नाम वरताइंदा। चौथी मंजल चढ़ के देवे होका, हुक्म आपणा आप सुणाइंदा। प्रभ का भाणा किसे ना रोका, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जिस दीआं रक्खदे रहे ओटा, सो साहिब फेरा पाइंदा। जिस दीआं जगौंदे रहे जोतां, सो जोती नूर डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा इक्क वडिआइंदा। बीस बीसा वड्डा होया, हरि सतिगुर आप कराईआ। बीस बीसा जीउँदा मोइआ, जन भगतां मरन जुगत दए जणाईआ। बीस बीसा उठ्या सोया, आपणी अक्ख खुल्लाईआ। बीस बीसा श्री भगवान अगगे रोया, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बीस बीसा कहे मेरा मुख किसे ना धोइआ, मेरी निंदरा ना कोई मुकाईआ। बीस बीसा कहे अमृत आत्म किसे ना चोया, कँवल नाभ ना कोई भराईआ। बीस बीसा कहे साची जोत ना कोई लोया, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। बीस बीसा कहे साचा बीज किसे ना बोया, कलिजुग अन्त रिहा कुरलाईआ। बीस बीसा कहे बिन तेरे भगतां नाल कोई ना छोहया, अंग नाल अंग ना कोई मिलाईआ। बीस बीसा कहे तेरे जिहा कोई ना होया, तेरा रूप ना कोई वटाईआ। बीस बीसा कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराईआ।

बीस बीसा कहे मैं गिआ जाग, मेरी जागी रुत सबाईआ। बीस बीसा कहे मेरा वड्डा भाग, वडभागी पाया हरि रघुराईआ। बीस बीसा कहे प्रभ मिल्या कन्त सुहाग, भगत

भगवन्त लए परनाईआ। बीस बीसा कहे मनमुखां लगगे आग, ना सको कोई बुझाईआ। बीस बीसा कहे कूड़ी क्रिया छुटे सुहाग, नाता कोई नजर ना आईआ। बीस बीसा कहे मनमुखां कोई ना रक्खे लाज, राए धर्म दए सजाईआ। बीस बीसा कहे बिन भगवान आत्म परमात्म कोई ना मारे आवाज, अक्खर ढोला सारे रहे गाईआ। बीस बीसा कहे मेरा बणे सच समाज, समग्री इक्को नजरी आईआ। बीस बीसा कहे प्रभ रचे मेरा काज, नौं खण्ड पृथमी फेरा पाईआ। बीस बीसा कहे सत्त दीप चले जहाज, सति सतिवादी आप चलाईआ। बीस बीसा कहे प्रभ दा सच्चा होवे राज, रय्यत गुरमुख रूप वटाईआ। बीस बीसा कहे मेरे अंदर होवे नाच, मेरे मन्दर वज्जे वधाईआ। बीस बीसा कहे प्रभ मिल्या इक्को साच, सच सच दए जणाईआ। बीस बीसा कहे नाता तुटे काया काच, खाकी माटी लेखे पाईआ। बीस बीसा कहे जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे दए माण वडयाईआ।

बीस बीसा कहे मोहे चढ़या चन्द, चन्द नूर रुशनाईआ। बीस बीसा कहे प्रभ मिल्या सूरा सरबंग, सूरबीर नजरी आईआ। बीस बीसा कहे मैं भगतां देवां अनन्द, अन्तर आत्म सुख उपजाईआ। बीस बीसा कहे मैं चाढ़ां इक्को रंग, रंग मजीठी नाम रंगाईआ। बीस बीसा कहे मैं वजावां मरदंग, अनहद राग इक्क सुणाईआ। बीस बीसा कहे मैं गावां छन्द, सोहँ ढोला आप वडयाईआ। बीस बीसा कहे मेरा मुकिआ पन्ध, प्रभ आपणा मार्ग अगगे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत देवे साचा वर, अगगे लहणा दए मुकाईआ। हरि संगत सुणो सच ब्यान, श्री भगवान आप जणाइंदा। सचखण्ड दा सच मकान, भगतां अगगे अरदास कराइंदा। दूजा कोई ना आवे शैतान, शरीअत वाला नेड़ ना कोई बहाइंदा। जिनां आत्म परमात्म देवे ज्ञान, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। नाम जणाए इक्क सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, निहकलंक डंक वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर आई संगत बिन मंगिआं वस्त अमोलक झोली पाइंदा।

मंगण दी हुण नहीं लोड़, अणमंगी दात वरताईआ। आपणे नाल लिआ जोड़, जोड़ी पुरख अकाल बणाईआ। चढ़ के वेखे अगम्मी घोड़, दो जहान दौड़ाईआ। भगतां भगवान उते सुट्टी डोर, भगवान आपणी गंढ पुआईआ। दूजा इष्ट ना कोई होर, दृष्ट सके ना कोई खुल्लाईआ। रसना जिह्वा पाए शोर, संसा सके ना कोई चुकाईआ। गुरमुख लेखा चुक्के तोर मोर, मोर तोर रहे ना राईआ। करे प्रकाश अन्ध घोर, पंज चोर डेरा ढाहीआ। सतिजुग विच्च जन भगतां दी प्रभ नूं पै गई लोड़, दर दर फिरे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सौ वीह बिक्रमी दए वधाईआ।

वीह सौ वीह बिक्रमी तेरा वाधा, वाहद आप कराइंदा। प्रगट होया सभ दा दादा, दास्तान सभ दी वेख वखाइंदा। जिस दा खेल आदि जुगादा, जुग जुग राह चलाइंदा। कलिजुग अन्त वजाए नादा, इक्को राग सुणाइंदा। भगत भगवान रच के काजा, करता पुरख समाज बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण



नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, संगत हरि कर परवान, परवानगी आपणे लेखे पाइंदा।

पहली चेत्र जो रैह गए दूर, दूरों नेडे आप लिआईआ। जन भगतां पिच्छे होए आप मजबूर, मजबूरी भगतां दए कटाईआ। दूर दुराडिआं देवे नाम सरूर, अमृत जाम पिआईआ। खाली भाण्डे करे भरपूर, मेहर नजर उठाईआ। दुःख दलिद्र अग्गे कट्टे ज़रूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, सच दुआरे सेव कमाईआ।

सच दुआरे सच विहारा, सो सतिगुर आप कराया। पहली चेत्र दिवस विचारा, वदी सुदी ना कोई वडिआया। रंग रंगे एकंकारा, बीस बीसा रंग रंगाया। धूढी उडे विच्च संसारा, गुरमुख साचा नाच नचाया। धूढी खाक करे पुकारा, नैणां नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडिआया।

धूढी उडे नाल पैर, सवा पहर वंड वंडाईआ। कोई ना जाणे ऐर गैर, गहर गम्भीर शनवाईआ। लेखा जाणे लाहौर शहर, लहर लहर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख नाच वडयाईआ।

गुरमुख साचे मात नच्चण, घुम्मर एका पाईआ। कलिजुग जीव अन्तम मच्चण, अगनी जोत लगाईआ। वांग अंगिआरे कूडी क्रिया भक्खण, सांतक सति ना कोई कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना आवे रक्खण, वेले अन्त ना कोई सहाईआ। धर्म राए दी फासी फरस्सण, ना सके कोई बचाईआ। इक्क दूजे नू फेर दस्सण, आपणा हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार वड वडयाईआ।

वडिआई हरि देवण आया, वड दाता गहर गम्भीर। कलिजुग मेटे कूडी माया, सांतक सति करे सरीर। समरथ सिर रक्खे टंडी छाया, फड चोटी चाढ़े अखीर। दरसी दरस इक्क कराया, शरअ कटाए जंजीर। अमृत मेघ दए बरसाया, साचा बख्खे अमृत सीर। पहली चेत्र रुत सुहाया, वीरां नाल मिले वीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे शाह हकीर।

शाह हकीर कोई ना रहणा, हरि रहमत आप कमाईआ। चार वरन इक्को बहिणा, इक्को दए वडयाईआ। चार कुण्ट इक्को नाम लैणा, इक्को करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, बीस बीसे विच्च आत्म परमात्म बदल दए विधान, भूपत राजा इक्को इक्क अखवाईआ।

\* पहली वसाख २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच  
वड्डे दरवाजे दे विचकार \*

निरगुण सरगुण दोआ धार, दोआ सिफ़र रूप समाईआ। सिफ़र कहे मेरा खेल अपार, भेव कोई ना पाईआ। दोआ कहे मैं वेखणहार, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। सिफ़र कहे मेरा अन्त ना पारावार, अंक अंकड़ा रूप ना कोई जणाईआ। दोआ कहे मैं हो उजिआर, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। सिफ़रा कहे मैं कर खवार, नाम निशान ना कोई जणाईआ। दोआ कहे साचा सिकदार, निरगुण सरगुण शाह पातशाह अखवाईआ। सिफ़रा कहे मैं मारां मार, रूप रंग रेख रहण कोई ना पाईआ। दोआ कहे मेरा वड बलकार, निरगुण सरगुण दो जहान मिले वडयाईआ। सिफ़रा कहे मेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

दूआ कहे निरगुण सरगुण मेरा खेल, आदि जुगादि कराइंदा। सिफ़रा कहे मैं वसां धाम नवेल, हत्थ किसे ना आइंदा। दूआ कहे निरगुण सरगुण आदि जुगादि जुग चौकड़ी चाढां तेल, नित नवित्त सगन मनाइंदा। सिफ़रा कहे मैं फड के आपणे अंदर घत्तां सच्ची जेल, बाहर सके ना कोई कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूआ सिफ़रा दोहां भेव जणाईआ।

दूआ कहे मैं सभ तों वड्डा, इक्क तों दो बणाइंदा। सिफ़र कहे मैं सभ तों नड्डा, नज़र किसे ना आइंदा। दूआ कहे मैं सद बख्शंदा, निरगुण सरगुण दया कमाइंदा। सिफ़रा कहे मैं दोहां करां रंडा, खेल आपणे हत्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल जणाइंदा।

दूआ कहे मैं जोधा सूर, निरगुण सरगुण मेरा बल रखाईआ। सिफ़र कहे मैं सर्ब कला भरपूर, आप आपणे विच्च समाईआ। दूआ कहे मेरा खेल ज़रूर, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। सिफ़रा कहे मैं सभ नूं करां कूड, थिर कोई रहण ना पाईआ। दूआ कहे मेरा सरगुण निरगुण नूर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सिफ़रा कहे मैं सभ दे डोबे पूर, निरगुण सरगुण नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

दूआ कहे सिफ़रे सच दस्स, की तेरे विच्च वडयाईआ। सिफ़रा अगगों पिआ हस्स, मसखरा बण जणाईआ। मैं सभ दे अंदर रिहा वस, आपणा आप ना कुछ रखाईआ। तूं दूआ हो के होएं प्रगट, सरगुण आपणी कार कमाईआ। सिफ़रा कहे मेरी नाड मास हड्ड ना कोई रत्त, रत्ती रत्त ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सिफ़रा कहे सुण दूए हो दलेर, मैं तेरी दस्सां वडयाईआ। तूं निरगुण रूप हो के

सरगुण बणिउँ सिँघ शेर, लोकमात कर रुशनाईआ। पंज तत्त चोला हंढाया ढेर, तन खाकी रंग रंगाईआ। किसे किसे उते कीती थोड़ी थोड़ी मेहर, डरदे डरदे आपणी कार कमाईआ। वसदा रिहों नेरन नेर, काया मन्दर अंदर आपणा आप बन्द कराईआ। मैं सिफ़रा हो के तेरा निरगुण सरगुण फेर आप दिता निबेड़, तेरा निशान नज़र कोई ना आईआ। सिफ़रा हो के खेली आपणी खेड़, सचखण्ड साचे आसण लाईआ। सचखण्ड विच्चों आपणा सिफ़रा दिता भेज, जिस दे नाल लग्ग जाए उस दा अंक दए वधाईआ। निरगुण सरगुण मैं निक्की जिही छेड़दा रिहा छेड़, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। नाल इशारे लोकमात देंदा रिहा रेढ़, पिच्छों इक्को निक्का धक्का लाईआ। जुग चौकड़ी फेरा रिहा फेर, पान्धी पान्धी मार्ग लाईआ। किसे ना दस्सया आपणा हेर फेर, हेर फेर ना किसे समझाईआ। सारे घते विच्च अंडज जेर, बिन मात पित जन्म कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा समझाईआ।

दूए सुण करावां याद, सिफ़रा इक्को इक्क जणाइंदा। निरगुण सरगुण हो के मंगण इक्क दूजे दी दाद, बिन सरगुण निरगुण कम्म किसे ना आइंदा। सरगुण निरगुण इक्क दूजे दे उते करन राज, शाह पातशाह भेव ना कोई खुल्लाइंदा। सरगुण निरगुण इक्क दूजे नूं मारन आवाज, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाइंदा।

सिफ़र कहे सुण मेरी कार, निरगुण सरगुण दिआं समझाईआ। मैं कल्ला हो के किसे नज़र ना आवां विच्च संसार, मेरी कीमत कोई ना पाईआ। कर किरपा जिस दे नाल करां प्यार, तिस देवां माण वडयाईआ। निरगुण सरगुण शेर सिँघ किसे ना आया विच्च विचार, विचार सके ना कोई राईआ। जिस वेले सिफ़रा बध्धी धार, लक्ख चुरासी रिहा जगाईआ। सिफ़रे अंदर घुंडी अपार, जिस दा परदा कोई खोलू ना सके राईआ। एह इक्को सिफ़रा जिस नूं कहन्दे सचखण्ड दुआर, चार कुण्ट नज़र कोई ना आईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दे विच्चों निरगुण निकले धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस विच्चों निकले गुर अवतार, विष्ण ब्रह्मा शिव नूर रुशनाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दी आसा विच्च संसार, लक्ख चुरासी जून उपाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दे विच्च कोटन कोट चन्द सूरज अवतार, मण्डल मंडप बैठे मुख छुपाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दा आदि अन्त ना पारवार, बेअन्त कहि कहि सारे शुकर मनाईआ। एह सिफ़रा इक्को जिस दा दर ठांडा दरबार, दरवाजा नज़र किसे ना आईआ। एह सिफ़रा इक्को जो प्रीतम प्यारा आप करे सच प्यार, सेज सुहज्जणी ना कोई सुहाईआ। एह सिफ़रा इक्को, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिपत सिपत सालाहीआ।

सिफ़रा कहे सुण सरगुण निरगुण की तेरी वडयाईआ। जुग चौकड़ी खेल करें धुर, अगम्मी नाद सुण सुण सुण संदेसा राग अलाईआ। लक्ख चुरासी छाण पुण पुण, दर

दर घर घर आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

निरगुण सरगुण बण दो, हरि साची कार कमाईआ। सिफ़रा रूप आपे हो, सभ दी करे सफ़ाईआ। सिफ़रे कोलों बण दो, दोए दोए जोड़ जुड़ाईआ। दोए जोड़ा सिफ़रा मोह, मुहब्बत इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस नाल जाए छोह, तिस निरगुण सरगुण वेखे दो दो, अन्त सिफ़र विच्च समाईआ।

सिफ़रा कहे मैं क्यों बलकार, की मेरे विच्च चतुराईआ। मेरी धारा सचखण्ड दुआर, सच सच सरनाईआ। मेरा दरवाजा थिर दरबार, घर घर विच्च इक्क प्रगटाईआ। मेरा लेखा विष्ण ब्रह्मा शिव अधार, बैठण सीस झुकाईआ। मेरा इशारा गुर अवतार, पीर पैगम्बर नाउँ रखाईआ। मेरा नाअरा धुर जैकार, जै जैकार सुणाईआ। मेरा विहारा लख चुरासी धार, जीव जंत वडयाईआ। मेरा विहारा अपर अपार, भेव कोई ना पाईआ। मेरा मनारा ठांडा दरबार, अगनी तत्त ना कोई रखाईआ। मेरा किनारा ना आर ना पार, अग्गा पिच्छ नजर किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा आपणी सिफ़त जणाईआ।

सिफ़रा कहे सुण मेरी सिफ़त, मैं सिफ़तां आप सुणाइंदा। मेरी सिफ़त अंदर लिख के गए लिखत, गुर अवतार ध्यान लगाइंदा। जिस नूं कहन्दे मेरा भविख्त, सो मेरे इशारे नाल मिलाइंदा। जिस दा खेल इक्क अनडिट, जग नेत्र नजर ना आइंदा। मेरी आस रक्खी किस किस, भेव अभेद खुलाइंदा। जिस निरगुण सरगुण लिआ जित, तिस आपणा राह वखाइंदा। प्रेम प्रीती अंदर करदे गए हित, नित नित ध्यान लगाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान दस्सदे गए ना कोई वार ना कोई थित, हरि करता आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा।

सिफ़रा कहे सुण मेरे मीत, मैं सच सच जणाइंदा। निरगुण सरगुण जगत रीत, मेरा लेख लिखत विच्च ना आइंदा। चार चौकड़ी जुग चार नव नौं मेरी रक्खे उडीक, ध्यान ध्यान विच्च प्रगटाय। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाइंदा।

सिफ़रा कहे मेरी करन ताअरीफ़, निरगुण सरगुण सोहले गाईआ। सरगुण सरगुण हो के करन प्रीत, निरगुण निरगुण हो के राह जणाईआ। मैं वसां धाम अतीत, घर साचे सोभा पाईआ। मेरा ध्यान रक्खदे गए बीस बीस, दूआ सिफ़रे हो हो जाईआ। सभ दे खाली होए रवीस, पल्ले गंडु ना कोई बनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा आपणा भेव रिहा जणाईआ।

सिफ़रा कहे मैं वड बलवान, मेरा अन्त किसे ना पाया। गुर अवतार धरदे गए ध्यान, पीर पैगंबर नैण उठाया। जिस ने कीता निरगुण सरगुण जगत निशान, सो सिफ़रा रूप अखवाया। जिस दा लेखा दो जहान, दोए आपणा राह वखाया। जो साहिब मर्द मरदान, मर्द मरदानगी इक्क कमाया। जिस दा राग राग तरान, जिस दा गीत गीत अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुलाया।

सिफ़रा कहे मैं वडु बलवाना, मेरा अन्त कहण कोई ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगंबर मंगदे गए दाना, खाली झोली अग्गे डाहीआ। मैं सभ नूं दिता ज्ञाना, बोध अगाध पढ़ाईआ। इक्क सुणाया धुर फ़रमाणा, सच संदेस सुणाईआ। नव नौं खेल महाना, महिमां अकथ्थ कथ सुणाईआ। कलिजुग अन्तम खेल करे वाली दो जहानां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़र वेखे सर्व लोकाईआ।

सिफ़रा कहे मैं जग विच्च औणा, मेरा सर्व ध्यान लगाईआ। मात पित ना किसे गोद उठौणा, जननी जन ना कोई अखवाईआ। रसना सीर ना किसे पिऔणा, उंगली नाल ना कोई फिराईआ। कुछड़ चुक्क ना किसे खडौणा, लोरी दे ना कोई सुआईआ। तन बसतर ना किसे सुहौणा, फ़ड बाहों ना कोई नुहाईआ। सीस दस्तार ना कोई बंधौणा, पैरीं जोड़ा ना कोई छुहाईआ। तन बस्तर ना कोई लगौणा, ढाकण को पत ना कोई जणाईआ। साक सज्जण ना कोई दरसौणा, नार कन्त ना कोई वडयाईआ। पुत्तर धीआं ना संग रखौणा, जगत कुटंब ना मेल मिलाईआ। पुस्तक पाठ ना कोई पढ़ौणा, सन्धया रूप ना कोई वखाईआ। हवन पवन ना कोई रखौणा, इष्ट देव ना कोई मनाईआ। राग नाद ना कोई गौणा, धुन अनाद ना कोई शनवाईआ। सिफ़रा रूप हो के फ़ेरा पौणा, पंज तत्त चोला जगत तजाईआ। सिफ़रा रूप गुर अवतार पीर पैगंबर अन्त वखौणा, उह बैठा ध्यान लगाईआ। सिफ़रे मिल के रंग रंगौणा, दोवें मिल बीस बीस वज्जे वधाईआ। दूआ कहे मेरा खेल होए अनहोणा, अनडिडुडी कार कमाईआ। सिफ़रा कहे मैं निरगुण भेव खुलौणा, अनभव आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूए नाल जोड़ सिफ़रा गुर अवतार पीर पैगंबरों आप करे जिकरा, पिछला फ़िकरा फ़ाके वाला रहण ना पाईआ।

सिफ़र कहे मैं मेटां फ़िकर, फ़ातिहा सभ दा आप पढ़ाइंदा। बिन मेरे दूजा ना करे कोई जिकर, ज़ाहर ज़हूर ना कोई अखवाइंदा। कुछ वी नहीं फ़ेर वी आवां नितर, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी बैठे विटर, सभ दा माण गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा।

सिफ़रा कहे मेरी कार अब्वली, नज़र किसे ना आईआ। हुक्मे अंदर जोत अट्टली, अट्टल धाम सीस निवाईआ। जे वेखण वली छली, ना वेखण ते बेपरवाहीआ। विचार करन गुर अवतार पीर पैगंबर मेरी निक्की जिही कली, जुग चौकड़ी लोकमात महकाईआ। धुर दी धार कर प्यार शब्द अपार निक्की जिही गल विच्च बध्धी टल्ली, कंठ विच्चों हुक्म

नाल वजाईआ। ऐसे कर के सारे कह के गए प्रभ जोधा बली, उहदा अन्त कोई ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान खाणी बाणी आपणे रस विच्चों दिती इक्को निक्की जिही फली, आपणा बाग बगीचा ना किसे दसाईआ। सिफ़रे विच्च वड़ के वेखी गुर नानक चरनां कोल निक्की जिही गली, जिस दा अगगे राह नज़र ना आईआ। जे वेखे तां दीपक जोत बली, ताब झल्लया कोई ना जाईआ। कर निमस्कार कहे तूं वड्डा बली, बेपरवाह तेरी वडयाईआ। श्री भगवान आपणे हथ उत्ते हथ रक्ख के रगढ़ी तली, तिलक आपणा दिता वखाईआ। सवा रती इक्को डली, श्री भगवान आपणे हथ दी मैल लाहीआ। प्रेम प्रीती अंदर जे हड़ी मिली, जुग छती लोकमात जगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

एसे कर के नानक किहा दान मैहंडा तली खाक, नज़र किसे ना आईआ। प्रभ इक्को वार प्रगटाई पाकी पाक, पत आपणे हथ रखाईआ। निरगुण सरगुण दोहां दा तोड़ साक, आप आपणा भेव जणाईआ। सिफ़रा हो के ना जात ना पात, ना सरगुण ना निरगुण, रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। सिफ़रा कहे मैं सभ दे नालों आज़ाद, अंक अंक ना कोई बणाईआ। आदि अन्त सभ मेरी आस रखाईआ। बिन मेरे सारे होण बरबाद, थिर कोई रहण ना पाईआ। मेरे मिलण दी सभ नूं खाहश, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सब वडयाईआ।

सिफ़रा कहे मेरी सुणो कार, मैं सच सच जणाइंदा। करां करावां सच विहार, भेव अभेद खुलाइंदा। पूरा करां कौल इकरार, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा। संदेसा देंदा रिहा गुर अवतार, पीर पैगम्बर मात पढ़ाइंदा। कलमा कायनात कर उजिआर, वाहद इक्को इक्क समझाइंदा। ताअरीफ़ करदा रिहा संसार, तुआरफ़ आपणे हथ रखाइंदा। रीस कोई ना करे परवरदिगार, सांझा यार हथ किसे ना आइंदा। आदि जुगादी एकंकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा।

सिफ़रा हो के करया कम्म, आपणे हथ रक्खी वडयाईआ। पंज तत्त काया भाण्डा दिता भन्न, निरगुण सरगुण शेर सिंघ नज़र किसे ना आईआ। सच सच हो के बेडा बनू, आपणी धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रे विच्चों फ़िकरा आप प्रगटाईआ।

सिफ़रे विच्चों प्रगटया फ़िकरा, फ़िकर आपणा आप कराइंदा। जगत जहान जो होया बिखरा, तिस आपणी गंडु पुआइंदा। चोटी चढ़ के वेखे सिखरा, सच महल्ल आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा।

साची करनी सिफ़रा रूप, हरि सच सच कराईआ। कलिजुग अन्तम वेख चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलाईआ। कर्म धर्म बरन वरन नाता जुडया जूठ झूठ, सच सुच्च ना

कोई परनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

सिफ़रा हो के आया आप, वड दाता बेपरवाहीआ। जिस नूं सरगुण निरगुण गोबिन्द हो के कह के गिआ मेरा बाप, पुरख अकाल सच्चा शहनशाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जिस दा करदे सारे जाप, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। सो साहिब सदा पाक, पवित रूप वटाईआ। जिस दर्शन नूं नेत्र लोचण रहे झाक, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। सो साहिब सभ दा साक, नज़र किसे ना आईआ। सभ दा लेखा करे बेबाक, सिफ़रा अंक अन्त बनाईआ। खाली करे जगत हाथ, वस्त हत्थ ना कोई फड़ाईआ। देवणहार आदि जुगादी दात, वड दाता वड वडयाईआ। कलिजुग अन्तम खेल तमाश, बेपरवाह आप कराईआ। गुर अवतार पीर पैगंबर कट्टे कर आप जमात, अक्खर इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अव्वला, इक्क इकल्ला आप कराइंदा। कलिजुग अन्तम वेखणहारा जलां थलां, उच्चे टिल्ले परबत फोल फुलाइंदा। जोत प्रकाश पुरख अबिनाश नूरी धार आपे बला, दीआ दीपक डगमगाइंदा। सच संदेस नर नरेश इक्को घल्ला, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा साची कार कमाइंदा।

सिफ़रा कहे मेरी साची कार, नज़र किसे ना आईआ। नव नौं चार मेरा तक्कदे गए दीदार, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। दरवेश बण के मंगदे गए भिखार, झोली अग्गे आपणी डाहीआ। दोए जोड़ करदे गए निमस्कार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। कहि के गए कल अन्तम आवे कल कलकी अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जो सिफ़रा रूप वेखे संसार, इक्क सिफ़रे विच्च वडयाईआ। सिफ़रे विच्चों एका महल्ल करे त्यार, त्रैगुण अतीता आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अपारा, अपरंपर धार चलाइंदा। कलिजुग अन्त हो उजिआरा, भेव अभेद खुलाइंदा। महल्ल अट्टल इक्क मनारा, दो जहानां आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाइंदा।

साचा भेव खोलू करतार, उहला रिहा जणाईआ। सिफ़रा सति हो उजिआर, सति सतिवादी कार कमाईआ। साढे सत्त दे आधार, वेखणहारा थाउँ थाईआ। लेखा जाण जगत जगतार, जग जीवणदाता आपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

खेल करन दा साचा चाउ, सिफ़रा आपणे विच्चों प्रगटाइंदा। करनहारा सच नयाउँ, अदालत इक्को इक्क लगाइंदा। पकडनहारा साची बाहों, भगत भगवान आप जणाइंदा। लेखा जाण पुत्तर माउँ, पिता पूत गोद सुहाइंदा। देवे वड्डिआई साचे थाउँ, जिस धाम दी गुर अवतार पीर पैगम्बर उडीक रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्लाइंदा।

सिफ़रा कहे मैं खोलां भेद, भेव कोई ना पाईआ। जिस धाम दा लेखा लिखया विच्च साम वेद, अंक नौं सौ इकत्तर सत्तर अठ्ठ अठ्ठ वड्याईआ। सो धाम होए उजिआर, जिस मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रा सभ दी सांझ बंधाईआ।

सिफ़रा कहे मेरा खेल अपारा, आदि जुगादि कार कमाइंदा। हुक्मे अंदर फिरे सूरज तारा, मण्डल मंडप नाच नचाइंदा। जुग चौकड़ी हो उजिआरा, हुक्म हासल इक्क समझाइंदा। साचा धाम गुर अवतार पीर पैगम्बर करे निमस्कारा, सजदा इक्को इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाइंदा।

साची करनी राम राम, आपणी हरि जणाईआ। साचे धाम कर अशनान, बैठा आसण लाईआ। इक्को इक्क इक्क निशान, निरगुण सरगुण देवे वखाईआ। सरगुण वेख होया हैरान, पंज तत्त रहण ना पाईआ। पंज तत्त सिफ़रा रूप विच्च जहान, लेखा हत्थ ना कोई वखाईआ। इक्को खोलू वेखे भगवान दा भगवान, सो भगवान जो राम विच्च हो के राम रिहा समाईआ। कर किरपा दिता दान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। एह भूमका सच अस्थान, जिस दा भेव कोई ना पाईआ। इक्क भीलणी दे ज्ञान, शब्द इशारे नाल समझाईआ। बालमीक ला के जाए निशान, चोरी चोरी सेव कमाईआ। त्रेते विच्च कोई ना लए पहचान, वेला दूर दुराडा रिहा दसाईआ। कलिजुग अन्त करे खेल आप मेहरबान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वधाईआ।

सच धाम तक्के राह, धरनी धवल ध्यान लगाईआ। पंज पांडो बैठे ध्यान लगा, नैण नैण उठाईआ। लेखा लेख जाणे कोई ना, बेअन्त तेरी वड्याईआ। काहन कृष्ण दया कमा, एका अरजन करे शनवाईआ। सुण अरजन सच दिआं सुणा, भेव अभेद खुल्लाईआ। तेरा लेखा कलिजुग इक्क जणा, जानणहार कदे आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बेपरवाह बेपरवाहीआ।

अरजन दोए जोड़ सीस, चरन कँवल ध्यान लगाया। तेरा खेल साहिब जगदीस, बेपरवाह तेरी वडिआया। सच दस्स इक्क हदीस, भुल्ल रहे ना राया। कृष्ण कहे मेरा काहन आवे ठीक, जिस मैंनू काहन बनाया। मैं वी ओस दी रक्खां उडीक, सिर आपणे



मोर मुकट सुहाया । मैं निरगुण हो के उहदी करां प्रीत, सरगुण हो के तुहानूं नाल मिलाया । जिस अन्त मैंनूं लैणा जीत, मैं तुहाड्डी जित कराया । जिस दा निशाना ठीक, दो जहानां तीर हत्थ किसे ना आया । उह साहिब ठांडा सीत, मैं अगन बाण ठंडा ठार कराया । उह सदा सदा अजीत, जितिआ कदे ना जाया । उह मेरी बदलण वाला रीत, पंज तत्त कृष्ण चोला नजर किसे ना आया । पिच्छों अरजन गीता रहि जाए गीत, गोबिन्द हत्थ किसे ना आया । उह आवे आपणे धाम ठीक, नेत्र नैण नजर किसे ना आया । अक्खीं मीट मैं वखावां जिस नाल लग्गी मेरी प्रीत, सो साचे धाम आपणा चरन रिहा टिकाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइआ ।

कार करे सिफ़रा आप, आपणी दया कमाइआ । जिस वेले सतिगुर नानक दिता जाप, सतिनाम करी पढ़ाईआ । उस वेले नजरी आया इक्को बाप, पिता पुरख वड वडयाईआ । नाल इशारे दस्सया अनाथां नाथ, दीनन दीन रिहा समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव खुलाईआ ।

नानक दस्सया हो मेहरवान, प्रभ आपणी दया कमाइआ । सचखण्ड दा वेख निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ । ना जिमी ना असमान, मण्डल मंडप ना कोई वखाईआ । ना रय्यत ना राज राजान, चोबदार ना कोई रखाईआ । इक्क इकल्ला श्री भगवान, सचखण्ड साचे आसण लाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, निरगुण सरगुण आप जणाईआ ।

नानक वेख धाम अपारा, सो पुरख निरञ्जण आप जणाइंदा । शब्दी शब्द कर इशारा, लेखा लिखत विच्च ना आइंदा । एसे कारन नानक निरगुण किहा कल महांबली उतरे अवतारा, मात पित ना कोई रखाइंदा । जिस दा सर्ब नूं आदि जुगादि सहारा, मेहरवान फेरा पाइंदा । मैं लम्भ लम्भ थक्का मैंनूं नजर ना आया कोई किनारा, बेअन्त कहि कहि शुकर मनाइंदा । इक्को बोल नाम जैकारा, तूही तूही राग अलाइंदा । तूं मेरा सच सहारा, मैं तेरा रूप वटाइंदा । तेरा धाम वसे नयारा, जग नेत्र वेखण कोई ना आइंदा । सो सोहे बंक दुआरा, जिस गृह आपणा चरन टिकाइंदा । दोए सिफ़रा रूप नजर संसारा, दूजी वंड ना कोई वंडाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो धाम आप उपाइंदा । सो धाम दीन दयाल, इक्को इक्क वडयाईआ । जिस वेले गोबिन्द मिल्या पुरख अकाल, घर साचे वज्जी वधाईआ । शाह पातशाह करे इक्क सवाल, पूत सपूते पुच्छ पुछाईआ । उठ वेख मेरे लाडले लाल, निरगुण सरगुण रिहा जणाईआ । कलिजुग जीव बिन छुरीउँ होए हलाल, कसाई बणया जीव कसाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ । गोबिन्द वेखे सिफ़रा धार, धर्म जैकार अलाइंदा । वाहवा तेरा खेल अपार, गुर गुर ध्यान रखाइंदा । आदि जुगादी अन्त ना पारा वार, बेअन्त तेरा अन्त कोई ना आइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाइंदा ।

गोबिन्द वेख सच इशारा, हरि इशारे नाल जणाईआ। नव नौं चार अन्त किनारा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लेखा मुके गुर अवतारां, अन्त कोई रहण ना पाईआ। निरगुण नूर सदा उजिआरा, ना मरे ना जाईआ। सतिगुर गोबिन्द कर निमस्कारा, दोए जोड़ मंग मंगाईआ। पुरख अकाल तेरा सहारा, इक्को ओट रखाईआ। तुध बिन पावे कवण सारा, दो जहानां होए सहाईआ। कर किरपा कलिजुग अन्त लैणा अवतारा, वड अवतारी तेरी वडयाईआ। वेखणा इक्को धाम नयारा, निआं कर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धाम अब्बलडा रिहा वखाईआ।

ओस धाम दी दस्स निशानी, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। गुर गुर कहे मैं उस पिच्छे दिआं आप कुरबानी, बंस सरबंस भेट चढ़ाइंदा। चार दिन खा के तेरी निरगुण सरगुण जाए महिमानी, मुसाफर मेरा बंस अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा तेरा वर, मैं आपणा रूप सिफरा तेरे विच्च समाइंदा।

गोबिन्द कहे मैं सिफर हो के वखावांगा। आपणा जिकर तैनुं सुणावांगा। सारा फिकर तेरे सिर ते पावांगा। आप हो बेफिकरा, तेरे अग्गे पिच्छे खुशीआं नाल नाच नचावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा लेखा वेख वखावांगा।

मैं सिफरा हो के दस्सांगा। मां पिउ पुत आपणे कोल कुछ ना रक्खावांगा। सभ तेरी झोली सट्टांगा। इक्को तेरा नाम तेरा प्रभ रटांगा। दोए जोड़ वास्ता घत्तांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर तेरे चरनां ते सट्टांगा।

गोबिन्द तैनुं जरूर आप बणाऊंगा। आप आपणी झोली पाऊंगा। साची डोली फड़ चढ़ाऊंगा। हौली हौली आपणा मेल मिलाऊंगा। तन्द मौली नाल रखाऊंगा। सवा रत्ती घोल घोली, आपणे हत्थ फड़ उठाऊंगा। तेरी बदल देवां चोली, चोली आपणे रंग रंगाऊंगा। तैनुं फेर कोई ना मारे बोली, बोलण वाला कोई नजर ना आऊंगा। तूं उच्ची उच्ची पावीं रौली, मैं तेरे नाम डंका इक्क सुणाऊंगा। तूं वसीं उच्चे दुआरे मन्दर धौलीं, मैं तेरे दर ते सेव कमाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेद खुलाऊंगा।

बंस सरबंस तेरी भेटे चढ़ेगा। गोबिन्द फिर साहमणे तेरे खड़ेगा। जोधा हो के सूरबीर लड़ेगा। जे हक्र ना देवें अग्गे हो के अड़ेगा। निर्भय भय तेरे कोलों कदे ना डरेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दस्स जो आपणी कार करेगा।

सच आपणी कार कमावांगा। तेरा बंस सरबंस लुटावांगा। लोकमात विच्चों पुट्ट,

बूटा सचखण्ड लगावांगा । अमृत धुर दा दे के घुट्ट, गुरमुख आपणा परदा लाहवांगा । फिर सभ दे नालों रुट्ट, तेरे चरनां डेरा लावांगा । आत्म अन्तर सभ दी लुट्ट, खाली घर कर वखावांगा । जिस वेले पवें उठ, तेरी उंगली आपणे हत्थ रखावांगा । जिंनां चिर ना कहें गोबिन्द मेरा पुत्त, तेरा पल्लू छड्ड ना जावांगा । जिंनां चिर ना सुहाएं साची रुत्त, अबिनाशी अचुत्त, तेरी दासी सेव कमावांगा । मेरा लेखा ना जाए मुक्क, अलेख तेरे घर वखावांगा । मेरा बूटा ना जाए सुक्क, हरया सिंच तेरे कोलों करावांगा । जिस वेले कलिजुग अन्तम आए ढुक्क, मैं सेवक बण के तेरा संबल नगर बणावांगा । तूं अंदर वड जाई घुस, मैं परदा उत्ते पावांगा । फेर मैंनूं लई पुच्छ, मैं इकल्ला हाल सुणावांगा । प्रभ तेरे भगतां नूं तेरा दुःख, दुखीआं दर्द आप वंडावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पिछला लेखा सभ दा पूर करावांगा ।

जिस वेले प्रभ दया कमाएंगा । मेहर नज़र उटाएंगा । कल कलकी फेरा पाएंगा । मेरी प्यार दी वंनगी लोकमात बणाएंगा । सिर कलगी इक्क चमकाएंगा । जगदीश ताज इक्क सुहाएंगा । प्रेम आवाज़ इक्क लगाएंगा । गरीब निवाज़ नेडे आएंगा । साजन साज वेख वखाएंगा । मेरी लाज अन्त रखाएंगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे रंग वखाएंगा ।

घर साचे रंग वखावांगा । गोबिन्द तेरा संग निभावांगा । अंग अंग नाल मिलावांगा । नाम मरदंग इक्क वजावांगा । लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां लंघ, तेरा जोड जुडावांगा । तेरा चाढ़ साचा चन्द, चन्द चांदना इक्क चमकावांगा । गोबिन्द कहे तूं बख्शंद, मैं तेरा शुकर मनावांगा । वेखीं वेले सिर ना जाई मुक्कर, जे मुकरें ते नेत्र रो रो तैनूं मनावांगा । क्यों, गुर नानक कह के गिआ तूं निरगुण धारों आवें उतर, निहकलंक हो आवेंगा । तैनूं किसे नहीं कहणा मेरा पुत्तर, तूं सभ दा बाप अखवावेंगा । जिउं गुजरी चुक्कया मैंनूं कुच्छड्ड, फिर तेरे कुच्छड्ड चढ़ के आपणा खेल वखावांगा । मैं कोई ना मंगौं खाण नूं टुक्कर, पाणी मंगण दी आस ना कोई रखावांगा । एसे कर के वारे पुत्तर, पिता पूत बण के धुर दी सेव कमावांगा । बेपरवाह जे तेरे पिच्छे गिआ उजड्ड, तेरे भगतां जरूर वसावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणा सच्चा इक्क वर, तेरा सदा सदा सद दर्शन पावांगा ।

गोबिन्द जिस वेले मेरे भगतां प्यार जणाएंगा । आपणा वेला वक्त सुहाएंगा । बूंद रक्त अगली पिछली लेखे लाएंगा । श्री भगवान बणाए बणत, बेपरवाह आपणी कार कमाएगा । सुहञ्जणा सुहाए आप वक्त, रुत्त रुत्तडी नाल मिलाएगा । जिस वेले श्री भगवान आए परत, तेरा सगला संग रखाएगा । पिछला सोग मिटाए हरख, अगगे इक्को सुख वखाएगा । तेरे नाल फिरे नधडक, भय जगत ना कोई जणाएगा । रोकियां किसे दे ना जाए अटक, आपणा मार्ग इक्क लगाएगा । पिछला कीता सभ दा करे तरक, तुरत आपणा हुक्म मनाएगा । जे नीहां हेठां बाले रहि गिआ फ़रक, हुण नीहां हेठां रक्ख के भगत दुआर सुहाएगा । जिस

दे पिच्छों नेत्र नीर ना वहाए कोई उते मरग, मनजीता हुक्म मनाएगा। नाता तोड़ सोग हरख, सिँघ जगदीशा नौं दुआरे पन्ध मुकाएगा। उप्पर वेख सचखण्ड दा सच निशाना रिहा लटक, सति सतिवादी इक्को रंग चमकाएगा। पकड़ उठाए अगले पिछले भगत, भगवन आपणी गोद बहाएगा। की होया राम दा माण रक्खया इक्क भरत, श्री भगवान भगत भरत नालों अग्गे अग्गे रखाएगा। ओस धाम करे प्रगट, जिस धाम राम ध्यान लगाएगा। ओस धाम खोले हट्ट, जिस धाम कृष्ण अरजन समझाएगा। ओस धाम बीजे बीज वत, जिस धाम नात निरगुण सिफ्त सालाहेगा। ओस धाम लए रक्ख, जिस धाम उते गोबिन्द अक्ख टिकाएगा। उह धाम सभ तो वक्ख, भगत दुआरा नाउँ प्रगटाएगा। एका दूआ दूआ सभ नूं देवे दस्स, निरगुण सरगुण देवे दस्स, सिफ़रा हो के देवे दस्स, आप आपणा मुख छुपाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार जुग दी रक्खी उडीक, गुर अवतारां लाई प्रीत, उह धाम एह समझ ठीक, जिस उते साढे तिन्न हत्थ नौं दर भगत घर दिता बनाईआ। भगत घर बना माही, मुहब्बत इक्को इक्क जणाइंदा। निरगुण सरगुण वेख दोवें राही, पैडा कवण मुकाइंदा। लोकमात निरगुण सरगुण इक्क दूजे दे नाल मिलाए आप मिला के बाहीं, अन्तम तत्त नज़र कोई ना आइंदा। उहो दस्से जो लिख गए नाल कलम शाही, शहनशाह आपणा रूप ना किसे वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम आप वडिआइंदा।

गोबिन्द कहे तेरा धाम चंगा, चंगी तरां नजरी आईआ। जिस नूं चढ़या इक्को रंगा, प्रेम प्रीती रंग वखाईआ। जिनां पिच्छे माछूवाड़े फिरया नंगा, सूलां सत्थर सेज हंढाईआ। जिनां कारन भेजिआ आपणा बन्दा, आपणी बन्दगी इक्क समझाईआ। उह जीव कलिजुग होया गंदा, गोबिन्द वेख रिहा कुरलाईआ। मैं दे के गिआ खण्डा, शस्त्र चंड परचंड चमकाईआ। मैंनूं वेख के मेरा नैण हो गिआ अन्धा, अक्ख अक्ख ना किसे खुलाईआ। हुण किथों लभ्भे गुजरी चन्दा, गुजरी चन्द शब्द रूप वटाईआ। ना माणस ना बन्दा, ना बन्दगी कर के किसे नूं सीस झुकाईआ। ना शस्त्र ना कोई खण्डा, तीर कमान ना कोई उठाईआ। ना सुहागी ना रंडा, ना करे किसे कुडमाईआ। करे खेल सूरा सरबंगा, शाह पातशाह आपणी कार कमाईआ। दीनन दीनन दीन दयाल होया बख्खांदा, बखशिश प्रभ दे कोलों मंग मंगाईआ। आपणी हत्थीं जन भगतां रंगण आया पंजा, पंजे उंगलां इक्को रंग वखाईआ। हुण जन भगतां वसे सदा संगी, सगला संग निभाईआ। इक्क वखाए आपणा डण्डा, पौड़े आपणे नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

वडिआई दे के बनाया महल्ल, सो साहिब दया कमाईआ। नाउँ रक्ख इक्क अट्टल, अट्टल अट्टल रिहा समझाईआ। दीपक हो के गिआ बल, जोती नूर नूर रुशनाईआ। दो जहानां मेटे सल, दुखड़ा कोई रहण ना पाईआ। नाम संदेसा साचा घल्ल, हरिजन साचे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ।

लेखा हथ रक्खे करतार, वड दाता वड वडयाईआ। भगत दुआर कर त्यार, नीहां हेठां हरिजन आप सवाईआ। रत्त अमोलक तिरवी धार, गोबिन्द आप वहाईआ। चढ़दी दिशा पावे सार, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चार चार दा पंजवां नेता, परम पुरख आप अखवाईआ। छत्ती छत्ती कर कर वेंता, वितकरे सभ दे दए मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां दिता नेता, घर घर आप सदाईआ। पहली दूजी तीजी चौथी मंजल चढ़ के वेखे अगेता पछेता, दूर दुराडे नेरन नेरे इक्को दर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाईआ।

भगत दुआरे चढ़ के वेखे, वेखणहार अखवाइंदा। सभ दे पूरे करे लेखे, अगगे लेख ना कोई वधाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो चेतो, चेतन्न सभ नूं आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेख आप समझाइंदा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर गए जाग, सो साहिब आप जगाईआ। सम्मत सम्मती लगगा भाग, सम्मण सभ दे घर घर पुचाईआ। सुण सुण वेख सारे आए भाज, भज्जे वाहो दाहीआ। भगत दुआर गरीब निवाज लिआ साज, इक्को राह वरवाईआ। निरगुण सरगुण दोहां दा होवे काज, सिफ़रा आपणी गल सुणाईआ। मैं लै के आवां दाज, वस्त अमोलक इक्क वरवाईआ। मेरे घर ना पूजा ना पाठ कोई निमाज, वरका वरका ना कोई उठाईआ। दोए जोड़ जो मेरे चरन करे अरदास, तिस आपणा मेल मिलाईआ। तीर्थ नहावण दी रहे ना कोई खाहश, सरोवर पन्ध ना कोई पाईआ। जिस दा एका चरन कँवल निवास, तिस आपणा घर वरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार भगत वडयाईआ।

भगत दवार कहे मैंनू मिल्या मौका, मोतबर बण के रिहा सुणाईआ। मैं अगगे भगतां नाल होण नहीं देणा धोखा, ना देवे कोई सजाईआ। उच्ची कूक पहलों श्री भगवान तूं दवाया होका, फिर आपणा निशान सुहाईआ। हुण मेरी प्रभू रक्खे ओटा, क्यों मैं भगत आपणे विच्च रखाईआ। मैं मारां बिरहों वैरागी चोटा, चटान पत्थर दिल दिआं हिलाईआ। आपणे अंदर रहण ना देणा कोई खोटा, खरे कर के बाहर दिआं कट्टाईआ। जिस ने खादा सूर गाँ झोटा, तिनां देवां सजाईआ। तिनां दा सचखण्ड विच्च वडन नहीं देणा पुत्त पोता, कल कलंक दिआं लगाईआ। बेशक मैंनू सारे कहण होछा, मैं सच सच जणाईआ। कोटां विच्चों मैंनू इक्को भगत बहुता, जो मेरे अंदर आ के श्री भगवान धिआईआ। मेरा किसे नाल नहीं रोसा, जो प्रभ भुल्ले तिनां धक्का देवां लाईआ। मैंनू भगत मिलण दा शौका, मेरे अन्तर इक्को खाहश वज्जे वधाईआ। मैं आपणा पोच्चया चौंका, साफ़ अच्छी तरां कराईआ। जग कहे नार ना सोंहदी बिन खौंता, भगवान कहे मेरी भगत बिना ना कोई वडयाईआ। कलिजुग अन्तम सारा जहान जाए औंता, पीहडी वधे ना चले सांझ जगत ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, भगत दुआर रिहा मंग मंगाईआ।

भगवान कहे सुण सच मनारे, सच सच दृढाईआ । भगत भगवान दोवें तेरे प्यारे, पिच्छे कोई रह ना जाईआ । मंजल मंजल तेरे नजारे, नर नरायण आप दरसाईआ । एका दूजा तीजा चौथा पन्ध निवारे, वड दाता बेपरवाहीआ । चढ़ के वेखे अन्त किनारे, किनारा इक्को इक्क वखाईआ । उच्ची बोल सच जैकारे, साचा ढोला दए सुणाईआ । आओ मिलो भगत प्यारे, प्रेम प्रीती इक्क वधाईआ । तूं मेरा मैं तेरे सहारे, दूजी ओट ना कोई रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच वडयाईआ ।

भगत दुआरा बणया अनोखा, सो साहिब आप बणाईआ । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दे के मौका, मुफ्तो मुफ्त रिहा समझाईआ । वेखो तुहाड़े बरदे तुहाड़े नाल करदे धोखा, अंदरों संग ना कोई रखाईआ । रसना जिह्वा पढ़दे पुस्तक पोथा, मन वासना ना कोई मिटाईआ । कलिजुग जीव होया थोथा, ठोकर नाम ना कोई लगाईआ । एनां पिच्छे कोई ना करयो रोसा, प्रभ देवणहार सजाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर गुरू अवतार वखाईआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख होए हैरान, हैरानी सभ दे उते छाईआ । असीं दस्स के आए धर्म ईमान, शरअ शरीअत वंड वंडाईआ । लिख के आए अञ्जील कुरान, सिपत कर के आए वेद पुरान, गीता ज्ञान ज्ञान दृढाईआ । सारे सुण के सारे पढ़ के होए बेईमान, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ । कन्नीं सुण के बड़े शैतान, शरअ घर घर करे लडाईआ । साबत रिहा ना कोई ईमान, धर्म धीर ना कोई रखाईआ । घर घर वडिआ माण अभिमान, हँकार आपणा बल जणाईआ । कूडी क्रिया चढ़या तूफान, साधां सन्तां रिहा रुडाईआ । साचे वसे ना कोई मकान, कूडे मन्दर रहे सुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार वेख वेख नेत्र नैण नैण शरमाईआ ।

कलिजुग अन्तम वेख्या, नेत्र नैण उठा । कूडा होया जगत भेखवया, भुल्लया बेपरवाह । बिन करसाण उजड़या खेततया, ना फल सके कोई लगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर गवाह लए बणा ।

बणो गवाह पीर पैगम्बर गुर अवतार, हरि करता आप जणाईआ । ना मुहब्बत ना प्यार, ना सज्जण ना कोई यार, सगला संग ना कोई वखाईआ । कूडा नाता वेखो जगत संसार, कूडी क्रिया होया विहार, सच विवहार ना कोई जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नेत्र नैण नैण सर्व वखाईआ ।

नेत्र नैण वेख होए निरास, उच्ची कूक कूक सुणाईआ । जिउं भावे तिउं लैणा राख, तेरे हथ्य प्रभू वडयाईआ । असीं तेरी रक्ख के आए आस, सो वेला गिआ आईआ । असीं तेरे बरदे दास, दर बैठे सीस झुकाईआ । कर किरपा सह लै पास, पिच्छे लोड़ रहे ना राईआ । तेरा लेख पुरख अबिनाश, तेरे हथ्य वड्डी वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुनेहुडा सर्व जणाईआ ।

सच सुनेहड़ा सरगुण निरगुण, दो दो आप जणाइंदा । दो जहानां पुकार सुण सुण, साहिब सतिगुर हुक्म जणाइंदा । लेखा जाणे गुण गुण, अवगुण गहर गम्भीर खोज खुजाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा । साची खेल खेल करें प्रभ माही, तेरे हत्थ सदा वडयाईंआ । असीं पान्धी बणे राही, चल आए सच सरनाईंआ । किरपा कर दे सरनाईं, सरनगत इक्क तकाईंआ । दर दरवाजा वेखीए चाईं चाईं, जिस घर भगतां डेरा लाईंआ । जो इक्को नाम रहे ध्याईं, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईंआ । तूं साहिब फड़ के मैनुं बाहीं, आप आपणे नाल मिलाईंआ । दो जहान ना होए जुदाईं, विछोड़ा कोई नजर ना आईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रिहा खलाईंआ ।

गुर अवतार निरगुण सरगुण, सिफ़रा रूप सर्व जणाइंदा । जे कोई है तुहाड्डा चुणो, श्री भगवान आप सुणाइंदा । दर दर घर घर वेखो गुण, कौण सिख्या तुहाड्डा कमाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार समझाइंदा ।

गुर अवतार कहण वेख के आए, नौं खण्ड पृथमी फेरा पाईंआ । कलिजुग जीव रहे कुरलाए, कूडी क्रिया कर कुडमाईंआ । काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाए, आसा तृष्णा रही तड़फाईंआ । तेरा नाम गए भुलाए, साडी याद ना कोई रखाईंआ । साचा मन् दर ना कोई सुहाए, गुरूदवार ना कोई वडयाईंआ । सजदा सीस ना कोई झुकाए, नमाज ऊजू ना कोई वडयाईंआ । बांग सदा ना कोई सुणाए, नाअरा हक़ ना कोई जणाईंआ । बेपरवाह भुल्लया खुदाए, खुदी घर घर डेरा लाईंआ । माया पिच्छे करन हाए हाए, हौके लै लै वड्डे छोटयां रहे सुणाईंआ । की कर के गए साडे चाचे ताए, पुत पोतरे आपणा बल धराईंआ । गुर अवतार वेख के हाल सर्व कुरलाए, साडी कीती रहे उलटाईंआ । जिउँ भावे तिउँ दे सजाए, सारे तेरे तेरी झोली पाईंआ । जिस नूं चाहें लएं बचाए, आप आपणा मेल मिलाईंआ । श्री भगवान कहि सुणाए, ऊँची कूक कूक जणाईंआ । सारे इक्को वार कहो असीं तेरी रजाए, तैथों लईं मर्जी तेरी झोली पाईंआ । आपणे दर लए बहाए, चार जुग तेरे हुक्म अंदर फ़र्जी सेव कमाईंआ । भेव ना जाता तूं सभ दा गरजी, घट घट रिहा समाईंआ । साडे चोले पाटे सीं बण के दरजी, नाम धागा प्रेम सूईं चलाईंआ । असीं वेखण आए गोबिन्द किहडी पहने वरदी, वारद हो के सभ ते छाईंआ । उहदी किहो जिही कलगी, ताज कवण सीस टिकाईंआ । असीं वेख के डर के भय विच्च आ के साडी बदल गईं ज़रदी, ज़रा ज़रा अक्ख उठाईंआ । सानूं भुल्ल गईं गरमी सरदी, रुत रुतडी कोई नजर ना आईंआ । तेरी वेख कला चढ़दी, चारों कुण्ट वज्जे वधाईंआ । तेरे अगगे लोकाईं ना अडदी, चारों कुण्ट रिहा ढाईंआ । इक्को भगत आसा तेरे बिरहों अंदर मरदी, मरदी मरदी तेरा ध्यान लगाईंआ । जे मिले ते तेरी मर्जी, ना मिले ते फेर वी तेरी अखवाईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतारां दए सुणाईंआ ।

गुर अवतार छडु दिउ खैडे, सो साहिब आप सुणाया । आओ वड जाओ साचे

वेहड़े, जिस दुआरे श्री भगवान डेरा लाया। इक्को बण जाओ मेरे तेरे, दूजा नजर कोई ना आया। मन्दर वेखो जिस दे अंदर भगत भगवान केहड़े केहड़े, एका नाम सुणाया। ना निरगुण ना सरगुण सिँघ शेरे, शहनशाह आपणा फेरा पाया। माही दे आ के वसो खेड़े, जो खेड़ा उजड़ कदे ना जाया। दरस करो हो के नेड़े, दूर दुराडा मेल मिलाया। दीन मजहब दे छड्डो झेड़े, झगढ़ा दिउ गवाया। रल मिल आपणे बन्नो बेड़े, श्री भगवान वरवाया। मन्दर मस्जिद शिवदुआले छड्डो डेरे, डेरा श्री भगवान इक्को इक्क उपाया। जिस दे पिच्छे होए बेरे बेरे, आप आपणा मेट मिटाया। पंज तत्त काया कीते ढेरे, कोई मसाणी कोई बबाणी, कोई मढ़ी गोर दबाया। सो करे हक नबेड़े, नेता इक्को बण के आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच समझाया।

हां प्रभू तेरा वेख्या दूआ, दो धार नजर ना आईआ। तेरा सिफ़रा होया हऊआ, हर इक्क नूं रिहा डराईआ। तुध बिन नजर ना आए कोआ, कूक रही सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए जणाईआ। आओ वेखो वड़ गए अंदर, रुत सोलां चेत सुहाईआ। बहि के साचे मन्दर, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच जणाईआ।

गुर अवतार अंदर वड़, प्रभ करे खेल अपारा। भगत भगवान बंनूए लड़, करे सच विहारा। साचे घोड़े फड़ के चाढ़े, नाम वजाए नाम नगारा। सरवीआं मिल के लाए अखाड़े, वाह वा मंगलाचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा दस्से खेल अपारा।

बीस बीसा वजा ढोला, गीत गोबिन्द अलाईआ। सो सतिगुर बण विचोला, साचा काज रचाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रक्खदा रिहा उहला, अन्तम आपणा भेव खुलाईआ। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो वेखो निरगुण मौला, निरगुण आपणी कार कमाईआ। भाग लगाए साची धौला, धरनी धरत धवल दए वडयाईआ। जिस दा भेव ना जाणे कोई पंडत मुलां रौला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ।

भगत दुआरे सोहण भगत, भगवन दए वडयाईआ। वीह सौ वीह वेखणहारा साचा वक्त, जग जीवण दाता फेरा पाईआ। निरवैर करे आपणी हरकत, हिलदा जुलदा नजर किसे ना आईआ। इक्को घर वरवाए आपणी बरकत, खाली दुआरे सर्ब कराईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल कर के लिखत पढ़त, लेखा सभ दा रिहा वरवाईआ। अगगे कोई ना मंगे हरि के नाम का धड़त, पैसा धेला वट्टा ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ।

साची खेल भगत दुआर बणा, सो साहिब आप कराइंदा। सिफ़रा रूप बेपरवाह, निरगुण सरगुण आपणे विच्च छुपाइंदा। लेखा जाण दो जहां, दोहरी धार वरवाइंदा। बांका



छोहरा आप उठा, नाम घोड़ा इक्क उपाइंदा। सोहणा आसण सोहणा ला, शाहसवार सोभा पाइंदा। कदम कदम रिहा चला, पदम पदम पन्ध मुकाइंदा। अदम अदम वेख वखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल समझाइंदा। बीस बीसा खेल अपार, सो साहिब आप जणाईआ। भगत दुआरे अंदर कट्टे कीते गुर अवतार, हुक्म हाकम इक्क मनाईआ। भगतां नाल मिल के बोलो सर्ब जैकार, जै जैकार आप जणाईआ। श्री भगवान नौजवान बणया पहरेदार, साची सेवा आप कमाईआ। दर दरवाजा दो जहानां श्री भगवाना कर त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रिहा कमाईआ।

दर दरवाजा आप खोलू, खालक खलक दए जणाईआ। निरगुण सरगुण तोले साचा तोल, तोलणहारा बेपरवाहीआ। बैठणहार सदा अडोल, डुल्ल कदे ना जाईआ। सभ दा लहणा रक्ख आपणे कोल, अट्टल अट्टला आपणे चरन बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वडयाईआ।

सच वडुआई देवे साढे सत्त, सति सति समझाइंदा। भगत भगवान करन आया पक्ख, पारखू आपणा फेरा पाइंदा। लक्ख चुरासी नालों कर के वक्ख, वक्खरी धार समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगंबर बीस बीस गए दस्स, सो बीस बीस आपणे विच्च छुपाइंदा। सन्त साजण वेखे हस्स हस्स, साहिब सतिगुर फेरा पाइंदा। पन्ध मुकाए नस्स नस्स, लक्ख चुरासी खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत भगवान दया कमाइंदा।

भगत भगवान अंदर वाड, वाड़ी आपणे नाम कराईआ। साचे घर बणा साचे लाड, लाड़ी जोत अकालण नाल परनाईआ। सरवीआं लग्गे इक्क अखाड, गोपी काहन नाच नचाईआ। वेखो भाग लग्गा विच्च उजाड, जंगल देवणहार वडयाईआ। जिथे बाल निधानयां रक्खी खाक, सो खाक खाक सभ नूं दए कराईआ। सो धाम पवित्र होया पाक, पुनीत पुनीत अखवाईआ। सिँघ मनजीत मिली दात, मां रणजीत कौर जगत वडयाईआ। जगदीश कहे प्रभ मेरा साथ, सगला संग निभाईआ। जन भगतां टिक्का लग्गे मस्तक माथ, लहणा कोई रहण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगंबर घर साचे बणे साक, सज्जण मेला सैहज सुभाईआ। अन्तम उतरे पूरे घाट, किनारा इक्को इक्क दरसाईआ। आवण जावण मुक्के वाट, पान्धी फड ना कोई भुआईआ। लहणा चुक्के जात पात, दीन मज्जब ना कोई लडाईआ। लेखा मुक्के पृथ्मी अकाश, गगन मण्डल ना कोई भुआईआ। प्रभ चरन दुआरे मिल्या इक्क निवास, घर सच्चा नजरी आईआ। जिस नालों विछड़ी शाख, अन्तम ओसे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा देवणहार वडयाईआ।

बीस बीसा चाढे रंग आपणे हत्थ गुलाल, मैहन्दी इक्को इक्क लगाइंदा। लेखा

चुक्के गुजरी लाल, गहर गम्भीर आप समझाइंदा। रकशा करे दीन दयाल, नाम खण्डा इक्क चमकाइंदा, जिनां अंदर लिआ बहाल, तिनां आपणा घर वखाइंदा। नाता तोड़ कूड़े काल, कलिजुग कूड़े पन्ध मुकाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों करे बहाल, आप आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सेव कमाइंदा।

सेवा करे वड मेहरबान, शाह पातशाह वड्डी वडयाईआ। दरवाजा कहे मैं बडा बलवान, बिन मेरे अंदर लंघ कोई ना जाईआ। जिस दा पहिरेदार बणया श्री भगवान, आपणी सेव कमाईआ। अंदर बाहर वेखे मार ध्यान, सज्जे खब्बे नैण उठाईआ। अंदर वडे ना कोई शैतान, गुरमुख साचे रिहा लंघाईआ। पहलों आ के बोले सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, पंज जैकारे दए लगाईआ। फिर रक्खे चरन ध्यान, अग्गे जावे वाहो दाहीआ। नजरी आए नौजवान, शाह पातशाह आसण लाईआ। जिस दा लेखा बेमिसाल, मिसल सके ना कोई बणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अंदर लए बिठाल, साहिब वेखे चाई चाईआ। आओ हरि का करो जलाल, जल्वा नूर रिहा रुशनाईआ। कितों लम्हे ना गुजरी लाल, लालन आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

चोबदार बण खलोता, खालक खलक सेव कमाइंदा। हथ विच्च फड़ के नाम सोटा, आप आपणा बल धराइंदा। गोबिन्द तेरा पिछला मेटे रोसा, आ वेख रस्सियां सर्ब मनाइंदा। हुण नहीं अग्गे देंदा धोखा, धूएँ धुखदे आपणे विच्च छुपाइंदा। जिन गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणे मिलण दा दिता मौका, लोकमात सर्ब बुलाइंदा। उह गुरमुखां राह ना दस्से औखा, फड़ उंगली नाल चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक आपणी दया कमाइंदा। सेवक फिरे चोबदार, दर दरवाजे फेरा पाईआ। खबरदार होवे सर्ब संसार, सोया कोई रहण ना पाईआ। होका देवे वारो वार, चारों कुण्ट रिहा सुणाईआ। आओ जिस ने लँघणा पार, बिन बेडीउँ पार कराईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी जगत वसाखी रोवे धाहां मार, गोबिन्द वसाखी गुरमुखां रंग चढाईआ। खेल करे आप निरँकार, दो जहानां दए वडयाईआ। साकी बण के सांझा यार, अमृत जाम रिहा पिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

दरवाजा कहे चौकीदार सोहणा, आलस निंदरा विच्च ना आइंदा। जे मैं वेखां मैंनू लग्गे मोहणा, मेरे नाल मुहब्बत पाइंदा। मैंनू भुल्ल जाए जागणा सौणा, आलस निंदरा ना कोई रखाइंदा। मैं वी ओस दा ढोला गौणा, जो मेरी सेव कमाइंदा। अन्तम एसे जोगा होणा, दूजा नजर कोई ना आइंदा। जन भगतां पाप कलेवर धोणा, एसे कर के बाहरों पंज जैकार लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा।

जो भगत आण एथे झुकेगा। अगला पिछला पैंडा मुक्केगा। साहिब सतिगुर आप

पुछेगा । निरगुण लुकाइआं कदे ना लुकेगा । लुटाइआं कदे ना लुटेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे बहि के पुछेगा ।

वेखो फिरदा चोबदार, होका दे दे जगाईआ । सारे हो जाओ खबरदार, बेखबर आप जणाईआ । जिस नूं लभदे फिरदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंघी कंदर डेरा लाईआ । जिस दे पिछे मन्दर मस्जिद शिवदुआले मथे रगड़दा रिहा संसार, सार किसे ना आईआ । जिस दे पिछे पत्थरां मूरतीआं उते पौंदे रहे हार, कागज कलम शाही लिखया लेख पढ़ पढ़ जगत सुणाईआ । जिस दे पिछे गुरू मन्नदे रहे जगत अवतार, दर दर सीस झुकाईआ । तिस साहिब दा करो दीदार, दर आए मिले वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ ।

होका देवे मारे कूक, उठो मेरे भाईआ । कलिजुग अन्त ना सौणा घूक, सुत्यां हत्थ कुछ ना आईआ । गोबिन्द कहे हुण ना बणिओ कपूत, पुत्त पिता गोद सुहाईआ । नेत्र खोले वेखो इक्को तागा इक्को सूत, इक्को शब्दी तन्द बंधाईआ । जिस दा लेखा चार कूट, दहि दिशा नाम वडयाईआ । क्यों उस दे कोलों गए रूठ, रुठिआं फेर ना कोई मनाईआ । काया चोला फेर नहीं लभणा पंज भूत, माणस जन्म हत्थ ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ ।

दरवाजा कहे दरबान बड़ा चुस्त, चुकन्ना हो के फिरे वाहो दाहीआ । मेरी नंगी होण ना देवे पुशत, चारों कुण्टां वेख वरवाईआ । उस दा अंग अंग रिहा फड़क, बल आपणा रिहा समझाईआ । एह लेख चुकाए तुरत, जो चल आए सरनाईआ । उस साहिब नूं मिल के किसे होर दी रहे ना हुटक, नेत्र ध्यान ना कोई टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सेव कमाईआ ।

वीह सौ वीह बिक्रमी कहे वसाखा, वाह वा साहिब तेरी वडयाईआ । निरगुण हो के बणया राखा, आपणी कार कमाईआ । भगत जनां दा परदा ढाका, मेहर नजर उठाईआ । जिस दा सारे लिख दे गए साका, सो साख्यात नजरी आईआ । पीर पैगबर मन्नण आका, प्रभ आया बेपरवाहीआ । गोबिन्द जिस दी गोदी बहे काका, अकाल पुरख फेरा पाईआ । भगत दुआरे कीता नाका, सनमुख अंदर कोई ना आईआ । जन भगतां पूरा कीता घाटा, दूआ सिफरा विच्च मिलाईआ । गुरमुख सवाणी अग्गे खुल्ला दिसे ना किसे झाटा, मींढी सीस आप गुंदाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बेपरवाह वड्डी वडयाईआ ।

मूरख मुगधो पिच्छों जाओ हट, हरि इक्को वार जणाईआ । पहली वसाख लगगा फट्ट, अग्गे फेर पट्टी ना कोई बंधाईआ । जे गुर समझो तां जट्टां विच्चों जट्ट, निरँकार समझो तां हो जाए निरँकार, दूजा निरँकार नजर किसे ना आईआ । जो जट्टां विच्चों वेख

हट्ट, दो जहानां रिहा जणाईआ। जे जोर वेखो ते प्रभ समरथ, बल आपणा आप रखाईआ। जे नरोए वखाए आपणे अगगों हत्थ, बिन हत्थां नाम खण्डा तीर चलाईआ। जे प्रेम करो तुहाड्डे अगगे जाए ढट्ट, आपणा बल ना कोई वखाईआ। जे इक्ठे हो के दिउ मत, तुहाड्डे मत आपणी झोली पाईआ। जे प्रेम नाल रंगो आपणी रत्त, प्रेम रत्त हत्थां नाल लग्गी दए वखाईआ। जे विछोडे दा तीर मारो कस, तां आपणी सुध लए भुआईआ। जे प्रभ दे होवो वस, आपणी छाती लए लगाईआ। जे भगत दुआरे जाओ वस, ते सचखण्ड साचे दए वसाईआ। एस दे विच्च वडिआ लक्ख चुरासी विच्च ना जाए नट्ट, वीह सौ वीह बिक्रमी दी एहो वड्डी वडयाईआ। पहली वसाख करी चट्ट, अगगे आपणा कम्म जणाईआ। जो साहिब अकथ्थना अकथ्थ, वेख गुर अवतार पीर पैगम्बर शुकर मनाईआ। एह खेडा नहीं होणा भट्ट, भट्टा सभ दा दए बिठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणी कार कमाईआ।

दरवाजा कहे मेरा दरवेश, मैं इक्को मंग मंगाइंदा। चोबदार रहे हमेश, साची सेव कमाइंदा। मैं नित नित एहदा दर्शन लवां वेख, एसे करके मंग मंगाइंदा। प्रेम प्रीती बझा हेत, हितकारी इक्को नजरी आइंदा। एह खेडां खेडदा रिहा विच्च भगतां हेत, जींदे मार मार जींदे आप कराइंदा। एहदे अगगे काल महांकाल धर्म राए दी चले ना कोई पेश, भाणा सिर ना कोई रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच महल्ले आपणी कार कमाइंदा।

कार करे प्रभ ठाकर स्वामी, शाह पातशाह सेव कमाईआ। आदि जुगादि अन्तरजामी, वड दाता बेपरवाहीआ। सिफ्त सालाही बोध अगाधी बाणी, करनहारे सच पढाईआ। जोती नूर नूर नुरानी, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। जिस दी सुणदे रहे कहाणी, सो पीर बेनजीर गुणी गहीर आपणा फेरा पाईआ। हुण किसे दी देईए कुरबानी, कुरबानी लैण वाला आपणी भेटा रिहा चढाईआ। जे वेखो ते सच निशानी, नाम खण्डा रिहा चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

दरवाजा कहे मैं मंगी मदद, इक्को ओट तकाईआ। अगगे निरगुण सरगुण बण के बणदा रिहों अदद, इकल्ले कार ना कोई कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों करौंदा रिहों तशदद, दीन मज्जब वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सेवा मोहे भाईआ।

तेरी सेवा प्रभू लग्गे चंगी, दर दरवाजा आप सुणाइंदा। तेरे हत्थ कटार नंगी, भुक्खा नंगा बह बह खुशी मनाइंदा। प्रभ कट्ट जाए सारी तंगी, दुखीआं दर्द मिटाइंदा। निमाणयां नितानयां मिल जाए संगी, सगला संग रखाइंदा। साडी हालत फेर ना होए मंदी, राए धर्म ना डंन लगाइंदा। सुरत सवाणी ना होवे रंडी, जगत रंडेपा आप कटाइंदा। कर्नीं पाए डण्डी, नँथ सुहाग इक्क रखाइंदा। डोली बहाए कर शिंगार चन्द बन्दी, टिक्का

दौणी नाल सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाइंदा।

दरवाजा कहे बांका छोहरा, शहनशाह आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां गाए साचा दोहरा, दोहरी धार वखाईआ। चढ़ के आया निरगुण घोड़ा, घोड़ा नजर कोई ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण पै गिआ लोहड़ा, साडी पेश ना चले राईआ। भगत भगवान आपणा आप बणाया जोड़ा, जोड़ी जुड़ी इक्को थाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर सभनां बेपरवाहीआ।

वसाखी कहे मैं गई वस, वसल महिबूब कराया। जिधर वेखां प्रभ मिले हस्स, हँस मुख बेपरवाहिआ। निरगुण सरगुण सिफ़रा हो के पूरी कीती आस, सिफ़रा दूआ आपणा अंक बणाया। दो जहानां पाई रास, गोपी काहन आप नचाया। भगत मिलण दी रक्खी खाहश, खासतगार फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर इक्को इक्क सुहाया।

दरवाजा कहे पुरख अबिनाशन, मेरा संग रखाईआ। मेरे विच्च लग्गा सिँघासण, संगी सेव कमाईआ। ना संघ्यया ना कोई आथण, रात अन्धेरी ना कोई जणाईआ। ना कोई प्रभाती दिसे साथण, सरगी वेला ना कोई वडयाईआ। ना कोई निमाज ना निमाजन, हाजी हज्ज ना कोई कराईआ। ना कोई पाठी ना कोई पाठण, पाठशाला ना कोई वखाईआ। ना कोई तट्ट ना कोई ताटन, सरोवर नजर कोई ना आईआ। ना कोई किनारा ना कोई घाटन, घाट मिले ना कोई वडयाईआ। प्रभ इक्को आया साचे पातण, गुरमुख सज्जण लए तराईआ। लक्ख चुरासी विच्चों रक्खण, रक्खया करे हर घट थाईआ। सतिजुग दा साचा मार्ग दरस्सण, सोहँ शब्द करे पढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर दरवेश इक्क अरखाईआ।

दर दरवेश बण दरबान, सेवा कर श्री भगवान, खण्डा खिचे विच्चों मिआन, लेखा जाणे दो जहान, जोधा सूरबीर बलवान, बण के मर्द मर्द मरदान, भगतां देवे नाम परवाना, पारब्रह्म परम पुरख परमेशवर इक्को करे पढाईआ। सिँघासण कहे मैं गिआ डैह, दर दुआरे डेरा लाईआ। मैं इक्को भगवान दी होण देणी जै, दूजा नाम ना कोई ध्याईआ। पिच्छे नाम इक्क दूजे नाल मरदे रहे खह खह, दीनां मज्जबां करी लड़ाईआ। हरि का नाम इक्को घर बहे, मन्दर मस्जिद शिवदुआले मट्ट वंड ना कोई वंडाईआ। जो जन रसना जिह्वा कहे, तिस आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

शब्द सिँघासण कहे मैं गिआ डट्ट, आपणे चारे पैर जमाईआ। मेरे कोलों कोई भगत बाहर ना जाए नट्ट, फड के बाहों अंदरे रखाईआ। एसे कर के वीह सौ वीह बिक्रमी

कीता कट्ट, इक्के इक्को घर वसाईआ। ना कोई शक्ती ब्रह्मण शूद्र वैश जात पात ऊँच नीच ना कोई दस्सां मित, जो चल आया सरनाईआ। तिनां रंगाए आपणी प्रेम रत्त, रंग इक्को इक्क चढ़ाईआ। छोटयां वडुयां सारयां देवां साची मत, वितकरा विच्च ना कोई रखाईआ। मिलो मेल पुरख समरथ, जिस मिल्लयां दुःख रहे ना राईआ। जे नेत्र वेखो ते खण्डा दिसे हत्थ, जे अंदर वेखो ते जोत नूर रुशनाईआ। जे बाहरों कहो ते कुछ कहण पूरन जट्ट, जे अंदर वड के वेखो पुरख समरथ आपणी कार कमाईआ। जे बाहरों वेखो दिसे बाजीगर नट, जे अंदर वेखो तां पत साचा रिहा मिलाईआ। जे बाहरों वेखो तां वेखदिआं सारी मारी जाए मत, जे अंदर वेखो ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। जे बाहरों वेखो वेख के सारे जाओ नट्ट, जे अंदर वेखो महिमा अकथ करे पढ़ाईआ। जे बाहरों वेखो वेख के उबले रत्त, जे अंदर वेखो सच सतिगुर नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे वज्जे वधाईआ।

वसाख कहे प्रभ अगगे आ जा, तेरे हत्थ सर्ब वडयाईआ। जन भगतां सच सच समझा जा, इक्को बुद्ध रखाईआ। दर आयां दी रक्ख लाजा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। लोकीं कहन्दे प्रगटे माझा, तेरा माझा दो जहान अखवाईआ। तूं हरि सभ दा सांझा, नजरी नजर हेठ लोकाईआ। जहडा लेखा रह गिआ नकाह करन दा हीर ते रांझा, सो सिँघ गुरमेज दलजीत करी कुडमाईआ। तूं आशक माअशूक दोहां दा सांझा, मुशकल विच्च ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

आशक माअशूक हरि संगत दोवें मारो कूक, कूक कूक जणाइंदा। बिरहों वैराग फ़राक अंदर दिउ फूक, फोका रंग ना कोई लगाइंदा। आवण जावण दी चुक्के चूक, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। प्रभ दी सेजे चढ़ के सौं जाओ घूक, सुत्यां फेर ना कोई उठाइंदा। किसे कम्म ना औणा पंज तत्त कलबूत, कलमा आपणा आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत दुआरे इक्क विवाह, पिछला लेखा दए चुका, पीर जामन फ़ड़ाए दामन, दामनगीर आप अखवाइंदा।

दामनगीर बणया भगतो, भगवान दया कमाईआ। वेले सिर सारे परखो, राती सुत्यां रिहा जगाईआ। उच्ची ढोला गाओ कड़को, सोहँ जै जैकार सुणाईआ। सिध्धी सड़के मूल ना अटको, राह विच्च सके ना कोई अटकाईआ। इधर उधर ना नैण मटको, दूजा ध्यान ना कोई रखाईआ। जा के सिर चरनां उते परतो, परम पुरख मेल मिलाईआ। श्री भगवान नाल भाईचारा बण के वरतो, वड्डा छोटा कोई नजर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

सिँघासण कहे प्रभ आया अगगे, साची सेव कमाईआ। भगत दुआरे भगत कट्टे चंगे, चरन कँवल दए वडयाईआ। प्रेम प्रीती साची रंगे, रंगण इक्को इक्क रखाईआ। नजर ना आए नेत्र अन्धे, कलिजुग जीव सार कोई ना पाईआ। जिनां मिल्या उह चंगे बण

गए मंदे, मन्दयां चंगे दए बणाईआ । दर ते आ रहण ना गंदे, गंदी वासना दए कढुईआ । अंदर वड के सभ दे नाल हंडे, आप आपणा मेल मिलाईआ । जो जन गौंदे सोहँ छन्दे, शहनशाह आपणे घर बहाईआ । कट्टे धर्म राए दे फंदे, फासी गल ना कोई लटकाईआ । पार उतारे घर करदे धंदे, जो घर बैठे तिनां संगत नाल मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा खेल रचाईआ ।

बीस बीसा कहे मै मात चढ़या, चढ़दी कला वखाईआ । श्री भगवान इक्को फड़या, भगत दुआरे सेवा लाईआ । जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर तैथों डरया, तूं सभनां भय जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची कार आप कमाईआ ।

सिँघासण कहे प्रभ हो मज्दूर, मज्दूरी आप कमाईआ । जन भगतां मेले ज़रूर, ज़रूरत इक्को इक्क रखाईआ । नजरी आए इक्क हज़ूर, हज़रत आपणा आसण लाईआ । दर आए सर्ब मनज़ूर, लेखा आपणी झोली पाईआ । पिछले बख्शे सर्ब कसूर, अग्गे देवणहार वडयाईआ । जो दर दरवाजे विच्चों मस्तक लावे धूढ़, तिनां माण अभिमान रहण ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ ।

साचा खेल श्री भगवन्त, भगवान इक्को इक्क कराइंदा । सन्त सुहेले साचे सन्त, दर साचे आप बहाइंदा । इक्को नाम मणीआं मंत, इष्ट गुरदेव इक्क वखाइंदा । इक्को नार सुहागी कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंडाइंदा । इक्को बणाए साची बणत, घडन भनणहार आप अखवाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा ।

खेल करन प्रभ आया आप, आपणी दया कमाईआ । साची थापण रिहा थाप, बेपरवाह धार वखाईआ । भगत भगवान बणाए साक, सगला संग रखाईआ । गृह मन्दर खोले ताक, हाटी कुण्डा आपणा लाहीआ । बिन नैणां लए झाक, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदर बाहर सदा सदा सेव कमाईआ ।

अंदर बाहर सेवक बणया, साढे तिन्न हत्थ आसण लाईआ । भगत भगवान आपे जणया, धन्न बणे जणेंदी माईआ । लक्ख चुरासी विच्चों छाण पुणया, पुण छाण आप कराईआ । दुक्खीआं दुःख आपे सुणया, दरदीआं दर्द वंडाईआ । जानणहार गुण अवगुणया, घर घर वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदर बाहर वेखे थाउँ थाईआं ।

अंदर सिँघासण साहिब सुल्तान, सति पुरख उपजाईआ । बाहर सिँघासण श्री भगवान, दाता दानी वड वडयाईआ । अग्गे पिच्छे हो प्रधान, साची सेव कमाईआ । विच्च बैठे रहण

सन्त सुजान, भगत भगवान दए वडयाईआ। जिस दा पती होवे बलवान, तिस बल अक्ख ना सके कोई उठाईआ। जिस दा पुत्तर होवे निशान, तिस पिता मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

शहनशाह नहीं जगत मुलाजम, जन भगतां कार कमाइंदा। जिस नूं कहन्दे अजीम आजम, सो आपणी अजमत इक्क वखाइंदा। जो नजामां दा बणे नाजम, सो निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जो आलमां दा होए आलम, उलमा आप पढाइंदा। जो तालबां दा होए तालब, तलब इक्को इक्क वखाइंदा। जो गालबां दा होए गलब, गौरत विच्च खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शाइरां दा शाइर, शऊर आपणा ना कोई वखाइंदा।

ना शाइर ना शऊर, सुहबत विच्च कदे ना आईआ। जे कोई लभ्मे बणया रहे मफरूर, हत्थ फडन कोई ना जाईआ। जे कोई सुणना चाहे नाद वजाए तम्बुर, काया किंग बणाईआ। जे कोई वेखण जाए हजूर, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जे कोई बख्शावण आए कसूर, स्वछ सरूपी हो के दरस दिखाईआ। जे कोई प्रेम प्रीती मंगे जरूर, जरूरत सभ दी पूर कराईआ। जे कोई खाहश रक्खे मैनुं बहिश्तां विच्च मिले हूर, तिनां कोरा टिक्का मस्तक लाईआ। मुहम्मद एसे गल्ल तों रिहा दूर, मुरीदां गिआ समझाईआ। ओथे लोड हूरां जहूर, जरूर बहिश्त मिले वडयाईआ। एह प्रभ सच्चे नूं नहीं मनजूर, सो मनजूर जो मनसूर सूली चढ़ के गिआ समझाईआ। ओथे साहिब इक्क गफूर, शहनशाह बैठा आसण लाईआ। जिस दा जल्वा ज़ाहर जहूर, परदा सके ना कोई पाईआ। मेहर रैहमत विच्च आ के बणे मजदूर, मजदूरां मुशकल हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगगे पिच्छे दोवें सिँघासण वडयाईआ।

अगला सिँघासण कहे मैं सभ दा दाता, दर आइआं पार कराइंदा। पिछला सिँघासण कहे मैं भगतां राखा, भगतां नेड कोई ना आइंदा। अगला सिँघासण कहे मैं पिता माता, जो आइआ आपणी गोद बहाइंदा। पिछला सिँघासण कहे मैं जोड़ां नाता, जिस दा जुड़या पिच्छे मुड कोई ना जाइंदा। अगला सिँघासण कहे मैं सज्जण साका, दर आपणा बंधन पाइंदा। पिछला सिँघासण कहे मैं कमलापाता, सिर सभनां हत्थ रखाइंदा। अगला सिँघासण कहे मेरे उत्ते पुरख समराथा, इक्को इक्क सोभा पाइंदा। पिछला सिँघासण कहे मैं इक्को इक्क जाता, अगगे पिच्छे दूजा नजर कोई ना आइंदा। अगला सिँघासण कहे मेरा सोहणा रंग, नूरो नूर रंगाईआ। पिछला सिँघासण कहे मैं भगतां दस्सां ढंग, जाओ मंगो चाई चाईआ। अगला सिँघासण कहे मैं लावां अंग, पिछला सिँघासण कहे जिनां चिर मैं ना घल्लां, कौण लग्गे तेरी पाईआ। अगला सिँघासण कहे मेरा अनन्द, पिछला सिँघासण कहे बिन भगत चन्द हत्थ किसे ना आईआ। अगला सिँघासण कहे मेरा लंमां पन्ध, पिछला सिँघासण कहे मैं किरपा कर इक्को धक्का लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, उह निरगुण एह सरगुण निरगुण सरगुण निरगुण नाल मिलाईआ।



एह खेल जिस वेख्या हुण, नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग फेर नजर किसे ना आईआ। बेशक गुसे विच्च आ के मारो घसुन्न, श्री भगवान दुःख ना कोई मनाईआ। फड़ के अगनी उत्ते दिउ भुंन, लंबू जगत लगाईआ। फिर वी कहे भगतो तुहाछा हुण, तुसां मेरा लेखा आपणे लेखे लाईआ। जे तुहाछे विच्च ना हुंदा गुण, क्यों भगवान औंदा चाई चाईआ। तुहाछी पुकार रिहा सुण, क्यों बैटे मुख छुपाईआ। आपणे राग दी सुणाओ धुंन, सारे इक्को वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान दी जै ढोला लाईआ। सुण के ढोला गुर अवतार पीर पैगंबर हो गए सुन्न, सुन समाध समाईआ। जिस ने गरीब निमाणे लए चुण, चारों कुण्ट दए वडयाईआ। उस दा कौण जाणे गुण, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बीस बीस तेरे छत्तर सीस भगतां मिल्या आप जगदीश, बण दरवेश सेव कमाईआ।

दरवेश बण की तेरा घटदा, भगत रहे जणाईआ। औह वेख तेरा प्रेम तीर लग्गदा, गुरमुख मूरछा रूप वटाईआ। औह वेख कलिजुग भांबड़ लग्गे अग्ग दा, दर दवारिउँ बाहर बैटे रोवण मारन धाहींआ। खेल वेखो सच दर प्रभ दा, साचा मेल मिलाईआ। औह वेखो नौं खण्ड सत्त दीप नच्चदा, कलिजुग नाच रिहा कराईआ। एह खेल वेखो श्री भगवान किवें रक्खदा, मेहर नजर आप उटाईआ। औह वेखो भठिआला तपदा, भट्टी अगनी दे थल्ले डाहीआ। औह वेखो गुरमुख टप्पदा, प्रभ मिल्या चाई चाईआ। औह वेखो संसार कूड़ कुडिआर भखदा, हरि का नाम ना कोई धिआईआ। आओ वेखो भगत भगवान इक्क दूजे दा जाप जपदा, तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला गाईआ। एसे कारन कलिजुग अन्तम रक्खदा, रक्खया करे सभनीं थाईआ। एह खेल पुरख समरथ दा, सब घट रिहा समाईआ। लेखा चुक्के तत्त अठु दा, घर मेला सुरत शब्द धी जवाईआ। सौहरे पेके आपे वसदा, कन्त कन्तूहल सच पंघूड़े नाता तोड़े नार पराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत दुआर किवें वसाईआ।

क्यों वसे मेरा भगत दुआर, श्री भगवान रिहा जणाईआ। अंदर वड़ के करां प्यार, सोई सुरती आप उटाईआ। विच्चों अमृत उछाला देवे मार, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। गुरमुख करे गुर प्यार, गुर प्यार गुरमुख विच्च डेरा लाईआ। आपे नार आपे भतार, आपे कन्त कन्तूहल सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। आपे गलवकड़ी पा करे प्यार, प्रेम प्रीती इक्क वखाईआ। आपणी तक्कड़ी तक्कड़ तोलणहार, धडी वट्टा ना कोई रखाईआ। क्यों, जिउँ भैण रक्खड़ी बंने विच्च संसार, तिउँ नाता पुरख बिधाता भगतां नाल रखाईआ। एह खेल नहीं शतरंज शत्तरी, नरद पुट्टी सिध्दी ना कोई वखाईआ। एह तलवार नहीं किसे **क्षत्री**, **ब्रह्मण** शूद्र वैश ना हत्थ उटाईआ। एह खण्डा सब सर्वतरी, सबग सूरा रिहा चमकाईआ। किसे भेव ना पाया खोलू के पत्री, पता दस्सया ना सच्चे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्चा वर, भगतन भगवन मेल मिलाईआ।

बीस बीसा कहे वेख मेरा वसाख, वास्ताा तेरे अग्गे पाईआ। बेपरवाह उठ के झाक,

संगत तेरा राह तकाईआ । की अज्ज पहली वसाख खोल्लया ताक, फेर बन्द देवें कराईआ । नहीं एह गोबिन्द दा भविख्त वाक, सो लेखा पूर कराईआ । श्री भगवान बण के साक, सज्जण आपणे घर लंघाईआ । पुत्त धी ना कोई जात, पात वंड ना कोई वंडाईआ । जिस ने चरन धूढी मस्तक लाई खाक, एथे तिस दए वडयाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण वेखो भगतां मिली नजात, परवरदिगार सिर आपणा हत्थ टिकाईआ । अंदर वड के इक्क दूजे नाल करन बात, नवां दुआरयां विच्चों इक्क दूजे नूं हौली हौली समझाईआ । बिन चन्दों बिन चांदों बिन सूरयों बिन सूरजों बिन घड़ी बिन वेलउँ बिन वक्तों इक्क प्रभात, प्रभू आपणा रंग वखाईआ । दरोही खुदा दी पीरां दे पीर दी नबीआं दा नबी जिस दी पढ़दे रहे निमाज, सो कलमा आप जणाईआ । जिस दा रोजे हशर मंगदे रहे आब हयात, सो मुखतसर आपणा हाल जणाईआ । जिस दी सिपत लिखदे रहे कागजात, कातब लेखा नाल शाहीआ । सो वेखणहारा बाग बागात, बगलगीर बेपरवाहीआ । जिस दी कोई ना झल्ले ताब, सो मुरीद मुशर्द आपताब रिहा चमकाईआ । जिस दा चरन टिक्कया विच्च रकाब, अहिबाब रबाब आपणे नाम वजाईआ । एहनूं ना पुंन ना सवाब, दुःख सुख ना कोई वडयाईआ । ना मक्का ना काअब, हुजरा हज्ज कराईआ । जिस इक्क वार चरनां उते कीता आदाब, दोजरख बहिश्त दोहां तों पार कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवणहार वडयाईआ ।

मेरे भगत किथे वसणगे । गुरूआं अवतारां की दस्सण दस्सणगे । विष्ण ब्रह्मा शिव की वेख हस्सणगे । दो जहान किवें टप्पणगे । जिस वेले सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान ढोला जपणगे । उह ढोला किथे गौणगे । केहड़ी बिध नाल तैनूं धिऔणगे । रुस्से नूं फिर मनौणगे । गुसे नूं जगत गवौणगे । सुते नूं बाहर कढौणगे । आपणी रुत्तडी रुते सुहौणगे । भाग सुते फिर उठौणगे । जीवदिआं मर के मुक्के, मर मुक्के फेर आपणा नाम उपजौणगे । जो कलिजुग बूटे सुक्के, तेरे प्रेम प्यार नाल हरे करौणगे । उह बण के सच्चे सुच्चे, प्रभ दर्शन तेरा पौणगे । सच्चे सुच्चे किवें बणनगे । दर्शन साहिब तेरा किवें करनगे । दस्स जीवदिआं किवें मरनगे । बिन अगनीउँ किवें सडनगे । बिन पौड़ीउँ किवें चढ़नगे । श्री भगवान कहे जो सोहँ ढोला पढ़नगे । सो मेरा दर्शन करनगे । जिस वेले सोहँ गावणगे । लोकां तों शरमावणगे । हौली हौली ज़बान दबावणगे । एधर ओधर वेख के फेर नाम धिआवणगे । जे कोई वेखे मूंह उते परदा पावणगे । जे तूं आवें सानूं चेत, बिन पोथीउँ कह सुणावणगे । प्रभ जिनां ने तेरे नाम दे अड्डो अड्डी लै लए ठेके, ओनां ठेकेदारां असीं घेरा उठावांगे । श्री भगवान कहे ओ गुरमुखो भगतो सन्तो जिनां छडे पेके, कन्त खुशीआं नाल हंढावणगे । जिस दे हत्थ विच्च साडे लेखे, क्योँ उस तों मुख छुपावांगे । जे कोई कहे मिटे भरम भुलेखे, शुकर शुकर मनावंगे । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद तेरे ही अखवावांगे । जे मेरे अखवाओगे । मोक्ष मुक्ती जुगती भगती भुगती, आपणे चरनां हेठ रखाओगे । जोत जगदी घर आपणे दर्शन पाओगे । जिस वेले प्रीत लग्गदी, सो प्रीती वेला वक्त सुहाओगे । एह खेल पुरख समरथ दी, बिन पढ़यां बिन गान इक्क चरन ध्यान लगाइआं सचखण्ड साचा पाओगे । जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे बहि के खुशी मनाओगे।

तेरे घर किवें बहणा, सानूं खबर कोई ना राईआ। श्री भगवान कहे पहलों मन्नणा कहणा, चलणा हुक्म रजाईआ। हरि संगत सज्जण साक माई भाई भैणां, पुत्तर धी इक्क कुडमाईआ। प्रेम प्यार अंदर विच्च रहणा, हरख सोग ना कोई लडाईआ। इक्कट्टयां हो के घर इक्को रहणा, रहणी सतिगुर दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे लए मिलाईआ।

प्रभू तेरे घर दा केहड़ा राह, गली कूचा नजर कोई ना आईआ। जिधर वेखीए मज्जबां विच्च लग्गदे दाअ, तेरा पल्लू ना कोई फडाईआ। असीं नहीं खाणा तेरा वसाह, जिनां चिर घर आ के दरस ना देवें दिखाईआ। मनांगे फेर जे रातीं सुत्यां आपणयां फड के बांह, फड बांह गले लगाईआ। फेर साडे मुख विच्चों निकले तेरा नां, महाराज शेर सिंघ विष्णू भगवान तेरी वडयाईआ। तूं अगगों कहें हां हां, हूं ना कोई होर वखाईआ। वेखीं भगवान बण के ना करीं ना, नहीं तेरे भगत तेरे गल विच्च रस्सा लैण पाईआ। जे भज्जें लुकें भगत दुआरे लएं फाह, उह सूली चार मंजल दिती वखाईआ। क्यों तूं इस दे उते चढ़ के साफ़ दिता सुणा, मैं तुहाहु तुसीं मेरे दूजा होर कोई नजर ना आईआ। असीं होर कोई नहीं रक्खणा गवाह, गवाही कम्म किसे ना आईआ। जे तूं साहिब साडा बेपरवाह, असीं वी बेपरवाह आपणा नाम धराईआ। जे तूं आखें मैं खुदा, तेरी खुदी देणी मिटाईआ। जे तूं साडा मेल लएं मिला, असीं तेरे ढोले गाईए चाई चाईआ। श्री भगवान साडे बिनां तेरा कोई ना जपे नां, जिधर वेखें तेरे पिच्छे डागाँ सोटे लै के भज्जण वाहो दाहीआ। तूं ते बणया रिहों निमाणी गाँ, जंगल बेले चर के साधां सन्तां नाल झट्ट लंघाईआ। तैनुं अंदर वड वड के रहे धिआ, अक्खां विच्च उंगलीआं पा, कन्नां विच्च सुणा, सुण तूं साफ़ नजर किसे ना आईआ। असीं साफ़ दिता तैनुं सुणा, जिनां चिर साडे कोल ना जावें आ, आपणा दरस ना दएं वखा, साडी तेरी कोई नहीं कुडमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ।

जन भगतो ना मारो ठोकर, तुहाहु दुःख झल्लया ना जाईआ। मैथों सौदा लउ रोकड़, रोक हत्थ उते टिकाईआ। जे तुहाहु उते आए औकड़, मैं होवां सदा सहाईआ। मैं बड़ा वड्डा भोखड़, तुहाहु मिलण दी भुक्ख वधाईआ। मैं बड़ा वड्डा पछोकड़, जो पिच्छे रह गए तिनां अग्गे लवां लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

श्री भगवान असीं सुणया तूं देवें लारा, लारे लपे विच्च झट्ट लंघाईआ। बीस बीसा गुर अवतार दिता इशारा, आपणा इशारा ना किसे समझाईआ। जे तैनुं पुच्छण सच तूं विआहया कि कवारा, तूं कोरा जवाब दिता सुणाईआ। जिस वेले मेरे नाल पवेगा छुहारा,

फेर अगली दस्सां कुडमाईआ। विआह वेले कोई ना रक्खां गुरदुआरा, वेदी पाठ हवन ना कोई कराईआ। प्रेम प्रीती कर प्यारा, प्यार प्यार नाल विआहीआ। सो काज करे करतारा, जिस दी लांव कदे ना किसे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेला सैहज सुभाईआ।

प्रभ तैनुं मिल के की कुछ लम्हे, साडी समझ विच्च ना आईआ। जिनां तेरे नाल प्रेम कीता सो कलिजुग माया कूडी क्रिया एनां हेठां दब्बे, राज राजान देण सजाईआ। दुःख झल्लदे वेखे हब्बे, सुख नजर किसे ना आईआ। एसे कर के तेरे मिलण दे खैहडे छड़े, चंगी लग्गे जुदाईआ। जे तेरे पिच्छे टुट्टण हड़े, खल्ल खल्लड़ी लाहवण बण कसाईआ। एस मिलण नालों रंडे चंगे, सेज सुहञ्जणी ना कोई वडयाईआ। जिनां चिर आपणी पिछली रीती ना छड़े, ओनां चिर तेरे दर नहीं औणा चाई चाईआ। श्री भगवान वास्ता कहे, अगों बोल के रिहा सुणाईआ। मैं पिछले खैहडे छड़े, छड़ी सर्ब लोकाईआ। जन भगतो तुहाहे दुआरे आ के झण्डे गड़े, निशाना इक्को इक्क वखाईआ। फड़ कटार हत्थ सज्जे, सभनां रिहा मिलाईआ। घर आ के परदा कज्जे, तुहाही खेचल ना कोई कराईआ। रातीं सुत्यां पिच्छे भज्जे, फिरे वाहो दाहीआ। तुहाहु दरस कर ना रज्जे, भुक्ख आपणी ना सके मिटाईआ। तुसीं कराओ साचा हज्जे, हाजी बणया बेपरवाहीआ। जिस मदीने मक्के तज्जे, तलब दीदार इक्क रखाईआ। दर दुआरे आओ भज्जे, भज्ज भज्ज पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल के मेल लए मिलाईआ।

जे मिलीए की देवंगा, दस्स साहिब सच्चे सुलतान। ना मिलीए की लवंगा, बण मर्द मरदान। जे मिलोगे तां जीवांगा, जग जीवण जगत जहान। ना मिलोगे ते मरनी थीवांगा, मृतू मिरतक लोथ वखाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतो भगतां दा भगवान।

की तूं भगतां दा भगवान, सच दस्स की तेरी वडयाईआ। भगतो नहीं मैं निमाणयां दा निमाण, नयासरयां आसरा इक्क वखाईआ। पहलों करां आप पहचान, फिर आपणा भेव खुलाईआ। फिर बण के दर दरबान, घर साचे सेव कमाईआ। मैंनुं नहीं कोई हाण, लोक लाज कोई ना भाईआ। गुरमुख मेरे बाल अजाण, मैं राखा सच अखवाईआ। एसे कर के कहण विष्णू भगवान, प्रितपालक हो के बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, भगतन मेला सच मकान, सच मकान हक मुकाम बण अमाम, लेखा चुक्के तमाम, तमां कोई रहण ना पाईआ।

प्रभ बाहरों अंदर जाएगा। पंज प्यारे नाल रलाएगा। सच दुलारे फेर उठाएगा। आए दुआरे पार कराएगा। जो रहे कवारे, इक्को वार विआहेगा। दे नाम अधारे, प्यार पाएगा। वेख सच दरबारे, खुशी मनाएगा। अंदर सिँघासण वाजां मारे, मेरी शान कौण वधाएगा। दोए जोड़ कहे हाढ़े, हौका इक्को भर वखाएगा। बाहर बैठे साचे लाड़े, दरबान

दर ते सोभा पाएगा । किरपा करे आप करतारे, आपणी करनी कार कमाएगा । चल चले उठ सच्ची रफतारे, आहिस्ता आहिस्ता पन्ध मुकाएगा । गुरमुखो साध सन्त करने नहीं टडू भाड़े, शब्द गुरू इक्को इक्क वखाएगा । कोई लम्भण ना जाइओ विच्च उजाड़े, जंगल हत्थ किसे ना आएगा । तन पाणी कोई ना ठारे, अठसठ मैल ना कोई गवाएगा । जोग अभिआस ना कोई विचारे, सुन समाध ना कोई समाएगा । धूणी ताअ ना कदे ताड़े, अक्खीं मीट ना कोई वखाएगा । किसे लम्भे ना जगत दुआरे, मट्ट खोलू ना कोई वखाएगा । विष्ण ब्रह्मा शिव अग्गे कोई ना कट्टे हाढ़े, तिन्नां कर ना कोई वखाएगा । सरोवरां विच्चों कोई ना कट्टे गारे, मिटी रेत ना कोई तराएगा । सिल पूजा ना कोई पुजारे, गणपत गणेश ना कोई मनाएगा । बाहमण देवे ना कोई वाड़े, पुन्न दान ना कोई तराएगा । इक्क प्रभ साचे दा करो दीदारे, जिस मिलिआं अग्गे फेर ना कोई सताएगा । दो जहान करो बहारे, गुलशन इक्को इक्क वखाएगा । चमकण सच सच्चे प्रेम सतारे, नूरो नूर डगमगाएगा । दो जहान बणन पनहारे, लोक परलोक सेव कमाएगा । गोपी काहन नच्चण अखाड़े, साची सेवा इक्क जणाएगा । जो चल आए दरबारे, दरगाह साची धाम वखाएगा । अग्गे उतरे पार किनारे, अद्धविचकार ना कोई अटकाएगा । साढे तिन्न हत्थ मनारा वाजां मारे, आओ सिखो हरि सतिगुर मेल मिलाएगा । गरीब निमाणयां करे प्यारे, प्रेम प्रीती जोड़ जुड़ाएगा । फड के घोड़ी साची चाढ़े, सिर सिहरा सीस पहनाएगा । पाणी इक्को वार वारे, सगन साचे घर वखाएगा । रक्खया करे अंदर बाहरे, बेपरवाह आसण लाएगा । देवे नाम सच नजारे, नजर इक्को वार बदलाएगा । नाल रक्खे पंच प्यारे, प्रभ पंच जोड़ जुड़ाएगा । फड के संगत सारी तारे, बचया कोई रहण ना पाएगा । करे खेल अगम्म अपारे, हरि करनी कार कमाएगा । सत्थर वेखो साचे यारे, यारी यारां नाल निभाएगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अंदर बाहर वेख वखाएगा ।

अंदर बाहर वसे माही, महिफल आपणी आप लगाइंदा । आओ वेखो जांदा राही, रहबर इक्को नजरी आइंदा । जिस ने कट्टी जम दी फाही, फ़ैसला अन्तम पन्ध मुकाइंदा । जिस दे अग्गे देवे ना कोई गवाही, शहादत होर ना कोई रखाइंदा । आदि जुगादी सच्ची शहनशाही, शहनशाह इक्को इक्क अखवाइंदा । जिस ने गोबिन्द पकड़ी बाहीं, आप आपणा मेल मिलाइंदा । जिस इक्के कीते झीवर छीबे नाई, गरीब निमाणयां रंग रंगाइंदा । जिस दीआं वड्डीआं लंमीआं बाहीं, दो जहानां इक्को गंढ पुआइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अंदर बाहर आपणी कार कमाइंदा ।

अंदर बाहर वेखो फिरदा, फेरा आपणा आप लगाईंआ । भगत प्रीती करदा, चरन देवे वड्याईंआ । जिस दा झिरना निझर झिरदा, बूंद बूंद टपकाईंआ । श्री भगवान जन भगतां वेख खुशी विच्च खिडदा, कुण्डा आपणा रिहा लाहीआ । एह खेल सच्चे पिर दा, पारब्रह्म वेस वटाईंआ । एह उडीकां रक्खदा चिर दा, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी ध्यान लगाईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ ।

आओ वेखो शाह कंगाल, कंगाली रूप वखाइंदा। निरगुण बण के सच दलाल, दर घर साचे फेरा पाइंदा। देवणहारा हक हलाल, जोती इक्क वखाइंदा। साढे तिन्न हत्थ सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क प्रगटाइंदा। लेखा जाणे जीव जहान, जुगती आपणी आप समझाइंदा। मिलो मेल श्री भगवान, शाह पातशाह आपणे रंग रंगाइंदा। सुणो इक्क फ़रमाण, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंदर बाहर आपणी कार कमाइंदा।

अंदर बाहर इक्को राम, रहमत आप कमाईआ। अंदर बाहर इक्को शाम, इक्को रास रचाईआ। अंदर बाहर इक्को अमाम, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अंदर बाहर इक्को गुलाम, बरदा रूप वटाईआ। अंदर बाहर इक्को निशान, सति सतिवादी आप झुलाईआ। अंदर बाहर इक्को कलाम, कलमा नबी रिहा जणाईआ। अंदर बाहर इक्को नाम, नगमा इक्को राग अलाईआ। अंदर बाहर इक्को निशान, दो जहानां रिहा वखाईआ। अंदर बाहर इक्को मिहबान, महिबूब बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अग्गे पिच्छे सेव कमाईआ। अग्गे पिच्छे इक्को सेवा, श्री भगवान आप जणाइंदा।

जन भगतां देवे अमृत मेवा, फल इक्को इक्क खवाइंदा। प्रगट होया वड देवी देवा, देवत सुर ना कोई वखाइंदा। जिस जन गाया रसना जिह्वा, तिस आपणा रंग रंगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेवा, अलख जैकारा इक्क सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप जणाइंदा।

आओ वेखो हरि की धार, धुरदरगाही आप जणाइंदा। सोहँ शब्द पंज जैकार, पंचम राग माण गवाइंदा। मेल मिलावा अन्तर बाहर, प्रभ आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वीह सौ वीह वेख वसाखी, अज्ज दी रात नू भगतो तुहाड्डी करे राखी, अग्गे तुहानू विसर कदे ना जाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, आपणी सेवा लाई साची, सिदक सबूरी नाल हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, नारी नर नरायण करे हक कूडमाईआ।

**\* पहली जेठ २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच्च \***

जै जैकार होए सचखण्ड, दो जहान वज्जे वधाईआ। प्रगट होया सूरा सर्बग, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। आदि जुगादि इक्क अनन्द, जुग जुग रंग वखाईआ। खेले खेल विच्च ब्रह्मण्ड, भेव अभेद कोई ना आईआ। हुक्मे अंदर सूरज चन्द, रव सस सेव कमाईआ। लेखा जाणे आपणी वंड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी कार कमाईआ।

जै जैकार सर्ब लोक, परलोक रहे जस गाईआ। साहिब सुलतान दा सच सलोक,

राग नाद ना कोई सुणाईआ। जुग चौकड़ी देवे मोख, मुफ्त आपणी सेव कमाईआ। सच दुआरे कोई ना सके पहुंच, अन्तर वेखण कोई ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी कार कमाईआ।

जै जैकार आदि निरञ्जण, निरगुण आपणी कार कमाईदा। जै जैकार दर्द दुःख भय भंजन, श्री भगवान वेस वटाईदा। जै जैकार जुगा जुगन्तर साचे सज्जण, दो जहानां वेख वखाईदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरवैर आपणा भेव खुलाईदा। जै जैकार सो पुरख, पुरख पुरखोतम वड वडयाईआ। जै जैकार हरि पुरख, बेपरवाह सच्चा शहनशाहीआ। जै जैकार एकंकार निरगुण खेल इक्क आदरस, दरस रूप ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क जणाईआ।

जै जैकार श्री भगवाना, भगवन आपणा भेव खुलाईदा। आदि पुरख हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाईदा। जोधा सूरबीर मर्द मरदाना, सच मरदानगी आप जणाईदा। सचखण्ड निवासी वड मेहरवाना, मेहर नज़र आप उठाईदा। तरवत निवासी नौजवाना, बल आपणा आप प्रगटाईदा। हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाणा, सच संदेसा इक्क अलाईदा। लेखा जाण दो जहानां, निरगुण सरगुण कार कमाईदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्याना, पुरी लोअ फोल फुलाईदा। विष्ण ब्रह्मा शिव देवे ज्ञाना, शब्द अनादी नाद पढाईदा। त्रैगुण माया कर परवाना, सच परवानगी आप जणाईदा। पंज तत्त खेल महाना, खालक खलक रूप वटाईदा। मुकामे हक इक्क निशाना, नूर ज़हूर आप दरसाईदा। दरगाह साची वड बलवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क जणाईदा।

जै जैकार आदि अन्त, बेअन्त बेपरवाह आप जणाईआ। जै जैकार महिमा अगणत, लेखा लिखत ना कोई वखाईआ। जै जैकार नार कन्त, निरवैर ढोला इक्क सुणाईआ। जै जैकार मणीआं मंत, मंतर नाम सच दृढाईआ। जै जैकार जीव जंत, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जै जैकार सर्व स्वामी, साहिब सुल्तान खेल कराईदा। जै जैकार अन्तरजामी, निरगुण आपणी कार कमाईदा। जै जैकार बोध अगाध अगम्म बाणी, निशअक्खर वक्खर आप पढाईदा। जै जैकार साहिब सुल्तानी, सति सरूप इक्क अखवाईदा। जै जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाईदा।

जै जैकार परवरदिगार, बेपरवाह वड्डी वडयाईआ। जै जैकार सांझे यार, लाशरीक इक्क सद सुणाईआ। जै जैकार मीत मुरार, मित्र प्यारा दए वडयाईआ। जै जैकार रहे जुग चार, जुग चौकड़ी रंग रंगाईआ। जै जैकार भगत भगवान आधार, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

जै जैकार मंगण विष्ण ब्रह्मा शिव, आदि जुगादि झोली डाहीआ। जै जैकार करन

गुर अवतार पीर पैगम्बर ला लिव, नेत्र अक्ख ना कोई खुलाईआ। जै जैकार करन करोड तेतीसा देवी देव, सुरपत एका एक मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

जै जैकार खेल अपारा, भेव किसे ना आया। जै जैकार सच दुआरा, सचखण्ड साचा इक्क सुहाया। जै जैकार थिर दरबारा, शब्दी ढोला राग अलाया। जै जैकार गुरू अवतारा, गुर मंतर नाम दृढ़ाया। जै जैकार जगत भंडारा, हरि भगती वेस वटाया। जै जैकार सर्व संसारा, आत्म परमात्म राह वखाया। जै जैकार पुरख नारा, नार कन्त वंड वंडाया। जै जैकार सिरजणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाया। जै जैकार जुग चौकड़ी चार, कोटन कोट काल बिताईआ। जै जैकार आत्म परमात्म धार, धरत धवल करे शनवाईआ। जै जैकार जिमीं असमान, दो जहान रहे जस गाईआ। जै जैकार गगन मण्डल करन ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्को घर समझाईआ।

जै जैकार आदि गुर, हरि सतिगुर राग सुणाईआ। जै जैकार बाणी धुर, धुर दी धार आप बंधाईआ। जै जैकार अगम्मी सुर, राग ताल ना कोई सुणाईआ। जै जैकार आत्म परमात्म जाए जुड़, दूजा नजर कोई ना आईआ। जै जैकार चढ़ाए साचे घुड़, असव इक्को इक्क वखाईआ। जै जैकार श्री भगवान जाए बौहड़, दूर नेड़ ना कोई रखाईआ। जै जैकार निरगुण सरगुण पए लोड़, लोड़ींदा घर वेख वखाईआ। जै जैकार चुकाए मोर तोर, तोर मोर रहण ना पाईआ। जै जैकार गुर का शब्द ज़ोर, ज़ोरू ज़र ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को जै दए समझाईआ।

जै जैकार धुर दा नाता, पुरख अकाल आप जणाइंदा। जै जैकार पुरख बिधाता, बिध आपणे हत्थ रखाइंदा। जै जैकार साची गाथा, लेखा लेख ना कोई समझाइंदा। जै जैकार अगम्मी राथा, रथ रथवाही इक्को इक्क अखवाइंदा। जै जैकार सगला साथा, साचा संग निभाइंदा। जै जैकार पूरा करे घाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप समझाइंदा।

जै जैकार आदि पुरख अपरंपर, आदि आदि उपाईआ। निरगुण निरगुण रच सवंबर, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। सर्व कलां हो भरतंबर, सर्व स्वामी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची जै दए जणाईआ। जै बोले आप भगवाना, दूजा संग ना कोई रखाइंदा। निरगुण निरगुण पहिर बाणा, बेपरवाह वेस वटाइंदा। सचखण्ड सच मकाना, महल्ल अट्टल इक्क रुशनाइंदा। जोती नूर नूर महाना, दीपक दीआ ना कोई वखाइंदा। पुरख अकाल साचा काहना, गोपी रूप आप हो जाइंदा। आदि पुरख मर्द मरदाना, साचा वेस आप वखाइंदा। सेज सुहञ्जणी साहिब सुल्ताना, निरवैर आसण लाइंदा। साचा हुक्म धुर फरमाणा, धुर दी धार आप बंधाइंदा। शाहो भूप बण राज राजाना,



शहनशाह आपणी कार कमाइंदा । सो पुरख निरञ्जण खेल महाना, मेहरवान आप जणाइंदा । हरि पुरख निरञ्जण कर परवाना, निउँ सजदा सीस झुकाइंदा । एकंकार करे सलामा, अलैकम आपणे हत्थ वरवाइंदा । आदि निरञ्जण हो प्रधाना, सच प्रधानगी आप कमाइंदा । अबिनाशी करता वेखे मार ध्याना, नेत्र अक्ख ना कोई जणाइंदा । पारब्रह्म प्रभ गाए गाणा, उच्ची कूक कूक अलाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणा नाउँ प्रगटाइंदा । आदि पुरख पुरख अबिनाशा, आपणी कार कमाईआ । सचखण्ड दुआरे सच तमाशा, शाह पातशाह आप प्रगटाईआ । निरगुण निरगुण पावे रासा, गोपी काहन ना कोई वखाईआ । बेपरवाह आपणी पूरी करे आसा, आसा आसा विच्च समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ ।

शहनशाह हरि खेल अगम्म, अगम्मडी कार कमाइंदा । निरगुण धार आपे हरि जम्म, मात पित आप अखवाइंदा । सो साहिब स्वामी करे कम्म, करता आपणी कार कमाइंदा । ना कोई जननी ना कोई जन, गोदी गोद ना कोई उठाइंदा । ना कोई घडे ना लए भन, तत्त्व तन ना कोई वडिआइंदा । ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मण्डल रूप ना कोई वटाइंदा । आपणा बेडा आपे बन्नू, आपणे कंध उठाइंदा । कर खेल श्री भगवन, साची कार कमाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दर इक्क सुहाइंदा । साचा मन्दर सति दुआरा, सति सतिवादी आप सुहाईआ । सचखण्ड निवासी हो ऊजिआरा, निरगुण आपणी कार कमाईआ । तखत निवासी शाह सिकदारा, शहनशाह आपणा हुक्म वरताईआ । आपणा नाउँ बोल जैकारा, जै जैकार दए समझाईआ । दूजा ना कोई मीत मुरारा, सज्जण रूप ना कोई वखाईआ । सोहे मन्दर इक्क मनारा, घर वसे बेपरवाहीआ । तखत निवासी पुरख अबिनाशी शाहो भूप बिन रंग रूप खेल करे करतारा, कुदरत रंग ना कोई वखाईआ । कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा जाणे ना कोई शाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ढोला इक्को गाईआ । साचा ढोला गा जैकार, जै जैकार सुणाया ।

नाउँ धर आप निरँकार, निरगुण आपणा नाम वडिआया । तखत निवासी हो सिकदार, धुर फरमाणा हुक्म जणाया । दर दरवेश बण भिखार, घर आपणे अलख जगाया । देवणहार सिरजणहार, साहिब सुलतान आप अखवाया । करे खेल आप करतार, करनी आपणे हत्थ रखाया । ना कोई दिसे मददगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे तखत साहिब चढ़, नाअरा इक्को इक्क सुणाया ।

जिस वेले साचे तखत चढ़या, सचखण्ड वज्जी वधाईआ । निरगुण आपणा नाउँ पढ़या, जै जैकार सुणाईआ । ना जन्मे ना कदे मरया, जन्म मरन विच्च ना आईआ । निर्भय हो कदे ना डरया, भौ सिर ना कोई रखाईआ । आपणा पल्लू आपे फडिआ, निरगुण निरगुण गंढ पवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ ।

जै जैकार बोल जैकारा, निरगुण आपणा आप सुणाइंदा। शाहो भूप बण सिकदारा, भिखक भिखवया झोली पाइंदा। दर दरवेश बण भिखारा, आसा आसा आप प्रगटाइंदा। देवणहार बण दातारा, अनमुलझी दात वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराइंदा।

साचा खेल करावांगा। सचखण्ड दुआर सुहावांगा। सच सिंघासण इक्क उपजावांगा। तख्त निवासी डेरा लावांगा। शाहो शाबाशी आप अखवावांगा। निरगुण जोत जोत प्रकाशी, नूर उपजावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार कमावांगा। साची कार कमावांगा।

जोती नारी आप प्रनावांगा। कन्त कन्तूहल सेज हंढावांगा। निरगुण निरगुण मेल मिलावांगा। दीपक दीआ इक्क जगावांगा। तेल बाती ना कोई पावांगा। पुरख अबिनाशी नाम रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रचना इक्क रचावांगा।

साची रचना इक्क रचावांगा। सेज सुहञ्जणी इक्क हंढावांगा। आपणी कुख आप सुहावांगा। सुत दुलारा इक्क उपजावांगा। शब्दी नाम धरावांगा। रूप रेख ना कोई वखावांगा। वार थित ना कोई समझावांगा। कर हित्त मेल मिलावांगा। मात पित आप बण जावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आपणी कल रखावांगा।

आदि आपणी कल रखाऊंगा। निरगुण हो के वेस वटाऊंगा। नार कन्त इक्क हंढाऊंगा। रंग बसन्त अन्त चढाऊंगा। बेअन्त धार चलाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड आपणी कार कमाऊंगा।

सचखण्ड कार कमावांगा। सुत दुलारा गोद उठावांगा। शब्दी नाम उपजावांगा। सिर आपणा हत्थ टिकावांगा। समरथ पुरख अखवावांगा। मेहर नजर रखावांगा। देर कोई ना लावांगा। हो दलेर हुक्म सुणावांगा। शहनशाह इक्क हो जावांगा। सीस आपणे ताज टिकावांगा। पंचम रूप वटावांगा। साचा सुख इक्क उपजावांगा। ना माणस ना मानुख, धार धार विच्चों दृढावांगा। रख आपणी कुख, गोद इक्क वड्डिआवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड साचा इक्क वसावांगा।

सचखण्ड साचा मेरा वसेगा। पुत्त मेरा इक्को हस्सेगा। दोए जोड चरनी ढट्टेगा। साहिब दयाल पत रक्खेगा। मार्ग इक्को आपणा दस्सेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे साचे तख्त बहि के हस्सेगा।

सुत दुलारा इक्क उपजावांगा। इक्को आपणा नाम समझावांगा। मेहर नजर इक्क उठावांगा। सचखण्ड वंड वंडावांगा। अंदर मन्दर इक्क सुहावांगा। थिर दरबारा नाउँ धरावांगा। बाले निक्के विच्च बहावांगा। पिच्छे आपणा हत्थ रखावांगा। साचे हिस्से आप वंडावांगा। बिन लिखे लेख समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहुडा इक्क दृढावांगा।

सच सुनेहुडा इक्क दरसाऊंगा। सुत दुलारे आप उठाऊंगा। हट्ट वणजारे इक्क वखाऊंगा। वड भंडारे नजर मिलाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा इक्क दरसाऊंगा।

सुत दुलारा उठेगा। प्रभ साहिब सच्चा तुठेगा। चरनी ढहि के मंग इक्को पुच्छेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर साहिब इक्को बुकेगा। साहिब सतिगुर इक्को बोलेगा। निरवैर तोल तोलेगा। थिर घर दा कुण्डा खोलेगा। आदि जुगादि कदे ना डोलेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण अंदर मौलेगा।

निरगुण अंदर, निरगुण धार चलावांगा। सचखण्ड अंदर थिर घर इक्क वसावांगाँ। सुत दुलारा शब्द बहावांगा। नाम जैकारा इक्क सुणावांगा। जै जैकार वस्त अमोलक झोली पावांगा। कर प्यार सेव लगावांगा। साची धार दरसावांगा। निराकार निरँकार निरवैर रंग रंगावांगा। अजूनी रहित बेपरवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क लगावांगा। साची सेव इक्क लगाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। शब्दी सुत राह वखाएगा। अबिनाशी अचुत वेख वखाएगा। थिर घर रुत सुहाएगा। पिता पुत वेस वटाएगा। सच आदेस इक्क सुणाएगा। नर नरेश हुकम मनाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाएगा।

भेव अभेदा आप खुलावेगा। सुत दुलारे हुकम जणावेगा। निरगुण आपणी कार कमावेगा। वेस अनेका रूप धरावेगा। विष्णू आपणा अंग बनावेगा। नाम मरदंग वजावेगा। जै जैकार अलावेगा। सेवादार समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहावेगा।

विष्णू विश्व उठेगा। निरवैर कदे ना लुकेगा। जै जैकार ढोला इक्को बकुकेगा। शब्द सुत दुलारा पुच्छेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुलतान दीन दयाल इक्क इकल्ला आपे लुट्टेगा।

इक्क इकल्ला लुट्ट मचाएगा। लुट्टणहारा नजर ना आएगा। सभ कुछ आपणे हत्थ वखाएगा। विष्णू नेत्र नैण उठाएगा। नैणां नीर वहाएगा। दोए जोड वास्ता पाएगा। तेरी

लोड तुध बिन नजर कोई ना आएगा। निरगुण निरगुण नाल जोड, सरगुण सरगुण वंड वंडाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच विचोला इक्क बणाएगा।

सच विचोला आप बणावेगा। शब्द सुत इक्क उठावेगा। उजल मुख आप करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप दृढावेगा।

साची कार विश्व धार, विष्ण करे जणाईआ। चरन कँवल कँवल प्यार, कँवल नैण नैण दरसाईआ। परम पुरख बेपरवाह पारब्रह्म बेअन्त खेल करे अगम्म अपार, अथाह बख्शे इक्क शरनाईआ। देवणहार वस्त अपार, खोलणहार हट्ट बाजार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्णु इक्को इक्क जणाईआ।

विष्णु खोल अक्ख, श्री भगवान आप जणाइंदा। निरगुण धार वेख प्रतक्ख, पारखू आपणी परख कराइंदा। आदि जुगादी सदा वक्ख, वक्खरी कार कमाइंदा। जिस भावे तिस लए रक्ख, दूजा कोई रहण ना पाइंदा। तेरा खोल्ले त्रैभवन धनी हट्ट, वणज वणजारा इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिखिआ इक्क दृढांइंदा।

सुण संदेसा श्री भगवान, विष्णु सीस झुकाईआ। बण याचक मंगे दान, दोए जोड पिआ सरनाईआ। किरपा कर हरि मेहरवान, मेहर नजर उठाईआ। हउँ बालक बाल अजाण, तेरी सार कोई ना आईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, बेअन्त तेरी शहनशाहीआ। तेरा हुक्म वड बलवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हउँ बरदा तेरा गुलाम, चरन धूढी मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, विष्णु इक्को गुण समझाईआ।

विष्णु सुण कर ध्यान, साहिब दयाल आप समझाइंदा। तेरा तेरा इक्क ज्ञान, मंतर मंतर आप दृढांइंदा। तेरा तेरा इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच्च रखाइंदा। तेरा तेरा इक्क मकान, चरन कँवल कँवल जणाइंदा। तेरा तेरा इक्क निशान, चरन धूढी सच निशाना इक्क प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बेपरवाह दया कमाइंदा।

बेपरवाह देवणहारा, आपणी दया कमाईआ। विष्णु उठ वेख भंडारा, बेपरवाह रिहा समझाईआ। चरनां नाल चरन रगढ कीता खेल अपारा, धूढी धूढ नजर किसे ना आईआ। अमृत वहे ठंडी धारा, विष्णु बूंद बूंद टपकाईआ। रस पिआ अगम्म अपारा, मिठुत रूप ना कोई वखाईआ। निरगुण निरगुण कर उजिआरा, निराकार करे रुशनाईआ। सर सरोवर ठंडा ठारा, कँवल कँवल दए वडयाईआ। सर सर कर प्यारा, सार हरि जू रिहा पाईआ।

नर नर खेल करतारा, नर नरायण रिहा जणाईआ । वणज वणज वपारा, घर हट हट खुलाईआ । ब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, ब्रह्मे देवणहार वडयाईआ । धूआंधार हो उजिआरा, नूर जहूर करे रुशनाईआ । लेखा जाण धुर दरबारा, धुर दी कार कमाईआ । शंकर दे इक्क सहारा, शंका सर्ब रिहा गवाईआ । तिन्नां विचोला एकंकारा, शब्दी धार करे कुडमाईआ । साचा सोहला सुणाए सुणावणहारा, गीत इक्को इक्क गाईआ । जै जै जै करो इक्को वारा, तिन्नां करे आप पढाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विष्ण ब्रह्मा शिव देवे समझाईआ ।

विष्ण ब्रह्मा शिव करो जै, सचखण्ड निवासी आप अखवाइंदा । आदि जुगादि पुरख अबिनाशी इक्को रहे, दूजा रहण कोई ना पाइंदा । जो उपजे सो होवे र्वै, र्वैहडा अत आप छुडाइंदा । पुरख अकाल जो चरनी ढहे, तिस आपणा मेल मिलाइंदा । सो कहणा जो प्रभ रिहा कहि, दूजा अक्खर ना कोई वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार आप जणाइंदा ।

विष्ण ब्रह्मा शिव जै जैकार गौंदे, गा गा शुकर मनाईआ । निरगुण निरवैर निराकार ध्यान लगौंदे, इष्ट देव इक्क मनाईआ । परम पुरख इक्क मनौंदे, दूजी ओट ना कोई तकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच रिहा दृढाईआ ।

विष्ण ब्रह्मा शिव जै जैकार गा, प्रभ अग्गे करी अरजोईया । सो पुरख निरञ्जण दे समझा, की तेरी वड वडयाईआ । हरि पुरख निरञ्जण आपणा परदा दे उठा, मुख नकाब ना कोई रखाईआ । एकंकार आपणा मन्दर दे वखा, जिस घर वसें आसण लाईआ । आदि निरञ्जण आपणा दीप कर रुशना, जोती जोत डगमगाईआ । श्री भगवान आपणा तख्त दे जणा, जिस उप्पर हुक्म सुणाईआ । अबिनाशी करते आपणा लेखा दे पढा, जो बिन अक्खरां रिहा बणाईआ । पारब्रह्म प्रभ आपणी वंड दे जणा, जो हिस्से रिहा पाईआ । विष्णूं तेरे उतों फिदा, आपणा आप ना कुछ रखाईआ । ब्रह्मा रोवे मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ । शंकर मूंह दे भार डिगा आ, खुलूडे केस रिहा वखाईआ । तेरा नाउँ तेरी जै जैकार तुध बिन कोई ना सके गा, सिपती सिपत ना कोई सालाहीआ । मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नजर इक्क टिका, टिक्का मस्तक चरन धूढी लाईआ । साचा मार्ग दे समझा, धन्दा इक्को इक्क वखाईआ । तूं बख्खांदा बेपरवाह, बखशिश तेरे हत्थ समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा ढोला सच्चा गाईआ ।

तेरा ढोला सच्चा गावांगे । प्रभ लक्ख लक्ख शुकर मनावांगे । दर तेरे अलख जगावांगे । हो वक्ख ना राह वखावांगे । जिस वेले भाण्डे होवण सक्ख, तेरे दर तों मंगण आवांगे । तूं लज पत लई रक्ख, दर तेरे वास्ता पावांगे । साडे परदे लई ढक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, साची कार इक्क कमावांगे ।

विष्णु ब्रह्मा शिव साची सेव कमाओगे । त्रैगुण माया नाल रलाओगे । पंज तत्त आपणी गंड पवाओगे । लक्ख चुरासी घाडत घड वखाओगे । अंडज जेरज उत्भुज सेतज वंड वंडाओगे । चारे खाणी रंग रंगाओगे । तन काया माटी हट्ट चलाओगे । दोए जोड सीस झुकाओगे । मंग इक्को फेर मंगाओगे । निरगुण सरगुण नाता जोड जुडाओगे । मन मत बुद्ध दाता झोली पाओगे । काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्णा रंग रंगाओगे । घर घर विच्च वंड वंडाओगे । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लक्ख चुरासी खेल खलाओगे ।

लक्ख चुरासी खेल खलेगा । निरगुण सरगुण मेल मेलेगा । लेखा जाण सज्जण सुहेले दा, भेव चुक्के गुरू चेले दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रंग वेखो इक्क नवेले दा ।

रंग नवेला इक्क वखाएगा । लक्ख चुरासी राह चलाएगा । विष्णु ब्रह्मा शिव सेव कमाएगा । धुर फरमाणा हुक्म मनाएगा । साचा राणा इक्क हो जाएगा । जुग चौकडी वंड वंडाएगा । शास्त्र सिमरत वेद पुरान पढाएगा । सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गंड पवाएगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराएगा ।

प्रभ साचा खेल करावेगा । त्रैगुण सेवा इक्क लगावेगा । शब्द विचोला विच्च रखावेगा । जुग जुग ढोला राग अलावेगा । साचा सोहला इक्क उपजावेगा । बण तोला फेरा पावेगा । अनमोला हट्ट वखावेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क दरसावेगा ।

साचा खेल इक्क दस्सेगा । लक्ख चुरासी अंदर वसेगा । आत्म परमात्म प्रीती फसेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हत्थ रक्खेगा ।

भेव आपणे हत्थ रखावांगा । लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ सूरज चन्न चमकावांगा । गगन मण्डल वेख वखावांगा । धरत धवल उपजावांगा । पवण पाणी समावांगा । अग्नी हवन करावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा इक्क दरसावांगा ।

साचा लेखा इक्क दरसाऊंगा । विष्णु ब्रह्मे आप समझाऊंगा । जुग चौकडी वेस वटाऊंगा । गुर अवतार नाम धराऊंगा । धुर संदेसा आप सुणाऊंगा । जगत विद्या वंड वंडाऊंगा । अक्खर वक्खर कर वखाऊंगा । गुर गुर आपणी गढु पवाऊंगा । बोध अगाध भेव जणाऊंगा । नाम नाद इक्क सुणाऊंगा । ब्रह्म ब्रह्माद वेख वखाऊंगा । बण सवांगी सवांग रचाऊंगा । सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंडाऊंगा । चारे वेदां गंड पवाऊंगा । पुरान अठारां रंग रंगाऊंगा । छे शास्त्र चन्द चमकाऊंगा । सिमरत आपणा समीम दरसाऊंगा । गीता ज्ञान तरमीम कराऊंगा ।

शान अजीम इक्क वरवाऊंगा। सच ताअलीम फेर पढ़ाऊंगा। गनी गनीम राम रहीम वेस वटाऊंगा। कर तकसीम वंड वंडाऊंगा। हो हुसीन नैण मटकाऊंगा। जानशीन सर्ब अखवाऊंगा। पेशीन हुक्म इक्क जणाऊंगा। बेजबान जबान ना कोई हिलाऊंगा। सच कलाम इक्क पढ़ाऊंगा। अमाम इक्को इक्क वरवाऊंगा। मुकामे हक़ डेरा लाऊंगा। हकीकत आपणे हत्थ जणाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क मनाऊंगा।

साचा हुक्म इक्क मनावांगा। जुग जुग आपणा वेस वटावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढावांगा। तेई अवतार गंढ पुआवांगा। भगत अठारां रोग गवावांगा। ईसा मूसा मुहम्मद कलमा कूक जणावांगा। चौंदां लोक वड्डिआवांगा। चौदां तबक भवावांगा। सबक आपणा अक्खर पढ़ावांगा। अलफ़ ये पन्ध मुकावांगा। निरगुण धार धार जणावांगा। कर करता हो त्यार, त्रैगुण अतीता त्रैभवन धनी आपणा हुक्म मनावांगा। गुर शब्दी ठांडा सीता, सतिगुर भेव चुकावांगा। सरगुण साची रीता, नानक रूप वरवावांगा। गोबिन्द मित्र मीता, एका गंढु पवावांगा। जुग चौकड़ी तपे अंगीठा, अगनी कुण्ड वरवावांगा। आपणा खेल रक्खां अनडीठा, चारे बाणी सिफ़्त सालाहवांगा। शिवदुआले मन्दर ठाकर दुआरे बणा मसीता, गुरूदुआरे वंड वंडावांगा। लेखा जाण हस्त कीटा, ऊँच नीचां वेख वरवावांगा। जुग चौकड़ी जगत बगीचा, बण के माली सेव कमावांगा। सच भण्डारी भर के आपणा खीसा, वस्त अमोलक इक्क वरतावांगा। नाउँ धर जगत जगदीसा, जगदीशर आपणी कार कमावांगा। सीस सोहे ताज सीसा, साहिब सतिगुर वंड वंडावांगा। लक्ख चुरासी परख नीता, नीतीवान नाउँ धरावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क करावांगा। विष्ण ब्रह्मा शिव सेव कमाओगे। त्रै पंज राह वरवाओगे। निरगुण सरगुण धार गंढ पवाओगे। गुर अवतार जग उपजाओगे। गुफ़तार इक्क समझाओगे। रफ़तार इक्क बणाओगे। सिकदार इक्क समझाओगे। बण बरखुरदार सीस झुकाओगे। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी युग धुर दा हुक्म ना मेट मिटाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर इक्को इक्क दरसाओगे।

दर घर इक्को इक्क दरसावांगे। प्रभ तेरा दर्शन पावांगे। दूजी मंग ना कोई मंगावांगे। कवण वेला कवण वक्त वेखीए जगत, तेरा ढोला इक्को गावांगे। तूं नजरी आएं फ़कत, फ़िकर होर सभ गवावांगे। किस धारों आवें परत, पारब्रह्म दर तेरा इक्क दरसावांगे। साडे नाल कर लै लिखत पढ़त, जिस वेले तेरा दर्शन पावांगे। कोई मंगी ना साथों धड़त, तेरा मुफ़त हट्ट चलावांगे। साडे सिरों नहीं लहणा कज, मकरूज तेरे अखवावांगे। तूं पूरा करीं फ़र्ज, बण गोले तेरी सेव कमावांगे। तूं दस्सया ताल दस्सी तर्ज, जै जैकार तेरा राग अलावांगे। तूं मन्नीं साड्डी अर्ज, आरजू तेरे अग्गे टिकावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर तेरा वेखण आवांगे।

घर साचा सच वरवावांगा। दर दरवाजा इक्क खुल्लावांगा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी युग लंघावांगा। गुर अवतार सेव लगावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पार करावांगा।

इकवंजा बवंजा आपणी गोद बहावांगा। खेल शतरंजा इक्क खलावांगा। सत्त रंगा रूप वटावांगा। मरदंगा नाम वजावांगा। ब्रह्मण्डां खण्डां आप उठावांगा। जेरज अंडां वेख वखावांगा। उतुभुज सेतज परदा लाहवांगा। निरगुण हो के फेरा पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेद अभेद खुलावांगा।

नों सौ चुरानवें चौकड़ी युग लंघेगा। प्रभ आपणा लहणा मंगेगा। वेखे हाल भुक्खे नंगे दा। लक्ख चुरासी माणस बन्दे दा। जीव जंत कूड़े धंदे दा। लेखा चुक्के चंगे मंदे दा। मुल्ल पवे विष्ण ब्रह्मा शिव प्रभ दे गाए छन्दे दा। इक्को शब्द सच्चा नाल हंडेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरे सर्बगे दा।

नों सौ चुरानवे चौकड़ी युग पन्ध मुकावांगा। निरगुण निरवैर हो के आवांगा। निहकलंक नाउँ रखावांगा। जोती नूर नूर चमकावांगा। शब्दी राग अलावांगा। लोकमात वेख वखावांगा। सचखण्ड दुआर बणावांगा। सच सिँघासण इक्क सुहावांगा। पुरख अबिनाशण हो के डेरा लावांगा। सीस ताज इक्क टिकावांगा। दो जहानां राज कमावांगा। जगत समाज वेख वखावांगा। जन भगतां लाज आपणे हत्थ रखावांगा। सच समग्री रच के साचा काज, साचा हुक्म इक्क सुणावांगा। दो जहानां बेड़ा चले जहाज, चपू आपणा नाम लगावांगा। निरगुण सरगुण पए सांझ, सांझा पीर इक्क अखवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी विछड़े कट्टे कर बहावांगा।

नों सौ चुरानवें चौकड़ी युग बीतेगा। लेखा चुक्के मन्दर मसीते दा। लहणा मुक्के तपे अंगीठे दा। लेखा चुक्के कौड़े रीठे दा। वेखणा खेल बीस बीसे दा। नाउँ चले इक्क जगदीसे दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव चुक्के खाली खीसे दा।

नों सौ चुरानवें चौकड़ी युग पैँडा मुकेगा। श्री भगवान कदे ना लुकेगा। विष्ण ब्रह्मा शिव तुहाड्डा शेर इक्को बकुकेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों पुछेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के इक्को उठेगा।

निरगुण हो के आवांगा। आदी धार चलावांगा। शब्दी गंढु पवावांगा। सोहँ वंड वंडावांगा। आत्म परमात्म चन्द चमकावांगा। सर्ब बख्शंद अखवावांगा। इक्क अनन्द उपजावांगा। परमानंद समावांगा। जुग चौकड़ी नाम वेख वखावांगा। दीन मज्जब फोल फुलावांगा। जात पात परदा लाहवांगा। मनमत नार कमजात सुत्ती उठावांगा। दे भगतां आपणी दात, दाता दानी इक्क हो जावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जेहड़े पढाए आपणी जमात, आपणा अक्खर फेर वखावांगा। फेरा पा के गए कायनात, कलमा नबी नबी जणावांगा। पंज तत्त पाई वफ़ात, फ़तवे सभ दे उप्पर दरसावांगा। कलमा कलाम लिख लिख गए हालात, असल हाल ना किसे वखावांगा। हरफ़ बहरफ़ दस्स के गए नाल कलम दवात,



बिन कलम शाही आपणा नाम जणावांगा। गुर अवतार लेखा दस्सदे गए बहु बिध भांत, भाणा सभ दे सिर रखावांगा। लेखा लिख लिख गए अंदर कनात, परदा उहला इक्क जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक्क वखावांगा।

नव नौं चार दुहाई पाएगा। नौं खण्ड नजर कोई ना आएगा। नौं दर धीर ना कोई धराएगा। चौथे घर ना कोई मिलाएगा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी पन्ध ना कोई वखाएगा। चौका चार कुण्ट नैण उठाएगा। नाया नौका इक्क चलाएगा। नाया नौं दर दर दर रौला पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौं चार वेख वखाएगा।

नव नौं चार वेखण आवेगा। प्रभ आपणा वेस वटावेगा। विष्ण ब्रह्मा शिव लेख जणावेगा। मुछ दाड़ी केस ना कोई दसावेगा। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर इक्क वड्डिआवेगा। आदि जुगादि रहे हमेश, जुग जुग आपणी कार कमावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर ना पाया भेत, अभेद आपणा आप खुलावेगा। नेत्र रोंदे गए मुलां शेख, पंडत पांधा सर्ब कुरलावेगा। जन भगतां करे हेत, हितकारी फेरा पावेगा। रुत सुहज्जणी रक्खे चेत, फुल्ल फलवाड़ी आप महकावेगा। कलिजुग अन्तम खेले खेड, खिडारी इक्को नजरी आवेगा। लक्ख चुरासी भेडे भेड, राओ रंक टक्कर लगावेगा। लक्ख चुरासी कूडी क्रिया धर्म राए दा बणया हेड, मनमुख मूरख मूड इज्जड इक्क वखावेगा। बीस बीसा हरि जगदीशा निरगुण आदि जुगादि आपणी करनी ना लाए देर, करता आपणी कार कमावेगा। जुग चौकड़ी लिआवे फेर फेर, कोहलू चक्की चक्क भवावेगा। अंडज जेरज उतभज सेहतज रक्खे घर, घेरा आपणे नाम रखावेगा। बिन भगतां किसे उते ना करे मेहर, राए धर्म हत्थ सर्ब फडावेगा। पन्ध मुकाए नेरन नेर, दूर दुराडा चल के आवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलावेगा।

भेव अभेदा आप खुलावांगा। सचखण्ड दुआर सुहावांगा। भगत दुआर वड्डिआवांगा। सच सिँघासण डेरा लावांगा। पुरख अबिनाशन नाम वड्डिआवांगा। पृथ्मी अकाशन भेव चुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरतावांगा।

प्रभू जब आपणी कल वरताएंगा। की की खेल वखाएंगा। कवण धाम डेरा लाएंगा। कवण खेडा मात वड्डिआएंगा। कवण जेडा कॅट वखाएंगा। कवण गेडा आप दवावेंगा। कवण बेडा बंन्नु चलाएंगा। कवण मेरा तेरा तेरा मेरा घर वसाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेले दया कमाएंगा।

जिस वेले अन्तम आवांगा। निरगुण नूरी जोती जामा पावांगा। गुर अवतारां लेखा पूर करावांगा। पूत सपूता ब्रह्मण गौडा, गंडु पवावांगा। वेद व्यासा रंग रंगावांगा। ईसा आशा पूर करावांगा। मुहम्मद भरवासा इक्क जणावांगा। अमाम अमामां वड अखवावांगा। नाम दमामां इक्क वजावांगा। सच कलाम इक्क पढावांगा। पिछला नजाम सर्ब बदलावांगा।

सच इस्लाम इक्क समझावांगा। पैगाम इक्क प्रगटावांगा। नगर खेडा इक्क वसावांगा। संबल डेरा लावांगा। नानक लेखा लेख जणावांगा। सोहँ ढोला गावांगा। भरम भुलेख कढावांगा। साचा देस वसावांगा। नर नरेश हो जावांगा। नेत्र लोचण पेख, लक्ख चुरासी वेख वखावांगा। जिनां गोबिन्द करया हेत, तिनां आपणा मेल मिलावांगा। अंदर वड के दस्सां भेत, डूंघी कंदर फोल फुलावांगा। सच सुहञ्जणी माणां सेज, रंग रंगीला इक्क रंगावांगा। नाम सुनेहुडा इक्को भेज, आत्म परमात्म गंढ पवावांगा। जोती चमके नूरी तेज, सूरज चन्द नैण शरमावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वसावांगा।

घर साचा इक्क वसावांगा। सच सिँघासण डेरा लावांगा। साढे तिन्न हत्थ माण दिवावांगा। गोबिन्द शब्दी वंड वंडावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखावांगा। गुजरी चन्द चन्द चमकावांगा। तीर कमंद नाम जणावांगा। पुरी अनन्द अनन्द वसावांगा। भगत भगवान ढोला गावांगा। बण विचोला सेव कमावांगा। परदा उहला सर्ब उठावांगा। मौला हो के हर घट नज़री आवांगा। काया चोला इक्क बदलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मन्दर इक्क सुहावांगा।

साचा मन्दर इक्क सुहाएगा। श्री भगवान डेरा लाएगा। तेई अवतार दर बुलाएगा। ईसा मूसा मुहम्मद दूर दुराडा सीस झुकाएगा। दस गुरू जोत चमकाएगा। भगत अठारां ध्यान लगाएगा। चार युग दी कीती सर्ब वखाएगा। दीन मज़हब परदा लाहेगा। डरदा सिर ना कोई उठाएगा। मरदा जीव ना कोई तराएगा। बरदा गले ना कोई लगाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम फेरा पाएगा।

कलिजुग अन्तम फेरा पावेगा। सच दरबार इक्क लगावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लोकमात आप वखावेगा। दीन मज़ब जगत जमात, झगढा घर घर इक्क वंडावेगा। दिसे सच ना कोई साथ, जूठ झूठ सर्ब परनावेगा। गुर की कोई ना गाथ, रसना जिह्वा सर्ब हलकावेगा। धूढी मस्तक ना कोई माथ, जोत ललाट ना कोई जगावेगा। साध सन्त काम क्रोध लोभ मोह हँकार विकण हाट, हरि का हट्ट ना कोई खुलावेगा। आशा तृष्णा नटूआ नाट, मन वासना नाच नचावेगा। धीरज कोई ना दिसे सात, सति धर्म ना कोई रखावेगा। नार कन्त ना कोई जत, वेसवा रूप सर्ब बणावेगा। धी भैण कोई ना रक्खे पत, पिता पुत्र ना कोई शरमावेगा। कलिजुग सभ दा तोडे हठ, धीरज धीर ना कोई बंधावेगा। काया खाली होए मट, नाम हरी घर ना कोई वसावेगा। घर घर उपजे मनमत, मनुआ आपणा डंक वजावेगा। नाड बहत्तर उबले रत्त, अमृत मेघ ना कोई बरसावेगा। सभ दी धर्म वरासत होणी फक, हकदार नज़र कोई ना आवेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गवाही देणों पिच्छे जाणे हट, अग्गे हो ना कोई छुडावेगा। उच्चे मन्दर जाणे ढट्ट, धौलर नज़र कोई ना आवेगा। नौं खण्ड पृथ्वी घर घर वज्जे सट्ट, ठोकर हरि जू आप लगावेगा। काया चीथड जाए फट्ट, पट्टी नाम ना कोई बंधावेगा। ओस वेले विष्णू तेरे खाली होवण हत्थ,

तेरा भण्डारा नजर किसे ना आवेगा। ब्रह्मे दी रहे ना ब्रह्म मत, चौदां विद्या मूल ना कोई जणावेगा। शंकर त्रसूल बहे सट्ट, जटा जूट नेत्र नैण नीर वहावेगा। ओस वक्त किसे दा रहे ना हठ, प्रभ सभ दा माण गवावेगा। मन का मणका नाम नाम जुग चौकड़ी जो रहे रट, रट्टा सभ दा आप मुकावेगा। इक्को खोले समरथ हट्ट, परदा उहला आप चुकावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मंगण कर के अग्गे हत्थ, सजदा सीस सर्व झुकावेगा। किरपा कर पुरख समरथ, तेरी ओट सर्व तकावेगा। श्री भगवान मार्ग देवे दस्स, दो जहान आप समझावेगा। सोहँ जाप जपो हस्स हस्स, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नजर कोई ना आवेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण प्रभ असीं तेरे होए वस, वस साडा ना कोई जावेगा। लोकमात आए नट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच इक्क जणावेगा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर दर ते औणगे। दूआ सिफरा वंड वंडौणगे। निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण होए दो, जीरो आपणा आप जणौणगे। निरवैर निरा निर्मोह, मोह तेरे नाल वधौणगे। चरन कँवल कँवल छोह, शहनशाह आपणे अंग लगौणगे। तेरे जोगे गए हो, होका दे दे मात सुणौणगे। आपणा दे दे ढोआ ढो, झोली खाली सर्व भरौणगे। नेत्र नैणां नैणां रो, नीर नीर नीर वहौणगे। तुध बिन नजर ना आए को, कोट किला गढ़ इक्को चरन कँवल तकौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा ढोला इक्को गौणगे।

साचा ढोला सभ ने गौणा एं। कलिजुग अन्तम वक्त सुहौणा एं। सोहँ रूप हरी हरि दरसौणा एं। चारे कुण्ट डंक वजौणा एं। निरगुण धारों उठ, सरगुण आप उठौणा एं। जन भगतां उप्पर तुठ, रुठिआं आप मनौणा एं। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी युग सचखण्ड दुआर जो रिहा लुक, तिस आपणा रूप प्रगतौणा एं। शेर हो के पए बुक्क, भबक आपणे नाम सुणौणा एं। सुत शब्दी रक्खया कुक्ख, कुक्ख आपणी हरी करौणा एं। विष्ण ब्रह्मा शिव सुखणा रहे सुख, सुखां सुँखदिआं वक्त सुहौणा एं। बीस बीसे पैडा रिहा मुक, पा-धी नजर कोई ना औणा एं। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे झुक, झुक झुक सीस सर्व झुकौणा एं। सारे कहण साडे कोल नही कुछ, कौशलिआ पुत्त राम राम राम विच्च समौणा एं। ना जाणे नंद जसोधा सुत्त, नंदन चन्दन चन्द चांदनी विच्च चमकौणा एं। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ दी गोदी बैठे लुक, लुककयां फेर बाहर कढौणा एं। बिन नानक कोई ना सके बुज्झ, सचखण्ड दुआर आ, दरस किसे ना पौणा एं। बिन कबीर जाए ना तुठ, बिन नानक अंग ना किसे लगौणा एं। बिन गोबिन्द किसे ना बणाए पुत्त, सुत दुलारा ना किसे जणौणा एं। कलिजुग अन्तम सोही रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकौणा एं। करे खेल बिन काया बुत्त, पंज तत्त ना कोई वखौणा एं। सिँघ शेर हो के बुक्क, नाम डंका इक्क वजौणा एं। सन्त सुहेले गोदी चुक्क, आप आपणे रंग रंगौणा एं। विष्णू चरनी डिग के रिहा पुच्छ, प्रभ की की नाम जपौणा एं। नव नौं चार बैठा रिहों चूप, तेरा भेव ना किसे समझौणा एं। जे कोई वेखे वसें अन्धेरा घुप, नूर चन्द ना कोई चमकौणा

एं। किहड़ी धारों रिहों उठ, परदा आपणा आप लौहणा एं। कवण कूटे रक्खया पुत्त, सुत दुलारा नाल मिलौणा एं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच समझौणा एं।

विष्णू सच सच समझावांगा। काया कच्च लेख मुकावांगा। सम्बल खेडे जावां वस, गोबिन्द पुत्त इक्क उठावांगा। निरवैर हो के पवां हस्स, निराकार खेल करावांगा। जन भगतां जावां वस, ढोला राग इक्क प्रगटावांगा। सच दुआरा खोलू हट्ट, नाम अमोलक इक्क वरतावांगा। निरगुण हो के वसां घट घट, गृह मन्दर डेरा लावांगा। लेखा चुकावां धन्ने जट्ट, जट्ट लेखे आपणे पावांगा। गोबिन्द लग्गा पिछला फट्ट, बण शब्दी दर्द वंडावांगा। जोती नूर लट लट, अगम्म जोत दरसावांगा। लोकमात हो प्रतक्ख, पारब्रह्म अखवावांगा। लक्ख चुरासी भाण्डे कर के सक्ख, सक्खणी हाण्डी इक्क चढावांगा। गुरमुख सन्त सुहेले सज्जण रक्ख, बण राखा सेव कमावांगा। भगतां खोलां आपणी अक्ख, जगत लोचण बन्द करावांगा। विष्णू तैनुं मार्ग दस्स, सेवक तेरी सेव जणावांगा। गरीब निमाणयां देणा हक्क, शाह सुल्तानां खाक मिलावांगा। भुक्खे नंगे लोकमात प्रभ तों गए अक्क, दुखीआं दर्द आप वंडावांगा। हउम हंगता रोग कट्ट, साची संगत विच्च मिलावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर औण नट्ट, गुरमुखां विच्च बहावांगा। सारे मिल के इक्क दूजे दा गौण जस, सोहँ ढोला इक्क पढावांगा। अग्गे मीरी पीरी सभ दी होई बस, गद्दीदार गद्दी उतों सारे लाहवांगा। शाह सुल्तानां नकेल पा नक्क, चारों कुण्ट आप भवावांगा। सभ दा खेडा होए भट्ट, भट्टी इक्को इक्क तपावांगा। कलिजुग मन्दर जाए ढट्ट, सतिजुग महल्ल फेर बणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, विष्णू तैनुं इक्को जै समझावांगा।

विष्णू तेरी जै दा इक्को मुल, अनमुलडा आप पवाइंदा। ब्रह्मे तेरा तोले तोल, तोलणहारा आप अखवाइंदा। शंकर तेरा परदा खोलू, अंदर मन्दर भेव चुकाइंदा। नव नौं चार बैठा रहे अडोल, गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात हुक्म मनाइंदा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होए उप्पर धौल, धरत धवल वेख वखाइंदा। आदि कीता सच्चा कौल, अन्त आपणा पूर कराइंदा। ना कोई मेटे रत्ती चौल, मेटणहारा ना कोई अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाम सच वडिआइंदा।

विष्णू नाउँ इक्क जैकार, श्री भगवान आप जणाईआ। निरगुण सरगुण सच प्यार, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दए आधार, जोडी जोडा इक्क रखाईआ। ईश जीव कर उजिआर, जगदीश होए सहाईआ। कोटन नाम जगत उच्चार, सिफती सिफत सिफत सालाहीआ। सच्चा नाम इक्क करतार, निरगुण दाता दए समझाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, प्रभू जैकार, चार युग गुर अवतार पीर पैगम्बर याद किसे ना आईआ। सभ ने रहणा खबरदार, बेखबर खबर आप सुणाईआ। मिले मेल अगम्मडा यार, यारी यारां नाल निभाईआ। नाडी चमडा ना कोई आधार, हड्ड मास ना वंड वंडाईआ।

अम्मीं अमड़ा ना करे कोई प्यार, पिता पूत ना कोई उठाईआ। दाई दाया ना कोई उजिआर, सीस हत्थ ना कोई टिकाईआ। खेले खेल आप करतार, करता पुरख बेपरवाहीआ। विष्णू वेख खेल निरँकार, खालक खलक रिहा वखाईआ। तेरी बदली करे आप आपणी धार, तेरा लहणा दए मुकाईआ। औह वेख ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, चार वेद ना कोई सहाईआ। शंकर हा हा करे पुकार, भोले नाथ ना कोई वडयाईआ। तेई अवतार गए हार, जुग जुग आपणी तार सतार वजाईआ। पीर पैगम्बर कर कर गए गुप्तार, गुप्त शनीद भेव चुकाईआ। गुर गुर बणदे गए लिखार, लेखा लेख नाम जगत कुडमाईआ। भगत मंगदे गए दीदार, भगवन मिले बेपरवाहीआ। कोई ना पाए हरि की सार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह शुक मनाईआ। सो साहिब होया खबरदार, सस्सा सतिगुर रूप वटाईआ। ऊड़ा ओअंकार निरँकार निराकार तिन्नां गुणां वस्सया बाहर, ऐड़ा अक्ख प्रतक्ख खुल्लुआ। ईडी ईशट होया दरकार, सीस झुकया इक्क करतार, परनाम नमो नमो जणाईआ। सस्सा किला होया त्यार, सतिगुर वडिआ सच सिकदार, सिँघासण आसण डेरा लाईआ। हाहा हँ ब्रह्म करे प्यार, निहकमी कर्म विचार, साची सरन दए दातार, दइअवान वड वडयाईआ। सोहँ रूप अपर अपार, निरगुण सरगुण करे प्यार, आत्म परमात्म खेल नयार, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क समझाईआ।

जै जैकार जगत जुग, जग जीवण दाता आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी औध जाए पुग, गुर अवतार भेव ना आइंदा। पीर पैगम्बर सजदा करन निउँ निउँ झुक, बरदा गुलाम सर्व अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, विष्णू पूरा करे वर, ब्रह्म वखाए आपणा घर, शंकर बनाए इक्को लड़, पल्लू इक्को इक्क वखाइंदा।

पल्लू वखाए प्रभ अनोखा, ताणा पेटा नजर किसे ना आईआ। जिस फडिआ तिस मिले ना धोरवा, आदि जुगादि दए वडयाईआ। बिन किरपा नहीं फडना सौरवा, कोटन कोट ध्यान लगाईआ। कलिजुग अन्तम जन भगतां प्रभ ने दिता मौका, मौका वेखण आपे आईआ। घर घर दर दर बाहमण साफ़ रक्खण चौंका, चौंकी डाह डाह रहे मनाईआ। मुल्ला शेख नाल होया औंता, पीहड़ी अग्गे ना कोई वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्क दृढ़ाईआ।

साचा नाम दिढ़ विश्वास, हरि दिढ़ता आप दृढ़ाइंदा। जिस दा कोई ना करे घात, घाउ नजर कोई ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे बणो इक्क जमात, हरि जमात भगत वखाइंदा। बीस बीसे सुहञ्जणी रात, राती रुत्ती आप महकाइंदा। जे कोई संसा पुछो बात, दाता दानी सर्व समझाइंदा। जम्म के फेर ना पाओ वफ़ात, सो मरना आप समझाइंदा। हरि का नाउँ लिख लिख दे के आए कलम दवात, कलम शाही जोड़ जुडाइंदा। रसना दस्स दस्स आए आबेहयात, हयात हयाती ना कोई बदलाइंदा। जिस दे खवाब अंदर लिखया कलमा सो देवे जवाब, लाजवाब सर्व कराइंदा। सारे निउँ के करन आदाब,

आदल इक्को नजरी आइंदा । साडा पुच्छ ना होर हालात, हालत सभ दी वेख वखाइंदा । बण तरखाण ना सानूं तराश, तेरा तीर अणयाला झल्लया ना जाइंदा । इक्को तेरे मिलण दी खाहश, खालक तूही नजरी आइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेशा इक्क अलाइंदा ।

सारे उठो वेखो अक्ख, आखर हरि जणाईआ । तन माटी सड़ के गए कक्ख, कुल्ली कक्खां संग किसे ना जाईआ । अन्तम होए खाली हत्थ, हत्थ गंठ ना कोई बंधाईआ । बिन ढाहिउं गए ढट्ट, आपणा बल ना कोई जणाईआ । हाल अहिवाल सारे दिउ दस्स, काल महांकाल की की सेव कमाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर आपो आपणयां सिर ते रक्खो हत्थ, जो तुहाढे हो के हरि हरि जस रहे गाईआ । बीस बीसे किसे दा रहण ना देवे हक, हकीकत वेखे थाउं थाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेशा शब्द सुणाईआ ।

सुण संदेशा तेरा महिबूब, मुहब्बत तेरी याद आईआ । नजरी आए इक्क अरूज, अर्श फर्श तेरी वडयाईआ । तेरा लेखा चुक्के नाल सूद, असल तेरी झोली पाईआ । साडी कोई ना दिसे हदूद, दीन मज़ब ना कोई वडयाईआ । बिन तेरे कोई ना रहे पूज, सिल पाथर पाहन ना कोई मनाईआ । खाणी बाणी तेरा भेव खोले गूझ, तेरा राह रही समझाईआ । जो तेरी चरनी गिआ झूझ, तिस झिजक रहे ना राईआ । सो चढ़े मंजले मकसूद, मकसद आपणा हल्ल कराईआ । कलिजुग अन्त बिन तेरी किरपा पढ़ना होया फ़ज़ूल, फ़ज़ल तेरा नज़र किसे ना आईआ । खाणी बाणी कोलों मंगे मसूल, चुंगीखाने बैटे बणाईआ । तेरा कोई ना जाणे अर्ज तूल, रकबा कढे ना कोई लोकाईआ । तेरे हो के तैनुं गए भूल, भुल्लयां अक्ख ना किसे खुलाईआ । तेरा सच सच्चा असूल, जुग चौकडी देवे सज़ाईआ । तेरा नाम शब्द माअकूल, हुक्म इक्को इक्क मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर दरवेश सीस झुकाईआ ।

विष्नुं खडा दरवेश, दर सीस झुकाइंदा । तेरे अगगे चले ना कोई पेश, पेशवा नज़र कोई ना आइंदा । मेरी रोंदी बाशक सेज, सांगो पांग सुख ना कोई वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोई ना आइंदा ।

तुध बिन नज़र ना आए बेनज़ीर, नैण अक्ख ना कोई खुलाईआ । परवरदिगार गहर गम्भीर, गुणी गहीर तेरी वडयाईआ । तुध बिन होया दिलगीर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ । तेरा वेला अन्त अखीर, आखर आपणा भेव जणाईआ । चार वरन शरअ जंजीर, सिरकत घर घर करे लड़ाईआ । ना कोई बदले तकदीर, तदबीर सके ना कोई समझाईआ । हत्थ फड़ जगत शमशीर, शीर खार रहे डराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा साचा वर, जिस मिलिआं तोट रहे ना राईआ ।

हरि का वर एका एक, एकंकारा आप जणाइंदा। विष्ण ब्रह्मा शिव रक्खणी टेक, सति सतिवादी आप समझाइंदा। जुग चौकड़ी रहे हमेश, जन्म मरन विच्च ना आइंदा। तिस साहिब करो आदेस, देस दसन्तर सोभा पाइंदा। तिस भाणा मन्नो नर नरेश, नर नरायण हुक्म चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाइंदा।

धुर दी धार दस्से भगवान, श्री भगवान दया कमाईंआ। कलिजुग अन्त होए सो परवान, जिस परवाना हत्थ फडाईंआ। जिस जन रसना गाया सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, तिस जै जैकार करे लोकाईंआ। विष्णू तेरा तुटे माण, हरि भगत मिले वडयाईंआ। तूं सेवादर दरबान, गुरमुख मेरे घर औण चाईं चाईंआ। ब्रह्मा वंडणहारा दान, हरिजन दाते दानी मिल खुशी मनाईंआ। शंकर करनहार कल्याण, जो घडिआ भन्न वखाईंआ। भगत भगवान करन परवान, दूजा इष्ट ना कोई मनाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग नाम बाणी चलदी रही दुकान, गुर सतिगुर हट्ट खुल्लाईंआ। सारे बण के औंदे रहे महिमान, कट्ट रैण उठ उठ आपणे घर नूं जाईंआ। रसना कह के गए सभ दा दाता श्री भगवान, सो पुरख निरञ्जण बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म करे परवान, परम पुरख इक्क सरनाईंआ। कलिजुग अन्त हो मेहरवान, मेहरवान फेरा पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम नाम जैकारा एकंकारा, शब्द सहारा दए समझाईंआ।

सोहँ जैकारा जीव जप, जग जीवण दाता आप जणाइंदा। लेखा चुक्के तीनों तप, त्रैगुण नाता तोड़ तुडाइंदा। कोट जन्म दे उतारे पष्प, पतित पापी पार कराइंदा। जो जन दुआरे आइण नट्ट, तिन्नां बण पान्धी मेल मिलाइंदा। जिस दा विष्णू गाए जस, सो भगवान फेरा पाइंदा। गुरमुखो मिलो हस्स, हँस मुख आपणे नाल मिलाइंदा। लभ्यां किसे ना आवे हत्थ, रूप रंग रेख ना कोई रखाइंदा। स्वामी पुरख आप समरथ, निहकमी कर्म कमाइंदा। लेखा जाणे तत्त अठ, अट्ट अठोतर फोल फुलाइंदा। नौं दवारे कर के वक्ख, नौं रस मेट मिटाइंदा। दस्म दवारी निक्का जिहा छोटा हट्ट, इशारे नाल खुल्लाइंदा। अगगे मार्ग फेर दस्स, गुर शब्दी उंगली लाइंदा। सुन अगम्म चरनां हेठ दब्ब, थिर घर आपणा मेल मिलाइंदा। थिर घर लहणा चुक्के हब्ब, अगगे आपणी कार कमाइंदा। जिन्नां कर किरपा लए लभ, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। सचखण्ड दुआरे लै के जाए झब्ब, अद्धविचकार ना कोई अटकाइंदा। भगत भगवान इक्क दुआरे दोवें बहण फब, फासला चरन सीस रखाइंदा। आदि जुगादी इक्को यद, बंस सरबंस आप वडिआइंदा। शरअ शरीअत छड्डो हद्द, हद्द इक्को इक्क वखाइंदा। बोध अगाधी वज्जे नद, छत्ती राग भेव ना आइंदा। जिस नूं कहन्दे साडे नालों अड्ड, सो तुहाड्डे घर वखाइंदा। कूड़ी क्रिया खैहडा देवे छड्ड, देवत सुर नर मुन जन गुरमुखो तोहे सीस झुकाइंदा। प्रभ नूं मिल के खोल्लो आपणी अक्ख, बिन सतिगुर अक्ख गुरू नजर ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रतक्ख आपणी कार कमाइंदा।

प्रतक्ख दा की हाल कहणा, कहण कोई ना जाईआ। जो वेस्वो सो आपणे नैणां, नैणां दए जणाईआ। साहिब सतिगुर सज्जण सैणा, साक इक्को इक्क अखवाईआ। नानक गोबिन्द मन्नो कहणा, परम पुरख परमात्मा गिआ आईआ। जिस दा मन्दर कदे ना ढैहणा, चार दीवार ना कोई गिराईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्को जिहा रहणा, वड्डा छोटा ना कोई बणाईआ। कलिजुग अन्तम गोबिन्द आखे साढे तिन्न हत्थ पाया गैहणा, जगत शिंगार रिहा वखाईआ। सच सिँघासण साचे बहिणा, समरथ सेज विछाईआ। गुरमुख्वां देवे लहणा देणा, देणा सभ दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जै जैकार इक्क अखवाईआ।

जै जैकार करन ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड वज्जे वधाईआ। जै जैकार करन जेरज अंड, अंडज जेरज रहे जस गाईआ। जै जैकार करन सूरज चन्द, चन्न सूरज रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जै जैकार इक्क उपाईआ।

जै जैकार आप उपाई, उपमां आपणे हत्थ रखाइंदा। आपणी सिरिआ आप पढ़ाई, सिखावणहारा नजर किसे ना आइंदा। आपणी विद्या आप जणाई, पाठशाला आप वडिआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा।

साची करनी जै जैकार जोग, जुगत जुगती आप जणाइंदा। आदि जुगादी धुर संजोग, हरि सतिगुर मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण खेल लोक परलोक, दो जहानां वंड वंडाइंदा। नाम निधाना अगम्म सलोक, सोहला राग अलाइंदा। प्रभ का भाणा कोई ना सके रोक, जो करनी सो कर वखाइंदा। जुग चौकडी खेले खेल पोतरा पोत, पूत सपूता गंढ पवाइंदा। सदा सदा सद रहे मदहोश, खुमार खुमारी इक्क जणाइंदा। विष्ण ब्रह्मा शिव दर्शन रहे लोच, लोचां सभ दी पूर कराइंदा। गुर अवतार सोचां रहे सोच, आपणी सोच ना किसे समझाइंदा। कलिजुग अन्तम सभ नू जाए पहुंच, आप आपणा पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख नारी मिले साचा खौंत, कन्त नार आप हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी कार कमाइंदा।

कार कमाए करता पुरख, पुरख पुरखोतम वड वडयाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, हिरस हवस ना कोई वधाईआ। जन भगतां उते कर के तरस, रैहमत आपणी आप कमाईआ। निरगुण हो के आया परत, सरगुण रूप ना कोई वटाईआ। अमृत मेघ इक्को बरख, बरखा आपणे नाम लगाईआ। दो जहानां जुग चौकडी जो करदा रिहा लिखत पढ़त, अन्तम आपणे लेखे पाईआ। अग्गे रहे ना किसे दी कोई चढ़त, चढ़दी कला ना कोई जणाईआ। पुरख अकाल ढोला गौणा सभ ने हो नधड़क, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान वज्जे वधाईआ। अग्गे रहे ना कोई फ़रक, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। गुरमुख कोई ना चढ़े चरख, पुठी खल्ल ना कोई लुहाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदयां देवे दरस, दर दर घर घर फेरा पाईआ। भगतो भगवान रक्खे सदा मिलण दी गर्ज, नित



नित आपणा फेरा पाईआ। निरगुण वेख ना होणा असचरज, धू प्रहलाद सभ नूं गिआ समझाईआ। प्रभ किसे कोलों रिहा ना वरजया सारे रहे वरज, गरीब निमाणयां गले लगाईआ। जो गोबिन्द कोलों हो गिआ हर्ज, सो पूरा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को परत के आया मरद, सच मरदानगी दए वखाईआ।

इक्को मर्द बणे मरदाना, सच मरदानगी आप कमाइंदा। इक्को धर्म इक्क निशाना, इक्को मन्दर हरि सुहाइंदा। इक्को नाम इक्को गाणा, इक्को राग आप अलाइंदा। इक्को इष्ट देव मिलाणा, इक्को रूप अनूप दरसाइंदा। इक्को चरन कँवल ध्याना, ध्यान इक्को इक्क समझाइंदा। इक्को पीणा इक्को खाणा, वंडण इक्को इक्क वंडाइंदा। इक्को रूप श्री भगवाना, हर घट अंदर डेरा लाइंदा। इक्को होए जाणी जाणा, अन्तर आत्म वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह इक्क वखाइंदा।

इक्क वखाए सच्चा राह, रहबर इक्को नजरी आईआ। इक्क जणाए सच मलाह, बेडा इक्को इक्क तराईआ। इक्क जणाए सच सलाह, करे शब्द नाम पढ़ाईआ। इक्क फडाए आपणी बांह, फडी बांह ना कोई छुडाईआ। इक्क जणाए हरी हरि नां, नाउँ निरँकारा इक्क दरसाईआ। इक्क करे कराए हां विच्च हां, तूं मैं ना कोई रखाईआ। इक्क बणे पिता मां, पिता पूत दए वडयाईआ। इक्क बणाए हँस कां, कागों हँस उडाईआ। इक्क दए निथाविआं थां, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण आपणी कार कमाईआ।

निरगुण कार कमाए करनी, करता पुरख दया कमाइंदा। नाता तोड़े वरनी बरनी, जात पात इक्क वडिआइंदा। जो जन सरनाए आए चरनी, तिनां चरन कँवल ध्यान लगाइंदा। गेड़ चुक्के मरनी डरनी, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। साची तारी इक्को तरनी, तारनहारा आप सिरवाइंदा। रूह शब्द अन्त फडनी, सुरती मेला मेल मिलाइंदा। सतिगुर पूरे अग्गे कोई ना अडनी, जुग विछडी जोड़ जुडाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, ज़बान बाणी जिस ने पढ़नी, तिस पुस्तक होर ना कोई वखाइंदा। श्री भगवान नाल सृष्ट सबाई लडनी, कयों उलटा राह चलाइंदा। अन्तम वांग अंगिआरी झडनी, शोअला कोई रहण ना पाइंदा। सारे चल के औणे सरनी, राओ रंक बचया ना कोई अखवाइंदा। प्रभ ने अंदरे अंदर कार करनी, बाहरों हुक्म ना कोई सुणाइंदा। जिस दी लिखत किसे ना पढ़नी, बिन लिखिआं लेख बणाइंदा। जिस दे चरन चुंम्मे धरनी, धरत धवल आस रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो आपणी कल वरताइंदा। कल वरताए आपणी कल, कलवन्त भेव ना आइंदा। आदि जुगादी अछल अछल्ल, जुग जुग वेस वटाइंदा। जोत शब्द गिआ रल, नजर किसे ना आइंदा। वसणहारा जल थल, महीअल आपणा डेरा लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो रिहा घल्ल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग हुक्म मनाइंदा। सो साहिब आया चल, चलत आपणा इक्क जणाइंदा। दो जहान जाइण हल्ल,

धीरज धीर ना कोई धराइंदा । लेखा मुकाए बिन घड़ी पल, अक्खी अक्ख ना कोई फरकाइंदा । सभ नूं देवणहार करनी फल, कीती सभ दी झोली पाइंदा । कलिजुग कूड़ी क्रिया खाली दिसे डाल, फल नजर कोई ना आइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता निरवैर स्वामी सदा निहकामी अन्तरजामी श्री भगवान आप अलाइंदा ।

\* पहली हाढ़ २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेटूवाल \*

सचखण्ड दी साची धार, पुरख निरञ्जण आप चलाइंदा । निरगुण निरवैर बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर धराइंदा । मुकामे हक हो त्यार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा । महल्ल अट्टल उच्च मनार, जोती जाता डगमगाइंदा । शाहो भूप बण सिकदार, शहनशाह आपणी कल वरताइंदा । धुर संदेसा देवे एका वार, एकंकार एका हुक्म जणाइंदा । जुग चौकड़ी कोई ना होए मेटणहार, करनी हरि ना कोई उलटाइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए दोए जोड़ करन निमस्कार, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा । विष्ण ब्रह्मा शिव बण भिस्वार, दर दरवेश रूप वटाइंदा । भगत भगवान मंगे दीदार, निज नेत्र नैण दर्शन चाहिंदा । सन्त सज्जण मंगण चरन धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का तिलक लगाइंदा । गुरमुख कहण मिले प्रभ सांझा यार, मीत प्यारा इक्को नजरी आइंदा । गुरसिख उच्ची कूक कूक करन पुकार, सोहला ढोला इक्को राग समझाइंदा । तोला बणे आप निरँकार, नाम कंडा हत्थ उठाइंदा । धर्म दुआरे बोल जैकार, साची धार इक्क वखाइंदा । करे खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर आपणी कार कमाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा ।

सचखण्ड निवासी हरि सुल्तान, सुत दारा वेख वखाईंआ । सूरबीर वड बलवान, महांबली नाउँ धराईंआ । दो जहान हो प्रधान, पुरी लोअ डंक वजाईंआ । ब्रह्मण्ड खण्ड बण हुक्मरान, धुर संदेसा इक्क सुणाईंआ । खेले खेल श्री भगवान, भेव अभेदा आपणे हत्थ रखाईंआ । जुग चौकड़ी हो प्रधान, सच प्रधानगी इक्क कमाईंआ । शब्द नाम सिफ्त ज्ञान, नाउँ निरँकारा आप दृढाईंआ । आत्म परमात्म कर परवान, सच परवाना इक्क समझाईंआ । पारब्रह्म ब्रह्म देवे इक्क ध्यान, इष्ट देव इक्को नजरी आईंआ । महल्ल अट्टल सुहाए इक्क मकान, मन्दर इक्को रूप दसाईंआ । शब्द अनाद जणाए सच्ची धुन कान, राग नाद ना कोई वजाईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईंआ ।

सचखण्ड निवासी पूरन भगवन्त, निरगुण नर हरि नरायण आप अखवाइंदा । आदि जुगादी बण बण कन्त, लक्ख चुरासी सेज हंडाइंदा । बोध अगाधा मणीआं मंत, नाउँ निरँकारा आप पढाइंदा । लक्ख चुरासी जीव जंत, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा । आत्म

परमात्म नाता नार कन्त, घर साचे जोडी जोड जुडाइंदा। मेहरवान चाढूनहारा रंग बसन्त, काया कपड तन रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साची खेल कराइंदा।

सचखण्ड दुआरे बहि जगदीस, जगदीसर आपणा हुक्म वरताईआ। एका छत्तर झुल्ले प्रभ सीस, सीस ताज इक्क टिकाईआ। इक्को नाम इक्को कलमा इक्को मंतर शब्द हदीस, इक्को करे सच पढाईआ। इक्को खेल बीस बीस, बस्ता सभ दा रिहा बंधाईआ। नजरी आए साहिब अतीत, त्रैगुण नाता रिहा तुडाईआ। बलधारी जाए जीत, बावन भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

सचखण्ड दर सोहे वड्डा, सो साहिब आप सुहाइंदा। जिस घर वसे बुड्डा नड्डा, बाल बिरध वंड ना कोई वंडाइंदा। जिस दी सतिगुर पूरे आपणे हत्थ रखाई हद्दा, दूसर नजर किसे ना आइंदा। प्रेम प्यार निरगुण निरवैर निरँकार निराकार इक्को ढोला इक्को छन्दा, बिन राग नाद अलाइंदा। ना सूरज ना कोई चन्दा, मण्डल मंडप ना कोई वखाइंदा। ना किनारा ना कोई कन्ड्डा, आर पार नजर किसे ना आइंदा। ना देवत ना माणस ना मानुख ना बन्दा, बेपरवाह अगम्म अथाह निरगुण जोत डगमगाइंदा। ना उजल ना होए गंदा, स्वच्छ सरूप रूप प्रगटाइंदा। ना चंगा ना कोई मंदा, हट्ट कीमत कोई ना पाइंदा। ना सुहागी ना उह रंडा, नर हरि इक्को धार जणाइंदा। ना खाट ना खटीआ ना कोई मंजा, चारपाई ना कोई सुहाइंदा। ना दरवेश ना भिखारी ना वस्त कोई मंगा, दोए जोड वास्ताा कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर इक्क समझाइंदा।

सचखण्ड तेरा खेल अपारा, अपरंपर आप जणाईआ। निर्मल दीआ जोत उजिआरा, तेल बाती कोई ना पाईआ। ना कोई वेखे जीव संसारा, लक्ख चुरासी नैण नजर ना आईआ। ना कोई पावे हद्द किनारा, गुप्त ज़ाहर अंदर बाहरा भेव किसे ना आईआ। राज राजान शाह सुलतान जग नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोई धराईआ। गृह मन्दर घट मिले ना मीत मुरारा, दर नजर कोई ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे धुंदूकारा, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। हरि का नाम ना मिले किसे हट्ट वणजारा, खोजत खोजत थक्की सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्दी करदे गए इशारा, राग तराने नाल सुणाईआ। महल्ल अट्टल उच्च मनारा, जिस गृह वसे आप करतारा, करता आपणा आसण लाईआ। छप्पर छन्न ना कोई दीवारा, सूरज चन्न ना कोई उजिआरा, पुरख नार ना कन्त भतारा, सेज जगत ना कोई हंढाईआ। कागद कलम ना कोई लिखारा, शास्त्र सिमरत ना कोई पुराना, गीता ज्ञान ना कोई ध्याना, लेखा जाणे ना अञ्जील कुराना, तीस बतीसा ढोला कोई ना गाईआ। इक्क इकल्ला एकंकारा, करे खेल अपर अपारा, वसणहारा धुर दरबारा, सच सिँघासण आसण लाईआ। परवरदिगार सांझा यारा, जलवा नूर इक्क उजिआरा, हक़ हकीकत पावे सारा, लाशरीक इक्क अखवाईआ। खोलूणहारा

जन किवाडा, मेटणहारा पंचम धाडा, धुरदरगाही सच्चा लाडा, शाह पातशाह शहनशाह इक्को इक्क अखवाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवणहार सहारा, मेहरवान मेहर नजर उटाईआ। भरतंबर स्वामी सदा निहकामी अचरज खेल करे करतारा, करनी आपणी आप कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग शक्ती ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन देंदा आया लारा, नाम नामा रसना जिह्वा जणाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले हरिजन करदा रिहा प्यारा, प्रेम प्रीती अन्तर इक्को इक्क जणाईआ। मेटदा रिहा धुंदूकारा, करदा रिहा सच विहारा, आत्म सेजा हो उजिआरा, नूर नूराना शाह सुलताना नर निरँकारा, आपणी दया कमाईआ। बोलणहारा नाम जैकारा, गावणहारा राग अपारा, वजावणहारा नाद निराकारा, धुन आत्मक राग आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणी कल आप धराईआ।

सचखण्ड दुआरे धरे कल, अकल कल अखवाईदा। निर्मल दीपक जोत जाए जल, परम पुरख प्रभ वेस वटाईदा। करे प्रकाश महल्ल अट्टल, अन्ध अन्धेर गवाईदा। सच सिँघासण एका मल्ल, तखत निवासी साचा डेरा इक्क जणाईदा। जुग चौकडी सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भगतां पूरी करे आसी, तिसना जगत मिटाईदा। जन्म कर्म दी लाहे उदासी, आत्म अन्तर प्रेम प्रीती इक्क समझाईदा। अन्तम तोडे जम की फासी, फ़ैसला इक्को वार सुणाईदा। पकड़ चढ़ाए आपणी घाटी, सच किनारे आप लगाईदा। एथे ओथे दो जहान मुकाए वाटी, मंझधार ना कोई रुड़ाईआ। सच दुआरे करे कराए आपणी आरती, दीप घृत जोती नूर डगमगाईदा। हरी दुआरे कोई पार ना उतरे सफ़ारशी, सभ दा लहणा देणा आपणे हत्थ रखाईदा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त रहण ना देवे कोई आडूती, धडत नाम ना कोई लगाईदा। वेखणहारा अक्खरी नाम इबारती, हरफ़ बहरफ़ खोज खुजाईदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच रवाज, आप रचाए आपणा काज, करता पुरख खेल कराईदा।

हरि करता रचे काज, करनी आप कमाईआ। धुर दी लै के आवे दात, दाता दानी वड वडवाईआ। वस्त अमोलक इक्क करामात, कर्म कांड दए गवाईआ। डूंधी भवरी डूंधे खात, डूंधे सागर वेखे थाउँ थाईआ। मेटणहार अन्धेरी रात, करे खेल बहु बिध भांत, भेव अभेदा आप जणाईआ। निरगुण हो के वसे इक्क इकांत, किसे नाल ना करे बात, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोई वरवाईआ। जिस चरन बंधाए नात, तिस देवे आपणी दात, वस्त अमोलक काया गोलक निरइछत झोली पाईदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची रीती, सचखण्ड दी खेल अनडीठी, जगत नेत्र नजर कोई ना पाईदा।

सचखण्ड वेख तेरी वडिआई, सो करता आप कराईदा। आदि जुगादि वज्जदी रहे वधाई, डूम नाई ना कोई रखाईदा। एका मन्दर एका गृह एका घर इक्क दुआर होए रुशनाई, रोशन आपणा नाम कराईदा। वेखणहारा चाई चाई शाह पातशाह बेपरवाही, बेपरवाह

अगम्म अथाह आपणा परदा लाहिंदा। साची कार रिहा कमाई, चार युग समझ ना राई, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चारे रोवण मारन धाई, शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी रिहा समझाई, समझ बेसमझां विच्च पाईआ। रमज नाल रमज मिलाई, करे खेल हरि शहनशाही, शाह पातशाह आपणा हुक्म जणाईआ। जुग चौकड़ी नव नौं चार जो बणया रिहा माही, कलिजुग अन्तम बणे राही, बण पान्धी फेरा पाईआ। जन भगतां मिले सच गोसाई, फड फड बांहों रिहा उटाई, सोया कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा साचा दाता, करे खेल पुरख बिधाता, पुरख पुरखोतम आपणी सेव कमाईआ।

सचखण्ड निवासी होया होशिआर, होशिआरी सभ दी दए गवाईआ। आपणा हुक्म करे वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साचे तखत बैठ सच्ची सरकार, धुर फरमाना इक्क सुणाईआ। दो जहान मन्नण दोए जोड करे निमस्कार, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्क ध्यान लगाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव चरन धूढी मंगण छार, नेत्र सके ना कोई उटाईआ। त्रैगुण रोवे धाहां मार, पंज तत्त करे गिरयाजार, खाली बुत्त कम्म किसे ना आईआ। मन मत बुध गई हार, पंज तत्त नाता कुडिआर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर नाच रिहा कराईआ। चारों कुण्ट धुआंधार, साचा चन्द ना कोई उजिआर, सतिगुर मिले ना मीत मुरार, पान्धी पन्ध ना कोई वखाईआ। जुग चौकड़ी सेवा कर कर गए आपणी वार, अन्तम दस्स के गए पुरख अकाल सभ दा सांझा यार, दूजा नजर कोई ना आईआ। कल कलकी लै अवतार, डंका वज्जे अपर अपार, ना कोई मेटे विच्च संसार, मेटणहारा नजर कोई ना आईआ। एका महल्ल कर त्यार, जिस गृह वसे आप निरँकार, निरगुण दाता पुरख बिधाता इक्को इक्क नजरी आईआ। उच्ची बोले नाम जैकार, तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्क प्यार, जगत वचोला नजर कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति संदेसा नर नरेशा इक्को इक्क जणाईआ।

सुणो संदेसा जुग चार, हरि करता आप जणाईआ। कलिजुग अन्त हो होशिआर, होश सभ नूं रिहा जणाईआ। अन्तम लेखा देणा पए धुर दरबार, लेवणहार इक्क हो आईआ। आपणा आपणा परदा खोल दिउ वखाल, उहला कोई रहण ना पाईआ। लख चुरासी बणा के गए दलाल, जगत आपणा फेरा पाईआ। कोई कहे छुरी हक्र हलाल, कोई खण्डा खडग दए वडयाईआ। कोई चिल्ला तीर कमान करे प्यार, कोई वल छल धारी खेल रचाईआ। कोई लारा दे के गिआ विच्च संसार, सच इशारे नाल समझाईआ। अन्त मंगदे गए बण भिखार, भिखक आपणी झोली डाहीआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त सभ दी पावे सार, महांसारथी इक्को फेरा पाईआ। पूरब लहणा जगत देणा दए नवार, साचा कहणा कहि सुणाईआ। ना कोई मेटे मेटणहार, ना कोई वेखे वेखणहार, नेत्र अक्ख उप्पर ना कोई खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ।

सचखण्ड दुआर हरि जू चढ़या, चढ़नहार वडी वडयाईआ। गुर अवतार आपे फडिआ, फड़ आपणे लड़ बंधाईआ। पीर पैगम्बर चरनां हेठ धरया, सिर सके ना कोई उठाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव आपणा आप हरया, हरि हरि नाम रहे ध्याईआ। चार युग गल पल्लू पा हरि सरनाई पड़या, मस्तक धूढी टिक्का लाईआ। जगत ज्ञान ना जीवत ना दिसे मरया, अद्धविचकार आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आपणी खेल रचाईआ।

सचखण्ड निवासी खेल रचौंदा, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटौंदा, निराकार साकार रूप हो आईआ। धुर संदेसा आण सुणौंदा, ढोला इक्को इक्क जणाईआ। अमृत मेघ इक्क बरसौंदा, झिरना निझर नाम झिराईआ। सन्त सुहेले पकड़ उठौंदा, गुर चेले मेल मिलाईआ। गुरमखां गुर गोद बहौंदा, सरनगत इक्क वखाईआ। गुरसिखां सद्द उंगली लौंदा, जगत मार्ग दए समझाईआ। भगत दुआरे फेरी पौंदा, निरगुण एका वेस वटाईआ। सरगुण हो के राह तकौंदा, नेत्र नैण अक्ख इक्क खुलाईआ। प्रेम प्रीती राग गौंदा, गीत गोबिन्द इक्क अलाईआ। हरिजन हरि हरि अन्तर आत्म आपणे गले लगौंदा, परमात्म आपणी गंठ पवाईआ। महल्ल अट्टल इक्क वखौंदा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। साचा नूर इक्क धरौंदा, धरनी धरत धवल दए वडयाईआ। मन वासना सारी ढौंदा, कूडी क्रिया मेट मिटाईआ। चंचल बुद्ध ना कोई रखौंदा, चलण देवे ना कोई चतराईआ। कर किरपा जिस साची धूड़ अशनान करौंदा, दुरमत मैल दए धवाईआ। गुरमुख आपणे रंग रंगौंदा, रंग इक्को इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ।

साची खेल वेख भगवान, गुर अवतार सीस झुकाईआ। अन्त ना पाया विच्च जहान, एथे समझ कोई ना आईआ। तखत निवासी नौजवान जोधा सूरबीर मर्द मरदान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। जोती नूर ज़ाहर ज़हूर कोई तकक ना सके सच निशान, निशाना नज़र कोई ना आईआ। जो प्रगटे सो चरन कँवल मंगे दान, दोए जोड़ पए सरनाईआ। देवणहार वड मेहरवान, दाता दानी इक्को इक्क हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ।

सचखण्ड निवासी बोले बोल, अनबोलत आप अलाईआ। उठो आपणी आपणी गठडी लउ फोल, बध्धी गंठ कोई रहण ना पाईआ। सच वस्त प्रभ रक्खो कोल, जो आपणे नाल लै आईआ। इक्को कंडे तोले तोल, तराजू अवर ना कोई वखाईआ। साची धारन लैणी बोल, बिन रसना जिह्वा देणा सुणाईआ। आपणी करनी ते रहणा अडोल, भय रूप ना कोई वखाईआ। जो कर के आए कौल, इकरार आपणा दिउ समझाईआ। उठ के वेखो पिच्छे रोवे धरत धौल, नित नित आपणा नैण उठाईआ। लोकमात गुर अवतार दीन मज़ब दा बूहा गए खोल, अन्तम बन्द करन कोई ना आईआ। अंदर वड़ वड़ बैठे ठग चोर, कूडी क्रिया नाल मिलाईआ। सच सुच्च नूं बाहर कहुण होड़, अंदर कोई

रहण ना पाईआ। पीर पैगम्बरां दी कहण कोई नहीं लोड़, रसना जिह्वा आपणा नाअरा रहे सुणाईआ। सभ दा फल मिट्ठा होया कौड़, कलिजुग रीठा रूप वटाईआ। अबिनाशी करता लक्ख चुरासी घट घट अंदर वड़ के वेखे आपे दौड़, दूर दुराडा नेरन नेरा गृह गृह आपणा भेव चुकाईआ। किसे मन्दर नज़र ना आया लगगा पौड़, कलिजुग सन्त डण्डा हत्थ ना कोई रखाईआ। नैण खोलू ना वेख्या गौर, माणस जन्म ना गिआ सौर, सौहरे पेईए सार कसे ना आईआ। वर पाया ना जिहा लोड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी साची सच कहाणी रिहा जणाईआ।

उठो वेखो करो ध्यान, बेअन्त आप जणाईआ। चारे युग मारन बाण, आपणा आपणा तीर चलाईआ। कलिजुग किहा मैं सभ तों बलवान, बल आपणे विच्च प्रगटाईआ। साधां सन्तां कीता वैरान, वैरी घर घर दिता वखाईआ। सभ दी सेज सुत्ता चढ़ के नौजवान, उठ सके कोई ना राईआ। शरअ शरीअत कीती बेईमान, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। हक़ नज़र ना आए ईमान, नूर ज़हूर ना कोई रुशनाईआ। वेख सके ना कोई अमाम, साचा हुजरा ना कोई सुहाईआ। महिराब दिसे ना कोई निशान, बांग कूक ना कोई अलाईआ। सजदा निउँ ना कोई सलाम, पैगम्बर करे ना कोई पढ़ाईआ। चौदां तबक होए हैरान, साचा सबक ना कोई समझाईआ। अलफ़ ये लेखा कुरान, अग्गे सार किसे ना आईआ। जिस ने दिता सच ईमान, सो साहिब वड बलवान, दो जहानां खेल खलाईआ। दोजख बहिश्त मन्नण आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गफलत सभ दी रिहा चुकाईआ।

उठो वेखो गफलत छड्डो फ़ज़ूल, फैसला इक्को इक्क सुणाइंदा। करे खेल आप रसूल, रसूल रसूलां वेख वखाइंदा। धुरदरगाही जिस दा सच असूल, सो असलीयत वेख वखाइंदा। आदि जुगादी इक्क महिबूब, सच दुआरे सोभा पाइंदा। महल्ल अट्टल इक्क अरूज, नूर ज़हूर इक्क रुशनाइंदा। जिस दुआरे आपताब तलूअ होए ना गरूब, दिशा वंड ना कोई वंडाइंदा। सदा सदा सद आप मौजूद, दूजा नज़र कोई ना आइंदा। जिस दा कलमा हज़ारा दरूद, इसम आजम इक्क वखाइंदा। कदे ना होवे नेसतो नाबूद, जड़ चोटी रूप ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाइंदा।

सचखण्ड दुआरे संदेसा एक, एकंकार आप जणाईआ। उठो सारे होवे बिबेक, विवेकी धार जणाईआ। परम पुरख दा साचा हेत, हितकारी इक्क समझाईआ। चार युग दा मुक्कणा लेख, लेखा सभ दा आपणी झोली पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोल्ले आपणा आपणा भेत, भेव रहण कोई ना पाईआ। जुग चौकड़ी खेल आए खेड, बण खलारी वंड वंडाईआ। हुक्मे अंदर दिता भेज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा जणाईआ।

साचा लेखा दस्सां आप, हरि सच सच जणाया । आपणा आपणा दस्सो जाप, की की राग अलाया । कवण पूजा कवण पाठ, कवण मन्दर सुहाया । कवण तीर्थ कवण ताट, कवण सरोवर नहाया । कवण जोत कवण ललाट, दीपक कवण रुशनाया । कवण नाम कवण दात, कवण झोली आए भराया । कवण मजहब कवण ज्ञात, कवण दीन वंड वंडाया । कवण दिवस कवण रात, कवण घडी पल समझाया । कवण पत डाल होए शाख, कवण कली फूल महकाया । कवण रूप दे के आए साथ, जीवां जंतां संग निभाया । कवण दस्स के आए घाट, कवण बेडा मात तराया । कवण मुका के आए वाट, पान्धी आपणा फेरा पाया । कवण वेख्या खेल तमाश, लक्ख चुरासी नाच नचाया । कवण बिध पूरी कर के आए आस, तृष्णा होर रहे ना राया । कवण धार चलाई पवण सवास, कवण जिह्वा नाल मिलाया । कवण बंधाया इक्को नात, साक सज्जण सैण कवण समझाया । कवण पुच्छे अंदर वड के बात, कवण मुरीदां हाल रिहा जणाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे मंग मंगाया ।

पीर पैगम्बर कहण तोबा साडी, तूं ही तूं अलाईआ । तेरे हुक्मे अंदर करी कार डाहडी, साडी समझ विच्च ना आईआ । अन्तम चाढी आपणी जा के हाण्डी, कलिजुग आपणे संग रलाईआ । सच खुदा तेरा पिछला रहण ना दिता कोई गवांढी, नाता सभ दा लिया तुड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच सच रहे जणाईआ ।

सच जणाया इक्क अमाम, नूर इक्को इक्क दरसाईआ । सच जणाया इक्क इस्लाम, कलमा इक्को इक्क पढाईआ । सच जणाया इक्क पैगाम, धुर दी बाणी नाद अलाईआ । सच जणाया इक्क अहिवाल, हालत तेरी सच सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे नाम मिले वडयाईआ ।

तेरा नाउँ दस्सया महिबूब, मुहब्बतरखाना इक्क समझाईआ । अञ्जील कुरान लिख के दे के आए सबूत, सबर प्याला जाम पिआईआ । जगत नाता रूह कलबूत, बुत्तरखाना रूप दरसाईआ । सच धाम जाए पहुंच, परवरदिगार आपणा फेरा पाईआ । उस दी लोचा इक्को लोच, लोचण नैण खुल्लाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी दस्स के आए सरनाईआ ।

तेरी सरनाई दस्सी एक, इक्क ओअंकार दए वडयाईआ । लक्ख चुरासी देवे टेक, मेहर नजर उठाईआ । हरिजन सज्जण लए वेख, निज नेत्र नैण खुल्लाईआ । निरवैर हो के करे हेत, प्रेम इक्को इक्क समझाईआ । सतिगुरू हो के खोल्ले भेत, गुरू गुर हो के करे पढाईआ । परमेशवर हो के वसे नेत्र नेत, निज घर आपणा नूर धराईआ । परमात्म हो के करे हेत, आत्मा आपणे नाल मिलाईआ । पारब्रह्म हो के लए वेख, ब्रह्म पडदा आप उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ ।



तेरे दर दी रक्खी आस, आसा इक्को इक्क वधाईआ । तेरे मिलण दी रहे पिआस, तुध बिन तृप्त ना कोई कराईआ । जगत कड़ावा दिसे साक, नाता इक्को इक्क बंधाईआ । वेले अन्तम पुच्छे बात, सतिगुर स्वामी होए सहाईआ । जिस दा आदि जुगादि युग चौकड़ी निरवैर ढोला अगम्म राग, तन्दी तन्द सतार कोई ना गाईआ । बिन भगतां किसे ना उपजे कोई वैराग, वैरागी रूप ना कोई वखाईआ । बिन सन्तां करे ना कोई त्याग, त्यागी जगत नजर ना आईआ । बिन गुरमुखां ना कोई बुझाए आग, त्रैगुण बन्द ना कोई कराईआ । बिन गुरसिखां कोई ना वेखे जगदा चराग, घर होवे ना कोई रुशनाईआ । नाता तुटे कन्त सुहाग, विभचार करे सर्व लुकाईआ । दर दर दिसे कूड़ विवाद, विख रूप वटाईआ । बिन सतिगुर पूरे पुरख अकाल कोई ना करे लाड, लाडले सुत ना कोई बनाईआ । युग जन्म दी कोई ना रक्खे याद, पूरब लेखा सके ना कोई मुकाईआ । राती सुत्तयां ना मारे कोई आवाज, गूढ़ी नींदे ना कोई खुलाईआ । सुरत शब्द कोई ना करे काज, घर सेज ना कोई सहाईआ । चार कुण्ट दहि दिशा जगत वासना सृष्टी रही भाज, साचा पान्धी नजर कोई ना आईआ । पढ़ पढ़ थक्के पंज वक्त नमाज, कूजा आपणे हत्थ उठाईआ । सजदा कर कर मारदे रहे आवाज, कन्नां विच्च उगलां पाईआ । मस्तक लाउँदे रहे खाक, घुटणे छार नाल मिलाईआ । छाती हत्थ रक्ख के कहन्दे रहे गरीब नवाज, तेरी मिले इक्क सरनाईआ । बेपरवाह सच मलाह सभ दे कोलों गिआ भाज, आपणा पल्लू आप छुडाईआ । पीर पैगम्बरो गुर अवतारो चार कुण्ट सत्त दीप नौं खण्ड आत्म परमात्म जिंनां चिर आए ना इक्क आवाज, मेरा साथी नजर कोई ना आईआ । किसे कम्म नहीं आउँणी नमाज, जिंनां चिर मुशर्द मुरीद खोले ना अंदर राज, राजक रहीम घर घर फेरा कोई ना पाईआ । रसना जिह्वा कम्म ना आवे बांग, जिंनां चिर सवांगी रचे ना आपणा सवांग, अंदर वड के ना आपणा नाद सुणाईआ । दूर दुराडे आसा तृसना विच्च रक्खदे रहे तांघ, अगगे आए दरश कोई ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ ।

साचा लेखा सुणो संदेश, सो साहिब आप जणाईआ । इक्क अकाल इक्क दयाल इक्क नरेश, परीवर इक्क अखवाईआ । इक्क इष्ट गुरदेव स्वामी इक्क आदेस, निहकामी निहकामी इक्को इक्क अखवाईआ । जिस विष्णूं सवाया बाशक सेज, सांगो पांग दिती वडयाईआ । जिस सेवक दिता भेज, साची सेव समझाईआ । उह साहिब खेले खेड, खेड समझ सके कोई ना राईआ । गुरमुख विरले हरिजन देवे आपणा भेत, भाण्डा भरम भौ भन्नाईआ । जिस दे पिच्छे अरजण सीस पवाई रेत, सो साहिब सतिगुर आपणा वेस वटाईआ । जानणहारा लेख अलेख, अलक्ख निरञ्जण दर्द दुःख भय भंजन भव सागर आपणी धार चलाईआ । जन भगतां नेत्र पाए अंजन, चरन धूढ़ कराए मजन, एथे ओथे बणे सज्जण सगला संग निभाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्क अलाईआ ।

सच संदेसा आलमगीर, गिरहा विच्चों सुणाईआ । सच तौफ़ीक बेनजीर, वाहद इक्क

प्रगटाईआ । आदि जुगादि जिस दा रस अमृत ठांडा सीर, हयाते आब रूप वरवाईआ । सो तोडनहारा शरअ जंजीर, तेज कटार हत्थ उठाईआ । अन्त करी इक्क तदबीर, तकदीर सभ दी रिहा बदलाईआ । हुक्मे अंदर घत्त वहीर, दर आवण चाई चाईआ । बण दरवेश दरदी फ़कीर, फ़िकरा आपणा आप सुणाईआ । कलिजुग अन्तम दे धीर, धीरजवान तेरी सरनाईआ । साडी होई अन्त अखीर, आखर बैटे ढेरीआं ढाहीआ । सभ दे सीने लग्गी पीड, दारू नज़र कोई ना आईआ । टुट्टण लग्गी हड्डी रीड, फड बांहों सके ना कोई उठाईआ । दर दुआरे कर कर भीड, दोए जोड वास्ता पाईआ । परवरदिगार पीरन पीर, परम पुरख तेरी सरनाईआ । तेरा लेखा शाह हकीर, हकीकत तेरे चरन सरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ ।

सच सरनाई इक्क जणावांगा । बीस बीसा भेव चुकावांगा । जगत जगदीसा इक्क अखवावांगा । सच हदीसा इक्क पढावांगा । खाली खीसा सर्ब करावांगा । ईसा मूसा भेव चुकावांगा । संग मुहम्मद रंग रंगावांगा । अहमद आपणा हुक्म मनावांगा । लक्ख चुरासी विच्चों जो जन हो गए सहमत, तिनां आपणी गोद उठावांगा । करां हकीकी रैहमत, रमज आपणी इक्क समझावांगा । दीन मजहब दी टुट्टे जहिमत, जाहरा आपणा रंग चढावांगा । जिनां तेड बध्दी नीली तहमत, तिनां तमां सर्ब गवावांगा । कलिजुग अन्तम कोई रहण ना देवां अहिमक, अमल सभ नूं आप समझावांगा । सच इशारा मेरी सैनत, बिन रसना जिह्वा जणावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग इक्को इक्क रंगावांगा ।

रंग इक्को इक्क रंगावांगा । चार यारी वेख वखावांगा । अल्ला राणी कवारी अन्त परनावांगा । कज्जल नेत्र नैण शंगारी, मुख घुंगट इक्क उठावांगा । चौदां तबकां देवणहार बहारी, साची सेवा वेख वखावांगा । गल मूंगों पाए हारी, तसबी कूडी तोड तुडावांगा । मीआं वेखे आपणी बीवी सदीवी नारी, नेत्र काअबिउँ पकड उठावांगा । गल कलमा जंजीरी गल कुडती सावी, बस्त्र इक्को इक्क दरसावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कन्हुा वेख इक्क सी रावी, रवाइत आपणी इक्क जणावांगा ।

जिस नूं कहन्दे अरजण सिर ते वरती भावी, सो भाणा आपणे हत्थ रखावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझावांगा ।

साचा खेल करे बेपरवाह, बेपरवाही आप जणाइंदा । भुल्ले भटके पाए राह, औझड खैहडा नज़र कोई ना आइंदा । इक्क चार दा बण मलाह, चौदस चन्द दए चमका, चौदां विद्या डेरा ढाहिंदा । इक्को मन्दर दए वखा, आत्म ताकी कुण्डा लाह, निरगुण दीवा इक्क जगा, अमृत साचा जाम पिआ, वेख वखाए माई हव्वा, आदम आपणी कार जणाइंदा । लेखा जाणे थाउँ थां, शाह पातशाह सच्चा शहनशाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा ।

अल्ला राणी कवार कन्या मलूक, मलकउलमौत ना कोई वरवाईआ। ना रूह ना कोई कलबूत, कलमा पढ़न सुणन विच्च ना आईआ। किसे दिसे ना जगत हदूद, हद्व वंड ना कोई वरवाईआ। बिन मौला कोई ना करे मौजूद, मौजूदा हाल ना कोई जणाईआ। चौदां सदीआं ना मिल्या महबूब, मुहब्बत कम्म किसे ना आईआ। सुत्ती रही अल्हड जवानी विच्च घूक, नेत्र जाग ना कोई खुल्लुआईआ। अन्तम पारब्रह्म प्रभ चुकाए चूक, चौकस इक्को धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण रिहा खुल्लुआईआ।

नेत्र नैण वेखे उघाड़, आपणी लए अंगढाईआ। कवण वाजां रिहा मार, बेखबर खबर कौण सुणाईआ। कवण मीआं कहे मेरी नार, कवण बेवफ़ा वफ़ादारी रिहा जणाईआ। मेरे सिर चढ़ाए गुनाह, मुशकल हल्ल ना कोई कराईआ। मैं लम्भदी इक्क खुदा, मेरे नालों ना होए जुदा, गलवकड़ी बैठे पा, नूर नूर नाल मिलाईआ। मैं उस तों होवां फ़िदा, आपणी हसरत लवां मिटा, उजड़िआ खेड़ा लवां वसा, घर साचे वज्जे वधाईआ। मेरे अन्तर चढ़े चा, मैं खुशी लवां मना, नैण नेत्र इक्क उठा, चारों कुण्ट वेख वरवाईआ। नज़री आए बेपरवाह, फ़र्जी झेडा दिआ मुका, गरजी पूरी आस लवां करां, मर्जी ओस नाल मिलाईआ। सच मुकाम वेखां थां, जिथ्थे कोई ना कलमा नां, जिथ्थे कोई ना उलम उलमा, जिथ्थे शरअ ना कोई वंड वंडा, इक्को नूर सति सरूप नज़री आईआ। मैं चरनी डिगा जा, उच्ची कूक मारां धाह, बौहड़ी दिता क्यों मात भुल्ला, तेरी बेपरवाही बेपरवाह सभ नूं रही सताईआ। अगगों हस्स कहे खुदा, औह वेख सिध्धा राह, जिथ्थे मुशर्द मुरीदां रिहा जगा, सिध्धा दीदा रिहा वखा, बिन ईदों चन्द चढ़ा, बिन छुरीउँ भेट वखा, बिन रसीदों लेखा रिहा ला, हरिजन आपणे नाल मिलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तेरे सामूणे खड़े गवाह, शहादत देण थाउँ थां, बिआन कलमबन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुल्तान वड मेहरवान, सच निशान दो जहान, दोए धारा आप जणाईआ।

दो धार निशान वखावांगा। जब आपणा रैहम कमावांगा। हुक्म इक्क काइम कर वखावांगा। ऐन गैन ना कोई पढ़ावांगा। बिन नैणां नैण मिलावांगा। बिन सैणा सैण बण जावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप धरावांगा।

आपणी कल आप धरावांगा। वीह सौ वीह वेख वखावांगा। दूआ ज़ीरो नाल मिलावांगा। सिफ़रा दूआ जोड़ जुड़ावांगा। फ़िकरा इक्को इक्क अलावांगा। पिछला जिकर सर्ब जणावांगा। बण के मित्र वेख वखावांगा। जिस दा लेखा बाजां तित्तर, सो शब्दी धार जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुल्लुवांगा।

हरि जू भेव खुल्लावेगा। वीह सौ वीह रंग चढ़ावेगा। साची नींव इक्क रखावेगा। बिरहों पीआ तरसावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा साचा राह इक्को इक्क प्रगटावेगा।

सचखण्ड राह वखाएगा। बेपरवाह खेल खलाएगा। निरगुण नूर जोत रुशनाएगा। जाहर जहूर नजरी आएगा। कूडो कूड मेट मिटाएगा। मस्तक धूड टिक्का लाएगा। मूरख मूड चतर बणाएगा। दूर दुराडा पन्ध मुकाएगा। नूरन नूर जोत रुशनाएगा। आसा पूरन आप हो आएगा। सर्ब कला भरपूरन, दो जहान वेख वखाएगा। राग नाद वजाए तूरन, तुरत आपणा खेल जणाएगा। दाता जोधा सूरबीरन, बीरता आपणे हत्थ रखाएगा। गहर गम्भीर वड पीर पीरन, पीर शाह पडदा लाहेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग दी साची रीती, सति सतिवादी आप वखाएगा।

सति सतिवादी राह वखावांगा। ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखावांगा। जिनां आत्मा साधी, तिनां आपणा रंग रंगवांगा। नाम जणा बोध अगाधी, अक्खर इक्को इक्क समझावांगा। सो गुरमुख बणे हाजी, जिस आपणा पडदा लाहवांगा। मन नेड आए ना काजी, मत वंड ना कोई वंडावांगा। आत्म परमात्म दोवें होवण राजी, घर घर विच्च सुला करावांगा। कोई दिसे नेड ना गाजी, गदा इक्को नाम उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर इक्को डंक वजावांगा।

प्रभ इक्को डंक वजाएगा। राओ रंक राह वखाएगा। दुआर बंक इक्क सुहाएगा। शब्दी जोती तनक लाएगा। हरिजन साची बणत बणाएगा। गुरमुख सन्त आप उठाएगा। विछडी नारी कन्त मिलाएगा। आत्म परमात्म सेजा इक्क हंडाएगा। काया चोली रंग चढाएगा। हौली हौली राग सुणाएगा। आपणा बोल आप जणाएगा। सुरत सवाणी भोली भाली, भवर विच्चों कढाएगा। दर बणा के लै जाए गोली, मेहरवान आपणी दया कमाएगा। इक्क वखाए साची डोली, कहार नजर कोई ना आएगा। दर दरवाजा देवे खोली, रूप इक्को इक्क दरसाएगा। गुरमुख आत्म कहे मैं घोल घोली, माण ताण ना कोई वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, सन्त सुहेले आप उठाएगा।

सन्त सुहेले अन्तम उठणगे। बीस बीसे कदे ना लुकणगे। शेर शेर हो के बुक्कणगे। सिँघ कोल हो के दुक्कणगे। विष्णू खोल दुआरा पुच्छणगे। श्री भगवान चरनां हेठ लुकणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे दर बहि के हस्सणगे।

साचे दर आप हसावांगा। जन भगतां मेल मिलावांगा। नाम इक्को इक्क दृढावांगा। दूजा नाता तोड तुडावांगा। तीजा नैण इक्क खुलावांगा। चौथे पद वेख वखावांगा। पंजवें नाद छन्द सुणावांगा। छेवें छप्पर छन्न पन्ध मुकावांगा। सत्तवें सति सतिवादी रंग रंगावांगा। अठवें अठां तत्तां जोड जुडावांगा। नौं दर कूडा पन्ध मुकावांगा। दसम दवारी चढ के कुण्डा लाहवांगा। सुरत सवाणी कवारी आप परनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरवैर पुरख अकाल इक्को इक्क अखवावांगा।

पुरख अकाल इक्क अखवाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। सच धरमसाल इक्क बणाएगा। काल महाकाल नेड ना आएगा। सुण मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाएगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरा करे सवाल, आसा तृसना सभ मेट मिटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान, जन भगतां देवे इक्क दान, चरन प्रीती सच ध्यान, आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, धर्म वखाए इक्क निशान, आवण जावण चुक्के काण, लख चुरासी जम की फासी, जगत उदासी कोई रहण ना पाईआ। जिनां मिल्या घनकपुर वासी, तिनां जन्म करे रहिरासी, रस्ता इक्को इक्क जणाईआ।

**\* पहली सावण २०२० बिक्रमी जेटूवाल दरबार विच्च \***

सो पुरख निरञ्जण बणया आप, आपणे हत्थ रक्खी वड्डिआईआ। हरि पुरख निरञ्जण बणया आप, प्रभ आपणी खेल रचाईआ। एकंकार बणया आप, अकल कल धार भेव ना राईआ। आदि निरञ्जण बणया आप, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता बणया आप, आवण जावण ना कोई रखाईआ। श्री भगवान बणया आप, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। पारब्रह्म बणया आप, ना कोई पिता ना कोई माईआ। असुत्ते प्रकाश करया आप, रूप रंग रेख नजर कोई ना आईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल होया आप, आप आपणी खेल रचाईआ। अजूनी रहित होया प्रभ आप, मात गरभ ना कोई हंडाईआ। अनभव प्रकाश करया आप, आप आपणा नूर प्रगटाईआ। आपणी इच्छया प्रगटी आप, आप आपणी दया कमाईआ। आपणा भेव खुल्लाए आप, अभेव साचा सच समझाईआ। सचखण्ड दवार बणाईआ आप, आप आपणी सेव लगाईआ। शाहो भूप बणया आप, राजन राज नाउं वड्डिआईआ। दर दरवेश बणया आप, नर नरेश आप अखवाईआ। निराकार बणया सज्जण साक आप, सगला संग निभाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहाए आप, सोभावन्त डेरा लाईआ। दीनां बंधप बणे आप, बंधन आपणे नाल रखाईआ। आपणा सगन मनावे आप, आपणी खुशी नाल समझाईआ। आपणी रंगण चढावे आप, रंग रंगीला आप अखवाईआ। आपणा कन्त बणे आप, नार आपणा आप आप हंडाईआ। आपणा वेस धरे प्रताप, वड परतापी भेव खुल्लाईआ। आपणा वेखे खेल तमाश, जोती जाता पडदा लाहीआ। आपणा नूर करे प्रकाश, घर दीवा बाती आप जगाईआ। आपणी पूरी करे आस, आसा पूरन आप वखाईआ। आपणी आपे पाए रास, मण्डल मंडप दए वड्डिआईआ। आपणा आपे देवे साथ, सगला संग निभाईआ। आपणा आप चलाए राथ, बण रथवाही खेल वखाईआ। आपणा आपे होए नाथ, अनाथ आपणा रूप वखाईआ। आपणा आपे लेखा लए भाख, धुर संदेस आप जणाईआ। आपणा मन्दर आपे करे साख, सज्जण साहिब सैहज सुखदाईआ। आपणा खोले आपे ताक, घर घर विच्च आप प्रगटाईआ। आपणा हुक्म देवे भविख्त वाक, धुर संदेशा आप सुणार्णआ। आपणी उपजावे आपे जात, जाहर जहूर वेस वटाईआ। आपणा आपे करे भोग बलास, घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ।

आपे होए पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाइन्दा। आपणा मार्ग आपे दस्स, रहबर आपणी धार चलाइन्दा। आपणे मन्दर आपे वस, सच महल्ल आप सुहाइन्दा। आपणे गृह आपे देवे रस, रस रसीआ आप हो जाइन्दा। आपणी करनी आपणे रक्खे हत्थ, हरि करता आप अखवाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइन्दा।

साची कार करे प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड अंदर थिर घर थाप, वेखणहारा वेखे चाई चाईआ। पिता पूत बणाए वड परताप, आप आपणा नूर उपजाईआ। सुत दुलारा शब्दी साक, सज्जण इक्को इक्क अखवाईआ। गृह मन्दर खोल ताक, घर साचे दए बहाईआ। मेहरवान हो अलक्खना अलाख, अलक्ख इक्को इक्क जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे साथ, सगला संग निभाईआ। सचखण्ड दवार पावे रास, थिर घर आपणा नाच नचाईआ। परम पुरख प्रभ खेल तमाश, आपणा आप वखाईआ। धुर दा भेव खोले खास, बिन हरि समझ किसे ना आईआ। जिस वेले रचना रची आदि, सो साहिब खुशी मनाईआ। खुशी विच्च दिती दाद, आपणी झोली आप भराईआ। तूं मेरा मैं तेरा मेरी तेरी भुल्ले कदे ना याद, सति सरूप सोहँ धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाईआ।

सोहँ धार बणया आप, निरगुण निरवैर दया कमाइन्दा। सुत दुलारा बणया जाप, पिता पूत आप पढाइन्दा। थिर घर दुआरे होया पाक, पतित रूप ना कोई वखाइन्दा। नूर उजाला इक्को जात, गहर गम्भीर आप समझाइन्दा। देवणहार सदा शाबाश, मेहर नजर उठाइन्दा। सुल्तान स्वामी पूरी आस, हरि करता आप कराइन्दा। शब्द सुत तेरी साची रास, श्री भगवान वेख वखाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइन्दा।

सोहँ बणया जाप आप, दूजा नजर कोई ना आईआ। सुत दुलार तेरा परताप, आपे आप दए बणाईआ। खेलणहार खेल तमाश, हरि खालक वड वडुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर उठाईआ।

शब्द सुत बणया प्रभ आप, मात पित आप अखवाईआ। निरगुण धार बणया जाप, निरवैर नाउं वडुआईआ। दाता दान दातारी बणया आप, भिक्खक भिखारी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया आप अखवाईआ। शब्द सुत खेल अकाला आप, प्रभ आपणी दया कमाइन्दा। विष्णुं नूर उजाला आप, आप आपणा नूर प्रगटाइन्दा। ब्रह्मे देस बेमिसाल बणाइआ आप, छप्पर छन्न ना कोई छुहाइन्दा। शंकर धार बणया आप, धूआंधार वेख वखाइन्दा। सुन अगम्म बणया आप, आप आपणा पडदा लाहिंदा। त्रै त्रै मेला कीता आप, गुर चेला खेल वखाइन्दा। त्रैगुण माइआ प्रगटाई आप, आप आपणी कार कमाइन्दा। पंज तत्त जणाइआ आप, आप आपणा संग

निभाइन्दा । प्रकृति खेल रचाया आप, आप आपणी कल वखाइन्दा । सृष्टी बंधन पाइआ आप, डोरी आपणा नाम जणाइन्दा । दृष्टी भेव चुकाइआ आप, आप आपणा महल्ल जणाइन्दा । लक्ख चुरासी वंड वंडाइआ आप, आपणा हिस्सा आप रखाइन्दा । अंडज जेरज उत्भुज सेतज समाइआ आप, चारे खाणी खाण बणाइन्दा । चारे बाणी राग अलाइआ आप, आप आपणी सुर समझाइन्दा । चारे कुण्ट हुक्म वरताइआ आप, धुर फरमाना आप जणाइन्दा । दह दिशा रंग रंगाइआ आप, रंग रंगीला आप हो जाइन्दा । ब्रह्मण्ड खण्ड रचाइआ आप, पुरी लोअ आकाश प्रकाश धराइन्दा । सूरज चन्द चमकाइआ आप, किरन किरन नाल मिलाइन्दा । मण्डल मंडप वड्डिआइआ आप, ताका आपणी तार हिलाइन्दा । जिमीं असमान सुहाइआ आप, धरत धवल वेख वखाइन्दा । जल जलधार जणाइआ आप, आप आपणा भेव छुपाइन्दा । रुत माह वंड वंडाइआ आप, थित वार आपणे हत्थ रखाइन्दा । दिवस रैन राह चलाइआ आप, घडी पल आपणी कार कमाइन्दा । आवण जावण खेल रचाइआ आप, लक्ख चुरासी मेल मिलाइन्दा । नार कन्त वंड वंडाइआ आप, आप आपणी गंड पवाइन्दा । कन्त भतार साक बणाइआ आप, दूला दुलून वेस वटाइन्दा । धुर संजोगी खेल कराइआ आप, एका दोआ बंधन पाइन्दा । दरस अमोघ दिखाइआ आप, आप आपणा पडदा लाहिंदा । आत्म परमात्म संग रखाइआ आप, आप आपणी धार जणाइन्दा । पारब्रह्म ब्रह्म समझाइआ आप, धुर दी सिखिआ इक्क दृढाइन्दा । ईश जीव जगाइआ आप, जगदीसर आपणी कार कमाइन्दा । जुग चौकडी वंड वंडाइआ आप, सतिजुग त्रेता दवापर कलिजुग आप हंडाइन्दा । चार वरनां खेल रचाइआ आप, छत्ती ब्राह्मण शूद्र वैश राह वखाइन्दा । धुर संदेस सुणाएआ आप, नर नरेश आप पढाइन्दा । निरगुण वेस वटाइआ आप, सरगुण आपणा राह जणाइन्दा । विष्णु सेव लगाइआ आप, सेवा सच सच समझाइन्दा । गुर अवतार नाउं धराइआ आप, पंज तत्त चोला आप हंडाइन्दा । धुर दा शब्द सुणाएआ आप, राग अनादी राग अलाइन्दा । खाणी बाणी भेव खुलाया आप, बोध अगाधा आप जणाइन्दा । शास्त्र सिमरत वेद पुरान घलाइआ आप, आप आपणा हुक्म वरताइन्दा । गीता ज्ञान दृढाया आप, दृढ विश्वास इक्क समझाइन्दा । अञ्जील कुरान सिखाया आप, काइया कुरा खोज खुजाइन्दा । खाणी बाणी बाण लगाइआ आप, तीर निराला इक्क चलाइन्दा । पीर पैगम्बर समझाया आप, मुल्ला शेख मसाइक राह वखाइन्दा । लाशरीक अखवाया आप, शिरकत विच्च कदे ना आइन्दा । तुआरफ़ करे सर्ब प्रभ आप, ताअरीफ़ आपणी ना कोई जणाइन्दा । सफ़ारश करे सदा प्रभ आप, जुग चौकडी भेव चुकाइन्दा । शब्द अगम्मी देवे दात प्रभ आप, धुर दी वस्त आप वरताइन्दा । निरगुण सरगुण देवे साथ प्रभ आप, सगला साथी आप हो जाइन्दा । भगत भगवान प्रगटाए आप, भगती आपणा प्रेम समझाइन्दा । सन्त साजण उठाए आप, अन्तर आत्म ज्ञान दृढाइन्दा । गुरमुख गोद बहाए आप, गुर गुर आपणा रंग रंगाइन्दा । गुरसिख वेख वखाए आप, दो जहानां खोज खुजाइन्दा । लक्ख चुरासी गेड पवाए आप, लक्ख चुरासी अंदर आपणा डेरा आप लगाइन्दा । नित नवित्त शब्द राग जणाए पाठ आप, पाठशाला आपणी इक्क वखाइन्दा । तीर्थ तट्ट किनारा पनघट उपजाए आप, पत्तण इक्को इक्क वखाइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो करनी सो आपणी कार कमाइन्दा ।

आदि जुगादी कार आप, हरि करता आप कराईआ। जुग चौकड़ी धार आप, दो जहानां आप जणाईआ। नित नवित्त खेल तमाश आप, गुर अवतार पीर पैगम्बर मण्डल रास रचाईआ। सदा सदा मेहरवान आप, मेहर नजर उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो करना सो कर रिहा आपणी करनी आपणे विच्च छुपाईआ।

साची करनी करे आप, आपणे हत्थ रक्खे वड्डिआईआ। पूजा पाठ बणे आप, हवन सुगंधी आप समझाईआ। किनारा तीर्थ तट्ट होवे आप, अमृत सरोवर धार आप वहाईआ। दीवा बाती तेल प्रकाश जोत नूर होवे आप, अन्ध अन्धेर आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ। आदि जुगादि होया प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दस्सदा रिहा जाप, विष्ण ब्रह्मा शिव सर्व पढाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खोलदा रिहा ताक, बन्द कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। निरवैर हो के बणदा रिहा साक, हरि सज्जण शहनशाहीआ। परमात्म हो के बणदा रिहा ज्ञात, आत्म आपणा रूप वखाईआ। पवित हो के बणदा रिहा पाक, पतित आपणा रंग रंगाईआ। आसावन्द हो के पूरी करदा रिहा आस, तिसना मेट जगत लोकाईआ। बोध अगाधा भेव दस्सदा रिहा खास, खालस आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी चले मेरी शाख, शहनशाह इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हब कुझ आपणे विच्च समाईआ।

हब किछ होया आप, आपणे विच्चों प्रगटाईआ। पारब्रह्म प्रभ माई बाप, पिता पुरख सैहज सुखदाईआ। आत्म देवे आपणा जाप, परमात्म करे पढाईआ। साहिब स्वामी बण के वसे साथ, सगला संग निभाईआ। बेपरवाह हो के बणया रिहा पुरख समरथ, सार किसे ना आईआ। इशारयां नाल मार्ग रिहा दस्स, गुर अवतारां आप पढाईआ। निरवैर हो के अंदर रिहा वस, वास्ता आपणे नाल बंधाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोत इक्को इक्क चमकाईआ। हुक्मे अंदर दस्सदा रिहा आपणा प्रेम सिमरन पाठ, पूजा इष्ट इक्क समझाईआ। पत्तण मेला मिलौंदा रिहा साचे घाट, बेडी चँपू नाम लगाईआ। सुहौंदा रिहा सुहज्जणी खाट, खटीआ आपणा डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी मिटौंदा रिहा वाट, भाणा आपणा हुक्म जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां शब्द अगम्मी देंदा रिहा भाख, भाख्या धुर दी आप जणाईआ। सृष्ट सबाई जीव जंत साध सन्त नौं खण्ड पृथ्वी जाउ आख, आखर इक्को इक्क जणाईआ। कलिजुग अन्त प्रगट होवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। निरगुण निरवैर नूर अकाल जोत करे प्रकाश, जोती जाता पुरख बिधाता पंज तत्त नूर तत्त नजर कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सृष्टी आपे वेख वखाईआ।

आपणी सृष्टी वेखे आप, आपणे हत्थ रक्खे वड्डिआईआ। आपणी दृष्टी पावे आप, आप आपणा भेव चुकाईआ। आपणा इष्टी बणे आप, इष्ट देव गुरदेव स्वामी नमो सति समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल वखाईआ।



आपणा खेल करे प्रभ आप, भेव आपणे हत्थ रखाइन्दा। आदि उपजाइआ जो अगम्मी जाप, सो अन्त आप प्रगटाइन्दा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग गुर अवतार पीर पैगम्बर बणे दास, दासी रूप सर्ब समझाइन्दा। चरन कँवल दोए जोड़ मंगदे रहे प्रभ पूरी कर आस, आसा तेरी तृष्णा नाल मिलाइन्दा। तेरे हुक्मे अंदर चले पवण सवास, आत्म परमात्म तेरा ढोला गाइन्दा। साहिब दयाल ठाकर स्वामी हो सहाई अनाथां नाथ, दयावान हरि तेरी इक्को नजर तकाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा हुक्म आप वरताइन्दा।

आपे हुक्म फ़रमान आप, संदेसा देवणहारा अखवाईआ। कलिजुग अन्त प्रभ प्रगटे आप, आप आपणा पड़दा लाहीआ। आपणा नाउं जपाए आप, दूजी करे ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणा आप समझाईआ।

साचा लेख जणाए आप, आपणी बूझ बुझाईआ। नव नौ चार खेल खेलिआ आप, निरगुण सरगुण वेस धराईआ। कलिजुग अन्तम भेव चुकाए आप, जोती जामा नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार कुण्ट जो गए आख, आखर सभ दी पूर कराईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी वेखणहारा खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप जणाईआ।

जुग चौकड़ी खेल आप, प्रभ आपणा आप कराईआ। निरगुण सरगुण पूजा पाठ, शब्द नाम पढ़ाईआ। कलिजुग अन्तम पूरी करे खाहस, खास आपणा राह वखाईआ। भगत भगवान देवे साथ, सगला संग निभाईआ। पूरब लेखा जाणे पुरख समराथ, देवणहार आप वड्डिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला भेव दए समझाईआ।

अगला भेव खुलौणा आप, आपणी दया कमाइन्दा। सचखण्ड दवार सुहौणा आप, थिर घर आपणा डेरा लाइन्दा। साचा राह चलौणा आप, ना कोई मेटे मेट मिटाइन्दा। चार युग दा लहणा झोली पौणा आप, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा पूर कराइन्दा। साचा हुक्म वरतौणा आप, धुर फ़रमाना आप समझाइन्दा। साचा दाता अखवौणा आप, शाह पातशाह आपणा नाउं प्रगटाइन्दा। साचा तख्त सुहौणा आप, तखत निवासी सोभा पाइन्दा। सुर साचा ताल चीने आप, रूप रंग रेख ना कोई रखाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार आप जणाइन्दा।

सच विहार करे प्रभ आप, बिवहारी आपणी कार कमाईआ। सच सिंघासण बहे प्रभ आप, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। सीस जगदीस ताज टिकाए आप, कलगी तोड़ा सेव कमाईआ। जोती शब्दी जोड़ा जोड़े प्रभ आप, जोड़ी आपणी गंढ पवाईआ। तन्द डोरी बणे प्रभ आप, तागा नजर कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो करना सो कर वखाईआ।

जो करना सो करदा आइआ आप, दूजे दर मंगण ना जाईआ। जो वरना सो वरदा आइआ आप, विच्च विचोला ना कोई बणाईआ। जिस रक्खणा तिस रक्खदा आइआ आप, सिर मेहर हत्थ टिकाईआ। जिस घडना तिस घडदा आया आप, बण ठठिआर सेव कमाईआ। जिस फडना तिस फडदा आइआ आप, आत्म परमात्म गंढ वरवाईआ। जिस खडना तिस खडदा आया आप, सचखण्ड साचे दए वड्डिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ।

जो करना सो करे आप, दूजा नजर कोई ना आईआ। सचखण्ड दुआरे वडे आप, आप आपणा नूर चमकाईआ। साचे तरखत चढे प्रभ आप, तख्त निवासी सोभा पाईआ। साचा हुक्म करे प्रभ आप, हुक्मरान इक्क अखवाईआ। साचा बरदा दरवेश दर बणे प्रभ आप, निउं निउं सजदा सीस झुकाईआ। सच खताब देवे प्रभ आप, आप आपणा हुक्म वरताईआ। हक जनाब बणे प्रभ आप, बेताब नूर रुशनाईआ। सच महिराब बणे प्रभ आप, हुजरा इक्को इक्क वड्डिआईआ। सच महिबूब बणे प्रभ आप, मुहब्बत आपणे नाल पवाईआ। सच रपीक बणे प्रभ आप, तौपीक इक्को नाम खुदाईआ। काम मुफ़ीद करे प्रभ आप, मुफ़्त आपणी सेव कमाईआ। सच ताकीद करे प्रभ आप, मुशर्द रसूल रसवा कर पढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच विहार, करे कराए एकंकार, कल आपणी आप कराईआ।

सचखण्ड विहारा करे आप, आपणी धार चलाइन्दा। नानक लिखवारा बणे आप, धुर दा लेख आप समझाइन्दा। पंच परवान करे आप, पंच प्रधान आप बणाइन्दा। पंच सोहण दर राजान, पंचां का गुर इक्क ध्यान आप अखवाईन्दा। पंचां देवे दरगाह माण, सचखण्ड दुआर आप वड्डिआइन्दा। पंचां रूप धरे भगवान, परम पुरख आपणी कार कमाइन्दा। पंचां खेल करे महान, पंचम आपणी गंढ पवाईन्दा। पंचम राज जोग सुल्तान, जोगीशर आपणा भेव चुकाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो करनी सो कर वरवाईन्दा।

जो करनी सो करे आप, आपणे हत्थ रक्खे वड्डिआईआ। सचखण्ड दुआरे वड परताप, श्री भगवान आप अखवाईआ। पंचम मीता ठांडा सीता पुरख अकाल दीन दयाल बण के सच्चा बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। पंचम बणया साचा नात, ना कोई तोडे तोड तुडाईआ। पंज तत्त छड्डु के पारब्रह्म दी होए जात, जात जात विच्च समाईआ। सचखण्ड दुआरे जा के पंजां इक्को वार दिता आख, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नजर कोई ना आईआ। अबिनाशी करता कहे मेरा सोहिआ घाट, घर वज्जी इक्क वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे चढ, आपणा हुक्म आपे दए लगाईआ।

आपणा हुक्म लगाए आप, हुक्मरान आप अखवाईन्दा। आपणा सीस झुकाए आप, जगदीस आपणी सेव कमाइन्दा। आपणा माण वधाए आप, मेहरवान आप हो जाइन्दा।

आपणा निशान झुलाए आप, सति सतिवादी आप उठाइन्दा। आपणा घर वसाए आप, सचखण्ड साचा आप सुहाइन्दा। पंचम मेल मिलाए आप, आप आपणा पड़दा लाहिंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी खेल कराए आप, खालक नजर किसे ना आइन्दा। धुर दा राज कायम कराए आप, मुकामे हक नीह धराइन्दा। दाइमी दाइरा नजर ना आए किसे साख्यात, साफ आपणा पड़दा पाइन्दा। नानक गोबिन्द पूरा करे भविख्त वाक, सचखण्ड दुआरे सच अदालत वीह सौ वीह बिक्रमी आप लगाइन्दा। सच अदालत लगाए आप, आपणा हुक्म आप वरताईआ। सच वकालत करे आप, ऊकला नजर कोई ना आईआ। सच शहादत देवे आप, शहीदी होर ना कोई जणाईआ। सच इबादत पढ़ाए आप, इबारत करे ना कोई लिखाईआ। सच तआकब करे आप, पिच्छा छोड़ कदे ना जाईआ। साचा आरफ बणे आप, आलम उलमा ना कोई चतुराईआ। साची माअरफत दस्से आप, महिबूब मुहब्बत आपणे नाल लगाईआ। साचा सज्जण सुहेला बणे आप, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची नीह, श्री भगवान आप जणाईआ।

सचखण्ड घर सच वसाए आप, आपणी दया कमाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी तख्त सुहाए आप, तख्त निवासी डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बुलाए आप, दर दरवेश रूप वखाईआ। पूजा पाठ सिमरत जुग चौकड़ी बुझाए आप, बुझारत आपणा नाम जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा रिहा वसाईआ।

सचखण्ड दरबार लगाए आप, बीस बीसा खुशी मनाईआ। गुर अवतारां जपाए पहलों जाप, साची करे नाम पढ़ाईआ। पंदरां कतक रल मिल इकवंजा बवंजा आखण पारब्रह्म तूं साडा बाप, दूजी माई नजर कोई ना आईआ। तेरे विच्चों उपजी साडी जात, जरा जरा वंड वंडाईआ। कतरा कतरा तेरा नूर बणया खाक, पंज तत्त खाक खाकी बुत्त आइआ समझाईआ। दरोही साडे वेख खाली हाथ, पल्ले गंठ नजर कोई ना आईआ। तेरी ओट आए आख, आखर तेरा इक्क इक्को घर जणाईआ। सेवा करके आए बणके दास, सेवक तेरा हुक्म कमाईआ। तेरी डाली तेरा पत तेरी शाख, तेरी कली कली महकाईआ। तेरा भवरा गूंजे बण के कमलापात, तेरा तेरा राग अलाईआ। तेरे दुआरे आ के बणे इक्क जमात, चार युग दी पिछली छड्ड पढ़ाईआ। तेरा नूर जाहर जहूर दरसन कीता साख्यात, शनाखत अवर ना कोई जणाईआ। किरपा निधान पत लैणी राख, पतिपरमेशवर तेरी ओट तकाईआ। सचखण्ड दुआरे तेरा साथ, संगी तू ही इक्क बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चार युग दी पूरी आस कराईआ।

गुर अवतार बणया प्रभ आप, गुर अवतारां रिहा समझाईआ। आओ वेखो आपणा बाप, पिता पुरख अकाल पड़दा लाहीआ। सिफती सिफत करो सच जाप, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। सौदा विके इक्को हाट, दूजा वणज ना कोई कराईआ। करया खेल पुरख समराथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी सारे आए आख, प्रभ आवे वाहो दाहीआ। दो जहानां दए नजात, निज घर आपणा मेल मिलाईआ। जिस

दे पिच्छे पा के आए वफ़ात, बण वफ़ादार सेव कमाईआ। मंगदे रहे प्याला सबर सबूरी आबे हयात, देवण देवे नूर इल्लाहीआ। सच पैगाम रसूल लिल्ला इल्लाही लिखदे रहे उप्पर कागजात, कजल कायम मुकाम दायम दायमी दायरा हद्द ना कोई जणाईआ। कोई जाण ना सककया प्रभ किवें बदले नज़ाम, नाज़म आजम आपणा हुक्म जणाईआ। कलमयां नाल कलमा मिला के कलमा करदे रहे कलाम, कलमा हत्थ किसे ना आईआ। दरोही एसे करके करदे रहे सलाम, सभा तेरी दी समझ कोई ना पाईआ। सदी चौधवीं की करें मेरे वड्डे वड अमाम, तेरा अमल अमल विच्च किसे ना आईआ। मुच्छ दाड़ी साडी मुंन देवें बण के हजाम, उस्तरा तिक्खा इक्क नाम रसूल चलाईआ। असीं बणे बाले नड्डे अजाण, तेरा भेव कोई ना आईआ। तेरे दर ते कहीए श्री भगवान, जो करें सो तेरी रजाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी राह तक्कीए पंदरां कत्तक महान, सचखण्ड दुआरे हरि निरँकारे पीर जाहरे तेरे होण इक्क मुजाहरे, मुजरे पिछले लेखे लाईआ। कलिजुग अन्त आए किनारे, तुध बिन कवण पार उतारे, गोबिन्द सूरा इक्क ललकारे, जिस दी कलगी चमकां मारे, दो जहान नैण उठाईआ। जिस दे गुरमुख सुत दुलारे, सचखण्ड सुत्ते पैर पसारे, पंजां इक्को रंग चाढ़े, रंगणहारा इक्क अखवाईआ। सोहँ रूप आप निरँकारे, जिस दा अन्त ना पारावारे, जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए निमस्कारे, नमों नमों आपणा सीस झुकाईआ। सो कादर करता करे खेल अगम्म अपारे, जगत रीती बेपरतीती, प्रतीनिधि परम पुरख परमेशवर ठोकर देवे लगाईआ। करे खेल इक्क अनडीठी, चँले धार अगम्मी रीती, कवण जाणे प्रभ तेरी कीती, कीता तेरा कहण कोई ना पाईआ। श्री भगवान अग्गे दस्से आपणी बीती, जो आपणा हाल आपणे नाल चलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, चार युग दी समग्री गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआरे कट्टी कीती, किते खाते आपणे विच्च पाईआ।

**\* पहली भादरों २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल \***

सो पुरख निरञ्जण सच सुलतान, तखत निवासी खेल कराइन्दा। हरि पुरख निरञ्जण नौजवान, नर हरि नरायण हुक्म वरताइन्दा। एकंकार वड बलवान, बलधारी भेव चुकाइन्दा। आदि निरञ्जण हो प्रधान, जोती जाता नूर वखाइन्दा। अबिनाशी करता हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाइन्दा। श्री भगवान सच निशान, निरगुण निरवैर आप झुलाइन्दा। पारब्रह्म प्रभ करे ध्यान, निराकार वेख वखाइन्दा। सचखण्ड दुआरा सच मकान, आदि पुरख आप सुहाइन्दा। भूपत भूप राज राजान, नीकन नीक खेल कराइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइन्दा।

आपणा भेव खोले आप, आपणे हत्थ रक्खे वड्डिआईआ। सचखण्ड निवासी खोलू ताक, परदा इक्को इक्क चुकाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत जोत जोत रुशनाईआ। इक्क इकल्ला देवे साथ, दूजा संग ना कोई निभाईआ। करे खेल पुरख

समर्थ, समर्थ आपणी धार बंधाईआ। थिर घर खोलू सचखण्ड अंदर हट्ट, घर घर विच्च लए प्रगटाईआ। नाउं निरँकार बोल अलक्ख, नाअरा इक्को इक्क सुणार्एआ। दीन दयाल हो प्रतक्ख, अनभव नूर करे रुशनाईआ। सति सतिवादी गाए आपणा जस, सिपती सिपत सिपत सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सोभा पाईआ।

घर साचे हरि सोभावन्त, सो साहिब खेल कराइन्दा। निरगुण जोत श्री भगवन्त, रूप रंग रेख ना कोई वखाइन्दा। करे खेल आप बेअन्त, कथनी कथ ना कोई समझाइन्दा। नाता जोड नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइन्दा। निरवैर बणाए अगम्मी बणत, अलक्ख अगोचर आपणी धार चलाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप वखाइन्दा।

आपणी खेल करे करतार, सचखण्ड वज्जे सच वधाईआ। निर्मल दीआ कर उजिआर, तेल बाती ना कोई टिकाईआ। साचा माही बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना नूर इल्लाहीआ। मुकामे हक ठांडे दरबार, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तौफ़ीक इक्क प्रगटाईआ।

सच प्रगटाए इक्क तौफ़ीक, तोहफ़ा आपणा आप जणाइन्दा। दूसर ना कोई दिसे रफ़ीक, संगी रूप ना कोई वखाइन्दा। बैठा रहे आप अतीत, भेव अभेद कोई ना पाइन्दा। साचा कलमा साचा नगमा गाए अगम्मी गीत, गावणहारा आप अलाइन्दा। करे खेल इक्क अनडीठ, नजर किसे ना आइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइन्दा।

आपणा भेव चुकाए भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। बख्खणहारा इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच्च समाईआ। देवणहारा इक्क ज्ञान, ज्ञान इक्को इक्क समझाईआ। वखावणहारा इक्क मकान, मुकामे हक करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्डिआईआ।

देवे वड्डिआई वड्डा वड, वड दाता दया कमाइन्दा। आपणी धारों आपा कट्टु, आपणे घर वसाइन्दा। आपणा प्रेम प्रीत करे लड, साची रीती आप जणाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता साची वस्त आप उपाइन्दा।

साची वस्त उपाए एक, एकंकार वड्डि वड्डिआईआ। सच दुआरे बख्खे टेक, मेहरवान मेहर नजर उठाईआ। बिन कलम शाही कागद लिखे लेख, अक्खर रूप ना कोई जणाईआ। सति सुआमी आपणा जाणे भेत, भेव समझ सके ना कोई राईआ। धार धार नाल करे

हेत, प्यार प्यार नाल परनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आपणे हथ रखाईआ।

धुर दा लेखा रक्खे हथ, शाहो भूप खेल कराइन्दा। प्रगट हो पुरख समरथ, निरगुण आपणी धार चलाइन्दा। ना कोई नेत्र ना कोई अक्ख, नैण नजर कोई ना आइन्दा। ना कोई पैर ना कोई हथ, सरवण रूप ना कोई वटाइन्दा। ना कोई जिह्वा ना कोई बत्ती दन्द वखाए हट्ट, वणज वणजारा ना कोई कराइन्दा। ना कोई तत्तव ना कोई तत्त, पंज तत्त मेल ना कोई मिलाइन्दा। ना कोई बूद ना कोई रत, रक्त रंग ना कोई वखाइन्दा। ना कोई तीर्थ ना कोई घाट, सरोवर साचा सर ना कोई वहाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे हरि सोभा पाइन्दा।

सचखण्ड दुआरा सुहाए आप, आपणे हथ रक्खे वड्डिआईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, सिमरन रूप ना कोई वखाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, किनारा वंड ना कोई वंडाईआ। ना कोई सरवीआं मिल के मंगल गाए गाथ, गोपी काहन रूप ना कोई वटाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, बंधप नजर कोई ना आईआ। ना कोई लोक ना कोई हाट, ना कोई तबक वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आपणी धार आप प्रगटाईआ।

आपणी धार आपे रक्ख, निरगुण आपणी कार कमाइन्दा। बेपरवाह हो प्रतक्ख, बेपरवाही खेल खिलाइन्दा। साचा मार्ग आपे दस्स, बण पान्धी पन्ध मुकाइन्दा। साचे मन्दर आपे वस, गृह आपणे सोभा पाइन्दा। साचा प्रेम देवे रस, रस रसीआ आप हो जाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा।

आपणा हुक्म वरते वड राजा, हरि दाता बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआर रच के काजा, रचना आपणी दए जणाईआ। छप्पर छन्न चार दीवार ना कोई दरवाजा, ताकी नजर कोई ना आईआ। जोती धार गरीब निवाजा, नर हरि इक्को आसण लाईआ। ना कोई राग नाद वज्जे वाजा, धुन करे ना कोई शनवाईआ। ना कोई बोल जैकार मारे वाजा, उच्ची कूक ना कोई सुणार्आ। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्डिआईआ।

साचा घर सचखण्ड, सो पुरख निरञ्जण आप बनाईआ। जिस दी एको जाणे वंड, दूजा समझ सके ना राईआ। जिस गृह वसे सूरुा सर्बंग, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जिस दुआरे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दर दरवेश इक्को रिहा मंग, भिक्खक सवाली रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुल्लुआईआ।

आदि पुरख श्री भगवान, भगवन आपणा खेल कराइन्दा । धर्म दुआरे इक्क निशान, सति सतिवादी आप झुलाइन्दा । पुरख अकाला हुक्मरान, आपणी इच्छया हुक्म प्रगटाइन्दा । दर दरवेश बण दरबान, दर आपणे अलख जगाइन्दा । आप आपणा कर परवान, मिहबान आपणी कार कमाइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइन्दा ।

साचा हुक्म देवे एकंकार, अकल कला वड्डिआईआ । सचखण्ड बैठ सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ । निरगुण नूर नूर उजिआर, आपणी खेल आप कराईआ । सो पुरख निरञ्जण बण सरकार, सच सरकार लए बणाईआ । हरि पुरख निरञ्जण मददगार, संगी इक्को नजरी आईआ । एकंकार बण के यार, यारी आपणे नाल लगाईआ । अबिनाशी करता खोलू किवाड़, दर साची सेव कमाईआ । श्री भगवान नैण उघाड़, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ । पंचम मेल इक्क दुआर, जोत निरञ्जण आदि निरञ्जण आपणी धार जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मरान इक्क हो जाईआ ।

हुक्मरान इक्को दाता, आदि पुरख आप अखवाइन्दा । आपणी रक्खे उत्तम ज्ञाता, अजाति रूप ना कोई वटाइन्दा । आपणे नाल बंने नाता, बिधाता आपणा मेल मिलाइन्दा । सच दवार इक्को हाता, हदूद रूप ना कोई वखाइन्दा । जाहर बातन करे बातां, रसना जिह्वा सिफती सिफत ना कोई सालाइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे तखत सोभा पाइन्दा ।

साचे तखत हरिजू चढ़या, आदि पुरख वड्डी वड्डिआईआ । आपणा खेल आपे करया, करनहार बेपरवाहीआ । आपणा नाउं ढोला गीत आपे पढ़या, करे सच पढ़ाईआ । आपणे भय भउ आपे डरया, दूजा नजर कोई ना आईआ । सच महल्ले आपे खडिआ, उच्चे टिल्ले सोभा पाईआ । आपणा वर आपे वरया, आपे कन्त कन्तूहल साची सेज हंढाईआ । आपणा भंडार आपे भरया, वड वडी दया कमाईआ । आपणा घाड़न आपे घड़या, ना को पिता ना को माईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी रचना लए रचाईआ ।

आदि रचना रच निरँकार, आपणा आप उपाइआ । साची इच्छया खोलू किवाड़, सचखण्ड लए प्रगटाइआ । करे खेल अगम्म अपार अगम्मडी धार चलाइआ । हड्ड मास नाड चमड़ा ना कोई आधार, रंग रूप नजर ना आइआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा पड़दा दए खुलाइआ ।

आदि पुरख प्रभ पड़दा लाह, सचखण्ड दुआर खुशी मनाईआ । निरगुण बणया निरगुण मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलाईआ । निरगुण देवे निरगुण सलाह, निरगुण निरगुण मता पकाईआ । निरगुण मेला निरगुण सैहज सुभा, निरगुण निरगुण लए परनाईआ । निरगुण

रंग निरगुण सूरुा सर्बग दए चढा, निरगुण निरगुण वेखे चाई चाईआ। निरगुण साचा खेडा दए वसा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। निरगुण उच्च महल्ल अट्टल डेरा देवे ला, महिफल इक्को घर वखाईआ। निरगुण नूर कर रुशना, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुलाईआ।

धुर दा भेत हरि जू खोले, खोलणहार इक्क अखवाइन्दा। जोती धार शब्दी बोले, शब्द आपणी इच्छया विच्च प्रगटाइन्दा। अन्तर बाहर भीतर वस्णहारा कोले, दूर दुराडा पान्धी पन्ध नजर ना आइन्दा। साचे मन्दर उच्चे टिल्ले घर बहि के गाए ढोले, ढोला आपणा नाम समझाइन्दा। आपणा पडदा आपे फोले, आपणा खेल आप वखाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी आप कमाइन्दा।

धुर दी करनी करे करनेयोग, दूजा नजर कोई ना आईआ। आदि पुरख अनादी कर सच संजोग, मेला एका एक मिलाईआ। देवणहारा दरस अमोघ, मुख पडदा नक्राब दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप समझाईआ।

आपणी धार दस्से भगवान, श्री भगवन दया कमाईआ। आदि आदि बण सुल्तान, शहनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। दर दरवेश खेल महान, मेहरवान आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपे राजा आपे परजा आपे हुक्म दए समझाईआ।

राजा प्रजा बण के एक, एकंकार दए जणाईआ। मेरी मेरा रक्खे टेक, मेरा तेरा नजर कोई ना आईआ। निरगुण निरगुण करे हेत, हितकारी इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरञ्जण बण के भूप, भूपत इक्को सोभा पाईआ।

सो पुरख निरञ्जण बणया राजा, शाह पातशाह सोभा पाइन्दा। पारब्रह्म प्रभ रच आपणा काजा, करनी करता आप कमाइन्दा। दोहां खेल खेल तमाशा, इक्क इकल्ला आप वखाइन्दा। साचे मण्डल पावे रासा, गोपी काहन आपणा नूर नचाइन्दा। अगम्म अथाह बेपरवाह जोती जाता पुरख बिधाता इक्को इक्क हो प्रकाशा, प्रकाशवान आप हो आइन्दा। ना कोई तोला ना कोई मासा, ना कोई भार वंड वंडाइन्दा। करे खेल शाहो शबाशा, शाह पातशाह आपणी कार कमाइन्दा। आपे भिच्छया आपे इच्छया आपे पूरी करे आसा, आसावंद आप हो आइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइन्दा।

आपणा हुक्म वरते राणा, राजन एक वड्डी वड्डीआईआ। निरगुण मन्ने निरगुण भाणा, निरगुण निरगुण सीस झुकाईआ। निरगुण गावे निरगुण गाणा, निरगुण निरगुण ध्यान



लगाईआ। निरगुण वरवाए निरगुण मकाना, धर्म दुआर इक्क प्रगटाईआ। निरगुण हुक्म निरगुण परवाना, निरगुण संदेसा दए जणाईआ। निरगुण पावे निरगुण आणा, निरगुण निउं निउं लागे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ।

सच साचा हरि कार कमाए, करनहार खेल कराइन्दा। आपणा हुक्म आप वरताए, धुर दी धार आप समझाइन्दा। पारब्रह्म तेरी सेवा लाए, सो पुरख निरञ्जण शहनशाह अखवाइन्दा। तेरा मार्ग इक्क उपजाए, शब्दी वंड वंडाइन्दा। साची गंडु एका पाए, ना कोई तोडे तोड तुडाइन्दा। धुर दा अनन्द इक्क वरवाए, ना कोई मेटे मेट मिटाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाइन्दा।

धुर दी धार पारब्रह्म तेरी सेवा, सो पुरख निरञ्जण आप लगाईआ। करे खेल अगम्म अभेवा, भेव अभेद दए जणाईआ। तेरी धारों उपजे तेरा मेवा, अमृत इक्को फल वरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक्क जणाईआ।

हुक्म एको एक वरतारा, वरतावणहार आप वरताइन्दा। पारब्रह्म तेरी चले धारा, सो पुरख निरञ्जण हरि समझाइन्दा। दोए जोड कर निमस्कारा, साचा मार्ग इक्क रखाइन्दा। तेरा मेरा खेल नयारा, आदि नजर कोई ना आइन्दा। ना कोई दूजा वेखणहारा, संगी रूप ना कोई रखाइन्दा। ना कोई कातब बणे लिखवारा, कलम शाही वंड ना कोई वंडाइन्दा। ना कोई मित्र ना कोई यारा, ना कोई सत्थर सेज हंडाइन्दा। ना कोई गुर ना अवतारा, पीर पैगम्बर नजर कोई ना आइन्दा। तेरा मेरा इक्क विहारा, बिवहारी आप समझाइन्दा। आदि पुरख प्रभ बण वणजारा, तेरा साचा हट्ट चलाइन्दा। पारब्रह्म प्रभ कहुे हाढे, निरगुण निरगुण अगगे वास्ता पाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देदे साचा वर, पारब्रह्म मंग मंगाइन्दा। पारब्रह्म प्रभ मंगे मंग, निरगुण अगगे झोली डाहीआ। सो पुरख निरञ्जण तेरा संग, आदि जुगादि मेरी धार प्रगटाईआ। तेरा नाउं साचा छन्द, शब्दी ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कवण वेला लईं मिलाईआ।

कवण वेला मेलें मेल, पारब्रह्म प्रभ आप जणाइन्दा। सो पुरख निरञ्जण तेरा अचरज खेल, खेल खेल मैं बिगसाइन्दा। दीवा जगे बिन बाती तेल, नूरो नूर डगमगाइन्दा। सचखण्ड निवासी सज्जण सुहेल, तख्त निवासी हुक्म वरताइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कवण वेला अंग लगाइन्दा।

सो पुरख निरञ्जण कहे सरबन्ग, सूरबीर दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ लाए अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। सच दुआरे चाढे रंग, रंग इक्को इक्क वरवाईआ। तेरी धार उपजाए आप बख्शंद, बख्शश तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरञ्जण देवणहार वड्डिआईआ।

पारब्रह्म दोए जोड़ करे असीस, सो सतिगुर तेरी सरनाईआ । सचखण्ड दुआर वसें जगदीस, जगदीसर तेरी शहनशाहीआ । तेरे ताज सोहे सीस, पंचम पंचम सोभा पाईआ । तेरी करे ना कोई रीस, तेरा सानी नजर कोई ना आईआ । तेरी आदि जुगादि चले रीत, रीतीवान तेरी बेपरवाहीआ । तेरा खेल सदा अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ । तेरा कलमा इक्क हदीस, मेरा नाम सच पढ़ाईआ । हउं दर ते मंगौं भीख, बण सवाली झोली डाहीआ । अन्तम दस्स दे सच तारीख, जिस दी तवारीख सके ना कोई लिखाईआ । तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी बँझे इक्को प्रीत, नाता आदि जुगादि जुड़ाईआ । तेरा मुख मेरी पीठ, पीठ तेरा मुख बदलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच्चा वर, पारब्रह्म पिआ सरनाईआ । पारब्रह्म प्रभ सरन ढट्ट, इक्क अरदास सुणाएन्दा । सो पुरख निरञ्जण खोल हट्ट, दर दरवाजा तेरा नजर कोई ना आइन्दा । वस्त अगम्मी इक्को वार घत्त, दूजी वार मंगण कोई ना आइन्दा । तेरा मेरा खेड़ा जाए वस, घर इक्को सोभा पाइन्दा । तेरा नाउं पुरख समरथ, हत्थ तेरे नाल मिलाइन्दा । तेरी महिमा अकथ्थना अकथ्थ, तेरा ढोला राग अलाइन्दा । तेरा पैंडा मुकावां नट्ट नट्ट, बण पान्धी सेव कमाइन्दा । सच सुल्तान इक्को सच्ची दस्स, कवण वेला अन्त मिलाइन्दा । सो पुरख निरञ्जण सचखण्ड निवासी सच्चा राजा पिआ हस्स, हँसमुख आप समझाइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म तेरा मार्ग इक्क जणाइन्दा ।

पारब्रह्म तेरा मार्ग आप लगावांगा । सचखण्ड साचा खेल रचावांगा । वंड आपणे हत्थ रखावांगा । सगला संग आप हो जावांगा । तेरा घर इक्क प्रगटावांगा । नारी नरायण सेज हंढावांगा । दे के अगम्मी वर, सुत शब्द तेरी झोली पावांगा । शब्द सुत दुलारा फड़, तेरा राह समझावांगा । विष्ण ब्रह्मा शिव घाड़न घड़, साची सेवा इक्क लगावांगा । त्रैगुण माया ला लड़, रजो तमो सतो गंडु रखावांगा । पंज तत्त जड़त जड़, साचा मेला मेल मिलावांगा । लक्ख चुरासी घाड़न घड़, पारब्रह्म ब्रह्म तेरी अंस उपजावांगा । लक्ख चुरासी रूप धर सहँस, सहँसर आपणी कार कमावांगा । निरगुण सरगुण बणा के बंस, बंसावली इक्क चलावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा मार्ग इक्क दरसावांगा । पारब्रह्म ब्रह्म मार्ग इक्क लगाएगा । प्रभ आपणी दया कमाएगा । निरगुण निरगुण वंड वंडाएगा । सरगुण साची वस्त दस्त फड़ाएगा । निरवैर हो के रहे मसत, अलमस्त आपणी कार कमाएगा । डेरा लाए कीट हस्त, ऊँच नीच ना कोई जणाएगा । निरगुण सरगुण अंदर आवे परत, प्रतीनिधि आप हो जाएगा । ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता गम ना कोई जणाएगा । अमृत मेघ इक्को बरख, सीतल धार इक्क वहाएगा । जुग चौकड़ी करके तरस, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आप पढ़ाएगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाएगा ।

धुर दी धार आप जणौंदा ए । पारब्रह्म प्रभ भेव खुलौंदा ए । ब्रह्म तेरी अंस बणौंदा ए । लक्ख चुरासी विच्च टिकौंदा ए । घर घर विच्च आप सुहौंदा ए । उप्पर पड़दा एका पौंदा ए । बजर कपाटी जिंदा लौंदा ए । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरञ्जण आप समझौंदा ए ।

सो पुरख निरञ्जण आप समझाइआ ए। धुर दा भेव आप खुलाया ए। निरगुण सरगुण वेस वटाया ए। जोती जोत जोत रुशनाइआ ए। काया कोट बंक सुहाइआ ए। लोक परलोक वेख वखाया ए। सच सलोक इक्को गाया ए। निरगुण निरगुण रक्खे ओट, ओढण इक्को नजरी आया ए। प्रेम प्रीती लग्गे चोट, नाम नगारा इक्क वजाया ए। जुग चौकड़ी सिफती सिफत कराए रसना जिह्वा होंट, बत्ती दन्द मेल मिलाया ए। घर घर दर दर आपे पहुंच, आप आपणा पड़दा लाहिया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्म पारब्रह्म आप जणाइआ ए।

पारब्रह्म तेरा खेल अपारा, हरि करता आप कराईआ। आत्म ब्रह्म तेरा सहारा, ईश जीव तेरी वड्डिआईआ। तेरी नय्या तेरा किनारा, तेरी मंजल तेरे हत्थ फड़ाईआ। तेरा सईआ मीत मुरारा, बेपरवाह इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, धुर दा पड़दा आप उठाईआ।

प्रभ सच दस्स, कद आपणा रूप वटाओगे। निरगुण सरगुण पार करके हद्द, हद्द आपणी आप समझाओगे। प्रगट कर के आपणी यद, विश्व आपणी कार कमाओगे। जुग चौकड़ी कर के रद्द, रस्ता इक्को इक्क वखाओगे। लक्ख चुरासी जीव वासना बध, बदला लेखा झोली पाओगे। भाग लग्गा के काया हड्ड, पंज तत्त जोत जगाओगे। चार दीवारी जगत छड्ड, बिन छप्पर छन्न सोभा पाओगे। मैं दरसन करां रज्ज, नेत्र नैणां नाल मिलाओगे। तेरा नजरी आए इक्को हज, काअबे कोलों मुख भुआओगे। जुग चौकड़ी खेड़ा दिसे भट्ट, साचा मन्दर इक्क वसाओगे। सति धर्म दा खोलू के हट्ट, सौदा इक्को नाम विकाओगे। निरगुण जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान आप हो आओगे। घट घट अंदर रक्ख के वास, तख्त निवासी हुक्म वरताओगे। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जो गौंदे रहे तेरी गाथ, तिनां लहणा झोली पाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सज्जण कवण बिध दरस दिखाओगे।

हरि साचा कहे सच जणावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा आदि जुगादि समझावांगा। गुर अवतार धार प्रगटावांगा। पीर पैगम्बर नूर रखावांगा। भगतां खोलू बन्द किवाड़, मन्दर इक्को इक्क सुहावांगा। धुरदरगाही बण के लाड़, दो जहानां सोभा पावांगा। कलिजुग द्वापर त्रेता सतिजुग नव नौं चार कर के पार, पार किनारा इक्क समझावांगा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बण लिखार, धुर दा लेखा आप प्रगटावांगा। कागद कलम शाही कर प्यार, शहनशाह इक्को रूप जणावांगा। नित नवित्त निरगुण सरगुण सुणदा रहां पुकार, पुनह पुनह वेख वखावांगा। घर घर विच्च देंदा रहां दीदार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। मेरी कोई ना पाए सार, आपणा अन्त ना किसे समझावांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बच्चिआं वांग करां प्यार, फड़ के उंगली आप लगावांगा। काया मन्दर अंदर वज्जे रबाब, सच सतार तन्दी तन्द आप हिलावांगा। धुर दा ढोला सच जैकार, छन्दा बन्दी राग अलावांगा। बन्दीखाना बन्दगी खोलू किवाड़, बन्दगी इक्को इक्क समझावांगा। चरनां कँवलां हेटां जोड़, अमृत मेघ मुख चवावांगा। बण के वेखां सांझा यार, सगला

संग निभावांगा । लेखा जाणां जुग चौकडी चार, चौकड आपणी गंढ जणावांगा । चारे वेदां भर भंडार, चारे मुख सिपत जणावांगा । चारे बाणी बोल जैकार, चारे खाणी आप पढावांगा । चारे युग कर के खबरदार, सोयां सुत्यां आप उठावांगा । चारों कुण्ट लै बहार, सुख सागर रूप वटावांगा । लक्ख चुरासी हंढावां नार, कन्त इक्को इक्क अखवावांगा । गुर अवतार सेवादार, पीर पैगम्बर दर दरबान बहावांगा । दूरों दूरों करन निमस्कार, सीस सजदा सभ दा आप झुकावांगा । रहबर बण के वेखां निरगुण सरगुण धार, सतिगुर बण के आपणी कार कमावांगा । ब्रह्म तेरे नाल कर प्यार, पारब्रह्म तेरी अंस आप उपजावांगा । नौं सौ चुरानवें चौकडी युग सुता रहु पैर पसार, वेले अन्त आप उठावांगा । जुग जुग दे रुवुडे मेलां यार, फड बाहो रुस्सियां गले लगावांगा । धुर दे भुक्खयां दिआं दीदार, स्वच्छ सरूपी रूप वटावांगा । माया विच्च लुकिआं लवां उठाल, तैगुण नाता तोड तुडावांगा । लेखा जाण शाह कंगाल, चारे वरनां मेल मिलावांगा । पारब्रह्म तेरा बण के साहिब आप दलाल, ब्रह्म हट्टी इक्क विकावांगा । तेरी लेखे लावां घाल, घाली घाल थाएं पावांगा । तूं मेरा मैं तेरे नाल, तेरा मेरा इक्को बंक सुहावांगा । दीपक जोत अगम्मी बाल, साचा नूरी चन्द चमकावांगा । साचे तखत बैठ करतार, करनी आपणी आप कमावांगा । धुर संदेशा देवां अन्तम वार, बाणी बाण निराला तीर चलावांगा । इक्के कर गुरू अवतार, तेई अवतारां नैण खुलावांगा । भगत अठारां कर प्यार, चरन कँवल इक्क समझावांगा । ईसा मूसा वेख मुहम्मद यार, यारी हकीकत नाल जणावांगा । नानक गोबिन्द वरवाल सच दरबार, सचखण्ड साचा इक्क वड्डिआवांगा । धुर दा बोल नाम जैकार, शब्दी ढोला इक्को गावांगा । साचा सोहला सिपती वार, छत्ती रागाँ सेवा लावांगा । दस अठु कर विचार, अठु दस भेव चुकावांगा । चौदां लोकां ला के पाड, पडदा सभ दा आप मुकावांगा । चौदां तबकां चरनां हेठ लताड, भार इक्को वार पावांगा । बण के आवां साचा लाड, साचा असव इक्क दौडावांगा । उच्ची बोल नाम जैकार, तेरा मेरा ढोला इक्क सुणावांगा । ना कोई पुरख ना कोई नार, नर नरायण रूप वखावांगा । जोती जोत जोत उजिआर, शब्दी शब्द डंक सुणावांगा । विष्ण ब्रह्मा शिव कर खबरदार, धुर दा हुक्म इक्क मनावांगा । सुरपत इन्द करोड तेतीसा नेत्र रोवे धाहां मार, धुर दा हुक्म आप वरतावांगा । कलिजुग अन्तम खेल करां कमाल, कमला रमला हो के आपणा झट्ट लंघावांगा । जे कोई लभ्भण जाए विच्चों धरमसाल, लभ्भयां हत्थ किसे ना आवांगा । जे कोई मन्दरां करे भाल, अगगों खाली हत्थ मुडावांगा । जे कोई मसजदीं लभ्भे दलाल, झूठा वणज इक्क जणावांगा । जिन ईसा मूसा बणाए लाल, सो जल्वा नूर आप प्रगटावांगा । आ के वेखां मुरीदां हाल, मुरीद मुशर्द आपणी कार कमावांगा । गुरमुख गुर गुर आप उठाल, गोद सुहज्जणी आप सुहावांगा । लेखे ला के गुजरी लाल, गुजरया हाल फेर परतावांगा । पारब्रह्म तेरी कर के आपे भाल, ब्रह्म विच्चों तेरा आपे भेव चुकावांगा । साढे तिन्न हत्थ अंदर वज्जे ताल, ताल तलवाडा इक्क रखावांगा । ऊँचां नीचां वेखां शाह कंगाल, बरन अठारां वरन चार मेल मिलावांगा । सन्त सुहेले गुरू गुर चले भगत भगवान गोदी लए सवाल, सुत्यां फेर ना कदे जगावांगा । सचखण्ड दुआरे लै के जावां नाल, दूजे हत्थ ना किसे फडावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पारब्रह्म तेरा अन्तम रंग रंगावांगा ।

पारब्रह्म प्रभ तेरा रंग रंगाएगा। सो पुरख निरञ्जण वेस वटाएगा। हरि पुरख निरञ्जण आपे आएगा। एकंकारा कार कमाएगा। आदि निरञ्जण नूर रुशनाएगा। अबिनाशी करता दर्द दुःख भय भंजन आप हो जाएगा। श्री भगवान नेत्र अञ्जन इक्को पाएगा। पारब्रह्म प्रभ वस्त मंगण इक्को आएगा। चार कुण्ट वज्जे नाम मरदंगन, मरदंगा इक्को हत्थ उठाएगा। जिस कसीरउं बणाइआ कंगण, रविदास चमारा चमड़ी गंढ पाणां, पारब्रह्म प्रभ नजरी आएगा। जिस कबीर जुलाहे तणया ताणा, तन्दी तन्द नाल जुडाएगा। जिस सैण पिच्छे रीझाइआ राणा, सो रँयत वेखण आएगा। जिस नामे छप्पर छन्न छुहाणा, सो भगत दुआरा वेखण आएगा। चार युग दा माण गवाणा, अभिमान रूप ना कोई वटाएगा। गुर अवतारां पीर पैगंबरों जुग जुग देंदा रिहा जो धुर फ़रमाना, अन्तम आपणा हुक्म वरताएगा। सभ ने मन्नणा सिर ते भाणा, सीस अगगों ना कोई उठाएगा। लेखा लिख लिख गए वेद पुराना, शास्त्र सिमरत सर्व समझाएगा। कलिजुग अन्तम आए भगवाना, भगवन आपणा वेस वटाएगा। निहकलंक बण जरवाणा, जाबर जबर सर्व खपाएगा। दो जहानां गाए तराना, तुरीआ राग मुख शरमाएगा। करे खेल वाली दो जहाना, चौदस चौदां चन्द ना नैण उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरञ्जण अन्तम वेखण आवेगा।

सो पुरख अन्तम वेखण आएगा। निरगुण हो के जोत जगावेगा। सरगुण साची खेल समझावेगा। त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ावेगा। पंज तत्त आपणी बूझ बुझावेगा। नाइ बहत्तर ना कोई तपावेगा। अमृत मेघ इक्क बरसावेगा। मनमत दूर करावेगा। गुरमत इक्क प्रगटावेगा। नौं खण्ड मार्ग लावेगा। सत्त दीप राह चलावेगा। नीच ऊँच इक्क बणावेगा। सच तमीज इक्क समझावेगा। गरीब निमाणयां रीझ पूर करावेगा। आप बण के रहे नाचीज, जन भगतां ऊँचो ऊँच रखावेगा। गुरमुखां नाल गोबिन्द गंढ गिआ पीच, कर किरपा आप खुलावेगा। कलिजुग दोहां होवे बीच, विचोला इक्को रूप वटावेगा। शाह पातशाह राज राजान खाली करे खीस, माया राणी नाच नचावेगा। जो साहिब सतिगुर उते जाण पतीज, तिनां अगगे पर्चा कोई ना पावांगा। लक्ख चुरासी मंगे भीख, दर दर सृष्ट सबाई आप भवावांगा। जिनां साहिब ना वस्सया चीत, तिनां चातरी अन्त गवावांगा। जिनां हरि ना गाया गीत, तिनां डूंधी धार वहावांगा। जो लभभदे फिरदे शिवदवाले मठ मन्दर मसीत, तिनां साख्यात नजरी आवांगा। चार वरन सृष्ट सबाई आत्म परमात्म करो प्रीत, घर ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलावांगा। रल के सखीआं गाओ एका गीत, सोहँ ढोला आप जणावांगा। लक्ख चुरासी लउ जीत, हार चरनां हेठ रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरतावांगा।

साचा हुक्म आप वरतावांगा। कलिजुग अन्तम डेरा ढाहवांगा। दीन मज़ब दा राह खैहड़ा मेट मिटावांगा। धुर फ़रमान ग़जब दा, इक्को इक्क सुणावांगा। वेखो हाल की हुंदा बशर दा, विछड़यां कूड़े धंदे लावांगा। पुरख अकाल इक्को नितरदा, कलिजुग कूड़ा बदल आप उडावांगा। करे खेल साचे पित्र दा, गुर अवतार पीर पैगंबर पूत गोद सुहावांगा। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ के बण तसव्वर जो तस्वीर चितरदा, सो साहिब आपणा हुक्म

वरतावांगा। कलिजुग अन्तम वेला लक्ख चुरासी फ़िकर दा, फ़िकरे इके नाल समझावांगा। हुण वेला नहीं कहाणी ज़िकर दा, ध्यान इक्को चरन लगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म आप दरसावांगा।

पारब्रह्म ब्रह्म तेरा प्रभू उपजाएगा। निहकमी कर्म कमाएगा। साची धरनी सोभा पाएगा। मरन डरन भय मिटाएगा। साची तरनी आप तराएगा। हरन फरन नेत्र आप खुलाएगा। वरनी बरनी मोह तुडाएगा। गुरमुखो साची पौड़ी चढ़नी, घर विच्च डण्डा आप लगाएगा। तुख्म तासीर हो के तुक इक्को पढ़नी, ढोला इक्को राग अलाएगा। सुखमन टेडी बंक नौं दुआर ईडा पिंगल अन्ध अन्धेर कूड़ी क्रिया कोई ना अग्गे अड़नी, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा आप समझाएगा।

ब्रह्म ब्रह्म अन्त समझावेगा। फड़ मार्ग आपे लावेगा। कर्म कांड मेट मिटावेगा। साचा नाद धुन सुणावेगा। ब्रह्म ब्रह्माद खोज खुजावेगा। अनरसीआ सच सुआद, इक्क वरवावेगा। ढोला गा के बोध अगाध, निशअक्खर आप पढ़ावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कराए पिछली याद, भविख्त वाक आप समझावेगा। वाहद लाशरीक निरगुण दाता आवे गाड, गाईड सभ नूं आप करावेगा। जन भगतां रक्खे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकावेगा। जिस नूं कहन्दे गुरू महाराज, सच्चे पातशाह शाह पातशाह सीस आपणे ताज टिकावेगा। उहदा कोई ना जाणे काज, करनी करता आप कमावेगा। सभ नूं अन्तम छडुणी पए निमाज, हुजरा हज्ज इक्को वार वरवावेगा। जिस नूं सजदा करे ईसा मूसा मुहम्मद मन्ने नवाब, सो शहनशाह नजरी आवेगा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सारे करन आदाब, रूप इक्को इक्क समझावेगा। नबी रसूलां देवणहारा दात, दयावान फेरा पावेगा। पट्टी पढ़ाए इक्क जमात, अलफ़ ये नुकता नून आप मिटावेगा। साची दरसे इक्को रीत, रहबर इक्को हुक्म मनावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म तेरा ब्रह्म आप उठावेगा।

श्री भगवान ब्रह्म उठाएगा। निहकमी कर्म कमाएगा। फड़ चरनी सीस झुकाएगा। साची कथा कहाणी पढ़नी, आत्म परमात्म राग जणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस धराएगा। निरगुण धर के आए वेस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। साहिब वसे अगम्मडे देस, अगम्म हत्थ वड्डिआईआ। हुक्म वरताए बण नरेश, शहनशाह अखवाईआ। कलिजुग अन्तम वेखे खेल, खेलणहारा खलक खुदाईआ। सन्त सुहेले सज्जण गुरमुख मेल, गुरसिख गुर गुर बूझ बुझाईआ। जोत निरञ्जण चाढ़े तेल, आदि निरञ्जण खुशी वरवाईआ। प्रभ ठाकर मिल्या सज्जण सुहेल, हरि सतिगुर सच्चा माहीआ। जिस लक्ख चुरासी हुक्मे अंदर धर्म राए दी घल्ले जेल, गुरमुख साचे सचखण्ड वसाईआ। वसणहारा धाम नवेल, दहि दिशा वेखे चाई चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म लए मिलाईआ।

पारब्रह्म मिलणा अन्त, अन्त आप जणाइन्दा। खेल करना नार कन्त, कन्त कन्त तूहल सेज हंडाइन्दा। रंग चढे इक्को बसन्त, उतर कदे ना जाइन्दा। तेरा मेरा भेव ना पाए कोई पंडत, चौदां विद्या नैण शरमाइन्दा। चार युग दा लेखा अन्तम करे खण्डत, खण्डा खडग नाम उठाइन्दा। भेव खुलाए जेरज अंडज, उत्भज सेतज फोल फुलाइन्दा। भगत दुआरे बणे मंगत, प्रेम प्रीती भिखवया मंग मंगाइन्दा। गुरसिखो गढ़ तोडो हउमे हंगत, निवण-सो-अक्खर इक्क पढाइन्दा। पारब्रह्म ब्रह्म लाए अंगत, अंगीकार आप हो जाइन्दा। सर्ब जीआं दा इक्को मंत, मंतर ढोला आपे गाइन्दा। रल के बहि जाओ साची पंगत, ऊँच नीच जात पात जूठ झूठ डेरा ढाइन्दा। पुरख अकाल अग्गे करो मिन्नत, जो साहिब विछडे मेल मिलाइन्दा। कलिजुग किसे दी चलण ना देवे कोई हिम्मत, कोटन कोट अंदर वड वड, पाणी ठर ठर, अगनी सड सड, उच्चे टिले चढ़ चढ़, शास्त्र सिमरत पढ़ पढ़ ध्यान लगाइन्दा। अबिनाशी करता वेखणहारा दर दर घर घर नर नर, लक्ख चुरासी खोज खुजाइन्दा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुख गुरसिख सज्जण फड फड, डूंधी कंदर आपे वड वड, लेखा जाण सीस धड धड, धडा आपणे नाल मिलाइन्दा। जन भगतां पिच्छे आप मर मर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप वटाइन्दा। नित नवित्त आदि जुगादि पल्लू फड फड, साची गंढ आप पवाइन्दा। कलिजुग अन्त नौं खण्ड पृथ्वी सत्त दीप लक्ख चुरासी कोई ना जाए अग्गे अड, जो अडिआ सो पार कराइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा आपे वर, वर आपणा झोली आपे पाइन्दा।

आपे दाता आप भिखारी, देवणहार आप अखवाईआ। आपे भूप आप सिकदारी, आपे भिखवया मंगे चाई चाईआ। आपे शाह पातशाह फडे तेज कटारी, खाली हत्थ आप हो जाईआ। आपे खेले खेल पुरख नारी, नार कन्त सेज सोभा पाईआ। आपे करे सच संगारी, साची इच्छा आप प्रगटाईआ। आपे बणे कनया कवारी, अंगीकार ना कोई रखाईआ। आपे बणे शाहसवारी, शहनशाह साचे आसण सोभा पाईआ। आपे बण वड्डा दरबारी, धुर दरबारा इक्क लगाईआ। आपे सेवक सेवा करे नयारी, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। आपे जोधा सूरबीर बण बलकारी, बलहीण आप हो जाईआ। आपे बण गुरू अवतारी, ज्ञान गुरदेव आप समझाईआ। आपे कागद कलम लिखणहारी, आपे लेखा दए मिटाईआ। आपे खेल खेले जुग चारी, जुग चौकडी आपे डेरा ढाहीआ। आपे प्रनावे गुरमुख सची लाडी, बण कहार डोली आपणे कंध उठाईआ। आपे घुंगट चुक्के पहली वारी, आपे नेत्र नैण नैण शरमाईआ। आपे सच झरोखे खोले बारी, बन्द किवाडा आप कराईआ। आपे निरगुण जोत जगे निरकारी, अन्ध अन्धेर आप अखवाईआ। आपे अमृत झिरे टंडा पाणी, अगनी अग आप बरसाईआ। आपे शब्द बणे सच्चा हाणी, आपे बैठा मुख भवाईआ। आपे वेखे चारे खाणी, आपे पडदा रिहा वखाईआ। आपे सुरत बणाए साची राणी, आपे धक्का देवे लाईआ। आपे सुणाए अकथ्य कहाणी, आपे भरम भुलेखा देवे पाईआ। आपे जाणे पद निरबाणी, आपे धूआंधार समाईआ। आपे खेल करे महानी, आपे नजर किसे ना आईआ। आपे बणे वड विदवानी, आपे शैतानी धार चलाईआ। आपे मारे तीर अणयाला कानी, आपे

मुखी दए तुड़ाईआ। आपे माण दवाए जगत मात भानी, आपे शब्दी बूझ बुझाईआ। करे खेल श्री भगवानी, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। पारब्रह्म उठ कर ध्यानी, धीरजवान रिहा समझाईआ। उठ वेख सच निशानी, शहनशाह आपणी दए बुझाईआ। जिस नूं कैहन् दे आदि शक्त जोत नुरानी, सो जोत सेवा रही कमाईआ। जिस दा खेल शक्त भवानी, सो भावना विच्च समाईआ। जिस दी चतुरभुज निशानी, सो निशाना रिहा लगाईआ। आ दर ते सुण सच्ची कहाणी, हरि करता रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए हैरानी, हरि का भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तम आपणा घर वसाईआ।

अन्तम घर वसौणा तेरा, तेरी वज्जे वधाईआ। ब्रह्म कहे तूं मेरा, मैं तेरी तक्कां सरनाईआ। कलिजुग अन्तम कर नबेड़ा, हकीकत वेख थाउं थाईआ। कूडयां साधां सन्तां डुब्बदा जांदा बेड़ा, जो प्रभ नूं धोखा दे जीवां जंतां रहे भरमाईआ। कलिजुग अन्तम उजड़न वाला खेड़ा, खिड़की कुण्डा नजर कोई ना आईआ। रसना जिह्वा जगत ज्ञान करदे झेड़ा, अन्तर मेल ना कोई मिलाईआ। चारों कुण्ट होया अन्धेरा, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। मन हँकार कहे मेरा मेरा, मत मतवाली दए दुहाईआ। बुद्धि कहे मेरा ढट्टा डेरा, मेरा बल ना सके बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साहिब सतिगुर निरगुण रूप सच सुआमी ठाकर आवे बण के शेरा, सिँघ आपणी भबक लगाईआ। सारे इक्को वार धरत मात दा खुल्ला कर जाण वेहड़ा, जंबक नजर कोई ना आईआ। अंदर वड़ के पुरख अकाल कोलो डर के कहण तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नजर कोई ना आईआ। पुरख अकाल कहे मैं आया दो जहान हत्थीं डोर फड़ के, बचया कोई रहण ना पाईआ। मैं नित नित वेखां जो उठ के बाहरो नहौंदे तड़के, अन्तर अमृत सरोवर नहावण कोई ना जाईआ। मैं सदा वेखां जो घरो निकले लड़ के, मन झगड़ा सके ना कोई मुकाईआ। मैं वेखणहारा जो अठसठ तीर्थ भटके, काम वासना सके ना कोई मिटाईआ। मैं वेखां गुरदर मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ट वड़ के, कलिजुग जीव धीआं भैणां रहे तकाईआ। मैं वेखां जो घर घर मंगदे फिरदे लड़ के, आपणा आप रहे मिटाईआ। गुरसिखो गुरमुखो सतिगुरू मिलदा जीवदिआं मर के, मरना नानक गोबिन्द गिआ समझाईआ। आओ वेखो पल्लू फड़ के, गंडु आपणे नाल बंधाईआ। जेहड़ा तुहाछी नीह गिआ धर के, अन्तम महल्ल दए वसाईआ। पुरख अकाल नाल आइआ रल के, जोती शब्द वज्जी वधाईआ। लभ्भणा फेर किसे ना भलके, भुल्लयां हत्थ किसे ना आईआ। सति सिँघासण बैठा मल के, संबल आपणा डेरा लाईआ। उठो वेखो भज्ज भज्ज के, हरिमन्दर रिहा सुहाईआ। मन बन्दर ना जाए छल के, वलीआ छलीआ आया बेपरवाहीआ। पहलों गुर अवतार पीर पैगम्बर घल्ल के, आपणा सुनेहड़ा दिता पुचाईआ। अन्तम जोती धार इक्को डलके, पंज तत्त ना कोई वड्डिआईआ। धरत मात दे भार करे हलके, बेमुख कोई रहण ना पाईआ। सृष्ट सबाई मारे उथल के, गेड़ा इके वार भवाईआ। गुरमुख प्रेम कुठाली आवण ढल के, कंचन सोइना आपणे रंग रंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दीवे वेखे बलदे, शमअ आपणी हत्थीं जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, पारब्रह्म तेरा लहणा झोली पाईआ।



पारब्रह्म तेरा लहणा ब्रह्म, श्री भगवान आप जणाइन्दा । जिस दे नाल लगाए कर्म, कर्म सेवा रूप बणाइन्दा । तैनुं लपेटिआ विच्च काया माटी चरम, नेत्र नजर किसे ना आइन्दा । बिन सतिगुर सभ नूं पिआ भरम, भाण्डा भरम ना कोई भन्नाइन्दा । ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सारे पढ़न, ब्रह्म रूप आपणा नजर किसे ना आइन्दा । दूर दुराडे चल के औण गल्लां करन, गल्लीं बातीं प्रभ का भेव कोई ना पाइन्दा । मन हँकारी कर के आवण लड़न, हरिजू आदि जुगादी वड लडाका जो अडिआ भन्न वखाइन्दा । जो सन्त सुहेले गुरमुख चले आवण सरन, तिनां आपणा मेल मिलाइन्दा । निज नेत्र खोल्ले हरन फरन, मन फुरना बन्द कराइन्दा । ज्ञान ध्यान अशनान पूजा पाठ सिमरन गुरमुख तेरा पाणी भरन, तेरा प्रभ तेरा खेडा आप वसाइन्दा । तेरे कोलो विष्ण ब्रह्मा शिव डरन, अगगे अक्ख ना कोई उठाइन्दा । जिनां पुरख अबिनाशी आया वरन, तिनां हत्थ ना कोई लगाइन्दा । पुरख अकाल दीन दयाल आदि पुरख अन्त कीता परन, पतिपरमेशवर आपणा रूप वटाइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता इक्क इकांता अकल कला भरपूर आप अखवाइन्दा ।

अकल कल भरपूर सुआमी, सर्व जीआं दए वडिआईआ । घट निवासी अन्तरजामी, ब्रह्म प्रकाशी जोत लए मिलाईआ । धुर दी बाणी शब्द कहाणी, साची राणी लए प्रगटाईआ । खेले खेल दो जहानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखाईआ ।

किरपा अंदर वेखण आया, वड दाता गुण निधान । भगत भगवन्त लए जगाया, जागरत जोत करे प्रधान । अमृत आत्म दए पिलाया, कूडी क्रिया मेटे निशान । साची रमज दए समझाया, बिन रसना करे ज्ञान । साची अक्ख लए मिलाया, प्रतक्ख नजर आए भगवान । मार्ग दरस्स राहे पाया, मंजल चढ़ाए आप मेहरवान । हरस्स हरस्स जोड जुड़ाया, नाता तोड सर्व शैतान । साचा घोड इक्क मंगाया, धुरदरगाही दे फ़रमान । सोलां कलीआं आसण लाया, तंग कसे नौजवान । चरन रकाबे इक्क टिकाया, खेले खेल मर्द मरदान । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा धुर फ़रमान ।

धुर फ़रमाना सति संदेशा, इक्को वार सुणार्णआ । पुरख अकाल नर नरेशा, बेपरवाह फेरा पाईआ । आदि जुगादि रहे हमेशा, ना मरे ना जाईआ । हुक्मे अंदर विष्ण ब्रह्मा शिव महेशा, गणपत गणेशा बैठे सीस झुकाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर करन आदेसा, सजदा इक्को घर वखाईआ । कलिजुग अन्तम पूरा करे सदी बीसवीं सभ दा लेखा, लेखा आपणे लेखे पाईआ । जिनां रह जाए भरम भुलेखा, तिनां बीस इक्कीसा भरम मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा देवणहारा आपे दान, अन्त कन्त भगवन्त वेखे आण, महिमा अणगणत आपणे विच्च छुपाईआ ।

महिमा अणगणत बैठी छुप, जाहर नजर किसे ना आईआ । नव नौं चार रही चुप

प, आपणा भेव ना कोई जणाईआ। कलिजुग अन्तम बैठी उठ, घर साचे लए अंगड़ाईआ। जन भगतां वल कीता रुख, भज्जे वाहो दाहीआ। मैं वेखां जा के गोबिन्द तेरे पुत, जिनां पिच्छे आपणे पुतर नीहां हेठ दबाईआ। मैं गोदी लवां जा के चुक्क, आपणी सेव कमाईआ। मैंनू सोहणा लग्गे मुख, जो तैनू रहे धिआईआ। गोबिन्द सूरा आपे तुठ, दे मत रिहा समझाईआ। वेख मेरा अबिनाशी अचुत, मेरे नाल सोभा पाईआ। जिस ने पहलों मैंनू बणाईआ पुत, फिर मैं पुतरां पुतरां उतों वार कराईआ। हुण नहीं बहिणा मात लुक, आपणा पड़दा दिआं उठाईआ। बिन मेरी किरपा कोई ना होवे मेरे उते खुश, कलिजुग जीव करन लड़ाईआ। मैं सभ दे नेड़े अंदर बैठा दुक, घर आपणे मैंनू मिलण कोई ना आईआ। दर दर जा के डेरयां विच्च इक्क दूजे नू रहे पुछ, किस घर मिले सच्चा माहीआ। सदी वीहवीं किसे कोल नहीं है कुछ, प्रभ खाली भाण्डे दिते कराईआ। डरदे साहिब कोलो बैठे लुक, अग्गे आ के मुख ना कोई वखाईआ। जगत वड्डिआई लग्गी भुक्ख, मस्तक चरनां उते रहे छुहाईआ। किसे नू देंदे दुध पुत, किसे नू अक्खां मीट ध्यान जणाईआ। किसे नू कहण सुरती गई रुट्ट, भज्ज वाहो दाहीआ। किसे नू कहण अंदर वड के बह जाओ चुप्प, रसना जिह्वा ना कोई गाईआ। जे पुरख अबिनाशी आप लए पुच्छ, फिर बैठण मुख भवाईआ। कलिजुग कहे प्रभ वेख मेरी लुट्ट, मैं दिन दिहाड़े रिहा मचाईआ। बाहरो तैनू सजदे करन झुक, अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हलकाईआ। रात अन्धेरी घर बेगाने करन रुख, वेसवा रूप जगत वटाईआ। ठाकर सुआमी अन्तर उठ, किउं बैठा मुख भवाईआ। धर्म नाता सभ दा गिआ तुट्ट, धरत धवल दए दुहाईआ। खाली दिसण सभ दे ठूठ, हरि का नाम नजर कोई ना आईआ। करी कुड़माई जूठ झूठ, हउमे हंगता वज्जी वधाईआ। लक्ख चुरासी वेख करतूत, तेरे तेरी कीती गए भुलाईआ। कलिजुग अन्तम सारा लंघ गिआ अन्तम पिच्छे रहि गई निक्की पूछ, सो गोबिन्द आपणी हत्थीं दए कटाईआ। किसे दी खड़ी रहे ना मुच्छ, मुशकल विच्च पए लोकाईआ। जो तैनू समझदे तुच्छ, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग बदले तेरी रुत, रुत रुतड़ी आप महकाईआ। धरत मात कहे मेरे घर जंमिआ पुत, सरखीओ दिउ वधाई चाई चाईआ। मैं पंदरां कत्तक आवां गोदी चुक्क, पुरख अकाल नू मथ्था दिआं टिकाईआ। फड़ के दोहा हत्थां नाल गोदी देवां सुट्ट, आपणा भार सिर तो लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि का खेल कोई समझ सके ना राईआ।

हरि का खेल सर्ब उडीकण, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। पाबन्दी अंदर सर्ब चीकण, उच्ची कूक रहे सुणार्णआ। जिउं गोबिन्द नजर आया भीखण, तिउं गुरमुखां रिहा जगाईआ। कलिजुग कहर अन्धेरी तीखण, आपणी धार वहाईआ। गुरमुख करे विरला सच प्रीतण, प्रीती प्रीतम नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल अन्तम वेख वखाईआ।

कलिजुग अन्तम रहे उडीक, जगत उडारी मात लगाईआ। गुर अवतारां जो लिखी तरीक, तारीख रही समझाईआ। लक्ख चुरासी होई बिप्रीत, प्रीती सच ना कोई कमाईआ।

सखीआं मिल कोई ना गाए गोबिन्द दा गीत, हिरदे हरि ना कोई वसाईआ । लभ्भदे फिरन मन्दर मसीत, मुल्लां शेख मुसाइक उंगलां नाल रहे समझाईआ । बिन साचे कलमिउं पढ़ पढ़ होए ढीठ, डेरा कूड़ ना कोई ढाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाईआ ।

जोती जोत होए रुशना, रोशन इक्क मनार वखाइन्दा । जलवा नूर नूर धरा, जलवागर भेव चुकाइन्दा । दर दुआर इक्क खुल्ला, दरदीआं दर्द आप वंडाइन्दा । सभ दी सध्धर पूरी दए करा, जो सदके वारी घोली घोल घुमाइन्दा । जन्म कर्म दा पतरा दए उलटा, वरका वरका लेख बदलाइन्दा । शत्रुरू मित्रां दए बणा, शस्त्र खण्डा ना कोई चमकाइन्दा । चोटी सिखरां दए चढ़ा, सकीरी आपणे नाल बणाइन्दा । अन्तम फिकरा दए पढ़ा, सोहँ ढोला राग अलाइन्दा । जो बाजां तित्तरां गिआ लड़ा, सो कलिजुग अन्तम निरगुण हो के आइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम शिकरा बाज लए बणा, लक्ख चुरासी चिढ़ी आप तुड़ाइन्दा ।

लक्ख चुरासी शब्दी बाज चोगा, गोबिन्द चोग चुगाईआ । उच्ची कूक देवे होका, हुक्म दए समझाईआ । फिरे दरोही चौदां तबक चौदां लोका, लुकवीं खेल रहे ना राईआ । अंदर वड़ के आपणा वेखो कोठा, काया कोठी सोभा पाईआ । जिस दे अंदर अगम्मी पोथा, बिन इलमो करे पढ़ाईआ । आपणे मिलण दा देवे इक्को मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ । किसे नाल करे ना धोरवा, जो फड़या सो पार कराईआ । सतिजुग मार्ग दस्से सौरवा, आत्म परमात्म सोहँ रूप इक्क समझाईआ । गुरसिख कोई ना होवे औरवा, वेले अन्त सतिगुर पूरा लैण आए चाई चाईआ । जोत अकालण साफ़ कर के बैठी चौंका, जन भगतां उप्पर दए बहाईआ । बिन भगतां श्री भगवान जाए औंता, बिन सिखां गुरू कम्म किसे ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तम आपे पहुंचा, वीहवीं सदी आपणा हुक्म आप वरताईआ ।

वीहवीं सदी नूं सारे रोंदे, दो जहान ध्यान लगाईआ । गुर अवतार ढोला गौंदे, तूही तूही राग अलाईआ । तेरा राह इक्क तकौंदे, तकवा इक्क जणाईआ । जुग चौकड़ी रहे भौंदे, इकँठिआं मेल ना कोई मिलाईआ । उच्चे नीवें सारे सौंदे, बिसतर इक्को ना कोई हंढाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सो वीहवीं सदी लेखे लाईआ ।

वीहवीं सदी करे मनज़ूर, हरि करता दया कमाइन्दा । पहलों बख्खे सर्ब कसूर, सभ दे लेखे आप मुकाइन्दा । जिस दे पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, सो सूली मनसूर आपणे गल लटकाइन्दा । जिस दे पिच्छे अगनी सड़े वांग तन्दूर, तिनां अगनी तत्त बुझाइन्दा । जेहड़े जुग चौकड़ी औंदे रहे बण मज़ूर, तिनां मजदूरी वेख वखाइन्दा । जेहड़े वसदे रहे दूर दूर, अन्तम आपणे कोल बहाइन्दा । सारे मंगो इक्को वार बख्ख साडे कसूर, कुलवन्

ता आपणी दया कमाइन्दा। सभ दे भाण्डे करे भरपूर, खाली नजर कोई ना आइन्दा। जखरत पूरी करे जखर, जाहर जहूर वेख वखाइन्दा। कागज कलम शाही निहकलंक कीता मशहूर, गुर अवतार लेख लिखाइन्दा। अन्तम मिलण नूं होए सर्ब मजबूर, मुशकल हल्ल ना कोई कराइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जल्वा देवे नूर जहूर, जाहरा पीर बेनजीर लाशरीक सच तौफ़ीक इक्क खुदाए बेपरवाहे इक्को इसम इक्को आअजम इक्को आदम आप जणाइन्दा। इक्को आदम आदम बू, बेवफ़ा सर्ब लोकाईआ। इक्को नाअरा इक्को लारा दस्से हू, अन्ना हू नाल मिलाईआ। रल मिल कहे आपा तूं ही तूं, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद वेखे आपणी जूह, साचे खेडे डेरा लाईआ। वेखणहारा पाक रूह, बुत्त बुत्तखाना फोल फुलावे थाउं थाईआ। जो मुरीद मुशर्द गिआ छूह, वांग शमस तबरेज शमअ देवे जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां वेखण आवे मूंह, जिनां मुखडा गोबिन्द धोता चाई चाईआ।

\* पहली अस्सू २०२० बिक्रमी जेटूवाल दरबार विच्च \*

पुरख अकाल अगम्मी नूर, परवरदिगार तेरी वड्डिआईआ। समरथ सुआमी सर्ब कल भरपूर, शाह पातशाह सच्ची तेरी शहनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकडी हाजर हजूर, दो जहान तेरी सरनाईआ। नित नवित्त गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे मजदूर, बण सेवक सेव कमाईआ। बोध अगाध नाम निधान मंतर सति तेरी तूर, नाद अनाद तेरी शनवाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त चरन रेण तेरी धूड, खाकी खाक नजरी आईआ। सृष्ट सबाई चार कुण्ट दिसे कूड, थिर कोई रहण ना पाईआ। दीन दयाल ठाकर सुआमी तेरा भेव दस्स के गए जखर, जाहर तेरा नाउं जणाईआ। कलिजुग अन्त आए भगवन्त भगवन साचे भगत करे मनजूर, मनजूरी इक्को घर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल सच वरताईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे दस्सण, धुर संदेसा हाल जणाईआ। प्रभ सरनाई सारे वसण, सीस सके ना कोई उठाईआ। हुक्मे अंदर जुग चार नस्सण, चौकडी आपणा पन्ध मुकाईआ। नाम निधान सतिगुर सुआमी निरवैर इक्को रटण, सच सच सच दृढाईआ। लोक परलोक वेखण खोल हट्टण, मात पाताल आकाश खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सच तेरी सरनाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आखण, आखर आपणा हुक्म जणाईआ। लोकमात सेवा कीती बण बण दासी दासन, शाह पातशाह इक्क मनाईआ। मण्डल मंडप पाई रासन, गोपी काहन नाच नचाईआ। निरगुण सरगुण कीता भोग बिलासन, सेज सुहजणी इक्क हंढाईआ। करदे रहे आपणी पूरी आसण, आसा जगत नाल मिलाईआ। वेख्या खेल पृथ्वी

आकासन, गगन मण्डल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सच तेरी सरनाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर पए बोल, एका नाअरा हक लगाईआ। कोई ना तुले तेरे तोल, कंडा तराजू हत्थ किसे ना आईआ। तेरा नाम वजौंदे गए ढोल, जुग जुग बण के डूम नाईआ। मात दवार दस्सदे रहे खोल, जीव जुगत जगत कर पढ़ाईआ। तेरे प्रेम अंदर गए मौल, मौला तेरे विच्च समाईआ। अन्तम करके गए कौल, इकरार इक्को इक्क जणाईआ। प्रगट होवे उप्पर धौल, सभ दा दाता वड वड्डिआईआ। लक्ख चुरासी लए विरोल, लुकिआ कोई रहण ना पाईआ। हर घट अंदर सद वसे कोल, विछड कदे ना जाईआ। आपणा नाम समझाए इक्क अनमोल, करता कीमत कोई ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव इक्क चुकाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे जपदे, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। प्रेम प्रीती अंदर रहे खपदे, नित नित भज्जण वाहो दाहीआ। बिरहो वैराग अंदर रहे तपदे, तीर कानी इक्क लगाईआ। जीव जंत मार्ग रहे दस्सदे, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म नाल गए हस्सदे, घर घर विच्च खुशी मनाईआ। कूडी क्रिया कोलों गए नस्सदे, आपणा पल्लू छुडाईआ। भगत दुआरे गए ढट्टदे, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच वर, सच तेरी सरनाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहण, नाअरा इक्को इक्क लगाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त सर्ब सुखदाता जन भगतां आए लैण, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। चार युग दा चुकावे लैहण देण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लुकया कोई रहण ना पाईआ। अन्तर बाहर बणे साक सैण, सज्जण इक्को नजरी आईआ। मेटे कूडी क्रिया अन्धेरी रैण, साचा चन्न इक्क चमकाईआ। लाडी मौत ना खाए डैण, राए धर्म ना दए सजाईआ। डूँघे वहण ना रोड़े वहण, फड बाहों बाहर कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क उठाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर गए भाख, भाख्या अन्तम इक्क सुणार्एआ। लिख लिख लेखा गए आख, आखर इक्को गल्ल जणाईआ। प्रगट होवे सर्बगुणतास, दाता दानी वड्डी वड्डिआईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण पावे रास, घर घर गोपी काहन नचाईआ। साचा नूर करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, गुरमुख सज्जण संग रखाईआ। गुरसिखां सुणे दुराडी आवाज, नेरन नेरा नजरी आईआ। लेखा जाणे गरीब निवाज, गरीब निमाणयां होए सहाईआ। लोकमात रक्खे लाज, अग्गे मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्डिआईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर होए इक्ते, दर इक्क ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट कोई ना नष्टे, दहि दिशा फेरा कोई ना पाईआ। इक्को वार पकाओ साचे मते, मतलब इक्को हल्ल कराईआ। दीन मज्जब बणाओ भाई भाई सके, जात पात ना कोई लड़ाईआ। खान पान अमृत रूप ऊँच नीच छके, भेव अभेद नजर कोई ना आईआ। पुरख अकाल आत्म परमात्म इक्को रंग रते, दूजा रूप नजर कोई ना आईआ। वेखो खेल तत्त अट्टे, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। दसवें मेल पुरख समरथे, जोती जोत जोत रुशनाईआ। कलिजुग जीव रहण हक्के बक्के, भेव अभेद सके कोई ना पाईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां नकेल पाए नक्के, चारों कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। वरन बरन बिन पुरख अकाल पत कोई ना रक्खे, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे सुणार्आ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान कलिजुग जीवां कोलो सारे अक्के, आपणा पल्लू रहे छुडाईआ। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ट मिलण धक्के, पंडत पांधे बैठे मुख भवाईआ। हरि के नाम पिच्छे मंगदे दाणे फक्के, पैसा पैसा रहे उगराहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सच तेरी सरनाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर कर भरवासा, इक्को इक्क ओट तकाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाशा, चार युग वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर हो के दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। गोपी काहन रचाई रासा, सीता सुरती राम परनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान सुणार् गाथा, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। भेव चकौंदे रहे त्रिलोकी नाथा, नाथ अनाथां पडदा लाहीआ। खेल खलौंदे रहे काया कासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा इक्क जणाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए रहे जोड़, हरि चरन ध्यान लगाईआ। कलिजुग अन्तम ठाकर बौहड़, ठोकर लग्गे सर्ब लोकाईआ। लग्गी प्रीत निभा तोड़, अद्धविचकार ना कोई तुडाईआ। नेत्र खोलू वेख गौर, चारो कुण्ट अन्धेरा छाईआ। कूडी क्रिया पावे शोर, वरन बरन करे लड़ाईआ। दह दिशा दिसे अन्धेरा घोर, तेरा नूर नजर कोई ना आईआ। लेखा चुके ना मोर तोर, मैं ममता ना कोई गवाईआ। काम क्रोध देवे ना कोई होड़, लोभ मोह हँकार ना कोई मिटाईआ। तेरा दरस कोई ना पाए बन्दी छोड़, लिव छुटकी सर्ब लोकाईआ। साचे भगत तेरी भगती करन बण के चोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सलाह, इक्को मता पकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा वेला गिआ आ, अन्तम लेखा लेखे पाईआ। बीस बीसा नैण रिहा उठा, सदी चौधवीं पडदा आप चुकाईआ। चार युग दे वेखणहार गवाह, चौकड़ी आपणे विच्च छुपाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार जिस हुक्मे अंदर लए चला, सो चार कुण्ट आपणा फेरा पाईआ। रहबर बण के आए नूरी खुदा, इक्क जहूर करे रुशनाईआ। जोती जामा वेस लए वटा, पंज तत्त खाक ना कोई हंढाईआ। शब्दी नाद दए सुणा, ढोला इक्को इक्क अलाईआ।

धुर दा लेखा दए जणा, बोध अगाधा कर पढ़ाईआ । भगत भगवान लए समझा, साची सिखिआ इक्क दरसाईआ । तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा मार्ग लए चला, चाल निराली इक्क जणाईआ । दो जहानां पन्ध दए मुका, बण के पान्धी फेरा पाईआ । साचा खेल दए वरता, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सारयां नूं इक्को वार बणाए गवाह, शहादत साचे घर भुगताईआ । अगों कर सके ना कोई नांह, भय सभ दे सिर उत्ते छाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक्क जणाईआ ।

गुर अवतार पीर पैगबर सारे डरदे, सीस सके ना कोई उठाईआ । रसना कहण प्रभ तेरे बरदे, दर दरवेश अलख जगाईआ । चार युग दी कीती हरदे, अग्गे तेरे हत्थ फड़ाईआ । जींदे तेरे मरदे, तेरे जीवण मरन विच्च कदे ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सद चल्लीए सच रजाईआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर डावां डोल, धीरज धीर ना कोई धराईआ । लक्ख चुरासी वेरवी फोल, कालब सिदक नज़र कोए ना आईआ । साची आवाज़ किसे ना सुणी कान कोल, हँस रूप ना कोई वटाईआ । दीन मज़ब दी बोली रहे बोल, पुरख अकाल हिरदे ना कोई वसाईआ । बण के चोर डाकू आपणी सुरत सवाणी घर किलिउं रहे टोल, बाहर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच्च धक्का लाईआ । उच्ची कूक कूक रहे बोल, रसना जिह्वा देण दुहाईआ । दरोही खुदाए साडे नहीं कुछ कोल, तेरा तेरी झोली पाईआ । कलिजुग जीव होए अनभोल, सुत्यां रैण रही विहाईआ । ना कोई जाणे पंडत पांधा रौल, मुलां शेख मसाइक कूडी तसबी मणका रहे भवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, साहिब आपणा दरस दिखाईआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर हो डरपोक, प्रभ अग्गे वास्ता पाईआ । गिरजिआं विच्च नज़र ना आए कोई पोप, मस्जिद अमाम रूप ना कोई वटाईआ । शिवदवाले मव्वु पिआ सोग, चिन्ता आपणा रंग रंगाईआ । गुरूदुआर गुर का शब्द गाए ना कोई सलोक, सोहला हरि ना कोई समझाईआ । दीन दयाल रक्खे ना कोई ओट, कलम शाही बैठे ध्यान लगाईआ । किसे दर प्रगट दिसे ना निर्मल जोत, जोती नूर ना कोई रुशनाईआ । आपणी आपणी मनसा चुगदे चोग, साचा रस रसन ना कोई लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर मारन आह, नाअरा इक्क सुणार्एआ । सच महिबूब किउं बैठा मुख छुपा, नक्राब पड़दा इक्क रखाईआ । पारब्रह्म प्रभ किउं पड़दा रिहा पा, ओढण आपणा दे उठाईआ । सारे निउं निउं तक्कण तेरा राह, चरन कँवल ध्यान लगाईआ । कवण वेला प्रभ आए इक्क मलाह, बेड़ा साचा लए चलाईआ । चार वरनां देवे सच सलाह, शब्दी ढोला इक्क पढ़ाईआ । तूं मेरा मैं तेरा सभ नूं दए समझा, बचया कोई रहण ना पाईआ । रल मिल सारे बणीए असीं गवाह, बिआन कलमबन्द कराईआ । बिन तेरे भगतां साङ्गी मन्

नी ना किसे रजा, हुक्म सीस ना कोई रखाईआ। पंज तत्त काइआ भरी गुनाह, पतित रूप सर्ब वटाईआ। अन्तम होए मात फनाह, ना सके कोई बचाईआ। साचे गुरमुखवां जप्पया तेरा नां, इष्ट इक्को इक्क रखाईआ। गुरमुख तेरा मंगण चरन धिआं, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरसिख तैनुं बणोंदे पिता मां, बण बालक तेरी गोद सुहाईआ। कर किरपा ठाकर साहिब सतिगुर आ पकड़ सभ दी बांह, फड़ बाहो गले लगाईआ। वेला छुपण दा रिहा ना, बीस बीसा रिहा सुणार्एआ। सदी चौधवीं नेत्र नैण रही उठा, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। कवण कूटे मेरा परवरदिगार बेनजीर सच तस्वीर लए प्रगटा, जाहर जहूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरे दर अलख जगाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर बोल अलक्ख, अलक्ख अलक्खना रहे ध्याईआ। अगम्म अथाह हो प्रतक्ख, बेपरवाह रूप वटाईआ। साचा साडा दे हक, हकीकत वेख थाउं थाईआ। भगत भगवान साचे रक्ख, जो तेरे तैनुं रहे धिआईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत राए धर्म अगगे हक, होका इक्को वार सुणार्एआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिखिआ इक्क दृढ़ाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बरो, प्रभ मैं साचा दया कमावांगा। निरगुण हो के सरगुण मूल चुकावांगा। बन्नु के सच असूल, पिछला मसूल सर्ब मिटावांगा। नार मिले हरि कन्त कन्तूहल, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ावांगा। धुर दा नाम इक्क माअकूल, मुहब्बतरखाने विच्च रखावांगा। जिस गृह मन्दर वड़ के कोई ना जाए भूल, सो घर इक्को इक्क जणावांगा। जिथे ब्रह्मा विष्णु शिव धुर फरमाना करन कबूल, साचा हुक्म इक्क वरतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा।

गुर अवतार पीर पैगम्बरो करो ध्यान, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवान, साचा खेल खालक खलक कराईआ। सदी बीसवीं हो प्रधान, सच प्रधानगी इक्क कमाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले भगत भगवन्त कट्टे करे आण, धुर दा लहणा झोली पाईआ। चार वरन दी चुक्के आण, अठारां बरन दी लहे मकाण, जात पात मकबरयां विच्च दबाईआ। सभ दा नगमा इक्को दस्से कलाम, साचा नाम शब्द बोल बेजबान, जाबर जबर एका हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप रचाईआ।

साचा खेल करे भगवान, कलिजुग अन्तम वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो तुसीं दस्स के आए मेरा निक्का जिहा निशान, अन्त कोई कहण ना पाईआ। अन्तम सारे छड्ड के आए मैदान, चरन कँवल लई सरनाईआ। रसना जिह्वा दे के आए बिआन, कलम शाही लिख के आए निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बलधारी आपणा फेरा पाईआ। जिस दे अंदर हुक्म बाहर



चले फ़रमान, फ़ुरो मंतर सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ।

साची करनी सच कमावांगा। सूरा सर्बग नाम अखवावांगा। दो जहान हो प्रगट, प्रगट आपणी धार वखावांगा। कलिजुग कूड़ पसारा मेट हट्ट, सतिजुग साचा राह वखावांगा। जो लेखा साचे ताज उते दिता दस्स, तिनां चौहां माण दिवावांगा। माझा मालवा दुआबा जम्मू नहीं एह श्री भगवान दा सच्चा इकठ, जिस अंदर वड़ के आपणा खेल रचावांगा। इकी अस्सू पिछला लेखा आवां दस्स, अगला हाल फेर प्रगटावांगा। पट्टेदारी दा सभ नूं देवां हक, जो गुरमुख आपणी चरनीं लावांगा। कर के कौल ना जावां नट्ट, सचखण्ड दुआरउं मुड़ के आ के आपणी धार वखावांगा। जिस पंदरां कत्तक दा दो जहान राह रहे दस्स, तिस पंदरां कत्तक नूं गुरमुखो तुहाड्डी गोद सुहावांगा। हरि का भेव सदा अकथ, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां तुहाड्डे सामूणे ब्यान समझावांगा। कोई चुक्क ना सके अगों अक्ख, आखर आपणा हुक्म वरतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लहणा आप मुकावांगा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस झुकाउंदे, बेअन्त तेरी वड्डिआईआ। मस्कीन अधीन तेरा ढोला गौंदे, यकीन तेरे चरन रखाईआ। यामबीन तेरा मसला इक्क पकौंदे, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। दर दरवेश तेरी सेव कमाँंदे, हुक्मरान तेरी वड्डिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे सीस निवाईआ।

सीस निवौण दी रहे ना बाकी, हरि बकता आप जणाइन्दा। तुहाड्डी मनजूर कीती अन्त आखी, आखर आपणी कार कराइंदा। पंदरां कत्तक नूं इक्को वार मरावे झाकी, दूजा दर गुर पीर पैगम्बर नजर कोई ना आइंदा। इकी अस्सू साचा अवस पावे काठी, कठोर खेल इक्क कराइंदा। जिस दी किसे ना लम्भी साची सारवी, सो साख्यात वेस वटाइंदा। निक्का सुनेहडा देंदा रिहा खाणी बाणी पाती, शास्त्र सिमरत वेद पुरान आपणी मातर नालों संख असंख हिस्सा आप वंडाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सभ दा वेख वखाइंदा।

लेख वखाए लिखणहारा, लिखत दए जणाईआ। जिस ने कीआ आदि पसारा, सो अन्तम वेखे बेपरवाहीआ। कागाज कलम शाही दा चुक्के उधारा, उजरत सभ दी दए मुकाईआ। जांदी वार निउं निउं सारे करन निमस्कारा, सजदा सीस इक्को इक्क झुकाईआ। तेरा खेल तूं ही परवरदिगारा, तेरा ऐब बेऐब नजर किसे ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर लाशरीक सांझे यारा, सच तौफ़ीक तेरे विच्च समाईआ। जुग चौकड़ी सभ नूं देंदा रिहों लारा, इशारायां नाल हुक्म मनाईआ। सभ ने तक्कया सभ ने वेख्या पारब्रह्म नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग तूं बणया रिहों कुआरा, आपणा अंग ना किसे छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए समझाईआ।

कुआरा रिहा मैं चार युग, भेव किसे ना आइआ। अन्तम औध गई पुग, लेखा लिख्त लेख जो समझाइआ। साची धारो आपे उठ, आप आपणा वेस वटाइआ। प्रेम प्रीती अंदर तुष्ट, गोबिन्द इक्को वेख वखाइआ। जिस नूं मेहरवान हो बणाइआ पुत्त, सो सपूत गोद टिकाइआ। अन्तम उहदे नालों रुस्स, जग मार्ग खेल रचाइआ। सच सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्लाइआ।

खोल्ले भेव श्री भगवन्त, गुर अवतारां दए जणाईआ। पिता पूत इक्को मंत, सोहँ राग राग अलाईआ। अंगीकार कर के लाइआ अंग बण के कन्त, नार इक्को इक्क वड्डिआईआ। जिस दी आप बणाई बणत, मात पिता नजर कोई ना आईआ। जिस दी महिमां कर के गए साध सन्त, पीर पैगम्बर सिपत सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा दए उठाईआ।

कुआरपन दिता छड्ड, करया खेल अपार। निरगुण हो के निरगुण लिआ लभ्भ, गोबिन्द मेला मीत मुरार। ना कोई मास नाडी हड्ड, ना कोई रक्त बूंद आधार। इक्को नूर जोत प्रकाश, जोती जोत सच प्यार। अन्तम पुंनी पूरी आस, आसा विच्च आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। बण सुहागी हरि करतार, आपणा भेव जणाईआ। जोती शब्दी सच विहार, घर सच वज्जी वधाईआ। एका मन्दर पुरख नार, बैठे सेज सुहाईआ। एका गीत रहे उच्चार, मंगल इक्को इक्क सुणार्एआ। एक नाद धुन करन पुकार, इक्को कूक आवाज रहे लगाईआ। इक्को मीत मित्र प्यार, इक्को सज्जण नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संजोगी खेल कराईआ।

धुर संजोगी हो बणया सुहाग, हरि सुहागी सर्ब समझाइंदा। सभ दे नालो कीता आप त्याग, बिन गोबिन्द दूजा नजर कोई ना आईंदा। घर मन्दर बहि के साचा दीप जगाया चिराग, तेल बाती संग ना कोई रखाइंदा। इक्को कहणी गई भाख, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नाम ना कोई जणाइंदा। नाता जुडया पिता पूत मात, बालक बाला रूप वेख वखाइंदा। दूजी धार पुरख समराथ, नारी कन्त रूप वटाइंदा। तीजी धार खेल तमाश, निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। सम्बल नगर वेखो खास, खालस आपणा नूर प्रगटाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा सति चन्द चमकाइंदा। पारब्रह्म दी नजर ना आए जात, वरन बरन ना कोई समझाइंदा। सच सुणाए इक्को गाथ, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लहणा देणा वेखो मस्तक माथ, पूरब पड़दा आप चुकाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दी करो जाच, पड़ताल साचा हुक्म सुणाइंदा। हिरदे हरि जू कवण रिहा वाच, वास्ता पुरख अकाल नाल रखाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार चारों कुण्ट फिर फिर अन्तम देण आख, आखर सच सच सुणार्एआ। प्रभू किसे दा खुल्लया नहीं वेख्या ताक, कलिजुग सन्त देण दुहाईआ। बाहरो काया माटी लए पोच पाच, अंदरो नार कमजात

रूप वटाईआ। अट्टे पहिर रहण उदास, काम वासना हवस वधाईआ। अन्त कहण साडे अंदर जोत प्रकाश, सति पुरख साडे अंदर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, घर घर लेखा रिहा चुकाईआ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर करन हाए, हौका तेरा नाम लगाईआ। बौहड़ी बौहड़ी मार्ग गए भुलाए, दुहाई दुहाई तेरे नाम खुदाईआ। साचा नूर किसे नजर ना आए, निज मन्दर चढ़ के दरस कोई ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान गुर गुर बाणी पढ़ पढ़ रहे सुणाए, बाण निराला तीर ना कोई लगाईआ। बिन करनीउं बिन तरनीउं बिन प्रभ दी सरनीउं आपणी जड़ रहे उखड़ाए, बूटा फेर कोई ना लाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले इक्को पुरख अकाल रहे मनाए, दूजा नजर कोई ना आईआ। कर किरपा जिनां आपणा भेव खुलाए, पड़दा दूई द्वैत रहण ना पाईआ। तिनां अक्खर इक्क समझाए, निम्मां निम्मां मेघ बरसाए, प्रेम प्रीती इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सभ दा लहणा आप मुकाईआ।

सभ दा लहणा मुक्के मुक्के कलेश, कलकाती रहण ना पाईआ। सभ दा देणा देवे दर दर वेखे दरवेश, घर घर अलख जगाईआ। नेत्र रोवे सहँसर मुख बोले शेश, शहनशाह तेरी इक्क सरनाईआ। तुध बिन कोई ना माणे मेरी सेज, सुंजीं दिसे जगत लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कोई ना दिसे तेज, तिरवी धार ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच वर, सच तेरी सरनाईआ।

जिस सरनाई तक्की एक, एकंकार आप जणाइंदा। तिस दो जहानां देवां टेक, एथे ओथे आप बचाइंदा। त्रैगुण ना लावे सेक, अग्नी हवन ना कोई तपाइंदा। कूड़ा करे ना कोई भेख, मार्ग सच सच समझाइंदा। अन्त वखावे आपणा देस, जिस घर साचा आसण लाइंदा। जुग चौकड़ी सदा रहे हमेश, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आपणे हत्थ रखाइंदा।

साचा हुक्म रक्खे हत्थ, दूसर डोर ना कोई फड़ाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, अगम्मड़ी कार कमाईआ। पिछला लहणा देणा करे भट्ट, अग्गे मार्ग इक्क समझाईआ। कूड़ी क्रिया बुरज जावे ढट्ट, माया ममता हउमें हंगता गढ़ नजर कोई ना आईआ। सति सरूप शाहो भूप इक्को देवे ब्रह्म मत, पारब्रह्म करे नाम पढ़ाईआ। बीज बीजे आपणे वत, बण किरसाणा हल्ल चलाईआ। अन्तम वेखे पत फुल डाली रंगे आपणी रत, रती रत नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप जणाईआ।

साचा लेखा जाणे बेपरवाह, बेपरवाही विच्च समाइंदा । शाह भबीखण लहणा देवे चुका, पिछला मूल मूल मुकाइंदा । आपणी हत्थी आपणी वस्त देवे आ, निउं निउं सीस जगदीस झुकाइंदा । एथे ओथे दो जहान तेरा संदेसा प्रभ सतिगुर दिता सुणा, बण सेवक सेव कमाइंदा । निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरे दर ते वेख चढे चा, चाउ घनेरा इक्क जणाइंदा । कलिजुग अन्त बणिउं आप मलाह, बेडा आपणे कंध उठाइंदा । फोल फोलाए थल अस्माह, उच्चे टिल्ले परबत खोज खोजाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी दात पुरख समराथ, तेरी भेटा अन्त चढाइंदा ।

तेरी भेटा अन्त चढावांगा । आपणा लेखा तेरे कोलो मुकावांगा । त्रेता युग दा चेता फेर करावांगा । नेता इक्को राम समझावांगा । अगेता पछेता सभ दा मेल मिलावांगा । जो नेत्र आ के पेखा, सो बिन रसना बोल समझावांगा । पुरख अकाल दीन दयाल कलिजुग अन्तम सभ तोल खोह लिया आपणा ठेका, बोली उते गुरमुख किसे हट्ट ना कदी विकावांगा । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विष्ण ब्रह्मा शिव लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त इक्को नजरी आए नेता, हुक्म इक्को इक्क दृढावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद वसीए ठाकर तेरे घर, घर मिले इक्क वड्डिआईआ । महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, सभ दी कीती करनी लए हर, अन्तम पूरा कर वर, प्रगट हो नरायण नर, निरभौ चुका भय डर, भाउ इक्को इक्क सर्ब जणाईआ ।

**\* पहली कत्तक २०२० बिक्रमी जेटूवाल दरबार विच्च \***

सतिगुर खेल सूरे सरबन्ग दा, शाहसवार शहनशाह वड्डी वड्याईआ । आर पार दो जहान जो सतिगुर लँघदा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार चलाईआ । सो मेहरवान धरती उते आ के कदे ना संगदा, दूर नेडे मुरीद मुशर्द वेखे थाउं थाईआ । काया चोली कोटन जोजन दूर रंगदा, निज नेत्र नेरन नेर नजरी आईआ । जो मालक आत्म सेज पलंग दा, अट्टे पहर घर बैठा डेरा लाईआ । उह सतिगुर बिआस रावी झनाब पैरां नाल कदे ना लघँदा, सति सरूप रूप अनूप वखाईआ । एहो खेल सच्चे अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ । जिस दा लेख बिआन कोई बन्द ना बणावे छन्द दा, मुशंदगी अवर ना कोई रखाईआ । जुग जन्म कर्म मेहरवान मेहर निगह नाल गंडुदा, हत्थी गंडु ना कोई वखाईआ । खेल वखा सुहागी रंड दा, घर खुशी इक्क प्रगटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ ।

गोबिन्द लँघिआ दो जहान, अद्धविचकार सके ना कोई अटकाईआ । चार कुण्ट दह दिशा जो अन्तर आत्म करे ध्यान, तिस मिले सैहज सुभाईआ । शाहसवारा नौजवान, जगत वेस पंज तत्त वखाईआ । अन्तर सति सरूप मेहरवान, शब्द रूप वटाईआ । दीवा बाती घर घर वेखे जोत जगा महान, नूर जहूर कर रुशनाईआ । बेऐब खुदाई बण के परवरदिगार सांझा यार, दूर नेडे सारे रिहा तराईआ । जगत बिआस ना कोई विचार, जगत सतलुज ना कोई प्यार, जगत रावी ना कोई आधार, सभ दी भावी आपणे हत्थ रखाईआ ।

जिस दा लेख इक्को वार होए मुसावी, मुसलसल रूप ना कोई वटाईआ। सतिगुर ना लवे ते ना देवे तकावी, तकवा इक्को इक्क जणाईआ। जिस दा लेख ना कोई लिखे कावी, बेअथाह सिपत सालाह बाहरा रूप वटाईआ। सो सतिगुर दूर दुराडा घर विच्च घर मिले जा, जगत नेत्र नजर किसे ना आईआ। अंदरे अंदर आपणा लेखा दए लिखा, लेखा लिखे बिन कलम शाहीआ। सो सतिगुर पार किनारे सारे रिहा करा, तट्ट आपणा इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द गुर गुरसिख गोबिन्द गोबिन्द गुरसिख रूप वटाईआ।

हुक्मरान सच हुक्म करदा, हरि करता वड वडयाईआ। हुक्मे अंदर नूरी जोत धरदा, जोती जाता बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर शहनशाह बणदा, शाह पातशाह आप अखवाईआ। हुक्मे अंदर तखत चढ़दा, सच सिंघासण सोभा पाईआ। हुक्मे अंदर सीस जगदीस ताज धरदा, तखत निवासी इक्क हो जाईआ। हुक्मे अंदर आदि जुगादि खेल करदा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैगंबर घल्लदा, विष्ण ब्रह्मा शिव समझाईआ। हुक्मे अंदर लख चुरासी घाडन घड़दा, त्रै पंज मेला सैहज सुभाईआ। हुक्मे अंदर लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड रचदा, रचना आपणी आप रचाईआ। हुक्मे अंदर घट घट निरगुण नूर धरदा, जलवागर वड्डी वडयाईआ। हुक्मे अंदर जुग जुग वेस करे नर हरि दा, हरि करता भेव कोई ना पाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैगंबर बणाए बरदा, दर टांडा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मरान इक्को नजरी आईआ। हुक्मरान दा सुण के हुक्म, चार जुग दे हाकम भय रखाईआ। जिस दी निरगुण धारों बण के आए तुख्म, सो आपणी तासीर वेखे बेपरवाहीआ। चोला हंडौंदे रहे पंज तत्त भूतन, सरगुण रूप अनूप वटाईआ। फिरदे रहे चार कुण्ट दहि दिश बहुरूपन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म इक्क वरताईआ।

हुक्मे अंदर आए दर, घर बैठे सीस झुकाईआ। हुक्मे अंदर लए फड़, हुक्म इक्को इक्क रखाईआ। हुक्मे अंदर गए मर, हुक्मे अंदर जीवत रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ। हुक्मे अंदर आए दरवेश, दर बैठे अलख जगाईआ। हुक्मे अंदर होए पेश, अदालत साची फेरा पाईआ। हुक्मे अंदर वेख्या इक्क नरेश, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

हुक्मे अंदर आवे डर, भय इक्को नजरी आईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पीर पैगंबर सलाहवां रहे कर, इक्क दूजे वल ध्यान लगाईआ। धुर दा डाकू चोर वड्डीआ साडे घर, जिस दा खुरा खोज समझ सके ना कोई राईआ। सुत्तयां जागदयां सारे लए फड़, बचया कोई रहण ना पाईआ। चारों कुण्ट वेखो किधर जाईए चढ़, उप्पर थल्ले इक्को नजरी आईआ। आपणी करनी करतब सारे गए हर, हरि का भेव समझ कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रिहा रचाईआ।

भेती हो के आया नेड़े, दुर दुराडा पन्ध मुकाईआ । वसणहारा साचे खेड़े, कुण्डी खिड़की सभ दी रिहा खुलाईआ । वेखण आया चार जुग दे दुनी झेड़े, शाह पातशाह बेपरवाहीआ । दीन मज्जब केहड़े केहड़े, कलमा कलाम शब्द नाम कवण जणाईआ । कवण बंनू बंनू बैठे बेड़े, तुला चप्पू कवण हत्थ उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपराहीआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्क दूजे वल रहे तक्क, नीवीं नजर ध्यान लगाईआ । साडा नबेडा करना एस ने हक़, हकीकत जिस दी ढोला गाईआ । चार जुग दी करनी कोलों करता पुरख गिआ अक्क, अकल कलधारी आपणी खेल वरताईआ । शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जो आए दस्स, दहि दिशा हुक्म वरताईआ । सो कलिजुग अन्त पल्लू छुडा सभ तों गई नस्स, लम्भयां हत्थ किसे ना आईआ । कलिजुग जीव साध सन्त जगत कुकर्म विच्च गए फस, फ़ैसला हक़ ना कोई कराईआ । माया ममता हउमें हंगता कूड़ी क्रिया पाई नत्थ, चारों कुण्ट रही भवाईआ । सच सरनाई बेपरवाही हरि रघराई पुरख अकाल दीन दयाल कोई ना जाए ढठू, मस्तक टिक्का धूदी खाक ना कोई रमाईआ । जगत विचार कूड विहार हो के बैठे अड्ड, सांझा रूप नजर कोई ना आईआ । बण दुहागण कन्त सुहागी बैठे छड्ड, सेज सुहञ्जणी सोभा कोई ना पाईआ । अन्तम सभ दी मुकी हद्द, हासल नजर कोई ना आईआ । श्री भगवान नौजवान शब्द निशान पंज तत्त काया किसे लौण ना देणा अज पुज्ज, भेव अभेदा आपणे हत्थ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा समझाईआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्क दूजे नूं दस्सण, उच्ची कूक ना कोई सुणाईआ । श्री भगवान किसे ना देवे नस्सण, दो जहान बैठा घेरा पाईआ । सभ दे खाली कीते हत्थन, वस्त नजर कोई ना आईआ । आपणा भाणा आया वरतण, पिछला लेखा लेख चुकाईआ । कलिजुग अन्तम आया परतण, प्रतीनिध इक्क हो जाईआ । गुरमुख सन्त सुहेले आया परखण, नाम कसवट्टी हत्थ उठाईआ । जन भगतां देण आया दरसन, दीद ईद चन्द करे रुशनाईआ । जुग जन्म दी मेटण आया हरसन, हवस होर रहण ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण करो सलाह, वेला अन्तम गिआ आईआ । पुरख अबिनाशी घट घट वासी जोती जामा लिआ पा, पारब्रह्म प्रभ आपणा नूर धराईआ । रल मिल सारे साचा सोहला गीत अगम्मी लवो गा, बिन रसना जिह्वा उच्ची कूक सुणाईआ । इक्को ढोला गाओ तू ही नूरी इक्क खुदा, जलवागर बेनजीर तेरी सच सरनाईआ । सरन सरनाई लागो पाउँ, पीर पैगम्बर फ़िदा हो कुरबान, जगत करबला जिस दी मिसाल नजर कोई ना आईआ । दोए जोड़ करो परनाम, सजदा इक्को इक्क सलाम, तेरा हुक्म मेहरवान, महिबूब तेरी ओट तकाईआ । तेरा कलमा नबी कलाम, तेरा मन्दर झुल्ले निशान, दो जहान वज्जे तेरी वधाईआ । हउँ बालक बाल अजाण, दर मंगीए इक्को दान, किरपा

कर श्री भगवान, मेहर नजर बिन नैण झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर सच मिले वडयाईआ।

सारे दर ते मंगो मंग, मांगत बण भिखारी। साहिब सुल्तान सूरे सर्बंग, तेरे चरन कँवल निमस्कारी। जुग चौकड़ी गई लघँ, आई कलिजुग अन्तम वारी। सृष्ट सबाई होई नंग, चारों कुण्ट कुडिआरी। सच ना वज्जे कोई मरदंग, साचा राग ना कोई धुनकारी। साचा नीर ना धारा गंग, अमृत सीर ना कोई फुहारी। साडी करनी सभ दी होई बन्द, तेरी जोत होई उजिआरी। तेरे दर गहर गम्भीर तेरा ढोला गाईए छन्द, सोहँ रूप सति जैकारी। निरवैर पुरख दे इक्क अनन्द, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शाह पातशाह तेरी सरदारी। साडा अगला मुक्कया पन्ध, पिछली तोड़ निभा यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे चरन कँवल बलहारी।

वर दे श्री भगवान, दर तेरे अलक्ख जगाईआ। तूं करता कादर मेहरवान, बेनजीर तेरी शहनशाहीआ। बण याचक मंगे दान, पीर पैगम्बर गुर अवतार झोली डाहीआ। साडा लेखा मुके दो जहान, पान्धी रहण कोई ना पाईआ। चार जुग दा तेरा ज्ञान, प्रभ ठाकर तेरी झोली पाईआ। तेरी खलकत होए परवान, खालक तेरे हत्थ वडयाईआ। सालस बण आप भगवान, आलस निंदरा दे मिटाईआ। खालस रूप गुरमुख कर प्रधान, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सति सतिवादी दे निशान, निशाना इक्को नजरी आईआ। दो जहान करन परनाम, सजदा सीस इक्क झुकाईआ। तरवत निवासी नौजवान, शहनशाह तेरी ओट तकाईआ। साडा इक्को वार अखीरी लै बिआन, कलम शाही लेखा दे मुकाईआ। तेरी लहर दा चढ़या इक्क तूफान, तोबा तोबा सारे रहे सुणाईआ। असीं तेरे दर बाले बण के आए महिमान, महिमान निवाजी तेरे घर विच्च इक्को नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचे मंग मंगाईआ।

सभ ने रल के मंगी मंग, मांगत रहे कुरलाईआ। लए अंगढ़ाई सूरा सरबन्ग, शाह पातशाह रिहा सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सभ ने माणया अनन्द, इष्ट देव जगत मनाईआ। ढोले गा गा धुर दे छन्द, जीव जंत पढ़ाईआ। नाता जोड़ जीउ पिण्ड, पंज तत्त तन हंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेश इक्क सुणाईआ।

धुर संदेश सुणो गुर अवतार, पीर पैगम्बर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे रहे विचार, अंदर बाहर ध्यान लगाईआ। जिस नूं मन्नदे रहे निरगुण निरवैर निराकार, परवरदिगार बेपरवाहीआ। सो अन्तम कल सभ नूं लए संभाल, आपणी गोदी आप उठाईआ। शाह पातशाह शहनशाह करे आपणे भाल, हर घट वेखे थाई थाईआ। जगत दलाली करे ना कोई दलाल, सालस इक्को इक्क वखाईआ। करे खेल प्रभू कमाल, काबलीअत सभ दी आपणी झोली पाईआ। जिस दी अक्खरां नाल दे के आए मिसाल, सो निशअक्खर

आपणी सेवा लाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क उठाईआ ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण तोहे तौपीक, प्रभ तेरे हत्थ वडयाईआ । सीस झुल्ले छत्तर तेरे जगदीस, जगदीशर तेरी सरनाईआ । असीं दस्सया निशाना निक्का निक्का बीस बीस, भेव समझ कोई ना आईआ । जे पता हुंदा तूं साडे खाली करने खीस, लहणा देणा आपणी झोली पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सोभा पाईआ ।

श्री भगवान कहे प्रभ एक, एकंकार आप जणाईआ । धन्न भाग तुहानूं दिती टेक, सिर आपणा हत्थ रखाईआ । चार जुग नहीं कोटन जुग गुर अवतार पीर पैगम्बर दिते भेज, लोकमात सेव लगाईआ । नूरी निरगुण दे के तेज, तेज चमक धार मिलाईआ । घर मन्दर बह सुहाई सेज, आत्म परमात्म गंढ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाईआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बर उठ खलोते, गल पल्लू इक्को पाईआ । प्रभू तेरा भेव ना कोई खोले गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे पुत्त पोते, पिता पुरख अकाल तेरी समझ किसे ना आईआ । ना कोई जाणे वड्डे छोटे, चार जुग दी चौकड़ी इक्को वेर नजरी आईआ । तेरे हुक्मे अंदर बन्नू लंगोटे, लोकमात गए वाहो दाहीआ । तेरे नाम दे फड के सोटे, जगत जीवां जंतां भय जणाईआ । कूड़ी क्रिया करदे रहे टोटे, नाम खण्डा तेरा चमकाईआ । भाग लगाए पंज तत्त काया कोटे, घर मन्दर सोभा पाईआ । तेरे दर्शन जुग चौकड़ी नैण लोचे, लोचण तेरा ध्यान रखाईआ । तेरे औण दे दस्सदे गए मौके, बीस बीसा इक्क जणाईआ । दो जहान कोई ना रहे विच्च धोखे, धुखदी कहाणी आए सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ ।

गुर अवतार पीर पैगम्बरो सुणो इक्क दलील, हरि सतिगुर आप जणाईआ । सदी बीसवीं अन्तम सभ दी इक्क अपील, अपरंपर सुआमी वेख वरखाईआ । इक्को निरगुण बणे वकील, वुकला नजर कोई ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ ।

श्री भगवान तेरा वेख दरबार, सभ बैठे सीस झुकाईआ । पता नहीं की करे करतार, करता पुरख आपणी कल वरताईआ । जिस ने चार जुग दे कट्टे कर गुर अवतार, इक्को डोरी तन्द बंधाईआ । सिर सके ना कोई उठाल, नेत्र नैण चरन ध्यान रखाईआ । भेस अव्वलडा कर गोपाल, बेमिसाल कार कमाईआ । चले अगम्म अवल्लडी चाल, समझ सके ना कोई राईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे खुशी मनाईआ ।



दर घर साचे खुशी मनौंदा ए, परम पुरख प्रभ मेहरवान। धुर दा हुक्म इक्क सुणौंदा ए, दो जहानां हुक्मरान। नव नौं चार पिच्छों फेरा पौंदा ए, जुग करता हो प्रधान। सभ दा लहणा मूल चुकौंदा ए, देवणहार नौजवान। अगला मार्ग आप वखौंदा ए, सृष्ट सबार्ई दे ज्ञान। धुर दा भाणा आप वरतौंदा ए, ना कोई मेटे विच्च जहान। गुर अवतार पीर पैगम्बरां आपणी गोद बहौंदा ए, पिछला लेख चुकाए आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस वटाए श्री भगवान।

श्री भगवान वेस वटौंदा ए, महिमा अकथ्य कथी ना जाईआ। निरगुण नूर जोत धरौंदा ए, समरथ पुरख नजर किसे ना आईआ। आपणा हुक्म आप वरतौंदा ए, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। धाम अव्वलडे सोभा पौंदा ए, तखत निवासी इक्क शहनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बुलौंदा ए, धुर संदेसा देवे आण। कल कल्की आपणा नाउँ धरौंदा ए, जोधा सूरबीर बलवान। डंका इक्को इक्क सुणौंदा ए, सच झुलाए धुर निशान। थित वार इक्क वखौंदा ए, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मंगया पूरा करे दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची कार आप कमौंदा ए।

साची कार कमाए एक, एकंकार वड्डी वडयाईआ। आदि जुगादि जिस दी टेक, साहिब सुलतान सच्चा शहनशाहीआ। कलिजुग अन्त अव्वलडा भेस, वेस कोई समझ सके ना राईआ। रूप रंग ना कोई रेख, तत्त्व तन ना कोई जणाईआ। निरवैर हो के खेले खेड, खालक खलक फेरा पाईआ। गुर अवतार जिस दिते भेज, भजन बन्दगी कलमा मात समझाईआ। सो आत्म अन्तर लए वेख, निज रूप पडदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ।

धुर संदेसा देवण जोग, वड जोगीशर दया कमाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा इक्को इक्क संजोग, दूजा नाता ना कोई बणाइंदा। परदानशीं दर बरदा मुख नक्राब लाह देवे दरस अमोघ, जलवा नूर जहूर जोती जाता डगमगाइंदा। लेखा जाण लोक परलोक, नाम सुणा सच सलोक, सोहला ढोला राग नाद धुन इक्को इक्क उपजाइंदा। जिस दा खेल कोई ना सके सोच, सोच समझ बाहर गुप्त जाहर आपणी धार चलाइंदा। सो साहिब पुरख अकाल आपे जाणे आपणी मौज, मुफलस शाह आपणा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा।

गुर अवतार पीर पैगम्बर रल के कहण असीं लाए जोर, जोरावर अग्गे इक्को अर्ज सुणाईआ। असीं उह जिनां लोकमात दिता तोर, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। कलिजुग अन्त नहीं होर, होका दे के दए सुणाईआ। की होया जे तेरी सृष्टी हो गई ठग चोर, प्रभू तैनुं गई भुलाईआ। असीं अन्त एसे कारन तेरे हथ्य विच्च दे के आए डोर, आपणे जुमे बात ना कोई रखाईआ। तेरा मंतर फुरना दस्स के आए फोर, फौरन तेरा हुक्म

सीस जगदीस टिकाईआ । तेरा मन्दर महल्ल अट्टल दस्स के आए नाल गौर, गहर गम्भीर अच्छी तरा समझाईआ । तेरी सृष्टी दी तैनुं लोड़, असीं बैठे पल्लू छुडाईआ । उठ वेख जा चढ़ के घोड़, असव आपणा लै दौड़ाईआ । असीं एथे बैठे मार ताड़ी मचाईए शोर, तेरी करनी वेख खुशी मनाईआ । आपणयां भगतां जाई बौहड़, जो तेरा बैठे ध्यान लगाईआ । कूड़ विकार ओनां कोलों होड़, जा के सेवादार बण आपणी सेव कमाईआ । सानूं इक्को तेरे मिलण दी लोड़, तूं मिल पिआ पिच्छा कोई याद ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवाईआ ।

गुर अवतार किहा तुसां सच्च, प्रभ सज्जण सच्चे भाइआ । पहलों वरवावां तुहानूं जो मार्ग आए दस्स, लोकमात जीव जंत राह चलाया । किधर गई तुहाड़ी पूजा पाठ, सिमरन ध्यान कवण लगाया । कवण कूटे लुकिआ तीर्थ ताट, किनारा सरोवर सोभा कवण पाया । किधर गए शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान हट्ट, पंज तत्त त्रैगुण करके आए पढ़ाया । जे ओस वेले इक्को बेनन्ती करके नाम दस्सदे पुरख समरथ, झगढ़ा कोई रहण ना पाया । मैं आपणी चालाकी अंदर तुहानूं इशारयां नाल दिता दस्स, तुहाड़ी समझ विच्चों आपणी समझ बाहर रखाया । हुण कट्टे हो के कहन्दे प्रभू तेरे वस, इक्क तेरा ध्यान लगाया । लोकमात वेखो दीन मज्जब जात पात अद्धविचकार मार के बैठे वट्ट, बंनं बंनं वंड वंडाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, अक्खीं वेख्या हाल, अक्खां नाल दए वखाया ।

प्रभू सानूं वेखण दी नहीं लोड़, सारे कूक कूक सुणाईआ । जिधर वेखीए माणस ढोर, चम्म दृष्टी ध्यान लगाईआ । दरोही खुदाए दी होए चोर, ठग्गी तेरे नाल कमाईआ । गुर दर मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ट हरामखोर, हरि का रूप नजर किसे ना आईआ । जगत वासना रहे लोड़, आसा तृसना नाल मिलाईआ । तेरे नाल प्रीती कोई ना सके जोड़, चरन मंगे ना कोई सरनाईआ । आपणा बेड़ा आपे रहे रोड़, कलिजुग पिच्छों धक्के रिहा लगाईआ । असीं नेत्र तक्क के वेख्या नाल गोर, दह दिशा फेरा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरी सच मिले सरनाईआ ।

पुरख अकाल कहे मैं सच सुणावांगा । पहलों करके तुहानूं वस, सभ दा वास्ता आपणे नाल रखावांगा । पंदरां कत्तक सभ ने वखौणे खाली हत्थ, ताल हत्थां नाल वजावांगा । चरन कँवल इक्को जाणा ढट्ट, इष्ट इक्को इक्क समझावांगा । इक्को नाम लैणा रट, रट्टा दो जहान चुकावांगा । इक्को खोलू धुर दा हट्ट, बण वणजारा हट्ट वखावांगा । पिछला लहणा देणा कट्ट, अग्गे मार्ग इक्क लगावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल इक्क रचावांगा । साचा खेल इक्क रचावांगा । दर दरबार इक्क सुहावांगा । नर निरँकार इक्क अखवावांगा । तन शंगार इक्क जणावांगा । सीस ताज इक्क टिकावांगा । गुरू महाराज इक्क अखवावांगा । रक्ख लाज, पैज धरावांगा । मार आवाज भगत उठावांगा । साजण साज वेख वखावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोभा पावांगा ।

घर साचा इक्क सुहावांगा । निरगुण नूर प्रगटावांगा । शहनशाह आपणा रूप वखावांगा । सति सरूप भेव चुकावांगा । चारे कूट फोल फोलावांगा । सभ दे खाली कर ठूठ, भंडारा इक्को इक्क भरावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दरबार आप सुहावांगा ।

सच दरबार प्रभ लगाएगा । गुर अवतार पीर पैगम्बर बुलाएगा । पंच धार इक्क जणाएगा । पंचम मुख आप सालाहेगा । पंचम दुःख आप गवाएगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लहणा धुर दा आपणी झोली पाएगा ।

साचा लहणा धुर दी धार, हरि करता आपणे लेखे लाईआ । पंजां प्यारयां दे प यार, प्रेम प्रीती इक्क समझाईआ । सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात लए प्रगटाईआ राशट्रपत जो दे के आया तलवार, तरा तरा समझाईआ । सो भगत सुहेला विछड्या यार, घर साचे खुशी मनाईआ । पंदरां कत्तक ढहि के पए चरन दुआर, मस्तक टिक्का धूढी लाईआ । राजिंदर प्रशाद कहे पुकार, पुनह पुनह तेरी सरनाईआ । त्रेते जुग दा लथ्था उधार, कलिजुग अन्तम खुशी वखाईआ । किरपा कर हरि करतार, तेरे हत्थ मेरी वडयाईआ । सच धर्म दा तेरा राज, तेरे चरन मिली सरनाईआ । उच्ची कूक सुणावां आवाज, प्रेम गीत इक्को गाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा लेखा तेरे चरनां विच्च टिकाईआ ।

तेरा लेखा श्री भगवान, तेरे चरन भेट कराईआ । पंदरां कत्तक दिवस महान, तेरा गीत खुशीआं नाल सुणाईआ । दोए जोड बन्दना करां आण, निरगुण निरगुण तेरे दर सीस निवाईआ । तेरे अग्गे धरां किरपान, किरपानिध तेरे हत्थ फडाईआ । शाह भबीखण रक्खया माण, तीखन तृखा जगत चुकाईआ । इक्को नजरी आइउँ राम, राम राम रूप वखाईआ । पंज तत्त तेरी ना आई पहचान, जगत विहार समझ कोई ना पाईआ । जिस वेले मेरे छुटे प्राण, प्राण आपणी झोली पाईआ । ढाई सकिंट पहलों दिता ज्ञान, सूझ समझ इक्क बुझाईआ । अक्खां मीटीआं मेरी इक्को वार होई तैनुं प्रनाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ । तूं इशारे नाल किहा बाल अन्नाण, उठ उंगली लिया लगाईआ । लै के गिउँ सच मकान, सचखण्ड साचे बेपरवाहीआ । ओथे वेखे तेरे परवान, पंच बैठे सोभा पाईआ । मैं जा के करी प्रनाम, वाह वा तेरे नाम वज्जी वधाईआ । ओनां किहा बोल बिनां ज़बान, सच संदेस सुणाईआ । तेरा लेखा मुकिआ विच्च जहान, भाईआं नाल रल्लया भाईआ । पंदरां कत्तक असां निरगुण हो के लोकमात वेखण जाणा भगवान, निरवैर कवण धार खेल कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सभ दा लहणा देणा झोली आपे पाईआ ।

पंदरां कत्तक बीस बीसा आवेगा । पुरख अबिनाशी अगला पिछला सभ दा हाल समझावेगा । घट घट वासी, साची मण्डल रासी रास रचावेगा । ब्रह्मण्ड खण्ड कर दासन दासी, हुक्म

इक्को इक्क वरतावेगा । जन भगतां इक्क वार कर बन्द खलासी, बन्दीखाना तोड़ तुडावेगा । अग्गे जा कोई ना करे बदमुआशी, नेकी बदी आपणा हुक्म वरतावेगा । निरगुण सरगुण बण के साथी, सगला संग रखावेगा । जिस नूं कोई समझ ना सके पूजा पाठी, सो इक्को नाम दृढ़ावेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरिभगत लहणा देणा दो जहान बिन कमी इक्को सरनी विच्च मुकावेगा ।

सरन विच्च मुक्के लहणा, लेखा मंगे कोई ना राईआ । सतिगुर पूरे इक्को कहणा, दो जहान वज्जे वधाईआ । बिन साकों बणे सज्जण सैणा, सगला संग रखाईआ । जन भगतां भगवान नाल रल के बहिणा, रल मिल इक्को दर सोभा पाईआ । एह वक्त नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग फेर नहीं रहणा, कलिजुग अन्त इक्को एका वार दया कमाईआ । सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान जिस ने कहणा, तिस देवत सुर विष्ण ब्रह्मा शिव सारे लागण पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल इक्क रचाईआ ।

नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों रयाइत, पुरख अकाल इक्क रखाईआ । जुग जुग गुर अवतार पीर पैगंबरों कोलों करके कफ़ाइत, जन भगतां झोली रिहा भराईआ । ना कोई शरअ ना शराइत, शरीअत अवर ना कोई वखाईआ । इक्को हुक्म इक्को नाम इक्को कलमा इक्को हदाइत, प्रभ लग्गो इक्क सरनाईआ । चार वरन अठारां बरन बणो इक्क जमाइत, ज़ामन होवे बेपरवाहीआ । जन भगतो भगत दुआरे विच्च तुहाड़े उते करे अनाइत, आलम आलमीन समझ कोई ना आईआ । हरफ़ हरूफ़ तुलबा तालब ना करे कोई तवाइफ़, तशरीह दे ना कोई समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब मसाहिब इक्को नज़री आईआ ।

सतिगुर पूरा पुरख अकाल, अकाल पुरख दयावान अखवाइंदा । आदि जुगादि जुग चौकड़ी दीन दयाल, दीनां निध सुख सागर रूप वटाइंदा । लोकमात सचखण्ड बणा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्क वखाइंदा । भगत भगवान वेख लाल, गुरमुख गुरसिख रंग रंगाइंदा । चौह जुगाँ नालों वखरी चाल, अवल्लड़ी आप कराइंदा । इक्की अस्सू खेल पक्खोवाल, पक्ख धरती असव आप रखाइंदा । तिन्न कत्तक दे दान, पुरख नार भेव चुकाइंदा । नार पुरख इक्क भगवान, भगवन आपणा पड़दा लाहिंदा । पुरख नार इक्क ज्ञान, शब्द नाद इक्क सुणाइंदा । नार पुरख इक्क निशान, सतिगुर शब्द बिन हत्थां हत्थ वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा ।

साचा खेल कत्तक तिन्न, त्रै लोक लए जगाईआ । गुर अवतार पीर पैगंबर दिन रहे गिण, अट्टे पहर हिसाब लगाईआ । कवण वेला प्रभ प्रगटे आपणा चिन्नू, चानण करे नूर रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वडयाईआ ।

सच वड्डिआई पुरख नार, घर साचे आप रखाइंदा। सतिजुग दा सति विहार, साची धार आप बंधाइंदा। धुर दरगाह दा धर्म निशान, स्त्री पुरख आप फडाइंदा। सज्जा खब्बा हत्थ दोहां कर परवान, महिमां अकथ्य आप लिखाइंदा। आप रहे विच्च दरमयान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्क चार चार वंड वंडाइंदा।

इक्क अगगे चार सज्जे चार खब्बे। मेहरवान विच्च फबे। चार कुण्ट इक्को लम्भे। दहि दिशा सभ नूं सद्दे। दो जहान आपे भज्जे। शब्द रूप निरगुण गज्जे। शाहसवार सतिगुर सजे। कर निमस्कार गुरमुख दोए बद्धे। पंज प्यार प्रेम रस मधे। हरि संगत प्यार जुग चार हद्दे। कलगीधर निरगुण निरवैर अवतार, जोधा सूरबीर साहिब सुलतान इक्को फबे। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण के सेवादार, हुक्मे अंदर आवण बज्जे। करे खेल आप करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणी धार विच्चों आपे अगगे वधे।

**\* पहली मध्घर २०२० बिक्रमी जेटूवाल दरबार विच्च \***

निमस्कार नमो देव सुआमी, परवरदिगार बेपरवाहीआ। आदि जुगादी शाह सुल्तानी, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। निरगुण नूर जोत नुरानी निरवैर पुरख वड वडयाईआ। शब्दी शब्द बोध अगाध खेल महानी, खालक तेरा नूर जहूर इक्क रुशनाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव करन चरन ध्यानी, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाउँ निरँकारा पढ़न अगम्मी बाणी, ढोला सोहला इक्को राग अलाईआ। सो पुरख निरञ्जण वड मेहरवान तेरा मन्दर सच्चा पद निरबाणी, हरि पुरख निरञ्जण तेरी ओट इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

निमस्कार नमो देव प्रभ ठाकर, शहनशाह तेरी सरनाईआ। दीन दयाल गहर गम्भीर गुण सागर, बेअन्त तेरी वडयाईआ। पुरख अकाल करते कादर, मेहरवान बेनजीर रहमत तेरी इक्को भाईआ। सति सरूपी सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी नूरी चादर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। नमो देव प्रभ एक, एकंकार ओट रखाईआ। जुग चौकडी तेरा भेख, निरगुण समझ कोई ना आईआ। जुग चौकडी रिहा वेख, अनभव प्रकाश कराईआ। बेपरवाह किसे ना देवे भेत, अभेव आपणे विच्च छुपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण थोडा थोडा कीता हेत, गुर अवतार पीर पैगम्बर इशारे नाल उठाईआ। लोकमात मार ज्ञात पुरख अकाल खेल अगम्मी खेड, बण खलारी चाल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ।

निमस्कार नमो देव प्रभ, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। नित नवित तेरी किसे ना

लम्भी हद्द, हद्द समझ सके कोई ना राईआ। निरगुण सरगुण आपणी धारों कहु, प्रकाश प्रकाश नाल प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआरे बह के सभ दा पड़दा रिहों कज्ज, थिर घर सुआमी शब्दी रंग रंगाईआ। सच दुआरे मुकामे हक लाशरीक सच तौपीक इक्क कराए अगम्मी हज्ज, हज़रत जलवा नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरा वेख वखाईआ।

निमस्कार नमो देव प्रभ सज्जण, शहनशाह तेरी सरनाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत्त भाण्डे भज्जण, थिर कोई रहण ना पाईआ। कोटन कोट लोकमात मार ज्ञात निरगुण तेरी धार लम्भण, खोजत खोजत खोज थक्की लोकाईआ। चरन धूढी कोई ना करे मज्जण, सचखण्ड दुआर मस्तक टिक्का नाम ना कोई लगाईआ। ठाकर हो के आवें पड़दे कज्जण, साहिब हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ।

निमस्कार गुर देव सुआमी चरन कँवल गए झुक, सीस जगदीस निवाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा गुर अवतार पीर पैगम्बर कहण साङ्गा पैडा गिआ मुक्क, पान्धी नज़र कोई ना आईआ। जोत सरूप निरगुण वखा आपणा मुख, सो आपणी गोद लै बहाईआ। सरगुण हो के तेरा नाउँ वड्डिआई पंज तत्त काया मुख, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सालाहीआ। निगहबान हो के अन्तम पुछ, बेपरवाह झल्ली ना जाए तेरी जुदाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग बैठा रिहों लुक, तेरी समझ किसे ना आईआ। परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल नूरी धारों निरवैर आप उठ, मात पिता गोद ना कोई सुहाईआ। कर प्रकाश पुरख अबिनाश साची जोत, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। तेरा वसे धाम अव्वलडा सच्चा किला कोट, मन्दर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोई ना आईआ।

निमस्कार गुरदेव सुआमी, तेरे चरन कँवल बरदा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण दरवेश हाढ़े कहुदा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शाह पातशाह शहनशाह तेरे अग्गे कोई ना अड़दा, सीस सके ना कोई उठाईआ। तेरा खेल सीस धड़ दा, आत्म परमात्म आपणी वंड जणाईआ। दो जहान तेरा नाउँ नाम सति पढ़दा, निरअक्खर अखशर नाल मिलाईआ। सरगुण तेरे बिरहों विछोड़े अंदर मरदा, नित नवित्त बैठा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा भाणा जरदा, चरन कँवल मंगे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर दरवेश बैठे ध्यान लगाईआ।

निमस्कार नमो देव महिबूब, मुहब्बत तेरी इक्को भाईआ। महल्ल अट्टल वेख तेरा अरूज्ज, अर्श फर्श दोवें रहे शरमाईआ। मुकामे हक तेरा महिफूज, चार कुण्ट दहि दिशा नज़र किसे ना आईआ। तुध बिन तेरा देवे ना कोई सबूत, पड़दा सके ना कोई उठाईआ। पीर पैगम्बर सिफ्त कर के आए पंज तत्त कलबूत, काया काअबा दए जणाईआ। परवरदिगार

तेरे हत्थ हक हकूक, लाशरीक तेरी शरनाईआ। मेहरवान तेरी तौफ़ीक, तोहफ़ा दे बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना रहे फ़रीक, फिरका नज़र कोई ना आईआ। साचा कलमा दे हदीस, हज़रत इक्को कर पढ़ाईआ। वेख खेल आपणा बीस, बिस्तरे बैठे गोल कराईआ। दूर दुराडे आए तेरे नज़दीक, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द जो दस्सया ठीक, ठोकर सारे रहे खाईआ। पुरख अकाल तेरी कोई ना जाणे लीक, लकीर फ़कीर जगत लोकाईआ। सति सुआमी अन्तरजामी तुध बिन बणे ना कोई मीत, मित्र प्यारा नज़र कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी झूठी वेखी प्रीत, मुरीद मुशर्द गए भुलाईआ। साचा मिल्या ना कोई तबीब, बहत्तर नाड़ी फोल ना कोई फोलाईआ। अंदर वड के वस्सया ना कोई नज़दीक, दूर दुराडे नाता रहे जुड़ाईआ। चौदां सदीआं तेरी करदे रहे उडीक, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। धन्न भाग बेपरवाह दिती सानूं इक्क तौपीक, तेरे चरन कँवल सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवाईआ।

सीस निवाया दर परवरदिगार परदानशीन, मुख नक्राब दे उठाईआ। साडा पिछला चुका यकीन, यकमुशत बैठे डेरा ढाहीआ। अग्गे रहीए सदा अधीन, अदल अदालत तेरी इक्को भाईआ। पीर पैगम्बर होए मस्कीन, मुशकल तेरी झोली पाईआ। नूर इल्लाही यामबीन, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। तेरे कलमे कदे ना होए तौहीन, कायनात समझ कोई ना आईआ। लेखा कोई ना जाणे सीन, ऐन अक्ख ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर ठांडा तेरा नज़री आईआ।

दर ठांडा तेरा दरबार, दरगाह साची खुशी मनाईआ। पुरख अकाल एकंकार, आदि निरञ्जण तेरी रुशनाईआ। अबिनाशी करते तेरी धार, श्री भगवान समझ कोई ना पाईआ। पारब्रह्म तेरा विहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर वड्डा मिले वड्डी वड्याईआ।

दर वड्डा एकंकार, सचखण्ड खुशी मनाईआ। जलवागर शाहकार, शहनशाह आपणा आसण लाईआ। दूजा करे ना कोई आधार, अकल कलधारी आपणी खेल वखाईआ। गुर अवतार दर मंगण बण भिखार, नेत्र नैण नीर सर्ब वहाईआ। किरपा कर सिरजणहार, सति सुआमी तेरा अन्त कोई ना आईआ। सचखण्ड दुआर खोल कवाड़, थिर घर शब्दी रंग रंगाईआ। नव नौं चार आई हार, चौथा युग डेरा ढाहिंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान करन पुकार, गीता ज्ञान चरन कँवल सीस झुकाईआ। अञ्जील कुरान रोवण ज़ारो ज़ार, खाणी बाणी धीर ना कोई धराईआ। चरन धूढ़ी मंगण तेई अवतार, गुर दस झोली डाहिंदा। चारों कुण्ट अन्ध अंधिआर, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। जुग चौकड़ी जो लेखा दस्सया मात विहार, बिवहारी राह ना कोई वखाईआ। अन्तम सारे आए हार, हरि जू तेरी ओट सर्ब तकाईआ। पिछला लहणा देणा दिता निवार, बाकी लेख ना कोई वखाईआ। कट्टे होए तेरे दरबार, दर इक्को सच्चा नज़री आईआ। इकावन बावन भिखवया मंगण वस्त

दे आप निरँकार, निरगुण निरगुण आसा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, आसा सभ दी पूर कराइंदा।

आसा प्रभू करदे पूरी, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। तेरा रूप इक्को नूरी, नूर नुराने तेरी जोत सवाईआ। तेरा दर इक्को हज़ूरी, हज़रत वड्डे वड्डी तेरी वडयाईआ। चार युग दी टुटी सर्ब मगरूरी, मुफलस बैठे ध्यान लगाईआ। लोकमात तेरे नाम दी कर के आए मजदूरी, बण मजदूर सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी दस्स के आए कूडी, कूडी क्रिया बंधन ना कोई वरवाईआ। पुरख अकाल दी सारे मंगो चरन धूडी, गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्ण ब्रह्मा शिव मस्तक टिकके रहे लगाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों तैनुं इक्को ज़रूरत पई ज़रूरी, जाहर आपणी कल धराईआ। मूसे तुट्टा माण जलवा कोहतूरी, ईसा आस बैठा गवाईआ। मुहम्मद चरन कँवल होया मशकूरी, मुशकल मेरी हल्ल कराईआ। नानक चुक्क के मोढे भूरी, तेरा बैठा ध्यान लगाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ पुरख अकाल उते डोरी, पिता पूत गंढ पवाईआ। जुग चौकड़ी कहण अबिनाशी करता शब्द अगम्मी चढ़ के आवे घोड़ी, घोड़ा असव शाहसवारा इक्क दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, वड साहिब सच गोसाईआ।

साहिब सच गोसाई मीत, मित्र प्यारे तेरी ओट रखाईआ। पंदरां कत्तक सभ ने छड्डी पिछली रीत, मन्दर मसीत गुरदुआर शिवदवाले मड्ड गुर अवतार पीर पैगम्बर फेर कोई ना आईआ। तेरे नाम दा गाईए इक्को गीत, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। तेरी धार सदा ठांडी सीत, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। तेरा खेल प्रभू जगदीस, जगदीशर तेरे हत्थ वडयाईआ। असीं वेख्या माण मिलदा इक्कीआं विच्चों इक्कीस, एका इक्की गोबिन्द रंग रंगाईआ। नेत्र रो पए राग छतीस, सुरसती मारे उच्ची धाहींआ। गण गंधरब वेखण ला के नीझ, दूर दुराडे नैण उठाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों पुरख अकाल जन भगतां पूरी कीती आप रीझ, फड आपणे नाल मिलाईआ। दूर दुराडा चल के भगत दुआर लँघिआ इक्क दहिलीज, दहि दिशा डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी करदे रहे उडीक, लिख लिख लेखा गए समझाईआ। प्रगट होवे बीसा बीस, कल कल्की फेरा पाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, लक्ख चुरासी खोज खोजाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लए जीत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी झोली पाईआ। जन भगतां छत्तर झुलाए सीस, सीस दस्तार जगदीस आप रखाईआ। नीचों करे ऊँच उच्चों करे नीच, नीच ऊँच दोवें चरनां विच्च रखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब सुआमी आपे वसे अद्धविचकार बीच, विचला लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। जगत नेत्र नज़र ना आए नीकन नीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चे शहनशाहीआ।

शहनशाह हरि ठाकर प्रभ, हत्थ तेरे वडयाईआ। चार जुग दी पिछली चुक्की हद्द, हद्द तेरी विच्च बैठे डेरा लाईआ। सच दुआरे लए सद्द, सद्दा आपणा नाम जणाईआ।



अन्तम पड़दा इक्को कज्ज, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। लोकमात कर के आए हज्ज, काया काअबा हुजरा इक्क सुहाईआ। इट्टां गारा पत्थर पिच्छे आए छड्ड, टक्करां मारे जगत लोकाईआ। बिन मुशर्द मुरीद कोई ना सके लम्भ, बिन सतिगुर गुरसिख मिलण कोई ना आईआ। बिन तेरी किरपा कोई ना करे हज्ज, बिन तेरी रहमत दरस कोई ना पाईआ। मेहरवान हो जिस आपणे दुआरे लएं सद, देवें माण वडयाईआ। तिस दा पूरा होवे हज्ज, मक्का काअबा दोवें नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ।

वज्जे वधाई घर सच्चे एक, एकंकार तेरी शनवाईआ। सारे करीए तेरी टेक, सीस जगदीस चरन झुकाईआ। दीन मजहब विच्चों कर बिबेक, जात पात डेरा ढाहीआ। निज नेत्र आपणी अक्ख वेख, दोए लोचण बन्द वखाईआ। अंदर वड के दस्स भेत, बाहरों समझ कोई ना पाईआ। निरगुण तेरी अगम्मी खेड, खालक खलक दे जणाईआ। तेरी सुहज्जणी माणीए सेज, सोभावन्त आसण लाईआ। लोकमात गुर अवतार पीर पैगम्बर बणा के दिते भेज, धुर संदेसा झोली पाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां लक्ख चुरासी लिख के आए लेख, कलम शाही कागज नाल मिलाईआ। इक्को पुरख अकाल परवरदिगार करना हेत, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। पंज तत्त काया सभ दा होवे खेत, रण भूमी दो जहान दए जणाईआ। भगत भगवान मानण इक्क दूजे दी सेज, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जल्वा नूरी तेज, जागरत जोत करे रुशनाईआ। प्रभ तेरा सभ कुछ लिया वेख, लक्ख चुरासी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर बैठे आसण लाईआ।

दर तेरे आसण गिआ लग्ग, गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे जणाईआ। दरगाह साची तेरा हज्ज, सचखण्ड तेरा नूर नजरी आईआ। अगला मार्ग इक्को दस्स, रल मिल सारे तेरा इक्को नाम ध्याईआ। किरपा कर पुरख समरथ, तेरे हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सद रहीए तेरी सरनाईआ।

तेरी सरनाई मंगीए इक्क, खाली झोली रहे वखाईआ। अगला लेखा फेर लिख, पिछली मिटी छाहीआ। चारों कुण्ट आए दिस, दह दिशा तेरी रुशनाईआ। तूं आपणा खेल कीता ज़ोर नाल हिक, हकीकत आपणे नाल रलाईआ। चौथे युग दे के पिठ, करवट आपणी लई बदलाईआ। चार युग जो लेखा आए लिख, बिन समझों पूर कराईआ। तेरे कोलों सारे होए जिच, डरदे बैठे नैण शरमाईआ। साडी करनी साडे विच्चों लई खिच, खालक आपणे विच्च रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सद मन्नीए तेरी रजाईआ।

श्री भगवान हो मेहरवान, हरि करता आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्यान, वड ध्यानी आप उठाइंदा। नव नौं चार चुक्की काण, कलिजुग अन्तम लेख मुकाइंदा।

प्रगट हो श्री भगवान, सभ दा लेखा झोली पाइंदा । बीस बीसा बण प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा । इक्कीआं देवे इक्को माण, एकंकारा दया कमाइंदा । ऊँच नीच सर्ब मिट जाण, जात पात ना कोई वखाइंदा । दीन मज्जब ना कोई काण, शरअ शरीअत ना वंड वंडाइंदा । रसना जिह्वा ना कोई कलाम, इसम आजम इक्क वखाइंदा । धुर संदेसा दे पैगाम, साची विद्या आप पढ़ाइंदा । नजरी आए इक्क अमाम, नौबत आपणा नाम सुणाइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर बरदे कर गुलाम, हुक्मे अंदर आप बहाइंदा । झुक झुक सारे करन सलाम, सजदा इक्को इक्क वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साचा इष्ट आप दरसाइंदा ।

साचा इष्ट पुरख अकाल, पंज तत्त ना कोई वडयाईआ । आदि जुगादी दीन दयाल, दीनां नाथ वेख वखाईआ । सच दुआर सच्ची धरमसाल, साढे तिन हत्थ देवे माण वडयाईआ । आत्म परमात्म करे संभाल, सदा सुहेला संग रखाईआ । भगत भगवान कदे ना खाए काल, महाकाल नेड ना आईआ । त्रैगुण माया तोड जंजाल, जीवण जुगत दए समझाईआ । करे खेल बेमिसाल, मिसल आपणे हत्थ वखाईआ । जुग चौकडी जो घालां रहे घाल, तिन्नां कीती घाल लेखे लाईआ । चौथे युग सभ दा कर हल्ल सवाल, जीरो सिफ़रा निरगुण सरगुण दूए नाल जुडाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, डूंधी रचना आपणे विच्च छुपाईआ ।

डूंधी रचना श्री भगवान, हरि रचंता करता धरता आपणे विच्च रखाइंदा । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाम निधाना दे के छोटा जिहा ज्ञान, छोटी कुट्टीया काया मन्दर विच्च वसाइंदा । शब्द अगम्मी दे बिआन, हुक्मे अंदर आप फिराइंदा । जे कोई मंगण आवे दान, निक्की चुटकी भर के झोली पाइंदा । सो लोकमात होवे प्रधान, लक्ख चुरासी जीव जंत समझाइंदा । अंदरे अंदर मंगदा रहे दान, दोए जोड वास्ता पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, वस्त अमोलक धुर दी दात आप वरताइंदा ।

धुर दी दात आप वरतंता, वर्तमान इक्क अखवाइंदा । जुग चौकडी खेल श्री भगवन्ता, भगवन आपणी धार रखाईआ । लक्ख चुरासी जीव जंता, चीऊंटी हस्त करे पढ़ाईआ । शब्द अगम्मी नाम इक्को मंतर मंता, मंतव आपणा दए समझाईआ । लक्ख चुरासी नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल इक्क अखवाइंदा । बेपरवाही रंग बसन्ता, बसन बनवारी आप रंगाईआ । बोध अगाधा हो के पंडता, साचा अक्खर दए समझाईआ । खेले खेल जेरज अंडजा, उत्भुज सेतज सोभा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर कर परवार इक्का, इक्क अडंबर सच सवंबर दिता वखाईआ ।

सच सवंबर बीस बीसा, हरि इक्को इक्क जणाईआ । पंदरां कत्तक सभ दा खाली कर के खीसा, कफनी चोली अलफ़ी आपणे हत्थ रखाईआ । बिन रसना जिह्वा सारे पढ़न

हदीसा, उच्ची उच्ची ढोला गाईआ। हस्सण रोवण दोवें ताल मारन चीकां, दो जहान समझ कोई ना आईआ। खुशी कहे मैं रक्खदी रही उडीकां, बैठी राह तकाईआ। गमी कहे लेखा चुक्कया चाचा भतीजा, पुरख अकाल पिता इक्को नजरी आईआ। जन भगतां उप्पर आप पतीजा, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी एका इकी, एकंकार आप बणाईआ। गोबिन्द कह के गिआ खंडिउँ तिक्खी, वालों निकी नजर ना आईआ। श्री भगवान हो मेहरवान आपणे नेत्र पेखी, भेखनी संग ना कोई रखाईआ। अचरज खेल प्रभू कल खेडी, समझ सके कोई ना राईआ। खाली रह गए सोछी वेदी, बिध आपणे हत्थ रखाईआ। मूरख मुगध मूड अजाणे बणे भेदी, जिनां अंदर वड के पडदा दिता चुकाईआ। पंदरां कत्तक नौं सौ चुरानवे चौकडी दा विहार कीता नाल छेती, शहनशाह इशारे नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप जणाईआ।

गुरमुख सज्जण यार चमरेटे, चमतकार प्रभू जणाईआ। भगती प्यार दोवें बेटी बेटे, तेरी फूडी उते सवाईआ। जगत पिता कोई ना वेखे, भगत भगवान दए जणाईआ। बिरहों विछोडे अंदर दोवें लेटे, दुःख लग्गा बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ भगतां अंदर खुशीआं नाल लेटे, साडी वात ना पुछे कोई राईआ। जिस वेले चमरेटा आ के कोल बैठे, दोवें रो रो रहे सुणाईआ। तेरे प्रभू नूं साडे भुल्ले चेतें, गरीब निमाणयां बैठा अंग लगाईआ। साड्डा करे कोई ना हेते, हितकारी होए सहाईआ। रविदास तैनुं लिखण डाहया सभ दे लेखे, तेरी कलम विच्च चतुराईआ। तिरवी नोक मारे नेजे, दो जहानां सल लगाईआ। साड्डा सनेहडा उस कोल भेजे, दुखीआं दर्द सुणाईआ। अमृत बरसे आपणा मेघे, मेहर धार वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ।

रविदास अंदर आया ध्यान, गुरमुख खुशी मनाईआ। रोन्दयां लिखां इक्क ब्यान, प्रभू दिआं जणाईआ। जिस दे उते कलम शाही करे ज्ञान, सो कागज नजर ना आईआ। तारा सिँघ गंगा किनारे बाल नादान, ढाई साल बैठा मुख छुपाईआ। जिस वेले ब्रह्मण कसीरा मिल्या आण, उस वेले इक्को उंगली दर्शन नजरी आईआ। दरसन वेख होया निहाल, वाह वा प्रभू तेरी वडयाईआ। गरीब निमाणयां रिहा सुरत संभाल, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। साडा लेखा तैनुं कदी ना आया खिआल, बैठा आप भुलाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, शब्दी धार दिता जणाईआ। निरगुण हो के आवां विच्च जहान, रविदास नाल तेरा मेल मिलाईआ। जिस उते लिखया जाए मेरा निशान, सो निशाना रसना तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी आपणे हत्थ रखाईआ।

करनी रक्ख हत्थ करतार, हरि करता दया कमाइंदा। गुरमुख उठे उठ बलधार, बलधारी हुक्म जणाइंदा। अंदरे अंदर होए गुप्तार, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। लेखा

लिखणा सिरजणहार, सति सतिवादी आप जणाइंदा । दर आ वेख डिठा दरबार, सच सिँघासण हरि जू सोभा पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुलायंदा ।

प्रभ हत्थ फडिआ वरका, वरका वरका पतरे नाल मिलाईआ । प्रेम प्यार दी कर के बरखा, मेघला इक्को धार जणाईआ । भगत भगवान कर के तरसा, रहमत आप जणाईआ । निरवैर निराकार निरँकार लाह के पडदा, सचखण्ड दुआरे बिन लिखिउँ लेख लेखा अक्खरां नाल जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार आप वडयाईआ ।

देवे वडिआई रविदास चमिआर, गुरमुख सिँघ सिँघ रूप वटाईआ । कलिजुग अन्त कर प्यार, परम पुरख सिर आपणा हत्थ टिकाईआ । सचखण्ड दा सच विहार, शब्द इशारे नाल जणाईआ । जो गुरमुख आए चल सच्चे दरबार, श्री भगवान आपणे प्रेम नाल बहाईआ । लकीर नहीं तकदीर मेटी जहान, तदबीर आपणी इक्क वखाईआ । तस्वीर बणी नौजवान, ला ताअरीफ आप सुणाईआ । अग्गे पिच्छे सारे इक्को जिहे नजरी आण, वड्डा छोटा ना कोई जणाईआ । निरगुण सरगुण दोवें रूप प्रसिध विच्च जहान, बिन रूप सरगुण तों निरगुण नजर किसे ना आईआ । छोटे बाले दोवें कुरलाण, भगती प्यार मारन धाहींआ । भगती प्यार दा सच विहार, नारी पुरख दए समझाईआ । नार पुरख हरि दी धार, निरगुण जोत विच्च रुशनाईआ । पुच्छणहारा सन्त सुहेला मीत मुरार, आपणी खाहश खाहश विच्चों प्रगटाईआ । क्यों लुक के बैठों सिरजणहार, आपणा नूर छुपाईआ । सच सरूप दे दीदार, तीजे नेत्र तेरा सति नजरी आईआ । पारब्रह्म पतिपरमेशवर अग्गों कहे नाल प्यार, बिन रसना जिह्वा जणाईआ । छब्बी पोह करां सच विहार, हरि संगत सच दुआरे साचे हुकम बहाईआ । इक्की मुखीए मुख करतार, पिच्छे संगत सगला संग रखाईआ । सभ दे विच्च फिरे करतार, करता पुरख वड्डी वडयाईआ । इक्क इक्क फुल्ल सभ दे उत्तों देवे वार, अतोल अतुल आप तुलाईआ । सदी बीहवीं मुल पाए निरँकार, जुग चौकडी जो गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ । कुल उधरे विच्च संसार, मिले माण धन्न जणेंदी माईआ । दोवें रूप कर त्यार, प्यार भगती गंढ वखाईआ । प्यार भगती तों वसे बाहर, धार धर्म इक्क जणाईआ । धर्म धार दी गोबिन्द पावे सार, दूजे समझ किसे ना आईआ । अगला दस्से फेर विहार, फरेब करे ना बेपरवाहीआ । बेऐब खुदाई परवरदिगार, सांझा यार वेस वटाईआ । लाईन सतर नहीं कतार, करता कुदरत रंग रंगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, सचखण्ड दी साची धार, लोकमात दए वखाल, वक्खरा आपणा खेल खलाईआ ।

अक्खरां विच्चों सृष्टी निरगुण रही भाल, दृष्ट आपणी नजर किसे ना आईआ । जिनां उप्पर होया आप किरपाल, किरपा निध आपणा मेल मिलाईआ । छब्बी पोह लक्ख चुरासी जम की फासी मात गरभ दस दस मासी सभ दा तुटे जंजाल, जीऊन्दयां जागदयां वेखदयां

सुणदयां बिन भगतीउँ पार कराईआ । ऐसे कारन आया आप करतार, जुग जुग दा लाहे सिरों उधार, करजा मकरूज आपणा अदा कराईआ । बीस बीसा हरि जगदीसा सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी फड़ के बांहों देवे तार, तारनहारा इक्क हो जाईआ । अगला लेखा लिखण तों बाहर कलम कागज शाही तिन्ने रहे शरमाईआ । हरि संगत तेरा उच्च मनार, महल्ल अट्टल इक्क रुशनाईआ । भगत दुआरा जगत सुधार, सुरत निरत तुरत अकाल मूरत आपणे नाल मिलाईआ । जन्म कर्म धर्म वरन बरन सभ दी आसा मनसा पूरत, पूरब लेखा लहणा देणा झोली पाईआ । इकीआं इकी इक्को वार दस्से महूरत, दो इक्क निरगुण सरगुण निरगुण आपणा अंक जणाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान करे खेल अनन्त कल धारी, कल आपणी कल वरताईआ ।

**\* १ पोह २०२० बिक्रमी हरि भगत दवार जेटूवाल \***

निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सो, सो पुरख निरञ्जण वड्डी वडयाईआ । निरवैर निरँकार प्रभ आपे हो, साकार खेल वखाईआ । अनभव प्रकाश अगम्मी लो, जोती जाता वड वडयाईआ । आदि जुगादी धुर दा मोह, सति सतिवादी आप बंधाईआ । ब्रह्म ब्रह्मादी आपे छोह, शहनशाह आपणी कार कमाईआ । दो जहानां देवे ढोआ ढो, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे थाउँ थाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर अमृत रस इक्को चो, धुर दी धार सति वहाईआ । नर नरेश सच संदेश शब्द अगम्म आपे हो, होका सति सति दृढाईआ । जुगा जुगन्तर भेव ना जाणे को, अलक्ख अलक्खना लख सके कोई ना राईआ । जुग चौकडी बणया रिहा निर्मोह, मुहब्बत हथ ना किसे फडाईआ । लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त रिहा टोह, घर घर आपणा फेरा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ ।

निरगुण सरगुण खेल अपार, हरि करता आप कराइंदा । आदि जुगादी साची कार, धुर दी धार आप बंधाइंदा । नित नवित्त खेल निरँकार, नर निरँकारा आप कराइंदा । जुग चौकडी वेखणहार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा । बोध अगाधा बोल जैकार, नाम नाअरा इक्क लगाइंदा । कातब बण वड लिखार, कलम छाही रंग चढाइंदा । संदेशा दे सर्ब संसार, सारवी सच आप समझाइंदा । कुदरत कादर दे आधार, कलमा आपणा आप समझाइंदा । महिबूब मुहब्बत करे सच दरबार, दरगाह साची वेख वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा । निरगुण सरगुण करनी करे करतार, हरि करता वड वडयाईआ । वसणहार सच दवार, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ । महल्ल अट्टल उच्च मनार, निरगुण जोती नूर नूर रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ ।

निरगुण सरगुण बण के आप, प्रभ आपणी खेल खलाइंदा । सरगुण दे के निरगुण जाप, धुर संदेशा राग सुणाइंदा । निरवैर हो के सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा ।

पवित्र हो के खोले ताक, पतित पार कराइंदा । अंदर वड के दस्से बात, हरि बातन आप समझाइंदा । मन्दर चढ़ के मारे ज्ञात, दर घर साचे सोभा पाइंदा । माही बण के वेखे पतण घाट, किनारा आपणे हत्थ रखाइंदा । पान्धी बण के मेटे वाट, दो जहानां पन्ध चुकाइंदा । प्रकाश हो मिटाए अन्धेरी रात, जोती चन्द इक्क चमकाइंदा । सतिगुर हो सुणावे गाथ, धुर दा ढोला राग अलाइंदा । कन्त हो के बणे कमलापात, नारी नर नरायण परनाइन्दा । दाता हो के खोले डूंघा खात, अतोत अतुट आप वरताइंदा । निरगुण हो के लेख चुकाए आपणी जात, जात अजाति वंड ना कोई वंडाइंदा । आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहानां वेखे हालात, हालत सभ दी आप बणाइंदा । पुरख अकाला दीन दयाला हरख सोग ना पाए वफ़ात, मढ़ी गोर ना आसण लाइंदा । प्याला मदि ना कोई आबे हयात, अमृत रस मुख ना कोई रखाइंदा । देवणहारा धुर दी दात, वड भण्डारी आप वरताइंदा । वेखणहारा कायनात, लोक परलोक खोज खुजाइंदा । बख्खणहारा सर्व नजात, मेहर नजर नैण उठाइंदा । सुणावणहारा भविख्त वाक, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप पढ़ाइंदा । जानणहारा लेखा मात, धरनी धरत धवल सोभा पाइंदा । वसणहारा इक्क इकांत, नर हरि नजर किसे ना आइंदा । रचणहारा रचना आदि, अन्त आपणे विच्च छुपाइंदा । खेलणहारा खेल ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी कार कमाइंदा । उपजावणहारा सन्त साध, साधक आपणे रंग रंगाइंदा । मारनहारा धुर आवाज, शब्दी ढोला राग सुणाइंदा । रचणहारा सच्चा काज, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कल धराइंदा । करनहारा धुर दा राज, दरगाह साची सोभा पाइंदा । बोलणहारा बोध अगाध, बिन रसना जिह्वा राग सुणाइंदा । बणनहारा कन्त सुहाग, जुग चौकड़ी नार आप परनाइंदा । करनहारा सर्व त्याग, सच दवारे बहि बहि आसण लाइंदा । बणावणहारा सच समाज, जुग चौकड़ी खेल खलाइंदा । निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण देवणहारा आपणा दाज, दौलत नाम खजाना झोली इक्क भराइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आपणी खेल वखाइंदा ।

निरगुण सरगुण खेल दो, दो जहान वज्जे वधाईआ । निरगुण सरगुण दए मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ । निरगुण सरगुण करे लो, सच प्रकाश इक्क रुशनाईआ । निरगुण सरगुण अमृत देवे चो, साची धार इक्क वहाईआ । निरगुण सरगुण धुर दी देवे सो, सति संदेशा नाम सुणाईआ । निरगुण सरगुण ढोआ देवे ढो, पंज तत्त मिले वडयाईआ । निरगुण सरगुण भेव ना जाणे को, प्रभ आपणे हत्थ रक्खी वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह बेपरवाहीआ ।

निरगुण सरगुण बेपरवाह, भय भउ ना कोई रखाईआ । आदि जुगादी शहनशाह, भूपत इक्को नज़री आईआ । लेखा जाणे दो जहान, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ । धुर संदेशा देवे अलाह, शब्दी शब्द जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण देवणहार वडयाईआ ।

निरगुण सरगुण देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा । निरगुण सरगुण देवे पहचान,

बेपहचान आपणी बूझ बुझाईंदा । निरगुण सरगुण देवे माण, चरन कँवल ध्यान रखाईंदा । निरगुण सरगुण देवे ज्ञान, ब्रह्म विद्या आप पढाईंदा । निरगुण सरगुण करे कल्याण, सिर आपणा हत्थ रखाईंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुलाईंदा ।

निरगुण सरगुण होया एक, एकंकार वज्जे वधाईंआ । सरगुण कहे प्रभ तेरी टेक, दूजा नजर कोई ना आईंआ । निरगुण कहे मैं तेरा भेत, घर तेरे बैठा मुख छुपाईंआ । सरगुण कहे तेरा रूप ना दिसे कोई रेख, रंग नजर कोई ना आईंआ । निरगुण कहे मैं करां हेत, घर साचे फेरा पाईंआ । रल के खेलां अगम्मी खेड, समझ सके कोई ना राईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच संदेशा इक्क सुणाईंआ ।

निरगुण कहे सुण सरगुण मीत, सति सति जणाईंआ । सो पुरख निरञ्जण चलाई आपणी रीत, हरि पुरख निरञ्जण खेल रचाईंआ । एकंकार हो अनडीठ, आदि निरञ्जण नूर रुशनाईंआ । अबिनाशी करता गाए गीत, श्री भगवान साचा ढोला राग अलाईंआ । पारब्रह्म प्रभ इक्क अतीत, त्रैगुण विच्च कदे ना आईंआ । सरगुण तेरी चलाई अगम्मी रीत, रीतीवान होए सहाईंआ । जुग चौकड़ी सरगुण निरगुण खेल खेली ठीक, अन्तम ठीकर भन्न वखाईंआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग सारे करदे गए उडीक, बिन नेत्र ध्यान लगाईंआ । गुर अवतार पीर पैगबर मंगदे गए भीख, दर दरवेश झोली डाहीआ । लोकमात मार ज्ञात सुणौंदे गए गीत, धुर दा राग अलाईंआ । लेखा दस्सदे गए शिवदवाले मन्दर मस्जिद मड्ड मसीत, गुरूदवारे गुर गुर बंधन पाईंआ । सरगुण करे सरगुण प्रीत, सरगुण निरगुण मेला सहज सुभाईंआ । कलिजुग अन्त श्री भगवन्त पतिपरमेशवर परवरदिगार सभ रक्खदे गए उडीक, नेत्र लोचण नैण ध्यान लगाईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा रिहा खुलाईंआ ।

सरगुण सुण सच्चा सोहला, सो साहिब आप जणाईंआ । जुग चौकड़ी रक्खया उहला, पडदा पडदे विच्च छुपाईंआ । सतिनाम दा दिता सोहला, ढोला इक्क जणाईंआ । कलमे अंदर गाया मौला, मौला आपणा हुक्म मनाईंआ । निरगुण हो के सरगुण नजरी आया उ पर धौला, धरनी धरत वज्जे वधाईंआ । गुर अवतार पीर पैगबर कर के गए कौला, कीता इकरार मंग मंगाईंआ । पारब्रह्म पतिपरमेशवर तेरा खेल बिन काया चोला, चोली आपणा रंग वखाईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सभ दा लेखा दए जणाईंआ ।

साचा लेखा सुणो अकाल, अकल कलधारी आप जणाईंदा । सरगुण हो के मिले दयाल, दीनन आपणी दया कमाईंदा । निरगुण सरगुण खेल कमाल, दूआ बंधन इक्को पाईंदा । सरगुण नाता तुटे काइआ माटी खाल, हड्ड नाडी मास चम्म कम्म किसे ना आईंदा । लोकमात दिसे ना कोई निशान, निशाना हत्थ ना कोई उठाईंदा । चारों कुण्ट वेख मार ध्यान, नेत्र नैण रूप नजर कोई ना आईंदा । निरगुण सरगुण अन्तम सिफरा होया अंक

बणे ना कोई जहान, लेखा लेख ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण तेरा हाल समझाइंदा।

सरगुण तेरा अन्त सिफ़रा, जीरो रूप वटाईआ। इक्को रहि जाए अक्खरां वाला फ़िकरा, तत्त नज़र कोई ना आईआ। नाता टुट्ट जाए सजणां मित्रां, सगला संग ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण सच दए दृढ़ाईआ। सरगुण कहे की प्रभ मेरा रूप सिफ़र, निशान नज़र कोई ना आईआ। सुण के मैनुं होया फ़िकर, गमगीन दए दुहाईआ। मेरे कोल जे कीता मेरा ज़िकर, सच भेव दे समझाईआ। तेरे नालों निरगुण सरगुण कदे ना जाए विछड, विछोडा सहि सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

सुण सिफ़रे धुर दी बात, हरि करता आप जणाईआ। सरगुण देवे ना कोई साथ, निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। सिफ़रे पुछे ना कोई वात, मतलब हल्ल ना कोई कराईआ। सिफ़रा हो के इक्को मंग सच्ची दात, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। इक्क इकल्ले पुछ मेरी वात, तुध बिन मेरी सार कोई ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर जे मेहर कर वेखे झाक, बिन अक्खां नैण उठाईआ। तेरी पुछे आप वात, निरवैर होए सहाईआ। लेखा पूरा करे लिखया कलम दवात, छाही आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दिता सच्चा वर, साची सिखिआ इक्क समझाईआ।

सिफ़रा कहे मैं होया निहाल, मिली माण वडयाईआ। इक्को वस्त मंगाँ सच कमाल, खाली झोली अग्गे डाहीआ। निरगुण सरगुण हो के बणया तेरा लाल, लालन तेरा रूप वखाईआ। अन्तम वस्सया तेरी धरमसाल, दूजा घर ना कोई बणाईआ। निरगुण सरगुण बणे दो दोहां वेख आपणा हाल, हाल आपणा दे जणाईआ। बिन एके होए कंगाल, सिफ़रा कूक कूक सुणाईआ। दूआ सिफ़रा बीस अंक मिल्या आण, जोडा धुर दा सच मिलाईआ। बिन एक कोई ना करे पहचान, टेक नज़र कोई ना आईआ। किरपा कर श्री भगवान, इक्को तेरी ओट तकाईआ। साहिब सतिगुर हो दयाल, पुरख अकाल हुक्म जणाईआ। जुग चौकड़ी अब्वलड़ी चाल, को समझ ना सके राईआ। कलिजुग अन्त वेखां आण, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, इक्को आपणा रूप दसाईआ।

सिफ़रे सुण आपणी याद, हरि करता आप जणाइंदा। ठाकर स्वामी सुणे फ़रयाद, बेपरवाह फेरा पाइंदा। जिस निरगुण हो के सरगुण रचना रची आदि, सो मध जुगादि आपणा हुक्म वरताइंदा। जिस घट घट अन्तर सति सुणाया नाद, धुर अनादी नाद अलाइंदा। सो पुरख अकाल दीन दयाल आपणा एक बणाए समाज, समग्री तेरी झोली पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगंबर चार युग दे वेखण रचिआ काज, जुग चौकड़ी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जीरो तेरा अंक एका दए बदलाईआ।



जीरो एका बदले अंक, अंगीकार आप कराईआ। सरगुण सुहाए दूए तेरा बंक, बंक दवारी वड वडयाईआ। लेख चुका राओ रंक, राज राजान हुक्म वरताईआ। नाम अगम्म सुणा डंक, दो जहान करे शनवाईआ। जुग चौकड़ी मेट शंक, संसा सभ दा दए गवाईआ। सति बणाए साची बणत, घडनहार बेपरवाहीआ। एके नाल इक्क सुणाए मंत, मंतव इक्को इक्क जणाईआ। इक्को मिले हरि सुहागी कन्त, कन्तूल इक्को नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ़रे देवे माण वडयाईआ।

जीरो कहे आ इक्क, तेरी उडीक लगाईआ। गुर अवतार तेरा लेखा गए लिख, पीर पैगम्बर सिफ़त सालाहीआ। आदि जुगादि धुर दे पित, पिता परमेशवर तेरी सरनाईआ। निरगुण सरगुण कर हित, हितकारी वेख वरवाईआ। धुर दा लेखा दे लिख, लिखणहार तेरी सरनाईआ। जन भगतां पा भिख, भिच्छया भिखवया इक्को वार वरताईआ। लेखे ला आपणे रित, रती रत ना अगन तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दे उठाईआ।

पडदा चुक्क सिफ़रा कहे, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। सति दवारे एका बहे, आपणा बल धराईआ। तेरा नाउँ सदा सद रहे, जुगा जुगन्तर तेरी वडयाईआ। तेरा महल्ल कदी ना ढहे, जिस घर वसें आसण लाईआ। जुग चौकड़ी तेरा भै, भउ विच्च सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाम संदेशा गए कह, लक्ख चुरासी जीव जंत सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि किसे दी कदे ना लए रइ, जो करना कर वरवाईआ। सिफ़रा नीवां हो के चरनीं ढह, बिन एके तेरी कुल नजर किसे ना आईआ। दूर दुराडे नेडे आ के बहि, हरिजन तेरे तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

दूआ कहे आ मिल इक्क, एकंकार तेरी सरनाईआ। मेरा लेखा फेर लिख, सरगुण मिले वडयाईआ। कर प्यार साचा हित, मेहरवान मेहर नजर उठाईआ। तेरे दवारिउँ मंगीए भिख, भिच्छया झोली पाईआ। तूं साहिब आदि जुगादि जुग चौकड़ी सरगुण सारे लए जित्त, निरगुण आपणा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, दूए देवे माण वडयाईआ।

दूए देवे माण श्री भगवन्त, एकंकार इक्क जणाईआ। दूए तेरे अग्गे बण के बणे अंक, पुरख अकाल जोड जुडाईआ। वीह तों इकी बणे बणत, इकीस आपणा रंग रंगाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों लम्भ के गुरमुख सन्त, सज्जण सुहेले अंग रखाईआ। नाम जणाए धुर दा मंत, मंतर इक्को इक्क समझाईआ। गढ़ तोड हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझाईआ। इक्कीआं बणाए साची संगत, संग वसे बेपरवाहीआ। संगत चाढ़े साची रंगत, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। दूजे दर जाण ना देवे मंगत, जिनां आपणा दरस कराईआ। हरि का भेव किसे ना पाया पंडत, मुलां शेख कहण कोई ना पाईआ। लम्भ लम्भ थक्के जेरज

अंडज, उल्भुज सेतज भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूए एके एके दूए दो इक्क करे कुड़माईआ।

दूआ कहे मैं मंगी मंग, एका नजरी आया। इक्क कहे मैं सूरा सर्बग, दूए तेरा जोड़ जुड़ाया। दोहां मिल के आया सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाया। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण मिल के चढ़या चन्द, बिन चन्दां जोत चमकाया। जन भगतां खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दगी आपणे नाम समझाया। नाता तोड़ जगत दुहागण रंड, कन्त कन्तूहल मेल मिलाया। सति सुणा सुहागी छन्द, साचा ढोला राग इलाहिआ। आत्म परमात्म दे अनन्द, मंगल इक्को इक्क सुणाया। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, धुर दा मेला मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडिआया।

दूए एके तेरी इकी, वीह सौ चौदां बिक्रमी ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ बणाए साची सिक्खी, सिक्खया इक्को नाम समझाईआ। जिस नूं गोबिन्द कहि के गिआ खंडिउँ तिरखी वालों निक्की, आपणे विच्च छुपाईआ। पीर पैगम्बर जिस दे नाम दी लिख लिख देंदे गए चिठी, बण चिठी रसैण फेरा पाईआ। उस दी खेल सदा अनडिठी, जग नेत्र नजर किसे ना आईआ। बिन भगतां धार दिसे ना किसे चिठी, काली कमली सभ दे सिर ते ओढुण नजरी आईआ। जगत वासना रस माणे फिक्की, अमृत धार ना कोई जणाईआ। बिन पुरख अकाल निरगुण सरगुण हो कोई ना बणाए धुर दी इकी, दूआ एका जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। साहिब सतिगुर दी साची इकी, लोकमात कदे ना जाए भिट्टी, ज्ञात पात दीन मज्बूब वंड ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ। इकी तेरा सुण के हाल, जगदीश ताज अक्ख खुल्लाईआ। मैं वेखां प्रभ दा सच समाज, जिस दी बणत आप बणाईआ। चार जुग दा पिछला मेट रिवाज, मार्ग इक्को इक्क समझाईआ। जन भगतां दे के धुर दा राज, खाली झोली नाम धराईआ। बिन पड़दिउँ रक्ख के लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, प्रभ तेरे हत्थ वडयाईआ।

ताज कहे प्रभ मैं सोहां तेरे सीस, वड तेरी शहनशाहीआ। तेरा नाउँ आदि जुगादि जगदीश, जगदीशर तेरी सरनाईआ। तेरी कोई ना करे रीस, सानी रूप ना कोई वटाईआ। तेरे दर ते मंगों भीख, बण सवाली झोली डाहीआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी तेरी रक्खी उडीक, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। सो साहिब वक्त आया नजदीक, दूआ सिफ़रा वेख वखाईआ। सिफ़रे आपणे उते फेर लीक, तेरा एका लिया बणाईआ। दूए एके मिल के इकी बणी ठीक, जिस इकी विच्चों ठाकर नजरी आईआ। एस इकी दी गोबिन्द रक्ख के गिआ उडीक, दूर दुराडा नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ बन्ने इक्क प्रीत, सच प्रीती लएं लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेरी लाज अन्त रखाईआ।

ताज कहे प्रभ रक्खीं लाज, तेरे अगगे अरजोईआ। इक्क सत्त दा रच के काज, वीह सौ सतारां बिक्रमी तेरा ध्यान लगाईआ। तिन्न साल तिन्नां लोकां मारदा रिहा अवाज, चौथे साल चौथा पद वखाईआ। जिस दवारे गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आवण आपणी छड्ड के पिछली निमाज, सजदा सीस इक्क झुकाईआ। तेरे किसे ना आया कोई आगाज, तेरा भेव कोई ना पाईआ। दूरों दूरों प्रभ तेरे नाम दी सुणदे रहे आवाज, सच संदेशा इक्को इक्क जणाईआ। धन्न भाग परम पुरख खोले आपणा राज, पडदा उहला इक्क चुकाईआ। गरीब निमाणे कोझे कमले भगत भगवान सद्दे आपणे पास, पासा सभ दा दए उलटाईआ। दर तेरे रल मिल गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण पैदी रास, कवण बिधे भगत भगवान गोपी काहन नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे झोली डाहीआ।

ताज कहे मैं सभ दा ताज, बिन मेरे शहनशाह नजर कोई ना आइंदा। ताज कहे मेरी रईयत समाज, समग्री इक्को इक्क वखाइंदा। ताज कहे मेरी इक्क अवाज, दो जहानां साहिब सुणाइंदा। ताज कहे मेरा इक्को काज, हरि करता आप कराइंदा। काज कहे मैं खोल्लां राग, पडदा उहला आप उठाइंदा। जन भगतो सारे मैंनू कहो शाबाश, जो तुहाड्डा संग निभाइंदा। पुरख अकाल अगगे करां अरदास, अरजोई इक्को इक्क सुणाइंदा। जिनां दा लेखा मेरे उत्ते लिखया खास, तेरी शहादत सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान नाल भुगताइंदा। माझा मालवा दुआबा जम्मू वेख वसे आस पास, सामूणे सभ नू नजरी आइंदा। इक्को इकी तेरी खास, खालस रूप समझाइंदा। पंज पंज इनां विच्चों कर दास, दासी आपणा राह विखाइंदा। छब्बी पोह तेरा वेखां खेल तमाश, दर घर साचा सोभा पाइंदा। इकीवां रले इक्को साथ, दूर दुराडा वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची इकी आप वडिआइंदा।

साची इकी प्रभ तेरी एक, रविदास चमिआर दिती वखाईआ। छब्बी पोह खोल्लणा भेत, अभेद आप जणाईआ। इक्कीआं कर के सच्चा हेत, हरि संगत रंग रंगाईआ। सभ दा दाता नेतन नेत, नेरन नेर नजरी आईआ। इक्को मेहर नजर सभ नू लैणा वेख, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। परमात्म पुरख दस्स अगम्मी खेड, बण खिलारी आप खिडाईआ। जे कोई लभे हरि दी रेख, बिन भगतां नजर किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सीस ताज देवे माण वडयाईआ।

सीस ताज तेरा मन्नया कहणा, सो साहिब आप जणाईआ। चौथे जुग दूर हो के बहणा, नेडे रहण कोई ना पाईआ। तेरे अक्खरां मुल्ल पैणा, करता कीमत आप चुकाईआ। सोना सवरन नहीं कोई गैहणा, जन भगतां बणत बणाईआ। इक्कीआं विचे हरि जू बहिणा, बहि बहि खुशी मनाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू सच वखाए आपणे नैणां, नैण आपणे नाल मिलाईआ। चार वरन बणाए भाई भैणां, सच सैण इक्क समझाईआ। ऊँच नीच कोई ना रहणा, राओ रंक ना कोई वडयाईआ। इकीआं इकीआं भाणा सहणा, भावी दर

दुरकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, महाराज शेर सिँघ विष्णुं भगवान, एका इकी करे परवान, इकी सिक्खी बिन लेख लिखी लेखे आपणे विच्च रखाईआ ।

दो इक्क जुडी जोडी, हरि सतिगुर आप जुडाइंदा । आपणे हत्थ पकडी डोरी, तन्द आपणे नाल बंधाइंदा । वेखणहारा अन्ध घोरी, दो जहानां खोज खुजाइंदा । जिनां गोबिन्द चाढ़या मौत घोडी, सो मौत गुरमुखां चरनां हेठ दबाइंदा । खेल करे आपणे दोहरी, धार धार विच्चों बदलाइंदा । गोबिन्द सुत करे मोहरी, मोहर आपणा नाम लगाइंदा । अमरजीत सुरजीत ज़ोर ज़ोरी, ज़बरदस्त दया कमाइंदा । बंता सिँघ वस्त दिती कोरी, किरपानिध आप वखाइंदा । बचन सिँघ नाल ना करे चोरी, कीती घाल लेखे पाइंदा । मंगल सिँघ प्रभ गिआ बौहडी, बौहड जन्म फेर ना आइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम आपणा रंग रंगाइंदा ।

पंचम माण मिले सांझा, हरि संगत अग्गे अग्गे रखाईआ । माझे नाल जोड दुआबा, दुआबा माझा रूप वटाईआ । सर्ब जीआं दा बण के सांझा, सांझी वारता इक्क वखाईआ । निरवैर निरँकार जणाए आपणा सवांगा, सवांगी आपणा सवांग रचाईआ । अमरीक सिँघ पूरी करे तांघा, प्रीतम सिँघ गोदी गोद सुहाईआ । नसीब सिँघ पाए गाँढा, लाल सिँघ चन्द चमकाईआ । प्यारा सिँघ खेल दोसांझा, लेखा सैहज सुभाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम देवे माण वडयाईआ । दुआबे मिले माण वडुआई, हरि संगत खेल खलाइंदा । मालवे नाल करे कुडमाई, भगत भगवान नाता जोड जुडाइंदा । राम सिँघ दया कमाई, केहर सिँघ अंग लगाइंदा । निरञ्जण सिँघ गाउणा चाई चाई, जागीर सिँघ जोग वखाइंदा । हरबंस सिँघ पकडे बाहीं, कुल्ली कक्खां सोभा पाइंदा । पंच मिलावा भाई भाई, दूई द्वैत डेरा ढाहिंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा । मालवे मेल कीता करतार, जम्मू जोड जुडाईआ । बाल अवस्था देवे तार, गुरनाम खुशी वखाईआ । देवी सिँघ दे आधार, देवा सिँघ गोद बहाईआ । प्रेम सिँघ कर प्यार, पक्की तरां दए समझाईआ । राम चन्द सेवा लग्गी विच्च संसार, साबत मिल्या बेपरवाहीआ । पंजां दे इक्क आधार, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ । हरि संगत साची दए वखाल, विआक्खया आपणी नाल जणाईआ । इक्कीआं एको लए भाल, एकंकार खोज खुजाईआ । जसवन्त सिँघ लए उठाल, ठोकर नाम लगाईआ । निरगुण सरगुण बण दलाल, दलाली इक्को इक्क वखाईआ । सम्मत पंदरां दे साचे लाल, वीह सौ बिक्रमी भेद खुलाईआ । पंदरां कत्तक जिनां निभाई नाल, तिनां नाता लए जुडाईआ । सीस दस्तार बन्नु लाल, पंचम रंग सोभा पाईआ । सूहा वेख वेख होए निहाल, चिट्टी धार वज्जे वधाईआ । पीला करे आप प्रितपाल, नीला नील कंठ माण गुआईआ । काला सूसा मेटे काल, कलकाती दए गुआईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्की इक्की जोड जुडाईआ । इक्की अग्गे इक्की पिच्छे, पिक्छा अग्गा इकीआं विच्च रखाईआ । इक्कीआं अंदर आपे भज्जे, फिरे वाहो दाहीआ । जिधर वेखो गुरमुख सजे, बेमुख नजर कोई ना आईआ । मेहरवान

हो के पड़दा कज्जे, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ । हरि संगत दर्शन कर कर रज्जे, वेख हरि संगत सतिगुर खुशी मनाईआ । शब्द सरूपी साहिब गज्जे, गजल ढोला राग तर्ज नाम जणाईआ । मांझा मालवा दुआबा जम्मू बद्धे, बध्दी सके ना कोई छुडाईआ । बिन मक्कयों काअबिउँ कराए हज्जे, बिन हुजरिउँ लए मिलाईआ । मन्दर मसीतां विच्चों बाहर कट्टे, सच दवारा इक्क वरवाईआ । शिवदुआले मट्ट छड्डे, तीर्थ तट्ट ना कोई वरवाईआ । जंगल जूह उजाड पहाड डूँधी कंदर कोई ना लभ्भे, सतिगुर साख्यात आपणा दरस कराईआ । प्रेम प्रीती नाल बद्धे, मधुर रस इक्क वरवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, साची इकी इकी विच्च सिरवी सिरवी विच्च निककी आपणी धार समाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, सुहाए सुहञ्जणी रुत आपणी थिती, जिस थित सरगुण निरगुण नजरी आईआ ।

**\* पहली माघ २०२० बिक्रमी जेठूवाल हरि भगत दवार \***

पुरख अकाल तेरा भविख्त, भविश तेरे हत्थ वडयाईआ । तेरे हुक्म दी धुर दी लिख्त, शाह पातशाह तेरा नाम लिखवाईआ । तेरे प्रेम दा अगम्मा इशक, असल विच्चों सच समझाईआ । तेरी धार दी धुर दी लिखत, लेखा लेख रही बणाईआ । तेरी वड्डिआई जन भगतां लहणा चुकाया स्वर्ग बहिश्त, घर सच दिती सरनाईआ । होए हैरान वेख तेरा इष्ट, मेहर नजर नैण उठाईआ । कर किरपा खोली दृष्ट, जिनां आपणा दरस दिखाईआ । लख चुरासी वेख सृष्ट, सन्त सुहेले लए मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी पूर कराईआ ।

सच करनी भविख्त वाक, वाकफ तेरे नाल कराईआ । गृह मन्दर खोल आपणा ताक, पड़दा घर दुआर उठाईआ । निर्मल नूर कर प्रकाश, घर दीपक जोत इक्क रुशनाईआ । अन्तर अन्तर दस्स आपणा जाप, मंतर सच करी पढ़ाईआ । दो जहानां इक्को पाठ, साहिब सतिगुर दिता समझाईआ । जगत किनारा दूर ताट, घाट इक्को रिहा वरवाईआ । सच प्रीतम बण के कमलापात, नर नरायण होए सहाईआ । कूडी क्रिया मेट अन्धेरी रात, चन्द नूर इक्क चमकाईआ । लेखा चुका जात पात, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ । गुर अवतार पीर पैगबर जो गए आख, आखर लेखा पूर कराईआ । सच धर्म दी इक्क प्रभात, प्रभ आपणा नाम प्रगटाईआ । पूरब चुक्की पिछली वाट, मार्ग इक्को इक्क दरसाईआ । चरन प्रीती बंन के मात, जन भगतां दए वडयाईआ । लेखा लिख कलम दवात, रविदास चुमार रिहा समझाईआ । धुर दी इच्छया जो लिआ भाख, सो आपणी भाख्या नाल मिलाईआ । लहणा चुक्किया मस्तक माथ, लेख कोई नजर ना आईआ । चार वरनां इक्को गाथ, छत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश करी पढ़ाईआ । ऊँच नीच राउ रंक बणाई जमात, शाह सुल्तान ना कोई वडयाईआ । भगत सुहेला बण के पिता मात, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर नैण तकाईआ ।

भविष्यत वाक तेरा संदेशा, शाह पातशाह इक्क जणाया । सेवा ला विष्ण ब्रह्म महेशा, शंकर तेरा गुण अलाइआ । राज राजान बण नरेशा, दो जहानां हुक्म वरताया । गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण भेजा, सरगुण सगला संग निभाया । आत्म परमात्म माणी सेजा, घर महल्ल अट्टल इक्क रुशनाया । जोती नूर दिता तेजा, चमक आपणे नाल मिलाया । नेत्र लोचण नैण आपे देखा, दूजा संग ना कोई रखाया । नजर ना आई किसे रेखा, रूप रंग ना कोई जणाया । लक्ख चुरासी रक्खया लेखा, भरमे भरम ना कोई भुलाया । जुग चौकड़ी पूरब चेता, चेतन्न धार रिहा प्रगटाया । जन भगतां कर के हेता, हितकारी आपणा नाउँ धराया । धुर मस्तक लाई मेखा, जोत ललाटी तिलक लगाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा आप चुकाया ।

भविष्यत वाक तेरा निरँकार, निरगुण इक्को नजरी आईआ । शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहनशाह तेरी वड वडयाईआ । हउँ सेवक सेवादार, बालक रूप इक्क अखवाईआ । जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण तेरा करदे रहे विहार, विवहारी तेरी धार चलाईआ । तेरे नाम दा बोल जैकार, लक्ख चुरासी जीव जंत रसना जिह्वा ढोला राग सुणाईआ । अंदर वड के दस्सदे रहे प्यार, परमात्म आत्म वेख वखाईआ । कागद कलम बणदे रहे लिखार, बण कातब तेरी सिफ्त सालाहीआ । सन्त सुहेले करदे रहे खबरदार, गुर चले मेल मिलाईआ । सुनेहडा देंदे रहे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग फेरा पाईआ । धन्न भाग तूं लहणा देणा मुकाया उधार, पिछला लेखा रहण कोई ना पाईआ । जन भगतां करया सच शिंगार, पट्टी सीस जगदीश गुंदाईआ । नाम निधाना कज्जल धार, नैण निराला इक्क मटकाईआ । साची सरवीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द इक्क सुणाईआ । महल्ल अट्टल उच्च मिनार, महिफल इक्को घर वखाईआ । निरगुण बाती कमलापाती कर उजिआर, दीपक जोत जोत रुशनाईआ । पवण उनंजा चवर झुलार, सांतक सति सति वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ ।

तेरा भविष्यत तेरा ढोला, तेरी धार जणाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर बण विचोला, जन भगतां मेल मिलाईआ । निरवैर पुरख दा इक्को सोहला, हरिजन साचे सच समझाईआ । दूर्इ द्वैती पडदा उहला, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ । दे दरस इक्क अनमोला, वस्त अमोलक आप वरताईआ । सच दुआरा धुर दा खोला, दर दरवाजा इक्क समझाईआ । जन भगतां बण प्रभू विचोला, आप आपणा रंग रंगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देणी माण वडयाईआ ।

तेरा भविष्यत तेरी झोली, दूजा नजर कोई ना आईआ । हउँ सेवक ठाकर तेरी गोली, गुर अवतार पीर पैगम्बर तिरीआ रूप रहे जणाईआ । चार कुण्ट दी शब्दी बोली, चार जुग रहे जस गाईआ । आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी धार किसे ना तोली, कंडा तराजू नजर कोई ना आईआ । तेरी खेल वेखी हौली हौली, सति सुआमी तेरे भाणे विच्च समाईआ । तेरी जोत नुरानी हर घट मौली, मौअला घर घर नजरी आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वडयाईआ ।

तेरा भविष्य तेरे साथ, हथ्य तेरे वडयाईआ। तेरी महिमा तेरी गाथ, तेरा नाम जणाईआ। तेरी मंजल तेरा राथ, तेरा पन्ध मुकाईआ। तेरा दवारा तेरा हाट, घर तेरा इक्क वडयाईआ। तेरा प्रेम तेरा नात, चरन तेरी सरनाईआ। तेरा नूर तेरी जात, कुदरत तेरे विच्चों प्रगटाईआ। तेरा हुक्म संदेशा गए आख, आखर इक्को इक्क जणाईआ। प्रगट होए पुरख समराथ, बेअन्त बेपरवाहीआ। जिस दा किसे ना आवे किनारा हाथ, पत्तण समझ कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्य टिकाईआ।

तेरा भविष्य धुर दा सच्चा, सच तेरी वडयाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा बच्चा, बचपन तेरी झोली पाईआ। तेरा हुक्म होवे ना कच्चा, काया काची गागर नजर कोई ना आईआ। धन्न भाग तूं सभ दा लेखा कीता अच्छा, प्रभ अच्छी तरां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क उठाईआ।

तेरा भविष्य तेरा जस, खुशीआं नाल ढोला गाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मेरा सुनेहडा दिता दस्स, धुर दी अवाज लगाईआ। जुग चौकड़ी पैडा मुक्का नस्स नस्स, वेला अन्तम गिआ आईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, मेहर नजर इक्क उठाईआ। मेरा लेखा लिआ तक्क, पड़दा आप चुकाईआ। दूर दुराडे नेडे लिआ सद, होका आपणा नाम जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दीन मजहब विच्च जो बैठे अड्ड, आपणा राह वखाईआ। तिनां मेटणहारा हद्द, हद्द आपणी इक्क जणाईआ। सभ नूं दस्सया ढोला छन्द, सद इक्को इक्क सुणाईआ। उच्ची कूको सारे गज्ज, नाअरा इक्को इक्क लगाईआ। चरन दुआरे धुर दा हज्ज, मक्का काअबा इक्क वखाईआ। लहणा चुक्के शिवदवाला मट्ट, गुरूदुआर इक्क सरनाईआ। निर्मल जोत वेखो इक्क प्रगट, इष्ट अगम्मी नजरी आईआ। जिस दी नजर ना आवे रत्त, रत्ती रत्त सभ दी लेखे पाईआ। जिस दे गृह ब्रह्ममत, पारब्रह्म करे पढाईआ। तिस सरनाई जाउ ढट्ट, चरन कँवल मिले वडयाईआ। इक्को सोहला लउ रट, रट्टा मुक्के जगत लोकाईआ। सच दवारा वेखो हट्ट, श्री भगवान रिहा खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा वर, जिस मिलिआं तोट रहे ना राईआ।

तेरा भविष्य सोहणा चंगा, चंगी तेरी वडयाईआ। जुग चौकड़ी जिस दा वज्जदा रिहा मरदंगा, ढोला नाद इल्लाहीआ। जिस दी हिरस अंदर आउँदा रिहा अनन्दा, अनन्द हवस विच्च समाईआ। तिस दा वेख्या आ के कन्दु, पत्तण बैठा बेपरवाहीआ। धुर संदेश सुणावे इक्को छन्दा, साचा ढोला राग अलाईआ। बिन बन्दगीउँ कराए बन्दा, बन्दना आपणे चरन कराईआ। जगत जहान दा फड़ के अन्धा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। पौडे चाढ़े आपणा डण्डा, मंजल इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वडयाईआ।

भविष्यत कहे मैं धुर दा मालक, प्रभ देवे माण वडयाईआ। आदि जुगादि बण के सालस, साचा हुक्म सुणाईआ। मेरा रूप निरगुण खालस, तत्त नजर कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी प्रभ दा बालक, मात पिता ना कोई अखवाईआ। मैं खेलां खेल नाल खालक, खलक विच्च समाईआ। नित नवित्त ना कोई आलस, निंदरा गफलत ना नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा सच्चा संग निभाईआ।

भविष्यत कहे मैं निक्का लाल, निक्की निक्की बात सुणाईआ। जुग चौकड़ी देंदा रिहा अहिवाल, धुर संदेशा राग अलाईआ। जुग चौकड़ी बीते काल, थिर रहण कोई ना पाईआ। अन्तम प्रगट होवे दीन दयाल, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जिस नूं गोबिन्द कहे पुरख अकाल, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। चल के आवे सच दवार सच्ची धरमसाल, दर इक्को इक्क खुलाईआ। गीत अगम्मी जोती बाल, गृह मन्दर करे रुशनाईआ। शब्द अनादि वज्जे धुनकान, अनरागी राग सुणाईआ। सम्बल देवे इक्को माण, बिन चरनां चरन टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता बेपरवाहीआ।

भविष्यत कहे मेरी सच दलील, दयावान मोहे समझाईआ। मेरा खेल जाणे ना कोई वकील, वुकला समझ कोई ना पाईआ। मेरा खेल अन्त अखीर, आखर इक्को वार जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर बदले सर्ब तकदीर, ताकत आपणी इक्क प्रगटाईआ। शरअ शरीअत तोड़ जंजीर, लाशरीक खेल वरवाईआ। लहणा चुका पैगबर पीर, पहरा आपणा दए लगाईआ। अठु सड्डु विरोल नीर, अमृत इक्को इक्क बरसाईआ। चार जुग दी मेट लकीर, हरफ हरूप आपणा दए पढाईआ। करे खेल बेनज्जीर, नजर किसे ना आईआ। चोटी चढ़ आप अखीर, महल्ल अट्टल सोभा पाईआ। गरीब निमाणयां कट्टे भीड़, कोझे कमलयां गले लगाईआ। जन भगत साचे सन्त मिलाए भाईआं नाल वीर, एका दूजा भउ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रैहमत आपणी आप कमाईआ।

भविष्यत कहे मैं दिता संदेशा, सदके वारी घोली घोल घुंमाईआ। पारब्रह्म प्रभ आए नरेशा, नर नरायण इक्क अखवाईआ। लहणा देण चुकाए विष्ण ब्रह्मा शिव महेशा, शंकर आपणा हुक्म वरताईआ। खेले खेल देस परदेसा, दो जहानां वेख वरवाईआ। लक्ख चुरासी धारे भेसा, निरगुण नूर रूप इल्लाहीआ। पंज तत्त काया आपणी आपणे करे भेटा, साची सेवा आप लगाईआ। शौह दरया डूंधी भवरी वड़ के वेखे खेवट खेटा, सागर किनारा फोल फुलाईआ। लहणा देणा जाणे गोबिन्द गुर पुरख अकाल बेटा, पिता पूत आपणी धार जणाईआ। पूरब लेखा रक्खे चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जिस कारन जुग चौकड़ी भविष्यत कहे मोहे भेजा, मेरी आसा पूर कराईआ। जन भगत सवाए मेरी सेजा, सोहणी रुत्त मिलाईआ। मैं नेत्र नैण खुशीआं नाल वेखा, कँवल अक्ख खुलाईआ। जुग जुग दा मिटे भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ।



भविष्यत कहे मेरी पूरी आसा, आसा पुंनी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी देंदा रिहा भरवासा, मार्ग अगला इक्क समझाइंदा। श्री भगवान वेखे खेल तमाशा, खालक खलक रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण हो के देवे साझा, सगला संग निभाइंदा। वरन बरन दा इक्को पूजा पाठा, आत्म परमात्म राग अलाइंदा। भगत भगवान जुड़ाए नाता, दूजा मेल ना कोई मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा।

भविष्यत कहे मैं होया दयाल, गृह मेरे वज्जे वधाईआ। किरपा करी पुरख अकाल, मेहरवान होया सहाईआ। भगत भगवान मेले लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, चरन कँवल दिती सरनाईआ। सचखण्ड दवार सच्ची धरमसाल, धुर मन्दर दिता वखाईआ। निरगुण हो के चल्लया नाल, सरगुण आपणा जोड़ जुड़ाईआ। मुरीदां आ के पुच्छिआं हाल, हरिमन्दर आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी पूरी कीती घाल, कीती घाल लेखे लाईआ। भगत सुहेला भगत करे प्रितपाल, भगवन इक्को नजरी आईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत रिहा समझाईआ। एथे ओथे देवे माण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। लेखा चुके आवण जाण, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। अन्तर देवे पीण खाण, अमृत रस इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा देणा रिहा चुकाईआ।

भविष्यत कहे मेरा लहणा देणा मुक्के, मुक्की वस्त पराईआ। भगत भगवान गोदी चुक्के, घर खुशीआं राग सुणाईआ। अन्तर धारों निरगुण उठे, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। पतिपरमेशवर हो के पुच्छे, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। निरवैर हो कदे ना लुके, निराकार करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लुके रहण ना देवे गुट्टे, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जुग जन्म जो पिछले रुट्टे, फड़ बाहों लए मिलाईआ। लग्गी प्रीत किसे ना टुट्टे, टुट्टी आपणे नाल गंढ पवाईआ। जगत विकारा फड़ के कुट्टे, गुरसिख पतित पुनीत रूप वटाईआ। सच सरनाई आपे झुके, निउँ निउँ आपणा सीस निवाईआ। उजल करे गुरमुखां मुखे, मुख मुखड़े नाल सालाहीआ। लेखा चुक्के मात गरभ तन कुखे, आवण जावण गेड़ कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराईआ।

भविष्यत कहे मोहे चाउ घनेरा, वज्जे इक्क वधाईआ। घर आया प्रभ ठाकर मेरा, जिस ठोकर नाम लगाईआ। जन्म जन्म दा चुक्कया गेड़ा, झेड़ा कोई रहण ना पाईआ। भगत भगवान वसाया खेड़ा, खिड़की मन्दर आप खुलाईआ। जद वेख्या नजरी आया तेरा मेरा, तूं मेरा मैं तेरा इक्को रूप वखाईआ। घर सोहे गुरू गुर चेरा, चेला गुरू नजरी आईआ। धन्न भाग घर सतिगुर लाया डेरा, मैंहडे दर ताल वज्जे वज्जे सच वधाईआ। एस धार नूं जाणे केहड़ा, बिन पुरख अकाल ना कोई समझाईआ। डुबदे पाहिन तारे बेड़ा, सागर आपणा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर उठाईआ।

भविष्यत कहे मैं गावां छन्द, चार कुण्ट जणाईआ। श्री भगवान जिनां भगतां दिता अनन्द, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। गुरसिख चाढ़ सच्चे चन्द, बिन चन्दों दिते चमकाईआ। साचे मिनार महल्ल अट्टल दिते टंग, तन्दी डोर आपणी आप बंधाईआ। जिस दवारे कोई ना सके लंघ, उस गृह बैठण सोभा पाईआ। इक्को मंगण धुर दी मंग, साची झोली अगगे डाहीआ। श्री भगवान झोली पा आपणा छन्द, शाकर चरनां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साची बणत बणाईआ।

भविष्यत कहे मैं की की दस्सां, कहण किछ ना पाईआ। प्रभ दा खेल वेख वेख हस्सां, घर आपणे खुशी मनाईआ। चारों कुण्ट उठ उठ नट्टां, भज्जां वाहो दाहीआ। प्रभ लहणा देण चुकाया ढाडी भट्टां, गुरमुखां इक्को राग सुणाईआ। मूल चुक्कया सुथरयां नटां, सुथरी गल्ल इक्क सुणाईआ। जिउँ भावे तिउँ मैं भगतां रक्खां, बिन मेरे देवे ना कोई वडयाईआ। सारे मंगदे खाली कर के दोवें हत्थां, गुर अवतार पीर पैगबर आपणी झोली डाहीआ। दर्शन लोडन निज नेत्र अक्खां, आखर आपणी आस लगाईआ। कर किरपा जिस मेहर मुहब्बत प्रेम प्रीती झोली घत्तां, अतुट अतोत भंडार वरताईआ। नित नवित्त आपणे संग रक्खां, सगला संग जणाईआ। मेरा खेल कक्खां करां लक्खां, लक्खां कक्ख रूप वटाईआ। मेहरवान हो के जिस नूं मार्ग दस्सां, बिन पड़िआं देवां पढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ।

भविष्यत कहे तेरी सुण के सोभा, सोभत दए वडयाईआ। करता पुरख मेरा पूरा कीता होका, मैंनू हौका रिहा ना राईआ। मैं चारों कुण्ट फिरां विच्च चौदां लोकां, चौदां तबक रिहा जणाईआ। उठो सारे वेखो प्रभ दा मौका, मुखबर हो के दिआं जणाईआ। जुग चौकड़ी ना कीता कोई धोखा, धुर दा हाल सुणाईआ। जिस दी सारे रक्खदे गए ओटा, ओडक आपणा फेरा पाईआ। वेख प्रेम प्यार दीआं लगाए चोटां, नगारा हत्थ ना कोई रखाईआ। चरन दवार रहण ना देवे कोई खोटा, खरे आपणी झोली पाईआ। सोचिआं किसे विच्च ना आए सोचां, मन मत बुद्ध चले ना कोई चतुराईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छें इक्को वार मिल्या मौका, मुख आपणा रंग चढाईआ। जन भगत उधारे किरपा धारे नाल शौका, शहनशाह आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर आपणे हत्थ रक्खी वडयाईआ।

भविष्यत कहे उठो नट्टो, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। परम पुरख दा दर्शन तकको, तकवा इक्क रखाईआ। खुशीआं नाल दर ठांडे नच्चो, मंगल गीत इक्क सुणाईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी दे गेड़ों बचो, बच्चयां वांग लए बचाईआ। दर्शन पा के खुशीआं नाल हस्सो, संसा रोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर हिरदा रिहा जगाईआ।

भविष्यत कहे जागो उठो खोलो अक्ख, नेत्र नैण रिहा खुलाईआ । सच पैगम्बर जाहर जहूर होया प्रतक्ख, परबत चोटी टिल्ले जंगल जूह उजाड़ वेख वखाईआ । हकीकत विच्चों विरोल के हक, हक हरिजन झोली पाईआ । सच दवार धुर दा मार्ग गृह स्वामी जाए दस्स, दहि दिशा भेव खुलाईआ । प्रेम प्यार दी प्रीती अंदर फस, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ । जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत चरन कँवल सच सरनाई गिआ ढट्ट, तिस आवण जावण रिहा ना राईआ । महाराज शेर सिँघ विष्णू भगवान, पुरख अकाल जोत समरथ, सभ दी आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ ।

**\* पहली फग्गण २०२० बिक्रमी हरि भगत दवार जेटूवाल \***

प्रसाद कहे पुरख समरथ, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ । आदि जुगादी धुर दी वथ्थ, वस्त अमोलक बेपरवाहीआ । जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर करदा रिहा आस, नित नवित्त तेरा ध्यान लगाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात कट्ट के गए वाट, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ । पीरन पीर सरगुण गए तलाश, लोक परलोक तेरा ध्यान लगाईआ । साहिब स्वामी तेरी किसे ना लम्भी जात, जाति रूप ना कोई जणाईआ । रसना जिहा बत्ती दन्द धुर संदेसा गा के गाथ, शब्द अनादी नाद सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच दे वडयाईआ ।

प्रसाद कहे प्रभ मेरे ठाकर, तेरे हत्थ वडयाईआ । जुग चौकड़ी लोकमात फेरा पाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरा करदे गए आदर, थोडा थोडा परदा पाईआ । निर्मल कर्म ना होया उजागर, मेहर नजर ना कोई उठाईआ । साचा वणज ना कीता बण सुदागर, बण वणजारा हट्ट चलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वडयाईआ ।

प्रसाद कहे मेरे अन्तरजामी, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ । तेरा खेल खालक खलक महानी, बेपरवाह बेअन्त अन्त कहण कोई ना आईआ । जुग चौकड़ी गावत गा गए सच ज्ञानी, धुर दा ढोला राग सुणाईआ । रस अंमिउँ रस टंडा पाणी, धारा तेरी इक्क समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भेव दए खुलाईआ ।

साचा भेव खोलू निरँकार, निरगुण हत्थ तेरे वडयाईआ । जुग चौकड़ी बीते विच्च संसार, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ । विष्ण ब्रह्मा शिव बण के सेवादार, नित सेवा रहे कमाईआ । त्रैगुण माया खोलू भंडार, पंज तत्त करी कुडमाईआ । घाड़त घड़ बण ठठिआर, लक्ख चुरासी रंग रंगाईआ । निरगुण सरगुण कर त्यार, नाता जोड़ जुड़ाईआ । दीआ बाती कर उजिआर, कमलापाती सोभा पाईआ । मन मत बुध दए आधार, नौं दर जगत रस वखाईआ । लेखा जाण धुर दरबार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे वखाईआ । साचा लेखा दस्स श्री भगवन्त, बेअन्त तेरी सरनाईआ ।

किस बिध बणाई मेरी बणत, कवण धारा रंग रंगाईआ। कवण लेखा जाणे साध सन्त, गुर अवतारां कवण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा दे उठाईआ। साचा परदा देणा खोलू, प्रभ तेरे हत्थ वडयाईआ। दर दरवेश मंगों बोल, अलक्ख निरञ्जण इक्को अलख जगाईआ। कवण कंडे तोलें तोल, तराजू कवण हत्थ उठाईआ। कवण दवारा देवें खोलू, बन्द कवाडी कुण्डा लाहीआ। कवण वस्त देवें वरोल, अनमुलडी दात वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चे शहनशाहीआ।

शहनशाह प्रभ ठाकर स्वामी, दर तेरे इक्क अरजोईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, देणी दर दवारे सच्ची ढोईआ। लेखा वेख्या चारे खाणी, चारे बाणी करे रुशनाईआ। अमृत भरे ढंडा पाणी, शब्द सुरत रिहा ढोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दूजा नजर ना आवे कोई आ।

प्रसाद कहे मेरी दस्स रीता, किस बिध मात बणाईआ। कवण दवारे मोहे रखीता, कवण मन्दर सुहाईआ। कवण मिले धुर दी दीछा, झोली कवण भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ। सुण परसाद धुर दे सच्चे, हरि सच सच जणाईआ। किरपा करी पुरख अकाल आपणे उते शब्दी बच्चे, मेहर नजर नैण उठाईआ। चरन प्रीती नाल रते, रंग इक्को इक्क रंगाईआ। साहिब स्वामी सिर हत्थ रक्खे, समरथ दए वडयाईआ। चरनां नाल चरन कर इक्के, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर उठाईआ।

मेहर नजर कर पारब्रह्म, हरि करता आप जणाईआ। सति परसाद सुण ला कर कन्न, करनहार दृढाईआ। हरख सोग ना कोई गम, चिन्ता चिखा ना कोई जणाईआ। हउमें रोग ना तृस्ना तम, माया ममता ना कोई वडयाईआ। जिस दवारे शब्द सुत बिन जननी लिआ जण, निरगुण बणया पिता माईआ। ओसे दर बेडा दिता बन्नु, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा दए समझाईआ। साचा लेखा सुण ला मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। थिर घर चलाई तेरी रीत, निरगुण निरवैर कार कमाइंदा। शब्दी झोली पाया ठीक, सोहणी वस्त वरताइंदा। रस दे के अगम्मी सीत, सांतक आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा।

साची करनी हरि करतार, आदि पुरख आप कमाईआ। निरगुण निरवैर निराकार किरपा धार, अजूनी रहित दिती वडयाईआ। बखशिश कर अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर दिता वरताईआ। आपणे चरनां दी लै के धूडी छार, शब्दी सुत मुख लगाईआ। एह प्रसाद सदा निराहार, निराकार रिहा जणाईआ। जिस दा भेव पाए ना कोई जुग चार, चौकड समझ कोई ना आईआ। एसे प्रसाद विच्चों प्रगट कर गुरू अवतार, पीर पैगम्बर रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए समझाईआ।

प्रसाद कहे मेरी निमस्कार, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। दर ठांडा दिता दरबार, थिर घर वज्जी वधाईआ। तेरा शब्दी सुत रक्खे संभाल, आपणे नाल निभाईआ। जुग चौकड़ी दे अधार, लोकमात दए वरताईआ। मेरा लेखा होवे शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सुण प्रसाद बाले निक्के, श्री भगवान आप जणाइंदा। चारों कुण्ट साहिब स्वामी तेरे अंदर दिसे, गृह मन्दर डेरा लाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत कीते तेरे हिस्से, सोहणा हिस्सा वंड वंडाइंदा। सच बंधावे धुर दे निसचे, दूजा इष्ट ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

सुण प्रसाद चढ़या चा, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। शब्दी शब्द बणे गवाह, तेरी शहादत रिहा रखाईआ। अग्गे मंगौं मंग बेपरवाह, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जुग चौकड़ी सेवा लवां कमा, लोकमात वेस वटाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा देवां लिखा, जिस लेखे विच्चों रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दे समझाईआ।

सुण लाल सोहणे सुचज्जे, साहिब देवे वडयाईआ। अन्तकाल तेरा परदा कज्जे, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे बद्धे, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। गुरमुख गुरसिख हरि सन्त भगत तेरी आस रक्खे, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, सच मिले तेरी सरनाईआ।

सच सरनाई दे भगवन्त, इक्को ओट तकाईआ। कवण वेला बणे साचा कन्त, घर आपणा मेल मलाईआ। बोध अगाध बण के पंडत, निरअक्खर दए समझाईआ। सति सतिवादी देवे संगत, विद्या पारब्रह्म पढ़ाईआ। दर दरवेश बण के मंगत, इक्को अलख जगाईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म समझाईआ। लेखा जाणे पंकज, पवित तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, साहिब तेरी वडयाईआ।

साहिब दरस पुरख अकाल, दर करते मंग मंगाईआ। कवण वेले होए दयाल, दीनन आपे होए सहाईआ। जुग चौकड़ी केहड़ी चाल, कवण धार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए समझाईआ। श्री भगवान कहे सुण एक, एकंकार जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरी टेक, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। बिन भगतां किसे ना देवां भेत, परदा सके ना कोई खुलुआईआ। घर नामे आ के लवां वेख, धन ने लेखा दिआं चुकाईआ। रविदास चुमारे करके चेतन्न चेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वडयाईआ।

सुण प्रसाद बात अगम्म, लिखण पढ़न विच्च ना आईआ। मेरे लाडले सच्चे चन्न,

चमत्कार दिआं चमकाईआ। भोग ला के नामे छन्न, छन्नां सोभा पाईआ। धन्ने देवां इक्को धन्न, आपणा आप झोली पाईआ। रविदास दवारे जावां मन्न, सोहणी बणत बणाईआ। सच संदेसा सुण लै कन्न, हरि करता आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

सुण के बचन होया चुप, प्रसाद आपणा सीस निवाईआ। श्री भगवान कवण वेले वेखां मुख, तेरा सच सरूपी दर्शन पाईआ। पुरख अकाल किहा तुठ, सच दिआं दरसाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग होणा चुप, नव नव चार चौकड़ी युग पार कराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर तैनुं आपे लए पुच्छ, परदा उहला आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

प्रसाद किहा मेरी अरदास, साहिब तेरी सरनाईआ। तेरे मिलण दी इक्को खाहश, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। जुग चौकड़ी की रवाज, कवण धार बंधाईआ। साहिब समरथ मार अवाज, इक्को वार जणाईआ। छत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश बणे समाज, सोहणी बणत बणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवां साथ, निरगुण सरगुण जोड जुडाईआ। तेरी वक्खरी मण्डल बणावां रास, सोभावन्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए वखाईआ।

तेरा लेख प्रभ जणाउँदा ए। धुर दी धार आप समझाउँदा ए। लोकमाती वंड वंडौंदा ए। साचा मेला मेल मलौंदाए। जल अमृत रूप वटाउँदा ए। घृत अगम्मी इक्को पाउँदा ए। अन्न झोली दान वखाउँदा ए। तिन्नां सच मेल मलाउँदा ए। फड अगनी भेट चढाउँदा ए। धुर दा लेखा आप वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी डोर लोकमात गुर अवतारां पीर पैगम्बरां हत्थ रखाउँदा ए।

पीर पैगम्बर मात आउणगे। गुर अवतार रूप वटौणगे। मेरा धुर दा नाम जपौणगे। सच संदेश इक्क सनौणगे। कर के देही खेल खलौणगे। बण नरेश हुक्म वरतौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी मात कमौणगे। साची करनी मात कमावणगे। गुर अवतार पीर पैगम्बर फेरा पावणगे। धुर संदेस इक्क सुणावणगे। बण कातब लेख लिखावणगे। शास्त्र सिमरत वेद पुरन, गीता ज्ञान अंक बणावणगे। अञ्जील कुराना कर परवान, मसला हक हक सुणावणगे। गुरू गुरू गुरदेव अगम्मी बाण, तीर निराला इक्क चलावणगे। लालच दे के जीव जहान, सोहणी रीती मात वखावणगे। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्टु बणा मकान, सोहणा बंक वड्डिआवणगे। अंदर रक्ख चार जुग दी खाणी बाणी कर प्रधान, सोहणा राह वखावणगे। माया नाल कर पकवान, पक्की तरां जगत समझावणगे। सभ तों उत्तम एह खाण, सृष्टी इष्ट दृष्ट एहदे विच्च वखावणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमावणगे।

धुर प्रसाद पिआ हस्स, प्रभ अगगों आख सुणाईआ। वेखीं प्रभ मैनुं होर किसे ना पावीं वस, वास्ता तेरे नाल रखावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मैनुं लाए हत्थ, उस हत्थ विच्चों तेरा रस आपणे मुख लगावांगा। उह तेरे वस मैं ओनां वस, फिर भी वास्ता तेरे अगगे पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवावांगा।

दर तेरे सीस नवावांगा। अलक्ख अगोचर इक्को संग निभावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दे के संग, लगी तोड़ निभावांगा। सृष्ट सबई कर के नंग, चारों कुण्ट खेल करावांगा। फिरे दरोही विच्च वरभंड, ब्रह्मण्डी नाद वजावांगा। कलिजुग कूडी क्रिया घर घर होए घमंड, माया ममता मोह वधावांगा। गुर मरयादा कर के भंग, भंगदा आपणा फेर वखावांगा। साध सन्त पंडत ब्रह्मण मुल्लां काजी मेरे उत्तों लंघावण डंग, सोहणी कूडी वंड वंडावांगा। चारों कुण्ट भेख परखण्ड, आत्म परमात्म भरम भुलावांगा। मैनुं खा के किसे ना आवे अनन्द, अनन्द विच्चों अनन्द बाहर कढावांगा। मैनुं कहि के गिआ गुजरी चन्द, सच संदेसा इक्क समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवावांगा।

दर तेरे सीस निवावांगा। दोए जोड़ वास्ता पावांगा। धुर दा साथ इक्क रखावांगा। पुरख अकाल ओट तकावांगा। दीन दयाल दर्शन पावांगा। तोड़ जंजाल जगत, भगत भगवान मनावांगा। मन्दर मस्जिद बेशक मेरी सारे चाढ़न रसद, रस्ता सभ दा बन्द करावांगा। बिन पूरे गुरमुख मैनुं खा के कोई ना होवे मस्त, गधेयां वांग सर्ब लिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगावांगा। दर तेरे मंग मंगौदा हां। दोए जोड़ वास्ता पौंदा हां। अन्तर आपणी आवाज सुणौंदा हां। जुग चौकड़ी वेख वखौंदा हां। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल तोड़ निभौंदा हां। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मव्व गुरूदवारे सोभा पौंदा हां। जिनां चिर पारब्रह्म पतिपरमेशवर प्रगट हो ना लावें हत्थ, प्रसाद रूप ना मैं वखौंदा हां। बेशक मैनुं रुमालिआं हेठ देण ढक, उप्पर पक्ख्यां चौर झुलौंदा हां। जिनां चिर मिले ना पुरख समरथ, आपणी भेट ना किसे चढ़ौंदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवौंदा हां।

सुण प्रसाद सच्ची बात, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। तेरा लहणा कोई ना जाणे विच्च परात, भेव अभेव ना कोई खुल्लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवण साथ, लोकमात संग निभाईआ। साचा खेल वेखो तमाश, शब्द सुत वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख इक्को रिहा दृढाईआ।

जो किहा पुरख अकाल, धुर दी बात सुणाईआ। किरपा करे दीन दयाल, दयानिध वडयाईआ। निरगुण चले अव्वलड़ी चाल, लिखण पढ़न विच्च लेख ना कोई बनाईआ।

सचखण्ड बैठ सच्ची धरमसाल, सच प्रसाद तैनुं दए प्रगटाईआ। आ के सुणे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोहे देवे सच वडयाईआ।

सच वड्डिआई आप दवावांगा। निरगुण हे के वेस वटावांगा। रविदास दवारे चल्ल के आवांगा। सच सिँघासण सोभा पावांगा। पाटा चीथड उप्पर विछावांगा। बण के मीतल, मित्र प्यार अखवावांगा। कर के ठांडा सीतल, अमृत मेघ बरसावांगा। तूं रखीं मेरी उडीकण, मैं आपणा वेस वटावांगा। भुल्ल ना जाई तरीकण, तरीके नाल समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावांगा।

की प्रभू कार कमावेंगा। जिस वेले रविदास कोल आवेंगा। कवण रूप अनूप वटावेंगा। कवण कूट सोभा पावेंगा। कवण जोत नूर चमकावेंगा। कवण शब्द चोट नगारे लावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, किस बिध आपणा मेल मिलावेंगा।

रविदास चमारे जदों आवांगा। निरवैर निरँकार निराकार अखवावांगा। जोती धार रूप प्रगटावांगा। शब्दी तार नाद इक्क वजावांगा। ब्रह्म ब्रह्माद आप उठावांगा। विष्ण ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्लावांगा। स्वच्छ सरूपी हो प्रतक्ख, गृह मन्दर नजरी आवांगा। लै के वस्त इक्क अकथ्थ, घर साचे फेरा पावांगा। अगला मार्ग देवां दस्स, पिछला पन्ध मुकावांगा। सच परसाद तेरा रस, आपणे रस विच्चों प्रगटावांगा। जिस दा कोई गा ना सके जस, शास्त्र सिमरत वेद पुरान भेव ना किसे दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा।

प्रसाद कहे मोहे चाउ घनेरा, प्रभ वज्जे इक्क वधाईआ। नाता जुडे तेरा मेरा, दूजा नजर कोई ना आईआ। धन्न भाग मेरा बन्ने बेडा, लोकमात आपणे कंध टिकाईआ। मैं वसदा वेखां सोहणा खेडा, जिस गृह बह के सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी रक्खां जेरा, चरन कँवल ओट तकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर पावे फेरा, आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चे देणी वडयाईआ।

सुण प्रसाद मेरे लाल, हरि लालन दए जणाईआ। सच दवार सोहे सच्ची धरमसाल, श्री भगवान सोभा पाईआ। इक्को खेल करां महान, महिमा कथ अकथ्थ वडयाईआ। रविदास दा लै सुक्का पकवान, सच प्रसाद दिआं बणाईआ। गुरमुख विरले गुरसिख खाण, हरिभगत रसना लैण लगाईआ। खादिआं लेखा चुक्के दो जहान, आवण जावण रहण ना पाईआ। सो प्रसाद मोहे परवान, जो मेरा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर उठाईआ।



प्रसाद कहे प्रभ उह केहड़ा प्रसाद, जो जगत नाल बंधाईआ । जिहनुं खा खा कहण जीव जंत बड़ा सुआद, साध सन्त खुशीआं रहे मन्नाईआ । रसना कहण अज्ज वड्डे होए भाग, सोहणा पेट भराईआ । ऐहो जिहा मिले रोज खाज, प्रभ आसा पूर कराईआ । किस बिध चलाया उह खाज, जगत जीव दे समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुलाईआ ।

सुण प्रसाद जगत दा जस, जगजीवण दाता आप जणाईआ । नौं दवारे नौं रस नौं खण्ड गई लग्ग, मन वासना ध्यान लगाईआ । माया ममता रसन प्यार करन हज्ज, हुजरा हक ना कोई वखाईआ । मिट्टा रस सृष्ट सबाई लए छक, सिकवा अंदर ना कोई मिटाईआ । गुर प्रसाद कह के करन आपणा हक, हकीकत विच्चों सार किसे ना आईआ । बिन भोग लगाया विच्चों हिस्सा कट्टु के लैण रक्ख, आपणी वंड वंडाईआ । पारब्रह्म पतिपरमेशवर किसे नजर ना आवे प्रतक्ख, जाहर जहूर नूर ना कोई रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दिता समझाईआ ।

परसाद कहे उह वेला केहड़ा, प्रभ देवें माण वडयाईआ । लोकमात चुक्के झेड़ा, खैहड़ा दएं छुडाईआ । नजरी आवें नेडन नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ । मेहरवान हो के करे मेहरां, मेहर नजर उठाईआ । कूडी क्रिया चुके झेड़ा, झंजट रहण कोई ना पाईआ । इक्को मन्दर इक्को गुरूदवार प्रभू तेरा, श्री भगवान नजरी आईआ । उस गृह लग्गे मेरा डेरा, घर बहि बहि खुशी मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सच देवां समझाईआ ।

सुण प्रसाद कर ध्यान, हरि ध्यानी आप जणाइंदा । रविदास दवारे खेल महान, हरि करता आप कराइंदा । पिछला लेखा जाणे जीव जहान, परम पुरख परदा लाहिंदा । वेद व्यासा दे के गिआ ब्यान, नारद मुन समझाइंदा । कवारी कन्या जम्मया बाल, पूत सपूता आप अखवाइंदा । धुर दा बण वड्डा विदवान, बोध अगाधा लेख जणाइंदा । मछन्दरी वेख नैण सरमाण, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा । किधरों आया अगम्मी बाल, रूप अनूप कवण वखाइंदा । वेद व्यास कर प्रनाम, माता कह के सच सुणाइंदा । सप्त रिखी होया मेहरवान, नौका नईआ सोभा पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद खुलाईंदा ।

वेद व्यास फड़ के लोटा, आपणा कदम उठाईआ । बणया बाल ना वड्डा ना छोटा, उच्चा लम्मा समझ किसे ना पाईआ । ढाई गज तेड़ बध्धा धोता, दुपट्टा लाल रंग रंगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए वडयाईआ । वेद व्यास फड़ कर्मडल, डोरी हत्थ उठाईआ । वेख ब्रह्मांड धुर दा मण्डल, आपणी खुशी मनाईआ । मस्तक लगाया अगम्मी चन्दन, तिलक ललाट रुशनाईआ । मिल्या मेल अगम्मी नंदन, अनन्द विच्च समाईआ । कर के आपणी बन्दगी बन्दन, बन्दीखाना तोड़ तुड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ ।

वेद व्यास चल्लया अग्गे, आपणा कदम उटाईआ। अग्गों आए शेर बग्गे, पंज रूप वरवाईआ। जन्म दे दिसण भाई सके, भईआ रूप वटाईआ। जिन्नां लग्गे मस्तक टिकके, सोहणा रंग वरवाईआ। सभ तों पहला किहा निकके, की तेरी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल वरवाईआ।

वेद व्यास कहे मैं दस्सां एक, इक्को वार जणाईआ। पहली वार तुसां मैनुं लिया वेख, दूजा नजर कोई ना आईआ। इधर तक्को उह माता मेरी अचनचेत, पिता रूप ना कोई वरवाईआ। जिस दे जम्मया पेट, जन्म वाली समझ कोई ना पाईआ। आपणा आप लिया लपेट, उठ के तुरया पान्धी राहीआ। पुरख अकाल अगम्मी खेले खेल, खालक खलक वड्डी वडयाईआ। ना कोई रूप रंग ना रेख, चक्कर चिहन ना कोई जणाईआ। सप्त रिखीआं कीता हेत, सच संदेसा गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

शेर कहण उह माता चंगी, जिस मिले माण वडयाईआ। साडी किस्मत तैथों मंदी, जंगल जूह बेले फेरा पाईआ। असीं वेख्या किनारे नदी, बेडा आपणा रही टिकाईआ। जो आर पार करके हद्दी, सोहणी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वरवाईआ।

शेरां अंदर आया ध्यान, अंदरे अंदर मिले वडयाईआ। किरपा करे श्री भगवान, सोहणी साडी बणत बणाईआ। एहो जिहा बाल जे साडे घर जन्मे आण, दो जहान वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रचाईआ।

वेद व्यास अन्तरगत गिआ बुज्ज, सभना सच सुणाईआ। केहडी करनी गए रुझ, नीती विच्चों बदलाईआ। तुसीं शेर हो के मारो भबक भुब्ब, उच्ची कूक सुणाईआ। सभ तुहानूं जावण झुक, आपणा सीस निवाईआ। तुहाड्डी सोहणी लग्गे बग्गी मुच्छ, मुखडे उते सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

पंजे कहण नेत्र रो, नैणां नीर वहाईआ। बौहडी सानूं की गिआ हो, सोच समझ रही ना राईआ। किधर गिआ साडा मोह, मुहब्बत कवण ररवाईआ। किस बिध नारी रूप जाईए हो, जामा आपणा आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच दए समझाईआ।

सच संदेसा दे के एक, वेद व्यास जणाइंदा। अन्तर आत्म लउ वेख, भेव अभेद खुलाइंदा। सर्ब स्वामी इक्को टेक, रघुनाथ इक्क वडिआइंदा। साहिब नाल करो हेत, मित्र प्यारा सोभा पाइंदा। जुग चौकडी बदलणहारा भेस, वेस अनेका रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी बणत बणाइंदा।

निक्का शेर खोलू के अक्ख, वेद व्यास वल तकाईआ । किवें प्रगट होइउँ प्रतक्ख, साख्यात नजरी आईआ । भेव आपणा खोलू दस्स, मछोदरी केहड़ी माईआ । झीवर कन्या हो के वस, मलाह बेटी जन्म दवाईआ । सप्त रिखी गए नष्ट, आपणा पल्लू छुडाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे दृढाईआ ।

वेद व्यास कहे मैं दस्सां बात, बातन दिआं जणाईआ । जिस दिती मेरी ज्ञात, सो मेरा ज्ञाहर जहूर नजरी आईआ । आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा साथ, सगला संग निभाईआ । लेखा जाणे पृथ्वी आकाश, गगन मण्डल वेख वखाईआ । दो जहानां पावे रास, गोपी काहन नचाईआ । अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह करे खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नजर उठाईआ ।

शेर कहण पंज उठा पंजा, इक्को वार जणाईआ । वेद व्यास तूं सिरों दिसें गंजा, जटा जूट ना कोई वडयाईआ । बचन इक्को तैथों मंगा, सच सच दे समझाईआ । कवण वेले मिले सूरु सरबन्गा, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ । जिस दे घर इक्को वज्जे मरदंगा, ढोलक छैणा नजर कोई ना आईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा गावे छन्दा, ढोला सिपत सालाहीआ । आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो लक्ख चुरासी नाल हंडा, ना मरे ना जाईआ । साङ्गी ओस नाल पवे गंहुा, नाता सके ना कोई तुडाईआ । वेद व्यास किहा सुणो सच पारब्रह्म पतिपरमेशवर निरगुण सरगुण होए बन्दा, बन्दगी आपणी दए जणाईआ । दो जहानां नूरी चन्दा, जोती जोत करे रुशनाईआ । खुशीआं विच्च सति धर्म दा फड के खण्डा, इक्को रंग चमकाईआ । लक्ख चुरासी जीव जंत वेखे गंदा, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ । मेहरवान हो के जन भगतां देवे उच्चा डण्डा, चौथे पद आपणे घर बहाईआ । दीन दयाल हो बख्शंदा, मेहर नजर उठाईआ । अंदर वड के पावे ठंडा, अगनी तपत बुझाईआ । आसा मनसा पूरी करे मंगा, जो बैठे ध्यान लगाईआ । निक्कयां नालों कहे वड्डा, मैं इक्को वार सुणाईआ । पुरख अबिनाशी जे पहली वार देवे सदा, अद्धा निउँ के सीस निवाईआ । दूजा कहे मैं फड के पाड़ां उहदा झग्गा, चोली सोहणी ना कोई वखाईआ । तीजा कहे मैं वेखां उहदिआं हड्डां, तन माटी नजरी आईआ । चौथा कहे मैं चरनां विच्च ढट्टां, निउँ निउँ सीस निवाईआ । पंजवां कहे मैं निक्का हो के उहदी सोहणी गोदी वसां, वास्ता आपणे नाल रखाईआ । दर्शन करां आपणीआं अक्खां, लोचण नैणां वांग चमकाईआ । नाले रोवां नाले हस्सां, खुशीआं रंग वखाईआ । प्रेम प्रीती अंदर नट्टां, भज्जां वाहो दाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ ।

वेद व्यासा कहे सुणो शेर, शेर शेरों वांग जणाईआ । परम पुरख परमात्मा कलिजुग अन्तम आवे फेर, फेरा आपणा इक्क वखाईआ । जिस नूं कहन्दे बबर केहर, केहरां नालों केहर हो दलेर वेस वटाईआ । लहणा देणा दए नबेड, लेखा आपणे हत्थ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ ।

छोटा कहे मैं सुणी बात धुर प्रसाद, हौली हौली जणाईआ । श्री भगवान घर औणा रविदास, चमरेटे दए वडयाईआ । ओथे कम्म कोई खाश, जिस दी लिखत ना कोई लिखाईआ । उस दे कोल वस्त अगम्मी होणी साथ, सच प्रसाद आपणा लै के आईआ । ओनां देणी दाद, जिनां लेखा आपणे लेखे पाईआ । वेद व्यास किहा मार आवाज, सुणो सच दिआं सुणाईआ । पंजां पंजां देवे दात, इक्क दो मिले वडयाईआ । सोहणी बणा के आपणी भात, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ । आत्म परमात्म दे के खाज, भरपूर दए कराईआ । मार के इक्क आवाज, धुर विछड़े लए मिलाईआ । ब्राह्मण कहार दे के अवाज, घुमिआर खुशी कराईआ । डोली डण्डे रस्से देवे लाग, सोहणा मुल्ल पुआईआ । लाडी वेख नक्क नत्थ सुहाग, साचा कन्त मिलाईआ । पंज शेर ओस वेले जाणा जाग, नेत्र अक्ख खुलाईआ । जन्म विच्च जन्म ना होवे कर्म विच्च कर्म ना होवे करे खेल तमाश, वड वड्डा बेपरवाहीआ । शब्दी शब्द होए मुहताज, शब्दी पूरी करे आस, खाहश शब्द विच्च रखाईआ । घर सद्दे दर रविदास, बण दास खुशी मनाईआ । थोड़ी जेही खवावे तुहानूं भात, बिन तत्तां मुख पवाईआ । निरगुण हो के आप, निरगुण तुहाछे लेखे लाईआ । ओस वेले खुशी नाल कहणा बाप, पिता पुरख तेरी सरनाईआ । चौथा कहे मैं मन्नां इक्को साक, दूजा नजर कोई ना आईआ । पंजवां कहे मैं फड़ लैणां हाथ, घुट के आपणे हत्थां विच्च दबाईआ । हुण नहीं छड्डणा तेरा साथ, झल्ली ना जाए जुदाईआ । श्री भगवान शब्दी धार जाए आख, सोहणा राग अलाईआ । वेद व्यासा वेखे मार झात, आपणी अक्ख खुलाईआ । परम पुरख परमेश्वर किस बिध रक्खे याद, किताब हत्थ ना कोई वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ ।

सुण के बचन अगम्मी धुर, धुन वज्जदी सोभा पाईआ । ओधरों ब्राह्मण खोलू मुन, आपणे नैण उठाईआ । किस नाल कवण करे गुण, गुण नेत्र नजर ना कोई वखाईआ । जे कोई लभ्भे मैं बणा के जजमान चोटी लवां मुन्न, खाली हत्थ फिराईआ । जो मेरे कोल आ जाए भुल्ल, गृह जावे रोंदा मारदा धाहींआ । मेरा भंडारा जावे खुलू, झोली भरी नजरी आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ ।

ब्राह्मण वेख आत्म अन्तर, रविदास रिहा सुणाईआ । किथों लग्गी तैनुं बसन्तर, तृखा रही तपाईआ । गुरदेव स्वामी जीव मंतर, नमो सति वडयाईआ । जिस दा लेखा जुगा जुगन्तर, जुग चौकड़ी रचन रचाईआ । सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, परदा सके ना कोई लुकाईआ । खेले खेल गगन गगनंतर, दो जहानां सोभा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ ।

ब्राह्मण कहे सुण रविदास, मैं आपणी नीती दिआं जणाईआ । चार कहारां कोल आया खास, पल्लू सभ दे खाली गिआ कराईआ । घुमिआर कोल जेहडी दात, जोडा चुक्क के आपणी गठडी बंधाईआ । होर जेहड़े सज्जण साक, सारे ठग्ग के खाईआ । गंगा माता दे धरवास, तेरा कंगण लै के आईआ । जे राजा ना हुंदा बदमाश, फिर मेरी वज्जदी

रहन्दी वधाईआ। वेख मेरा खेल तमाश, मैं सभ दा भला तकाईआ। डोली वाली लाड़ी दे वेख नथ बलाक, मेरा मन गोते खाईआ। किस वेले मेरा पवे हाथ, जोर आपणा दिआं वखाईआ। एह केहड़े पंज जेहड़े ओहले करदे गल्ल बात, अक्खां विच्च नजर ना आईआ। किथे बैठा पुरख अबिनाश, निरगुण आपणा डेरा लाईआ। मैं उहदी रक्खां आस, जे कुछ मेरी झोली देवे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

साहिब पुच्छे रविदास की, कौण सोभा पाईआ। रविदास किहा जी, एह साहिब तेरी वडयाईआ। साहिब किहा वंडां वंड साढे तिन्न हथ सीं, सभ दी दात झोली पाईआ। रविदास कहे तेरी मेहर अमृत मींह, मेघ दे बरसाईआ। भगवान किहा की शेर बणे धी, वेद व्यासा झट्ट देवे गवाहीआ। साहिब प्रभू एह ठीक, पिछला लहणा दए जणाईआ। शेर कहण असां मंगी भीख, झोली इक्को अगगे डाहीआ। तेरे नाल मिलण दी रक्खी उडीक, सच वक्त दे सुहाईआ। रविदास कहे प्रभ चरन करो प्रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सच सच दए दृढाईआ।

पंजे कहण प्रभ प्रीती गई लग्ग, सरन तेरी सरनाईआ। सानूं मात जन्म दवौणा जग, जगदीशर तेरे हथ वडयाईआ। जन्म जन्म दी बुझे अगग, तृसना रोग मिटाईआ। तेरा दर्शन कर के अज्ज, घर साचे खुशी वखाईआ। जन्म जन्म दी पार होवे हद्द, कर्म कर्म दा रोग गवाईआ। साडे नाल लडौणा लड, आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क देणा सच्चा वर, साहिब तेरी सरनाईआ।

रविदास किहा झुकाओ सीस, चरन कँवल सरनाईआ। किरपा करे मेरा जगदीश, जगदीशर हथ वडयाईआ। माण दवाए नीचां नीच, ऊँचो ऊँच रूप नजरी आईआ। जो लंघ के आया एहदी दहिलीज, दर दरवाजा दए खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग वखाईआ।

श्री भगवान कहे सच रविदास, पंजां दिआं वडयाईआ। वेद व्यासा लेखा लिखे खास, लहणा देणा आपणा रिहा भुगताईआ। पंजां दी इक्क जमात, सोहणा जोड जुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

निक्का शेर मार के चीक, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जो किहा प्रभू सो ठीक, सच तेरी वडयाईआ। तेरे दर तों मंगों भीख, भिच्छया इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी गोद बहाईआ।

पारब्रह्म कहे अबिनाश, दीन दयाल दया कमाईआ। कलिजुग अन्तम रक्खां पास, सोहणा जोड जुडाईआ। देवां वडुआई धरत धवल उप्पर आकाश, आकाश आकाशां विच्चों

आपणा नूर दरसाईआ। पूरब जन्म लहणा देणा करां रास, मेहर नजर उठाईआ। ओधरों रविदास अर्ज कीती खास, खाहश आपणी नाल मिलाईआ। छोटी सपुत्री आई भाज, रविदास रही जणाईआ। पिता अज मैं दर्शन कीता जिस दे सीस उते अगम्मी ताज, पंचम मुख सुहाईआ। कोटन कोट गुरू अवतार पीर पैगम्बर विष्ण ब्रह्मा शिव उस दे चरन करन अरदास, सजदा सीस रहे झुकाईआ। शब्द अगम्मी वड सुरीली उहदी आवाज, तन्दी तन्द सतार किसे ना बाहर कढाईआ। मैं आखिआ मैं पुछां आपणे बाप कोलों राज, जो पाणा गंडु के आपणा यार मनाईआ। जिस दे कोल आर रंबी सच्चा साज, कच्चे तन्द गंडु वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए खुलाईआ।

रविदास कहे सुण सपुत्री, सच सच सच दिआं दृढ़ाईआ। एह धार धुरदरगाहों उतरी, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। मेरी एसे साहिब सुहाई रुतडी, रुत आपणे नाम महकाईआ। दर आया वेख के कोहडी चमडी, मेरे पाटे चीथड उते डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

बच्ची कहे सुण पिता कर ध्यान, हौली जेही जणाईआ। उह इक्को वार देवे इक्क ज्ञान, इक्क आपणे नाल मिलाईआ। मैं वेख्या ओथे लोड नहीं पढ़न दी वेद पुरान, शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान कम्म किसे ना आईआ। मुल्लां शेख मसाइक पंडत पीर फकीर सर्ब सीस निवाण, उप्पर अक्ख ना कोई उठाईआ। तू ही तू ही राग गाण, मैं ममता डेरा ढाहीआ। मैं वेख के होई हैरान, प्रभ निक्का जिहा किड्डी वड्डी रचन रचाईआ। जग नेत्र खोल के वेख्या नजर ना आया निशान, बैठा मुख छुपाईआ। अंदर वड के मैं बोल बोलिआं बिनां ज़बान, इक्क आवाज सुणाईआ। कर किरपा मेरे भगवान, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। झट पट नूरी दीपक जोत जगी महान, इक्को वार डगमगाईआ। जां तक्कया भगत भगवान कट्टे बहि के खुशी मनाण, सेजा इक्को इक्क सुहाईआ। बापू तेरे सुक्के टुकडयां दा वेख्या पकवान, दो जहान खाधिआं मुक्क कदे ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मंगदे दान, देवणहारा दाता इक्को नजरी आईआ। ओहनां मैंनू किहा तेरे बाप दा वड्डा खानदान, शाह पातशाह शहनशाह सारे सीस निवाईआ। वड्डे वड्डे शेर जिस दवारे बैठे आण, नेत्र अक्ख ना कोई खुलाईआ। किणका किणका खा के ओनां आया ज्ञान, वेद व्यासा लेखा याद कराईआ। कर बेनन्ती मंगण दान, सीस जगदीस भेट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

रविदास किहा पुतरी तेरा ठीक कहणा, प्रभ दिती माण वडयाईआ। सोहे नेत्र जिनां दर्शन कीता नैणां, अक्ख प्रतक्ख खुशी मनाईआ। सतिगुर प्यार सदा जग रहणा, दूजा संग ना कोई निभाईआ। सच संदेस तैनू कहणा, कहि के दिआं सुणाईआ। एनां संग सदा बहिणा, जिनां विच्च मेरा पतिपरमेशवर रिहा समाईआ। अग्गे लेखा होर देणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड वंडाईआ। बच्ची कहे की प्रभ खेल, सच दे समझाईआ। किस बिध होवे अगला मेल, धुर दा जोड जुडाईआ। ठाकर

मिले सज्जण सुहेल, सोहणा रूप वटाईआ । वसणहारा सद नवेल, घर सज्जण फेरा पाईआ ।  
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दए वडयाईआ ।

रविदास कहे प्रभ साचा दया कमावेगा । निरगुण निरवैर वेस वटावेगा । लेखा पेख  
पूर करावेगा । ब्रह्मण गौडा नाम प्रगटावेगा । सम्बल डेरा इक्को लावेगा । निरगुण जोत जोत  
रुशनावेगा । शब्द नाद चोट सुणावेगा । बोध अगाध भेव खुलावेगा । साजण सच सच बण,  
साची सेव कमावेगा । प्रगट हो पुरख समरथ, महिमा अकथ्य कथ दृढावेगा । सन्त सुहेले  
लए रक्ख, गुरमुख आपणी गोद बहावेगा । आपणे मिलण दी खोलू के अक्ख, परदा  
अगला पिछला लाहवेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी  
कार कमावेगा ।

साची करनी प्रभ कमावेगा । भेव अभेदा आप खुलावेगा । अछल अछेदा वेस वटावेगा ।  
अचरज खेले खेडा, समझ कोई ना पावेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा  
कर, साचा रंग रंगावेगा । साचा रंग प्रभ रंगाएगा । जन भगतां दया कमाएगा । हो  
प्रितपाल वेख वखाएगा । दर दवारा इक्क सुहाएगा । गढ़ी चमकौर डेरा लाएगा । जोती  
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण ताण आप दृढाएगा ।

माण ताण प्रभू दवौणा एं । अचरज खेल खलौणा एं । शब्द सुत इक्क प्रगटौणा  
एं । अबिनाशी अचुत फेरा पौणा एं । माता गुजरी गोद सुहौणा एं । तेग बहादर माण  
दवौणा एं । नूर आपणा विच्च टिकौणा एं । गोबिन्द धार विच्चों गोबिन्द आप प्रगटौणा एं ।  
शब्द खण्डा इक्क चमकौणा एं । ब्रह्मण्डां खोज खुजौणा एं । जेरज अंडां वेख वखौणा  
एं । उम्भुज सेतज डेरा ढौणा एं । जल थल महीअल आप समौणा एं । जंगल जूह उजाड़  
पहाड़ उच्चे टिल्ले परबत फोल फुलौणा एं । गृह मन्दर महल्ल अट्टल आप सुहौणा एं । जोती  
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा वेस आप धरौणा एं ।

सच्चा वेस आप धरावेगा । सुत दुलारा इक्क प्रगटावेगा । अबिनाशी अचुत खेल  
खलावेगा । बणा के आपणा धुर दा पुत, गोबिन्द सीस जगदीस छत्तर सीस झुलावेगा ।  
सैहज सुभाउ गोदी चुक्क, अञ्जण इक्को इक्क सुहावेगा । उजल कर के मुख, मुख  
मुखडे नाल वड्ढिआवेगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी  
कार कमावेगा ।

साची करनी गढ़ी चमकौर, हरि करता कार कमाईआ । वेखणहारा करके गौर, गहर  
गम्भीर वड्ढी वडयाईआ । पंजां हत्थ विच्च फड़ के डोर, नाता साचा दए जुडाईआ । इक्क  
इक्क नाल जोड़, जुझार अजीत मेल मिलाईआ । आपणा मंतर दस्स के फोर, फुरना  
अगला दए वखाईआ । पारब्रह्म पुरख अकाल पतिपरमेशवर तेरी लोड़, दूजा संग ना कोई  
निभाईआ । सच प्रीती सचखण्ड दवारे जोड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ ।

गृह वेखे चढ़ के धुर दे घोड़, वागँ इक्को वार भवाईआ। दीनां बंधू तेरी लोड़, बंधप मात दे तुड़ाईआ। अबिनाशी करते किहा अगला खेल होर, समझ किसे ना पाईआ। हौली हौली सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेई अवतार भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद गुरू दस दए तोर, बच्चिआं नाल सोभा पाईआ। अन्त काल पतिपरमेशवर निरगुण आपे जाए बौहड़, बौहड़ी सुणे मात दुहाईआ। उधर पंजां शेरं पाया शोर, रविदास दवारे रहे कुरलाईआ। चार कहार पंजवें रहे लोड़, वाजां मार मार जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

सच वडिआई देवे माण, मन ममता मोह चुकाइंदा। जिस उप्पर किरपा करे भगवान, भगवन आपणा भेव खुल्लाइंदा। आत्म परमात्म दे दान, वस्त अमोलक इक्क वरताइंदा। सभ दा लेखा देखे जहान, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा।

पंजे शेर निवावण सीस, नेत्र नैण नीर वहाईआ। किरपा कर प्रभू जगदीश, घर तेरी ओट तकाईआ। वेद व्यासा लेखा ठीक, ठीकर कूड़ा दए भन्नाईआ। तेरी रक्खी इक्क उडीक, नेत्र नैण तरसाईआ। साडी कर काया टांडी सीत, अगनी तत्त बुझाईआ। अमृत पीवे ला के झीक, निझर झिरना दे झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे सच दे वडयाईआ।

रविदास कहे पंजे लावो पंजा, पंज पंजां लेख चुकाईआ। वेद व्यास वेखे सिरों गंजा, नारद इशारे नाल उठाईआ। प्रभ दा खेल लग्गे चंगा, सोहणी बणत बणाईआ। मिले जन्म मूंहो मंगौं, पंज तत्त सोभा पाईआ। करे खेल सूरा सरबन्ना, शहनशाह दाता इक्क अखवाईआ। वंडणवाला धुर दीआं वंडा, सोहणी वंड कराईआ। देवे वडयाईआ विच्च वरभंडां, माणस रूप वरवाईआ। गुरमुख लक्ख चुरासी विच्च कदे ना होवे गंदा, गंदगी विच्च ना कदे समाईआ। जद आवे प्रभ दा बन्दा, बन्दगी विच्च रखाईआ। नी पुरुष प्रभ नूं इक्को जेहा चंगा, वड्डा छोटा नजर कोई ना आईआ। जिनां देवे परमानंदा, निज आत्म करे रसाईआ। तिनां लेखा चुके हँ ब्रह्मा, ब्रह्म पारब्रह्म इक्को नजरी आईआ। पूरब कर्म वेख कर्मा, निहकरमी फोल फुलाईआ। नाता तोड़े वरनां बरनां, जात पात डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल जिस जन लाए आपणे चरनां, चरनोदक मुख चुआईआ। उस खुल्ले हरना फरना, निज नेत्र नर हरि नजरी आईआ। भौ चुक्के मरना डरना, भयानक रंग ना कोई वटाईआ। साहिब सतिगुर सरना इक्को पडना, साची सिखिआ दए समझाईआ। सच दुआरे धुर दे वडना, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। अन्तम जोती जोत रलना, पंज तत्त नाता जगत तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

रविदास कहे सुणो भाई शेर, प्रभ दी शरअ दिआं समझाईआ। जिस उप्पर करे आपणी मेहर, ओस दूजी लोड़ रहे ना राईआ। सारे मिल के एनूं लवो घर, प्रेम प्रीती



घेरा पाईआ । आपणा लहणा देणा लवो निबेड़, हक हकीकत आपणी झोली पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच देवे वडयाईआ ।

पंजां शेरं सिक्खया सबक, रवीदास दिता समझाईआ । निवा के सीस मारी भबक, तुध बिन भवजल पार कवण कराईआ । असीं सारे रहे तबक, भय भौ रिहा सताईआ । साडी करनी विच्च रहे ना फरक, फैसला तेरे अग्गे रखाईआ । लेखा लिख बिनां हरफ, अलफ ये ना कोई वडयाईआ । तेरे घर इक्को जेहा माण नार मरद, मर्द मरदाने तेरी बेपरवाहीआ । पूरब जन्म दा साडा कज, मकरूज हो के देणा चुकाईआ । आपणा पूरा करनां फर्ज, फैसला हक हक सुणाईआ । साहिब सुलतान तेरे अग्गे अर्ज, अरजोई इक्को वार सुणाईआ । तेरा खेल सदा असचरज, अचरज रीती आपणी इक्क रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी माण वडयाईआ ।

श्री भगवान बोल्लया हस्स, खुशीआं नाल जणाईआ । पंजां देवां धुर दा हक, सभ दी झोली पाईआ । कलिजुग अन्तम रक्खे आस, वेला वक्त सुहाईआ । माणस जन्म देवे दात, पंज तिन्न नाता जोड़ जुड़ाईआ । निर्मल जोत कर प्रकाश, आत्म ब्रह्म मेल मिलाईआ । प्रगट हो पुरख अबिनाश, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ । सोहणा बणावे आपणा साथ, सगला संग रखाईआ । लेखा चुका चुमार रविदास, चार कहारां जोड़ जुड़ाईआ । पंजवां मित्र रक्खां साथ, सोहणी बणत बणाईआ । ब्राह्मण पूजा वेखां रास, चाली चाली होए सहाईआ । पंज घुमिआरां दे के दात, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ । डोले वाली लाडी बणा के साथ, सोहणा संग वसाईआ । डोली बहा के साचे घाट, पत्तण इक्को दिआं जणाईआ । वंझां डंडिआं मुक्के वाट, रँसिआं गंढ खुलाईआ । परदा खोल देवां ताक, मुख नकाब देवां उठाईआ । कट्टी करके इक्क जमात, रविदास सपुतरी सोभा पाईआ । उस दी सुण इक्क अवाज, धुर दी लवां अंगड़ाईआ । सभ दी पूरी करे खाहश, खाहश आपणी नाल रलाईआ । अगला चले खेल तमाश, अचरज धार बंधाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ ।

चाली चाली विच्चों कहण चाली बीस, चारों कुण्ट सुणाईआ । वेखो लेख चुक्के बीस बीस, बीस बीसा फेरा पाईआ । जिस दा कलमा इक्क हदीस, हजरत करे पढ़ाईआ । जिस दा मुकामे हक ठीक, परवरदिगार डेरा लाईआ । जिस नूं कहन्दे लाशरीक, शहनशाह दाता नूर खुदाईआ । जिहड़ा सचखण्ड दस्से इक्क प्रीत, प्रीतीवान नजरी आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ ।

बीस कह मेरा पिछला लहणा, परोहत पंडत रिहा चुकाईआ । हरि संगत विच्च मिल्या बहिणा, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ । बीस लेखा अजे लैणा, सके ना कोई मुकाईआ । ब्राह्मण दब्बआ कट्टे गैहणा, धरनी धरत धौल फोल फुलाईआ । वेला आया अन्त मीटण वाला नैणां, नाता लोकमात तुड़ाईआ । पिच्छों सभ ने कहणा, ब्राह्मण करदा रिहा चतुराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल वखाईआ ।

अंदरों रविदास रिहा तक्क, नेत्र नैण तकाईआ। वेखो सभ नूं मिलदा हक, हकीकत सभ दी झोली पाईआ। जिनां नूं अजे रैहंदा शक्र, ओनां दे शक्र देवे कहुआईआ। जिस वेले पंज तत्त काया कीती फक्क, बिस्तरे गोल देवे कराईआ। बेशक अगगे सचखण्ड लवे रक्ख, लोकमात करे जुदाईआ। प्रभ का खेल जगत जहान जीव ना हस्स, हस्सीआं विच्च मखौल ना कदे उडाईआ। जिस साहिब दे हत्थ नत्थ, चारों कुण्ट दए भवाईआ। फरकण ना देवे किसे अक्ख, फुरने विच्च मेटे सर्व लोकाईआ। उस दा किआ कोई देवे दस्स, समझणवाला समझ ना कोई रखाईआ। कर किरपा जे मेहर करे पुरख समरथ, डुब्बदे पाथर लए तराईआ। ओधरों पंजां शेरों खोलू अक्ख, नेत्र नैण रहे उठाईआ। प्रभ साडा लहणा देणा दस्स, बीस बीसा नेडे आईआ। पहला जन्म देणा हक, हकीकत तेरे कोल सके ना कोई छुपाईआ। अजीत जुझार आवण नट्ट, बण के पान्धी राहीआ। तेरा सोहणा बणया साथ, गोबिन्द जोड़ जुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्क वर, साहिब तेरी सरनाईआ।

रविदास कहे उह नहीं रविदास, जिहड़ा पाणा गंढ के वक्त लंघाईआ। हुण कलम दवात मेरे पास, दो जहानां लेख लिखाईआ। जेहड़ी सेवा किसे नहीं लम्भी खास, गुर अवतार पीर पैगम्बर थोड़ा थोड़ा गए समझाईआ। परम पुरख पतिपरमेशवर निरगुण हो के किसे ना चल्लया साथ, दिवस रैण बण के पान्धी राहीआ। जो आया सो उसे दा करके गिआ पाठ, दोए जोड़ सीस निवाईआ। खाली झोली मंगदे गए दात, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरे वरगा किसे दा ना बणया साक, सज्जण बण के आपणी उंगली लाईआ। एह आर पार किनारा घाट, जिस दे नाल लेख रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

रविदास कहे कूकदी शाही, शहनशाह सेवा लाईआ। जबानी नहीं लिख के दिआं गुआही, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दवारे चलदे चलदे तरे राही, डोली वाले कहार पंजवां यार नाल रलाईआ। ओस दर ते बेपरवाही, बेअन्त नूर खुदाईआ। उह साहिब धुरदरगाही परवरदगार नूर अलाही सचखण्ड वसे साची थाई, सच सिंघासण डेरा लाईआ। कलिजुग अन्त आ के पकड़े बाही, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। सदा सुहेला हो के देवे सिर ठंडीआं छाई, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जिनां मिल्या तनका राई, उह उच्ची कूक कूक कूक गए सुणाईआ। साड्डा संग करे बण के पान्धी राही, रहबर दाता आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल वखाईआ। रविदास कहे उह सुणो पिछले संगी, सगला संग निभाईआ। एहो दात जुग जुग जन भगतां मंगी, प्रभ देवणहार दे दे खुशी मनाईआ। नाम भंडारिउँ कदी औण ना देवे तंगी, तोहफा आपणे घरों पहुंचाईआ। गुरमुख कंड होण ना देवे नंगी, पुशत पनाह हत्थ आपणा दए टिकाईआ। प्रभ वड्डिआई जिस टुट्टी गंडी, विछड़यां लए मिलाईआ। दर औण ना देवे कोई परवण्डी, भेखीआं दए दुरकाईआ। सोभावन्त गुरमुख नार सुहागण चंगी, चंगी तरां वडयाईआ। मनमुख कूड कुडिआरी फिरे दुहागण रंडी, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईआ।

रविदास कहे सुण भाई मीत, सच दिआं सुणाईआ । उह किसे हत्थ नहीं औंदा मन्दर मसीत, शिवदवाले दोहरे मट्ट रहे कुरलाईआ । परम पुरख दी अचरज रीत, अगम्मी धार जणाईआ । जो अंदरों होवे उस दे नजदीक, दूर दुराडा चल के आवे माहीआ । सच बंधाए चरन प्रीत, कँवल दए सरनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोभावन्त सोहणी बणत बणाईआ ।

सोहणी बणत बणाए आप, हत्थ रक्खे वडयाईआ । दो जहानां माई बाप, पिता पुरख अकाल अखवाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा करदे गए जाप, अंदर बाहर ध्यान लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ । रविदास कहे प्रभ शेरं आया वक्त, धुर दा लेखा दे समझाईआ । की नाता बणया जगत, कवण पिता कवण माईआ । कवण बन्दू कवण रकत, कवण लेखा लेखे पाईआ । कवण धार कवण आए परत, कवण नूर करे रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे माण वडयाईआ ।

रविदास सपुत्री कहे मैनुं आई याद, सच दिआं सुणाईआ । ओनां अंदरे अंदर करी फरयाद, वेद व्यास भेव खुल्लाईआ । धुर दी सुण इक्क आवाज, अगम्मी नाद शनवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ । दस्स सपुत्तरी की सुणिआ कन्न, रसना दे जणाईआ । बच्ची कहे मैं लिआ मन्न, जो धुर दा खेल वरवाईआ । शेरं किहा सानू मिले नारी तन, पंज तत्त वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे वडयाईआ ।

रविदास कहे प्रभ लिखा के सच्च, सच सच दृढ़ाईआ । पंज तत्त काया माटी कच्च, गगरीआ नजरी आईआ । निरगुण अंदर गिआ रच, सरगुण सोभा पाईआ । नेत्र लोचण लाए अक्ख, आपणा दरस वरवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग रंगाईआ । पंज शेर शब्दी धार, साची मंग मंगाईआ । माणस जन्म विच्च संसार, सच दए समझाईआ । समझ ना पाई बण गवार, परदा ना कोई उठाईआ । वीह सौ तिन्न बिक्रमी रक्खी याद, साल सतारां पहले दए जणाईआ । छोटी बच्ची मार अवाज, आपणे कोल लिआं बठाईआ । सिर तों फड़ के खोल्लया राज, निक्के निक्के वाला रिहा खिचाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नजर उठाईआ ।

निक्का शेर निक्की बच्ची, बचपन इक्क वरवाईंदा । पूरब जन्म दी धुर दी सच्ची, नाता आप बंधाईंदा । पहलों खेल वरवाया अक्खीं, दादी पोती आप समझाईंदा । जेठ महीना फड़ के लक्खीं, सोहणी ठंड वरताईंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर उठाईंदा ।

पहले शेर दिउ वधाई, वाहवा साहिब हत्थ वडयाईआ । कन्नया जसबीर प्रीतम सिँघ

दी जाई, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। बीबी छिन्दो सोहणा लेख लखाई, परदा उहला आप चुकाइंदा। आत्मा सिँघ दिउ वधाई, जिस दी आत्मा परमात्मा आपणे नाल रलाइंदा। तीजा लेखा दए समझाई, तृप्त तृष्णा लोकमात गुआइंदा। शान बेटा कहि सुणाई, राम सिँघ जगत पिता अखवाइंदा। चौथे शेर महिमा चुके, चुकावणहार दया कमाईआ। पिछले लेखे पूरब मुक्के, मुफ्त दया कमाईआ। अगले पिछले बंधन टुट्टे, कूडी क्रिया डेरा ढाईआ। उजल करे मात मुखे, सोहणी दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक्क उठाईआ।

मेहर नजर करे अतीत, हरि करता वड वडयाईआ। काया करे ठंडी सीत, मुख अमृत धार चुआईआ। दयावान सदा जगदीश, जागरत जोत करे रुशनाईआ। देवे माण मन मनजीत, पिता अरजन सिँघ अखवाईआ। सदा सदा प्रभ दी अचरज रीत, कोई समझ ना सके राईआ। पंजवां कहे मेरा लेख दस्स ठीक, मेहरवान मेरे गुसाईआ। अगगे वेला दिसे नजदीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। हउं कीटां दे कीट, शाह पातशाह तेरे हत्थ वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच आपणा रंग रंगाईआ।

पंजवां कहे रविदास कुछ दस्स, दह दिशा वेख वखाईआ। मेरी अजे ना खुल्ली अखव, नेत्र नैण नूर ना कोई चमकाईआ। पिछला पूरा करे हक, प्रभ मेरा बेपरवाहीआ। जे मेरे खाली हत्थ, आपणे कोलों देवे वरताईआ। कयों पिछे रिहा छड्डु, खैहडा मात चुकाईआ। मेरा नेत्र रोवे अखव, अक्वीआं देण दुहाईआ। कवण वेले प्रभ मिले हस्स हस्स, सोहणा रूप वटाईआ। चरन कँवल जावां ढट्टु, आपणा माण ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब देवणहार सच्ची वडयाईआ।

रविदास कहे सुण मेरी रमज, इशारे नाल जणाईआ। प्रभ दा खेल प्रभ ही जाए समझ, दूजे सार किसे ना पाईआ। जगत जहान कोई ना जाणे मरज, तबीब रूप ना कोई वटाईआ। पता नहीं जुग चौकडी पिच्छों किथों कट्टे फरद, फोल वखावे थाउँ थाईआ। हुण मन्न के मेरी अर्ज, आरजू आपणी झोली पाईआ। पिछला देवे कज, लहणा मात चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, लेखा दए जणाईआ।

पंचम सुण प्रभ सुणाए आप, सोहणी बणत बणाईआ। तेरा दिसे धुर दा साक, सच सच समझाईआ। वेद व्यास जो गिआ आख, आखर पूर कराईआ। रविदास चुमारा लिखे खास, गुरमुख आपणी कलम उठाईआ। सभ तों वड्डा साथ, सभना नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ। सुण के बचन जावे मन्नण, नेत्र चरनां वल लगाईआ। करे खेल श्री भगवानन, पारब्रह्म वडयाईआ। धुर संदेसा सुणाए कन्नण, अगम्मी राग अलाईआ। पंजवां शेर कौर चन्नण, गुरमुख नारी उरफ रविदास कह सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे वडयाईआ।

पंजां दसां मिलदा माल, ब्राह्मण वेख वेख नैण उठाईआ। प्रभ किहा जिहा जजमान, कोझयां कमलयां रिहा तराईआ। मेरी झोली अजे ना पाया कुछ दान, खाली गुच्छी रिहा दरवाईआ। मैं चंगा ना लगगे करना अशनान, पीण खाण ना सोभा पाईआ। किसे घर पकदा ना दिसे पकवान, रवीर कड़ाह ना कोई चढ़ाईआ। पोचा चौक कोई ना कहे आण, पोहत जी बैठो आसण लाईआ। मैं फिर कहां मेरे वस भगवान, बिन मेरे हथ किसे ना आईआ। जे चंगा खवाओ पकवान, मैं पक्की तरां समझाईआ। ओधरों नेडे आया रविदास, सुण के हास्सी रिहा उडाईआ। ब्राह्मण केहडे तेरे साथ, किथे डेरा लाईआ। ब्राह्मण गई भाख, झट्ट आपणा आप बदलाईआ। एहो जही मैं वड़ी जाच, हेरा फेरी तेरा संग रखाईआ। जिस नूं कहन्दे कमलापात, कँवल नैण नूर खुदाईआ। उह पंजां दस्सां देवे दात, सोहणी वंड वंडाईआ। प्रगट होवे साख्यात, सोहणी तरां समझाईआ। पहली चेत्र रक्खणी याद, धुर दा हुक्म सुणाईआ। खेल करे पुरख अबिनाश, बेपरवाह धार चलाईआ। चिटे असव लै के राक, सोहणा आसण लाईआ। धूढ़ी मस्तक लावे खाक, इक्को टिक्का नाम वखाईआ। ब्राह्मण आपणी हत्थीं खवाए भात, सोहणा भोजन दए बणाईआ। नाले उच्ची कूक मारी आवाज, सुण फरियाद धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सभ दा लहणा दए मुकाईआ।

ब्राह्मण ला के कन्न लिआ सुण, अंदरे अंदर ध्यान लगाईआ। मेरे गुण जाणे कवण, की मेरी वडयाईआ। मैं झट्ट पट सारयां लवां छाण पुण, गंढुं कवण आपणे पल्ले बन्न वखाईआ। जे मौका मिले फन, सारयां हथ खाली दिआं वखाईआ। उधरो रविदास कहे श्री भगवान डाहडा तेरी चोटी देवे मुन्न, बोदी हिलणो दए हटाईआ। बण के जट्ट मारे घसुन्न, सुरती अगली पिछले दए भुलाईआ। तेरीआं रोवण अक्खीआं फरकण बुल्ल, हौके सिसकीआं नाल रलाईआ। कूड़ी क्रिया तेरी झोली विच्चों जावे डुल्ल, बौहड फेर ना कोई टिकाईआ। तैनुं हरि संगत विच्च आवण जावण दी देवे खुल्लू, खुल्लूी तरां समझाईआ। परोहत दस लै के औणे फुल्ल, फुल्लां विच्चों तेरे अंदर वासना दए रखाईआ। फेर नहां धो के लंगर विच्च बनौणा चुल्ल, सिँघ गिरधारा नाल रलाईआ। दाल वांगू पाणी अंदर जाणा घुल, रोडका रोड विच्च ना कोई रखाईआ। तन प्रेम प्यार नाल गुरमुख लैण गुंन, आटा पाणी इक्को वार देण मलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ।

सुण पंडत खोलू अक्ख, हरि आखर आप जणाइंदा। पिछला लेखा रह गिआ वक्ख, अगगे आपणी धार समझाइंदा। हिरदे अंदर हरि जी वस, हरिमन्दर सोभा पाइंदा। नेत्र खोलू निज अक्ख, आखर आपणा मेल मलाईंदा। ओधरों रविदास चुमारा करे झट्ट, सोहणी सेव कमाइंदा। जिहडा चोला गिआ फट, सच सिँघासण उप्पर विछाइंदा। उप्पर बैठ पुरख समरथ, पंजां पंजां जोड जुडाइंदा। लेखा देवे हत्थो हत्थ, पूरब लहणा झोली पाइंदा। रक्खणहारा धुर दी पत्त, पतिपरमेशवर वेस वटाइंदा। चिट्टे बस्तर पहनण दा सभ नूं हक, दसां इक्को रंग रंगाइंदा। अगला लेखा फेर देवे दस्स, निक्कीआं बच्चीआं

होर नाल मिलाइंदा । मिलौंदा मिलौंदा आपणा करके झट्ट, झटका शब्दी जोत तुणका इक्क  
लगाइंदा । बजर कपाटी जाए फट, धुरदरगाही आप खुल्लाइंदा । अंदर वड के पुरख  
समरथ, सोहणा राग अलाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा  
साचा वर, लहणा सभ दी झोली पाइंदा ।

